राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन में ललितपुर क्षेत्र के स्वतंत्रता सेनानियों का योगदान

(वर्ष 1857 से 1947)

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी में
इतिहास विषय की पी–एच0 डी0 की
उपाधि हेतु

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध

2000

शोध निर्देशक

डॉ0 एस0 पी0 पाठक

एम. ए., पी–एच. डी.

प्राचार्य, रीडर एवं

विभागाध्यक्ष – इतिहास

बुन्देलखण्ड महाविद्यालय, झांसी (उ. प्र0)

शोधकर्त्ता

रामकुमार रिछारिया

एम. ए. (इतिहास), बी. एड.

इतिहास विभाग

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी (उ0 प्र0)

राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन में ललितपुर क्षेत्र के स्वतंत्रता सेनानियों का योगदान

(वर्ष 1857 से 1947)

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी में इतिहास विषय की पी-एच0 डी0 की उपाधि हेतु

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध

2000

शोध निर्देशक

डॉ0 एस0 पी0 पाठक

एम. ए., पी-एच. डी.

प्राचार्य, रीडर एवं

विभागाध्यक्ष - इतिहास

बुन्देलखण्ड महाविद्यालय, झांसी (उ. प्र0)

शोधकर्त्ता

रामकुमार रिछारिया

एम. ए. (इतिहास), बी. एड.

इतिहास विभाग

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी (उ0 प्र0)

राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन में ललितपुर क्षेत्र के स्वतंत्रता सेनानियों का योगदान

(वर्ष 1857 से 1947)

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी में इतिहास विषय की पी-एच0 डी0 की उपाधि हेतु

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध

2000

शोध निर्देशक

डॉ0 एस0 पी0 पाठक

एम. ए., पी-एच. डी.

प्राचार्य, रीडर एवं

विभागाध्यक्ष - इतिहास

बुन्देलखण्ड महाविद्यालय, झांसी (उ. प्र0)

शोधकर्त्ता

रामकुमार रिछारिया

रामकुमार रिछारिया

एम. ए. (इतिहास), बी. एड.

इतिहास विभाग

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी (उ0 प्र0)

स्व० श्री धरनीधर रिछारिया (पिताजी)

स्व० श्रीमति गिरजादेवी रिछारिया (माताजी)

को

सादर समर्पित

रामकुमार रिछारिया

रामकुमार रिछारिया

एम. ए. (इतिहास), बी. एड.

Dr. S. P. Pathak
M.A., Ph. D.
Principal, Head Deptt. of History
Bundelkhand College - Jhansi (U.P.)
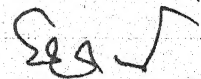
Residence :
32, Civil Line
Jhansi (U.P.)

Date : 1.6.2000

-: CERTIFICATE :-

This is to Certify that the research work embodied in this thesis Submitted for the Degree of Ph. D. in History Entitled "राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन में ललितपुर क्षेत्र के स्वतंत्रता सेनानियों का योगदान (वर्ष १८५७ से १९४७)" is the original research work done by Ramkumar Richhariya

He has worked Under my guidance and supervision for the required period.

(Dr. S. P. Pathak)

घोषणा-पत्र

मैं घोषणा करता हूँ कि "**राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन में ललितपुर क्षेत्र के स्वतंत्रता सेनानियों का योगदान** (वर्ष 1857 से 1947)" विषयक मेरा यह शोध प्रबन्ध मौलिक कृति है, जिसे मैंने स्वविवेक एवं परिश्रम से पूरा किया है।

शोधार्थी :

रामकुमार रिछारिया

रामकुमार रिछारिया

एम. ए. (इतिहास), बी. एड.

पुरोवाक्

पुरोवाक्

बुन्देलखण्ड भारत वर्ष का हृदय स्थल है। बुन्देलखण्ड का इतिहास विलक्षण, साहस, बलिदान और स्वतंत्रता प्रेम की अनूठी गाथा है। मध्यकाल में इस क्षेत्र को मुगलों के विरूद्ध स्वतन्त्र कराने का प्रथम प्रयास पन्ना नरेश छत्रसाल बुन्देला ने किया। जैतपुर के युद्ध (1729 ई0) में उन्होंने मुगल सम्राट मुहम्मद शाह के इलाहाबाद के सूबेदार मुहम्मद खाँ बंगश को पराजित कर वीर सिंह जूदेव द्वारा प्रारम्भ की गयी, जुझार सिंह तथा चम्पत राय द्वारा पल्लवित स्वतंत्रता को सफलता के शिखर पर पहुँचा दिया।

घटनाओं के बदलते हुये क्रम में 1802 ई0 की वेसिन की सन्धि से इस क्षेत्र में अंग्रेजी शासन का प्रारम्भ हुआ। अंग्रेजों की नीतियों के कारण यहाँ की जनता ने हमेशा उनसे घृणा की। सन् 1857 ई0 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में अंग्रेजी हुकूमत के विरूद्ध स्वतंत्रता का जो बिगुल बजा उसमें बुन्देलखण्ड ने प्रमुख भूमिका निभाई। झांसी की महारानी लक्ष्मीबाई के साथ ललितपुर क्षेत्र के बानपुर नरेश राजा मर्दन सिंह सहित अनेकों बीरों ने भी महती भूमिका निभाई एवं अनेकों ने प्राणों की आहुति दी। ललितपुर नगर के पं. झुनारे रावत को फांसी दी गयी। जनता की सक्रिय भागीदारी के कारण सन् 1857 ई0 में अंग्रेजी हुकुमत की पुनः स्थापना हुयी जिसमें इस क्षेत्र का सामाजिक आर्थिक, पिछड़ापन बनाये रखा। ताकि यहाँ के स्वतंत्रता प्रेमियों को दण्डित किया जा सके। लेकिन देश – प्रेम तथा राष्ट्रीयता की भावना से ओत – प्रोत इस क्षेत्र के निवासियों ने देश की आजादी के लिए चलाये गये आन्दोलन में गाँधी जी तथा कांग्रेस के नेतृत्व को उत्साहपूर्वक स्वीकार किया।

असहयोग आन्दोलन के समय जब देश के स्वतन्त्रता – प्रेमी, अदालतों, स्कूलों, नौकरियों तथा विदेशी माल का बहिष्कार कर रहे थे उस समय ललितपुर क्षेत्र भी इस दिशा में अग्रणी रहा। ललितपुर के श्री गुलई तिवारी जी ने सन् 1921 ई0 के आन्दोलन में तथा महरौनी से चिन्तामन ने राष्ट्रीय ध्वज अपने हाथ में लेकर गाँधी जी के आन्दोलन में जनपद के लोगों को नेतृत्व प्रदान किया जिन्हें बन्दी बनाया गया। इसी प्रकार सविनय अवज्ञा आन्दोलन, व्यक्तिगत सत्याग्रह, भारत छोड़ो आन्दोलन तथा अन्य सत्याग्रहों में ललितपुर क्षेत्र के लोगों

ने अद्भुत भागीदारी निभाई। ललितपुर में गाँधी जी का अहिंसक आन्दोलन तथा चन्द्र शेखर आजाद का क्रांतिकारी आन्दोलन लोगों की प्रेरणा के स्रोत बने रहे।

ललितपुर के पं. श्री नन्दकिशोर जी किलेदार का आवास चन्द्रशेखर आजाद और शम्भूनाथ आजाद, शौकत अली जैसे क्रांतिकारियों का शरण स्थल था। सन् 1942 के भारत छोड़ों आन्दोलन के समय पं. श्री बृजनन्दन जी शर्मा ने ललितपुर में एक राष्ट्रीय पुस्तकालय और खादी भण्डार खोलकर, प्रभात फेरी व जुलूस निकालना प्रारम्भ किया। यह जन आन्दोलन इस क्षेत्र का सबसे बड़ा आन्दोलन था। इस आन्दोलन के समय हुये ब्रिटिश दमन में ललितपुर के भी लोग शहीद हुये। तथा अनेकों लोग कारागार में डाल दिये गये। इस क्षेत्र की जनता ने राष्ट्रीय आन्दोलनों में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करते हुये 1947 ई0 में देश को स्वतंत्र कराने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस शोध कार्य की तैयारी के लिए मैंने ललितपुर क्षेत्र के ललितपुर नगर, महरौनी, मड़ावरा, साढूमल, सैदपुर, सतबसा, सिंदवाहा, पाली, धौर्र, जाखलौन, नाराहट, गुना, जखौरा, बाँसी, तालबेहट, बार, लड़वारी, भावनी, बरौदा डाग, बानपुर, कैलगुवां, दैलवारा, देवरान, ककरूआ आदि क्षेत्रों का व्यक्गित सर्वेक्षण किया एवं स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के परिवार वालों के पास उपलब्ध साक्ष्यों का अध्ययन तथा जीवित स्वतंत्रता सेनानियों से साक्षात्कार किया इसके अतिरिक्त भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की रिपोर्टस, दिल्ली एवं लखनऊ के अभिलेखागारों में उपलब्ध अंग्रेजी शासन के रिकार्ड, गजेटियर्स, सरकारी रिपोर्टस एवं बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झांसी पुस्तकालय, सागर विश्वविद्यालय पुस्तकालय, ललितपुर एवं झांसी समस्त सरकारी एवं गैर सरकारी पुस्तकालय तथा अन्य दूसरे तरह के प्रकाशन और समाचार पत्रों एवं सरकारी, गैर सरकारी पत्र - पत्रिकाओं का भी अध्ययन, मनन एवं चिंतन किया है। इस प्रकार प्राप्त लगभग सभी आधार - ग्रन्थों का अध्ययन कर शोध में निष्पक्ष विवेचन की चेष्टा की है।

अतः विश्वास है कि यह प्रस्तावित शोध प्रबन्ध बुन्देलखण्ड के क्षेत्रीय इतिहास का ज्ञान एवं ललितपुर क्षेत्र के स्वतंन्त्रता प्रेमियों द्वारा आजादी के आन्दोलन में दिये गये योगदान को उजागर करने में सहायक होगा।

यह मेरा परम कर्तव्य है कि मेरे इस शोध - कार्य में जिन सहयोगियों ने प्रत्यक्ष

– अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग दिया है उनके प्रति आभार व्यक्त करूँ। शोध प्रबन्ध की तैयारी के लिए प्रयुक्त सहायक ग्रन्थों के विद्वान लेखकों व प्रकाशकों के प्रति आभार प्रदर्शित करता हूँ।

इसके साथ ही मैं आदरणीय अपने निर्देशक डॉ एस. पी. पाठक, रीडर एवं विभागाध यक्ष – इतिहास बुन्देलखण्ड महाविद्यालय झांसी, के प्रति अपना विशेष आभार व्यक्त करता हूँ जिनकी मुझ पर पूर्ण अनुकम्पा रही। क्योंकि मेरे इस शोध कार्य में उन्होंने अपना अमूल्य समय देकर मेरे कार्य को सम्पादित कराने में आवश्यक व महत्वपूर्ण सुझावों से अवगत करा सहायता प्रदान की। मेरे लिए यह गर्व का विषय है कि मुझे उनके मार्ग निर्देशन में शोध कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ।

प्रस्तुत शोध ग्रन्थ मैं अपने परम पूजनीय पिता पं. स्व. श्री धरनीधर रिछारिया एवं माता स्व. श्रीमति गिरजादेवी रिछारिया को सादर समर्पित करता हूँ। मैं अपने अग्रज पं. श्री रामेश्वर प्रसाद रिछारिया इंजीनियर, सीमा सड़क संगठन का चिर ऋणी रहूँगा जिनकी प्रेरणा व स्नेह ने मेरे लिए इस मुकाम तक पहुँचाया।

मैं श्रीमति सरोज कुमारी रिछारिया (बड़ी भाभी) श्री राम सहाय रिछारिया (अग्रज), श्रीमति गीता रिछारिया (छोटी भाभी) भगिनीसम कु. राजकुमारी, कु. मनीषा आदि का भी मैं आभारी हूँ जिन्होंने मेरे इस कार्य में मुझे सहायता प्रदान की।

मैं पं. श्री विजय गोपाल हुण्डैत (रवि) जी का भी आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे इतिहास विषय पढ़ने की ओर उन्मुख किया।

मैं प्रो० बिहारी लाल बबेले (पूर्व विभागाध्यक्ष – इतिहास, ने. म. वि., ललितपुर), प्रो. भगवतनारायण शर्मा (पूर्व प्राचार्य – ने. म. वि., ललितपुर), डॉ. शंकर शरण तिवारी (पूर्व रीडर – हिन्दी, ने. म. वि., ललितपुर), प्रो० सुरेशचन्द्र शुक्ल (विभागाध्यक्ष – समाजशास्त्र, ने. म. वि., ललितपुर), डॉ अवधेश अग्रवाल (विभागाध्यक्ष – मनोविज्ञान, ने. म. वि., ललितपुर), डॉ. ओमप्रकाश शास्त्री (विभागाध्यक्ष – संस्कृत, ने. म. वि., ललितपुर), डॉ (श्रीमति) आशा साहू (बरिष्ठ प्रवक्ता – अर्थशास्त्र, ने. म. वि., ललितपुर), श्री सुन्दर लाल उपाध्याय (कार्यालय

अध्यक्ष – ने.म.वि., ललितपुर), श्री सीताशरण पाराशर, श्री सनत कुमार जैन, श्री आनन्द गोस्वामी आदि के प्रति कृतज्ञ हूँ जिन्होंने मुझे अनेक प्रकार का मार्गदर्शन व सहयोग दिया।

साथ ही मैं पं. हरीहर नारायण चौबे एडवोकेट (मंत्री ने.म.वि.), श्री प्रदीप चौबे (उपमंत्री, ने.म.वि.), डा. रवीन्द्रनाथ यादव (प्राचार्य ने.म.वि.) के प्रति भी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

मैं श्री मुरारी लाल जैन (मंत्री दिगम्बर जैन कमेटी देवगढ़, ललितपुर) के प्रति भी आभार प्रदर्शित करता हूँ, जिन्होंने इस कार्य में मेरी अनेकों प्रकार से सहायता की।

मैं श्री संतोष शर्मा (पत्रकार), श्री नीलू तिवारी (पत्रकार), श्री राजीव श्रीवास्तव (पत्रकार), श्री देवकी नन्दन पाठ्कर, श्री प्रकाश नारायण पाल (पत्रकार), श्री उमेश तिवारी, श्री श्रीचन्दजी, श्रीमति कमलेश जैन, सुधीर कुमार (राजू), श्री सुशील कुमार, श्री राजेश श्रीवास्तव, गौरंग हरीसिंह, जनार्दन शुक्ला, धुव्र किलेदार, अक्षय किलेदार आदि सभी का आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे समय – समय पर प्रोत्साहन व कार्य को आगे बढ़ाने व पूर्ण करने में सहयोग दिया।

मैं टंकणकर्त्ता मकरन्द किलेदार (विक्की ग्राफिक्स), महावीरपुरा, ललितपुर के प्रति भी आभार व्यक्त करता हूँ। जिन्होंने बड़ी लगन एवं परिश्रम के साथ इस शोध प्रबन्ध को पूरा करने में सहयोग दिया।

भवदीय :

रामकुमार रिछारिया

रामकुमार रिछोरिया

पुत्र : स्व. श्री धरनीधर रिछारिया

280, आजादपुरा, ललितपुर

॥अनुक्रमणिका॥

अध्याय - चतुर्थ

अध्याय - पंचम

अध्याय - प्रथम

ललितपुर जनपद की भौगोलिक एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

(1) भौगोलिक सीमाएं

(2) प्रमुख नदियां, पर्वत, मिट्टी, जलवायु, क्षेत्रफल, जनसंख्या

(3) संक्षिप्त ऐतिहासिक पृष्ठभूमि (प्रारम्भ से 1857 ई0 तक)

(4) ललितपुर जनपद का प्रशासनिक गठन (1857 ई0 से आगे)

(5) ललितपुर नामकरण का इतिहास

अध्याय – प्रथम

ललितपुर जनपद की भौगोलिक एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

1. *भौगोलिक सीमाऐं-* वर्तमान में ललितपुर जनपद उत्तर प्रदेश के दक्षिणी भाग में स्थित झांसी मण्डल का जिला है, जो 1 मार्च 1974 ई0 को अस्तित्व में आया है।[1] यह उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश सीमा पर $24^{0} 11'$ से 25^{0} $57'$ उत्तरी अक्षांश तथा 78^{0} $25'$ पूर्व देशान्तर के मध्य स्थित है।[2] उत्तर प्रदेश के दक्षिणी भाग में स्थित जनपद ललितपुर की सीमायें उत्तर को छोड़कर शेष तीन दिशाओं में मध्य प्रदेश राज्य से घिरी हुयी हैं। इसके पूर्व में टीकमगढ़ जनपद, पश्चिम में गुना एवं शिवपुरी जनपद एवं दक्षिण में सागर जनपद तथा उत्तर में झांसी जनपद से जुड़ी हुयी हैं। बेतवा एवं धसान नदियाँ यत्र – तत्र जनपद की सीमा में बहकर सीमा निर्माण का कार्य करती हैं, जबकि जामनी नदी जनपद में बहने के बाद बानपुर के पास से जनपद सीमा निर्माण करती हुयी बेतवा नदी में मिल जाती है। इस प्रकार उपर्युक्त तीनों नदियाँ जनपद की अधिकांश सीमा निर्धारित करती हैं।[3]

यह जनपद ललितपुर मध्य रेल्वे के झांसी – भोपाल सेक्सन पर स्थित है। एवं राष्ट्रीय मार्ग संख्या 26 झांसी – लखनादौन के 91 किलोमीटर पर स्थित है।[4]

---

1. अनुक्रमणिका, प्रकाशक – जिला सूचना कार्यालय, ललितपुर 1996 – 97 पृष्ठ – 10
2. (1) वही – पृष्ठ – 11
   (2) स्टेटिस्टिकल डेस्क्रिप्टिव एण्ड हिस्टारिकल एकाउण्ट ऑफ एन. डब्लू. प्राविन्सेज ऑफ इण्डिया भाग – प्रथम (बुन्देलखण्ड) ले. ई. टी. एटकिन्सन 1874, पृष्ठ 514 – 15
3. (1) प्रगति के पथ पर अग्रसर, ललितपुर, प्रकाशक – जिला सूचना कार्यालय, ललितपुर 1986 पृष्ठ 3 (2) ललितपुर मानचित्र
4. अनुक्रमणिका प्रकाशक जिला सूचना कार्यालय, ललितपुर 1996 – 97 पृष्ठ 10 – 11

2. *प्रमुख नदियां* – जनपद ललितपुर की प्रमुख नदियां बेतवा, धसान, शहजाद, जामनी, रोहिणी, सजनाम, नारायण हैं। इसके अतिरिक्त अन्य बरसाती नदियां जो कि बड़े नालों के रूप में हैं, बाँदी, सूजी, सुज, सरवार, बारूआ आदि हैं। बेतवा और धसान क्रमशः पूर्व, पश्चिमी एवं दक्षिणी सीमा पर बहती हैं। शहजाद, जामनी एवं सजनाम नदियां जनपद के मध्य में बहती हैं।[1]

प्राकृतिक बनावट के अनुसार जनपद का दक्षिणी भाग उत्तर की अपेक्षा ऊँचा है, जिसके कारण सभी नदियां दक्षिण से उत्तर की ओर बहती हैं।[2]

बेतवा – बेतवा नदी का उद्‌गम भोपाल ताल है यह 400 मील की लम्बी यात्रा करके हमीरपुर जनपद के पास यमुना नदी में विलीन हो जाती है।[3]

बेतवा नदी जनपद ललितपुर में दक्षिणी – पश्चिमी सीमा पर विन्ध्य पर्वत की श्रेणी को काटकर प्राचीन स्थल देवगढ़ से प्रवेश करती है। और 60 मील मध्य प्रदेश तथा ललितपुर जनपद की सीमा पर बहकर उत्तर – पूर्व की ओर मुड़ती है, और 3 मील तालबेहट तहसील में बहती है। इसके पश्चात 8 मील झांसी – ललितपुर सीमा पर बहकर मध्य प्रदेश राज्य में प्रवेश करती है।[4]

---

1. झांसी गजेटियर – ई. वी. जोशी – 1965, पृष्ठ – 4 – 5
2. (1) स्टेटिस्टिकल डेस्क्रिपष्व्वि एण्ड हिस्टारिकल एकाउण्ट ऑफ दि एन. डब्लू प्राविन्सेज ऑफ इण्डिया भाग – प्रथम, ई. टी. एटकिन्सन 1874, पृष्ठ 309
   (2) अनुक्रमणिका, प्रकाशक जिला सूचना विभाग, ललितपुर, 1988, पृष्ठ 4
3. बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास, भाग – एक, दीवान प्रतिपाल सिंह, सम्वत् 1985 वाराणसी से प्रकाशित, पृष्ठ – 34
4. झांसी गजेटियर – ई. वी. जोशी – 1965, पृष्ठ – 4

धसान - धसान नदी का उद्गम भोपाल के सिरमऊ पहाड़ों से हुआ है।[1]

यह नदी ललितपुर जनपद के दक्षिण में मध्य प्रदेश राज्य के सागर जनपद से आकर वनगवारा ग्राम (तहसील - महरौनी) से इस जनपद की सीमा को25 मील तक तय करती हुयी पुनः मध्य प्रदेश राज्य में प्रविष्ट होती है।[2]

जामनी - जामनी नदी मध्य प्रदेश से बहकर ललितपुर जनपद के मदनपुर ग्राम में प्रवेश करती है, तथा तहसील महरौनी के दक्षिण भाग में बहकर उत्तर की ओर आगे बड़ती है। जनपद ललितपुर और मध्य प्रदेश की सीमा पर बह कर जामनी नदी बेतवा नदी में मिल जाती है।[3]

जामनी नदी बानपुर के पास जनपद की सीमा का निर्धारण करती हुयी दुनातर शिव तीर्थ स्थल (ग्राम कठ्वर) भावनी तहसील - तालबेहट, पर पहले सजनाम नदी में मिल जाती है, अन्त में यही सजनाम बेतवा में मिल जाती है।

उपरोक्त नदियों के अतिरिक्त शहजाद, सजनाम तथा रोहिणी नदियां जनपद का जल समेटकर बेतवा नदी में विलीन हो जाती हैं।

पर्वत

जनपद ललितपुर में विन्ध्याचल श्रेणी दक्षिणी - पश्चिमी सीमा से प्रारम्भ होकर दक्षिणी - पूर्वी सीमा तक जाती हैं। फ्रैंकलिन ने बुन्देलखण्ड के भूगर्भ वर्णन में विन्ध्याचल की पहाड़ियों का वर्णन किया है। जो केशवगढ़ सिन्धु नदी (मध्य प्रदेश) के तटों से प्रारम्भ होकर ललितपुर होती हुयी कालिंजर तक जाती है।[4]

1. चन्देल और उनका राजत्वकाल - केशवचन्द्र मिश्रा, पृष्ठ - 11
2. झांसी गजेटियर - ई. वी. जोशी - 1965, पृष्ठ - 4
3. झांसी गजेटियर - ई. वी. जोशी - 1965, पृष्ठ - 6
4. उत्तर प्रदेश सीमा प्रान्त भाग - 1, ले. फ्रैंकलिन, पृष्ठ - 54

सर्वेक्षण करने के उपरान्त जनपद ललितपुर का अधिकतर भाग पहाड़ी ही दिखायी देता है जो कहीं ग्रेनाइट पत्थरों के रूप में तथा कहीं मिट्टी के टीलों के रूप में है। सन् 1892 की दूसरी सेटिलमेन्ट रिपोर्ट में भी सेटिलमेन्ट अधिकारी इम्फे तथा मेस्टन ने जनपद ललितपुर के विन्ध्य श्रेणी का इसी रूप में वर्णन किया है।[1]

मिट्टी

जनपद ललितपुर को भौगोलिक आधार पर तीन भागों में विभाजित किया गया है।[2]

1. काली मिट्टी का मैदानी भाग
2. लाल मिट्टी का पठारी भाग
3. विन्ध्य श्रेणी का पहाड़ी भाग

1. *काली मिट्टी का मैदानी भाग* काली मिट्टी का मैदानी भाग ललितपुर नगर के चारों ओर एवं ललितपुर नगर से लेकर महरौनी, मड़ावरा कस्बे तक त्रिभुजाकार रूप में फैला हुआ है। इसी मैदानी भाग में छोटे - छोटे नाले जो कि पठारी भाग से बहकर आते हैं अपने साथ छनी हुई मिट्टी बहा कर लाते हैं। इसी भाग में जामनी, सजनाम तथा शहजाद नदियां बहती हैं। बेतवा नदी एवं धसान नदी के किनारे भी काली मिट्टी कहीं - कहीं पायी जाती है।[3]

2. *लाल मिट्टी का पठारी भाग* यह पठारी भाग दक्षिण से पश्चिम तक फैला हुआ है। सफेद पत्थरों से मिश्रित यह कंकड़ीली मिट्टी का ऊँची - नीची पहाड़ियों के रूप में दूर तक फैला हुआ भाग, कहीं-कहीं पर ऊँचे टीले का रूप ले लेता है।

---

1. सर्वे रिपोर्ट ऑफ सेकण्ड सेटिलमेन्ट ऑफ झांसी डिस्ट्रिक्ट, इलाहाबाद, 1892 डब्लू एस. एल. एम्फे तथा जे. एस. मेस्टन, पृष्ठ 12
2. झांसी गजेटियर - ई. वी. जोशी - 1965, पृष्ठ - 3-4
3. सोयल ऑफ इण्डिया, लेखक - राय चौधरी, पृष्ठ 331 - 32

इसमें कहीं–कहीं पर ग्रेनाइट पत्थरों की छोटी–छोटी पहाड़ियां भी मिलती हैं। इन लाल मिट्टी के टीलों को कटीली झाड़ियों ने एवं छोटे-छोटे पेड़ों ने ढक रखा है। यह झाड़ियां झावेरी, करौंदी आदि की होती हैं, तथा पेड़ अधिकतर बबूल, ढाक आदि के होते हैं। बरसाती नालों के बहने से इस मिट्टी के टीलों के बीच गहरी घाटियां बन गई हैं।[1]

3. <u>विन्ध्य श्रेणी का पहाड़ी भाग</u> ललितपुर जनपद के दक्षिणी भाग में देवगढ़ से लेकर मदनपुर तक यह पहाड़ी भाग विस्तृत है। यहां के ग्रेनाइट एवं दुधिया पत्थरों के ऊँचे पर्वत की एक श्रृंखला है। इसमें देवगढ़, धौर्रा, दुधई, बालाबेहट, भरतपुर कस्बे हैं।[2]

सेटिलमेन्ट आफिसर ए. डब्लू. पिम ने 1903 ई. में (1891 ई. में ललितपुर जनपद का झांसी जनपद में विलय के बाद) झांसी जनपद तथा ललितपुर सब डिवीजन की मिट्टी का वर्गीकरण निम्न प्रकार से किया था।[3]

---

1. सोयल ऑफ इण्डिया, लेखक – राय चौधरी, पृष्ठ 331 – 32
2. स्टेटिस्टिकल डेस्क्रिप्टिव एण्ड हिस्टारिकल एकाउण्ट ऑफ एन. डब्लू प्राविन्सेज ऑफ इण्डिया भाग – 1, लेखक – ई. टी. एटकिन्सन, पृष्ठ – 3-4
3. फाइनल सेटिलमेन्ट रिपोर्ट आन दि डिवीजन ऑफ दि झांसी दिस्ट्रिक्ट इनक्लूडिंग दि ललितपुर सब डिवीजन, इलाहाबाद, 1907, ए. डब्लू पिम, पृष्ठ 5

मिट्टी का वर्गीकरण

झांसी स्थानीय			ललितपुर सब डिवीजन		
मिट्टी का का वर्ग	क्षेत्र हे0	कुल जोते हुये क्षेत्र का प्रतिशत	मिट्टी का वर्ग	क्षेत्र हे0	कुल जोते हुये क्षेत्र का [illegible]तिशत
मार	118718	28.17	तरेता	8813	2.93
काबर	108052	25.64	मोती	72329	24.06
पड़वा	83206	19.74	दुमट	108515	36.11
राक्ड मोटी	39750	09.43	पतरी	103914	34.57
राक्ड पतरी	68455	16.24	तारी (एक फसली)	3321	1.10
तारी	2911	0.69	तारी (दो फसली)	2416	0.80
कच्छार	371	0.09	ड्राई (दो फसली)	1283	0.43
योग	4,21463	100.00	योग	3,00591	100.00

ललितपुर जनपद में मुख्यतः दो प्रकार की मिट्टी पायी जाती है।[1]

1. काली मिट्टी 2. लाल मिट्टी

1892 ई0 के सेटिलमेन्ट रिपोर्ट के अनुसार ललितपुर जनपद में दो तरह की मिट्टी का वर्णन किया गया है पहली उपजाऊ मिट्टी एवं दूसरी बंजर या बेकार मिट्टी। उपजाऊ किस्म की मिट्टियों में मार, काबर, पड़वा एवं तारी मिट्टियाँ तथा बंजर या बेकार किस्म में रांकड़ मिट्टी बतायी गयी थी।[2]

---

1. सोयल ऑफ इण्डिया, लेखक - राय चौधरी, पृष्ठ 331 - 32
2. (1) द्वितीय सेटिलमेन्ट रिपोर्ट–1892, इम्फे और मेस्टन
   (2) झांसी गजेटियर - ई. वी. जोशी - 1965, पृष्ठ - 96–98

जनपद ललितपुर के तालबेहट, जखौरा विकास खण्डों की भूमि रांकड़ एवं पड़वा किस्म की है, जो कम उपजाऊ है।[1] जबकि वार विकास खण्ड की भूमि इन दोनों विकास खण्डों की अपेक्षाकृत अधिक उपजाऊ है तथा बिरधा महरौनी और मड़ावरा विकास खण्ड की भूमि अधिक उपजाऊ है।[2]

जल-वायु

जनपद ललितपुर दक्षिण के पठारी भाग में स्थित होने[3] के कारण यहां की जल-वायु प्रदेश के अन्य जनपदों की तुलना में काफी भिन्न है। यहां की जल-वायु गर्म, हल्की गर्मी और तेज सर्दी के रूप में पूरे वर्ष में पायी जाती है। वर्ष के तीन माह दिसम्बर से फरवरी तक तेज सर्दी होती है। मार्च से मध्य जून तक तेज गर्मी तथा मध्य जून से मानसून सीजन या वर्षा प्रारम्भ होती है। जो अक्टूबर-नवम्बर तक चलती हैं।[4] यहां का अधिकतम तापमान 47.3सेंटीग्रेट रिकार्ट किया गया।[5] 1986 ई0 के आकड़ों अनुसार वास्तविक वर्षा 673 मिलीमीटर रही[6], तथा 1996 ई0 के अनुसार औसत मानसूनी वर्षा 822 मिलीमीटर रही।[7]

क्षेत्रफल

जनपद ललितपुर का क्षेत्रफल 1872 ई. के सर्वेक्षण के अनुसार 1947 वर्गमील था। उस समय ललितपुर का क्षेत्रफल निम्नानुसार दर्शाया गया।[8]

---

1. अनुक्रमणिका 1996-97, प्रकाशक जिला सूचना कार्यालय, ललितपुर, पृष्ठ 11
2. अनुक्रमणिका 1996-97, प्रकाशक जिला सूचना कार्यालय, ललितपुर, पृष्ठ 11
3. अनुक्रमणिका 1988, प्रकाशक जिला सूचना कार्यालय, ललितपुर, पृष्ठ 4
4. झांसी गजेटियर 1965, ई. बी. जोशी, पृष्ठ - 9
5. अनुक्रमणिका 1996-97 प्रकाशक जिला सूचना कार्यालय, ललितपुर, पृष्ठ 11
6. अनुक्रमणिका 1988 प्रकाशक जिला सूचना कार्यालय, ललितपुर, पृष्ठ 4
7. अनुक्रमणिका 1996-97 प्रकाशक जिला सूचना कार्यालय, ललितपुर, पृष्ठ 11
8. स्टेटिरिटकल डेस्क्रिप्टिव एण्ड हिस्टारिकल एकाउण्ट ऑफ एन. डब्लू प्राविन्सेज आफ भाग-एक लेखक - ई. टी. एटकिन्सन, पृष्ठ 304-305

तहसील	परगना	क्षेत्रफल वर्गमील,
ललितपुर	तालबेहट	283
	बांसी	149
	ललितपुर	438
	बालाबेहट	190
महरौनी	बानपुर	329
	महरौनी	153
	मड़ावरा	405
कुल क्षेत्रफल	–	1947 वर्गमील

1951 ई. में[1] जनपद ललितपुर का भौगोलिक क्षेत्रफल 1095 वर्गमील

1961 ई. में[2] जनपद ललितपुर का भौगोलिक क्षेत्रफल 1163.2 वर्गमील

1981 ई. में[3] जनपद ललितपुर का भौगोलिक क्षेत्रफल 5039 वर्गकिलोमीटर

1998 ई. में[4] जनपद ललितपुर का भौगोलिक क्षेत्रफल 5043 वर्गकिलोमीटर या 506953 हैक्टेयर

---

1. झांसी गजेटियर – ई. वी. जोशी, 1965, पृष्ठ – 367
2. झांसी गजेटियर – ई. वी. जोशी, 1965, पृष्ठ – 367
3. अनुक्रमणिका 1988, प्रकाशक जिला सूचना कार्यालय, ललितपुर, पृष्ठ 4
4. ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका 1998, सम्पादक – संतोष शर्मा, पृष्ठ 8

जनसंख्या

जनपद ललितपुर की जनसंख्या 1865 ई0[1] में 2,48,146 थी। अकाल एवं महामारी के कारण यहां की जनसंख्या 1892 ई0[2] में कम होकर 2,12,623 रह गयी थी। 1941 ई0[3] में ललितपुर सब डिवीजन की जनसंख्या 1,78,586 तथा 1951 में[4] 1,87,061 थी एवं 1961 ई0[5] में 2,21,625 थी। 1971 ई0[6] की जनगणना अनुसार ललितपुर जनपद की जनसंख्या 4,36,920 थी। 1981 ई0[7] की जनगणना के अनुसार यहां की कुल जनसंख्या 5,77,648 थी। जिनमें से 3,10,854 पुरूष तथा 2,66,794 स्त्रियां थी। 1991 ई0[8] की जनगणना के अनुसार जनपद की कुल जनसंख्या 7,52,343 है।

देश को आजादी मिलने के बाद आबादी तीव्र गति से वड़ी फिर भी आजादी के आन्दोलनों के समय ललितपुर सब डिवीजन में जलूसों एवं पिरभात फेरी के समय सड़कें व गलियां भर जाती थी।[9]

---

1. स्टेटिस्टिकल डेस्क्रिप्टिव एण्ड हिस्टारिकल एकाउण्ट ऑफ एन. डब्लू प्राविन्सेज आफ भाग-एक लेखक - ई. टी. एटकिन्सन, पृष्ठ 304-305
2. स्टेटिस्टिकल डेस्क्रिप्टिव एण्ड हिस्टारिकल एकाउण्ट ऑफ एन. डब्लू प्राविन्सेज आफ भाग-एक लेखक - ई. टी. एटकिन्सन, पृष्ठ 304-305
3. झांसी गजेटियर - ई. वी. जोशी - 1965, पृष्ठ - 367
4. झांसी गजेटियर - ई. वी. जोशी - 1965, पृष्ठ - 367
5. झांसी गजेटियर - ई. वी. जोशी - 1965, पृष्ठ - 367
6. प्रगति के पथ पर अग्रसर ललितपुर 1986, जिला सूचना विभाग, ललितपुर, पृष्ठ-3
7. प्रगति के पथ पर अग्रसर ललितपुर 1986 ,जिला सूचना विभाग, ललितपुर, पृष्ठ-3
8. (1) अनुक्रमणिका 1996-97 प्रकाशक जिला सूचना कार्यालय, ललितपुर, पृष्ठ 34
   (2) ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका 1998, सम्पादक - संतोष शर्मा, पृष्ठ 8 लेख - जनपद ललितपुर, लेखक - नितिन रमेश गोकर्ण (IAS) जिलाधिकारी, ललितपुर
9. व्यक्तिगत साक्षत्कार - स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पं. श्री बृजनन्दन जी किलेदार

३. संक्षिप्त ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
(प्रारम्भ से १८५७ ई० तक)

जनपद ललितपुर वर्तमान में जिस भूभाग में स्थित है उसे बुन्देलखण्ड कहा जाता है, परन्तु बुन्देलखण्ड शब्द का प्रयोग इस भू भाग के लिये सन् 1335 - 40 ई0 से प्रारम्भ हुआ जब इस भू-भाग पर बुन्देला सरदारों का आगमन हुआ।[1] इस भू भाग के अन्य अनेक नाम विभिन्न शासकों के शासन कालों से प्राप्त होते हैं, जैसे चेदि महाजनपद, जुझौति, जैजाक भुक्ति, विन्ध्येलखण्ड आदि।[2]

ललितपुर जनपद के सम्पूर्ण भू भाग पर दृष्टि डालने पर अनेकों शासकों के भवन, अभिलेख तथा उनकी राज्य श्री के भग्नावशेष स्थान - स्थान पर प्राप्त होते हैं। जिन शासकों ने इस भू - भाग पर शासन किया है, उनमें गुप्त, कलचुरि, चन्देल, मुस्लिम एवं बुन्देला थे।[3]

1858 ई0 में इस भू - भाग पर ब्रिटिश सरकार का अधिकार हो गया था।[4] जो 1947 ई0 तक रहा।

विभिन्न कालों में ललितपुर जनपद की स्थिति निम्न प्रकार है।

प्रागैतिहासिक काल : ललितपुर जनपद का इतिहास अति प्राचीन है। यहां प्रागैतिहासिक काल के उपकरण प्राप्त हुये हैं। इस उपकरणों में प्रमुखतया हैंडएक्स एवं क्लीवर्स उपलब्ध हुये हैं।[5]

---

1. चन्देल और उनका राजत्व काल - केशवचन्द्र मिश्रा, पृष्ठ - 3
2. बुन्देलखण्ड का पुरातत्व - डॉ0 एस0 डी0 त्रिवेटी, पृष्ठ - 1
3. इण्डियन एण्टीकवरी (1908) भाग - 37, जे0 ए0 एस0 वर्मिस, पृष्ठ - 130
4. झांसी गजेटियर 1965 - ई0 वी0 जोशी, पृष्ठ 60 - 61
5. (1) एच. डी.संकालिया, प्री हिस्ट्री एण्ड प्रोटोहिस्ट्री इन इण्डिया एण्ड पाकिस्तान (1961) पृष्ठ 58, तथा इण्डियन आर्कियोलोजी (1956-57) पृष्ठ - 79
   (2) ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका 1998
   लेख - ललितपुर जनपद का प्रचीन इतिहास - प्रो0 बिहारी लाल दवेले, पृष्ठ 2

यह औजार सरिताओं के किनारों आज भी प्राप्त हैं, ललितपुर नगर के पश्चिमोत्तर सीमान्त पर बयाना नाला में ये औजार अब भी मिलते हैं।[1]

पं. के. भुजवली शास्त्री ने मेरी देवगढ यात्रा निबन्ध में आदिम मानव द्वारा बनाये गये चित्र विद्यमान होने की बात लिखी है।[2]

यहां कि आदिम प्रागैतिहासिक जातियों में भील, कोल, रावत-सहरिया, गोंड़, भार व बंगर आदि थे, जो आज भी वन्य प्रदेशों व ग्रामों में रहते हैं।

अतः पुरातन काल में इस जनपद में हैंडएक्स कच्चर रही है।

<u>वैदिक काल से महाकाव्य काल तक</u>

आत्यंतिक पुरातन आर्य जन भी इस जनपद से जुड़े हुये थे। जनपद संप्रति बुन्देलखण्ड ही कहलाता था, यहां का प्रारंभिक राजा कसुचैद्य (महाभारत का वसु) था। ऋग्वेद में (VIII - 537) यह राजा दान स्तुति में अपनी उदारता के हेतु प्रसिद्ध था।[3]

बुन्देलखण्ड में यह जनश्रुति प्रचलित है कि यह ऋषि मुनियों का केन्द्र रही है, इसी भू-भाग में ललितपुर जनपद स्थित है। इस जनश्रुति को ललितपुर के कवि श्री सीताराम चतुर्वेदी जी ने निम्न पंक्तियों में सजोया है।

ये तपोभूमि ऋषि मुनिया की, ये केन्द्र विन्दु ज्ञानार्जन का।
ये यजुर्होति वैदिक युग का, नव कर्मकाण्ड के सर्जन का।।
वैराग्य साधना के उत्सुक, निज धूनी यही रमाते हैं।
आत्मा की शान्ति मुक्ति मन की, निष्काम भावना पाते हैं।।[4]

---

1. ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका 1998, पृष्ठ - 21
2. दिगम्बर जैन सिद्धान्त भास्कार किरण दो, भाग - 8, 1941 ई0 में आरा से प्रकाशित मेरी देवगढ़ यात्रा निबन्ध - पं. के. भुजवली शास्त्री, पृष्ठ - 67
3. (1) बीमस् जांन (एडि0), मेमासर्य आन हिस्ट्री, फोक लोर एंमै डिस्ट्रीव्यूशन आफ दि रेसंज आफ नार्थ वेस्टर्न प्राविन्स आफ इंडिया वालु, पृष्ठ - 33
   (2) ललितपुर स्वर्ण जयंतीं स्मारिका 1998,
   लेख - ललितपुर जनपद का प्राचीन इतिहास - प्रो0 विहारीलाल बबेले, पृष्ठ - 21
4. जय बुन्देलखण्ड - सीताराम चतुर्वेदी - 1980, पृष्ठ - 15

पुराणों के अनुसार इस जनपद पर चंद्रवंशी पुरूरवा ऐल राज्य करता था। उसका प्रपौत्र ययाति एक महान विजेता था। उसने मध्य प्रदेश (ललितपुर जनपद सहित) जीता था। तत्पश्चात उसका ज्येष्ठ पुत्र यदु, चम्बल, बेतवा एवं केन सरिताओं के क्षेत्र का राजा बना। ललितपुर जनपद उसके राज्यान्तर्गत था।[1] कालान्तर में यादव वंश के स्थान पर हैह्या वंश की राज्य शक्ति का आविर्भाव हुआ। फिर पुनः यादवों ने स्थापित होकर चेदि जनपद को स्थापित किया।

चेदियों व ललितपुर जनपद के नागरिकों ने महाभारत में पांडवों को समर्थन दिया था।[2] जनश्रुति है कि ललितपुर के मडावरा ब्लाक में पांडवों ने अज्ञात वास का कुछ समय बिताया इसके चिन्ह भी कुछ प्राप्त होते हैं। एवं ललितपुर नगर के पास गोविन्द सागर बाँध के नीचे सीतापाठ में सीता जी के पैरों के चिन्ह प्राप्त होते हैं। जिसके वारे में जनश्रुति है कि राम लक्ष्मण व सीता यहां से 14 वर्ष के वनसास के समय निकले थे। (रामायण काल में)

ब्लाक वार में ग्राम कठवर (भावनी) में लक्ष्मण धारा के नाम से प्रसिद्ध एक कुण्ड है जहां निरन्तर नीचे से पानी आता है और धारा का वेग कभी भी टूटता नही है, इसके वारे में जनश्रुति है कि वनवास के समय सीता जी को प्यास लगी तब लक्ष्मण ने वाण मार कर यहां पानी निकाला।[3] अतः यह जनपद वैदिक काल रामायण एवं महाभारत काल से भी जुड़ा रहा होगा।

<u>चेदि या चेति महा जनपद</u> – आधुनिक बुन्देलखण्ड के पूर्वो तथा उसके समीपवर्ती भागों में प्राचीन काल का चेदि महा जनपद स्थित था इसकी राजधानी सोत्थिवती थी। जिसकी पहचान महाभारत के शुकिन्तमती से की जाती है।[4]

---

1. (1) दि हिस्ट्री आफ कल्चर आफ इण्डियन पिर्वपिल भाग – I , पृष्ठ – 274
   (2) ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका 1998, पृष्ठ – 21
2. (1) दि वेदिक एज – पृष्ठ – 298
   (2) ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका 1998, पृष्ठ – 21
3. जनश्रुति – व्यक्तिगत साक्षात्कार – पं. रामसहाय (ग्राम – कठवर – भावनी)
4. प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति – डॉ. कृष्ण चन्द्र श्रीवास्तव (1991) प्रकाशक – यूनाइटेड बुक डिपो, इलाहाबाद, पृष्ठ – 98

महाभारत युग से लेकर गुप्तकाल तक इस भू-भाग को चेदि देश या चेदि राष्ट्र भी कहा गया है।[1] उस समय गंगा और नर्मदा नदी के बीच का क्षेत्र चेदि कहलाता था।[2]

ज्ञात होता है कि चेदि जनपद पर यादवों का राज्य था परन्तु कुरू वंश के वसु राजा ने इसे जीत लिया उसकी मृत्यु के पश्चात उसका राज्य पांच पुत्रों में विभक्त हुआ एवं चेदि जनपद बहुत से भाग सहित ललितपुर जनपद में प्रत्यग्रह का राज्य स्थापित हुआ। चंद्रावती या चंदेरी में जो कि ललितपुर जनपद से जुड़ा हुआ स्थल (पूर्व में 1860 ई0 से पहले ललितपुर चन्देरी में ही था) है। सुबाहु राजा के समय निषधराज नल की पट्टराज्ञी दमयन्ती ने दुःख के दिन यही व्यतीत किये थे। दमयन्ती का नैहर यही वताया जाता है।

कुछ पीढ़ियों बाद दमघोष राजा बना जिसका पुत्र शिशुपाल था तथा जिसको पांडवों ने इंद्रप्रस्थ में आयोजित राजसूर्य यज्ञ में आमंत्रित किया था। शिशुपाल ने अपने से अधिक श्री कृष्ण का सम्मान देखकर क्रोध प्रकट करते हुये उन्हें अपमानित किया था। अतः कृष्ण के द्वारा वहीं मारा गया था।[3] शिशुपाल की राजधानी-चन्देरी कही जाती है। उसके बाद उसका पुत्र धृष्टकेतु उत्तराधिकारी बना। वस्तुतः चेदि जनपद मध्य प्रदेश में अब स्थित था। इसके क्षत्रीय अमित वीर, भगवान श्री कृष्ण की राय से काम करते थे। कदाचित महाभारत के बाद चेदि वंश नंदों तक अपनी शक्ति कायम रखने में समर्थ थे।

महाभारत[4] के बाद उनका स्थान है हैह्यवंश ने या वीतिहोत्रों ने ले लिया था। जिनका पुराणों की सूची में उल्लेख है। वंशी परिवर्तन के साथ देश का नाम नहीं बदला था क्योंकि छठी सदी ई0 पू0 के महाजन पदों में वत्स के साथ चेदि का भी नाम प्राप्त है।

---

1. चन्देल और उनका राजत्वकाल - केशव चन्द्र मिश्रा, पृ0 - 4
2. भारतीय इतिहास कोष - सच्चिदानन्द भट्टाचार्य, पृ0 - 154
3. (1) दि वेदिक एज , पृष्ठ - 298
   (2) ललितपुर स्वर्ण - 1988
   लेख - ललितपुर जनपद का प्राचीन इतिहास - प्रो. - बिहारीलाल ववेले, पृ.-21
4. (1) पार्जीटर 950 ई0 पू0 (2) ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका - 1998 पृ.-21

अंगुत्तर निकाय में भी ये नाम प्राप्त होते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि वत्स के सतानीक के आधिपत्य में यह जनपद रहा है, लगभग छठी सदी ई0 पू0 के मध्य में अवन्ती नरेश प्रद्योत ने चेदि प्रदेश को अपने राज्य में समाहित कर लिया था।

नन्द काल - ई0 पू0 7 वीं शदी में जब मगध साम्राज्य की नीव पड़ी तब ललितपुर चेदि जनपद में ही था नन्द वंश के अधिकार में प्रायः सम्पूर्ण उत्तर भारत था।[1]

चौथी सदी ई0 पू0 महापद्मनन्द ने वीतिहोत्रों को समाप्त करके इस जनपद को मगध राज्य में मिला लिया था।[2]

मौर्य काल नंदों के पश्चात ललितपुर जनपद मौर्यो के अधिकार में आ चुका था। सम्राट अशोक के आधिपत्य का प्रमाण गुजर्रा (दतिया) नामक स्थान पर एक अभिलेख प्राप्त होने से होता है।[3] जो ललितपुर से लगभग 115 किलोमीटर दूर है, इसलिये हो सकता है कि ललितपुर मौर्यो के आधिपत्य में रहा हो। ललितपुर के देवगढ़ में भी एक शिला लेख प्राप्त हुआ जिसकी शैली और लिपि[4] अशोक के शिला प्रज्ञापनों से मिलती है।

चाणक्य ने सम्राट चन्द्रगुप्त को "दर्शाण" (बुन्देलखण्ड और बुन्देलखण्डियों का प्राचीन नाम) और यहां के लोगों को न छोड़ने में ही राजनैतिक बुद्धि मानी बताते हुए उन्हें दृष्टाश्चः पुष्टाश्चः कहा है।[5] इससे सहज ही अनुमान लगाया जा सकता की ललितपुर क्षेत्र मौर्य के भी अधीन रहा होगा।

---

1. (1) प्राचीन भारत-डॉ0 राजवर्ली पाण्डेय-1962 ई0 में वाराणसी से प्रकाशित, पृ0 110
   (2) इन एडवास्ट हिस्ट्री आफ इण्डिया - डॉ. आर. सी. मजूमदार, ए. डां,एस.सी., राय चौधरी - 1960 में लन्दन से प्रकाशित, पृष्ठ - 63
2. ललितपुर स्वर्ण जंयती स्मारिका - 1998, सम्पादक - संतोष शर्मा
   लेख - ललितपुर जनपद का प्राचीन इतिहास - प्रो. बिहारीलाल बबेले, पृष्ठ - 21
3. (1) प्राचीन भारत - डॉ. राधाकुमुद मुकर्जी - 1964 में दिल्ली से प्रकाशित, पृ0-62
   (2) मध्य प्रदेश का इतिहास व संस्कृति-सागर वि.वि. पुरातत्व पत्रिका-प्रो. कृष्णदत्त बाजपेयी, पृ- 80
4. ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका - 1998, सम्पादक - संतोष शर्मा
   लेख - ललितपुर जनपद का प्राचीन इतिहास - प्रो. बिहारीलाल बबेले, पृष्ठ - 21
5. जय बुन्देलखण्ड - सीताराम चतुर्वेदी - 1980, पृष्ठ - 15
   शीषर्क - बुन्देलभूमि के सम्बन्ध में - डॉ. वृन्दावन लाल वर्मा

<u>गुप्तवंश के उदय से पूर्व का काल</u> मौर्यो के पतन के बाद शुंगों के शासन काल नें उत्तर भारत का अधिकाशं हिस्सा पुष्यमित्र तथा उसके वंशजों के अधिकार में रहा।[1] पुराणों एवं हर्षचरित्र के अनुसार पुष्पमिश्र शुंग 184 ई0 पू0 में शासक बना।[2] शुंगों के आधिपत्य में ललितपुर जनपद भी था पुष्यमित्र शुंग का पुत्र अग्निमित्र इस प्रदेश का वायसराय था एवं विदिशा उसकी राजधानी थी। आंध्र के सातवाहनों ने शुंगों का तथा इसके बाद कण्वों को समाप्त कर दिया था।[3] प्रथम सदी ई0 में ललितपुर जनपद कुषाण शासन में रहा। कनिष्क प्रथम (78ई0 – 101 ई0) के समय में देवगढ़ व मथुरा के व्यापारिक एवं सांस्कृतिक सम्बन्ध थे।[4] इसके बाद का भारतीय इतिहास 'अंधकार युग' के नाम से कहा गया है। इस काल में अमोरो का आधिपत्य ललितपुर में स्थापित हुआ झांसी, महोली, मडवारा (अहिरवारा) में इन शासकों के भग्न अवशेष मिलते हैं।[5]

तालबेहट में एक नाला भी अहिरवारा के नाम से जाना जाता है।[6]

अमीरों के आस-पास नागों का भी प्रभाव यहां रहा। प्रयाग प्रशस्ति में इसका उल्लेख है।

तीसरी सदी ई0 में मध्य प्रदेश में वाकाटक वंश राज्य करने लगा था। पवरसेन प्रथम वाटाटक नरेश ने बुन्देलखण्ड में अपना आधिपत्य स्थापित किया था। तृतीय – चतुर्थ सदी में झांसी – ललितपुर जनपदों पर वाकाटक एवं पद्मावती के नाग वंश राज्य

---

1. (1) एन एडवांस्ट हिस्ट्री आफ इण्डियन- डॉ. आर.सी. मजूमदार,1960 में लन्दन से प्रकाशित, पृ0114
   (2) बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास – गोरेलाल तिवारी, पृष्ठ – 17
2. प्राचीन भारत का इतिहास – विद्याधर महाजन, 1991 ई0 में एस. चन्द एण्ड कम्पनी लि. रामनगर नई दिल्ली से प्रकाशित, पृष्ठ – 348
3. (1) झांसी गजेटियर – ई. वी. जोशी – 1965, पृष्ठ – 33
   (2) ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका – 1998, सम्पादक – संतोष शर्मा, पृष्ठ – 21 लेख – ललितपुर जनपद का प्राचीन इतिहास – प्रो. बिहारीलाल बबेले
4. (1) मेम्वायर्स आफ द ए. एस. आई., संख्या – 70 – माधवस्वरूप बत्स (द गुप्ता टेक्पल एट देवगढ़, पृष्ठ – 1)
   (2) ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका – 1998, सम्पादक – संतोष शर्मा, पृष्ठ – 21
5. चन्देल कालीन बुन्देलखण्ड का इतिहास- अ0 प्र0 पाण्डेय, पृष्ठ – 4
6. झांसी गजेटियर – ई. वी. जोशी – 1965, पृष्ठ – 21-22

कर रहे थे तथा कुछ भाग पर अमीर भी थे।[1] वाकाटक नरेश पृथ्वी वेण द्वितीय ने देश पर्यन्त अपने साम्राज्य का विस्तार किया था। व्याघ्रदेव ललितपुर जनपद का मांडलिक था।[2]

<u>गुप्त काल</u> चौथी शताब्दी के मध्य में समुद्रगुप्त ने अपने विजयाभियान के अन्तर्गत इस क्षेत्र को भी जीत लिया था। तत्पश्चात रामगुप्त, चंद्रगुप्त द्वितीय 'विक्रमादित्य' कुमार गुप्त, स्कन्दगुप्त आदि के प्रभाव में ललितपुर जनपद रहा।

चौथी शताब्दी से ही इस क्षेत्र पर गुप्त राज्य वंश की राज्य श्री का उदय हुआ। जो छठ्वीं शताब्दी तक चला था।[3] गुप्तों के शासन प्रबन्ध के आलेखों में इस भू-भाग को चेदि भुक्ति कहा गया है। 435 ई0 में घटोत्कच गुप्त ललितपुर - बीना के समीप ऐरण में वायसराय था तथा गोविन्द गुप्त ललितपुर जनपद का वायसराय था इसका उल्लेख देवगढ़ के गुप्त कालीन मंदिर में उपलब्ध होता है। कदाचित गोविन्द गुप्त ने ही दशावतार मंदिर का निर्माण कराया था।[4] गोविन्दगुप्त, कुमार गुप्त का छोटा भाई था। यहां सिद्ध की गुफा में भी एक गुप्तकालीन अभिलेख उत्कीर्ण है। नरसिंह गुप्त 'बालादित्य' के राजत्व काल में हूणों के आक्रमण के तहत 515 ई0 में चेदि प्रदेश बुन्देलखण्ड तक बढ़ आया था।[5] देवगढ़ प्राचीन समय में लुअच्छगिरि के नाम से जाना जाता था।[6]

<u>गुप्तों के पतन से हर्ष के उदय तक का काल</u> 533 ई0 में गुप्तों के पराभव के बाद मालवा के यशोवर्मन का राज्य इस जनपद में भी स्थापित हो गया था।[7] सातवीं सदी

---

1. (1) वही पृष्ठ - 2
   (2) पोलिटिकल हिस्ट्री आफ इण्डिया - डा. हेमचन्द्र राय चौधरी, पृ0 - 542
2. (1) वाकाटक राजवंश और उसके अभिलेख - मिराशी, पृष्ठ - 37
   (2) ललितपुर स्वर्ण जंयती स्मारिका - 1998, सम्पादक - संतोष शर्मा
   लेख - ललितपुर जनपद का प्राचीन इतिहास - प्रो. बिहारीलाल बबेले, पृष्ठ - 21
3. झांसी गजेटियर - ई. वी. जोशी - 1965, पृष्ठ - 21-22
4. (1) झांसी गजेटियर - ई. वी. जोशी - 1965, पृष्ठ - 22
   (2) ललितपुर स्वर्ण जंयती स्मारिका - 1998, सम्पादक - संतोष शर्मा
   लेख - ललितपुर जनपद का प्राचीन इतिहास - प्रो. बिहारीलाल बबेले
5. ललितपुर स्वर्ण जंयती स्मारिका - 1998, सम्पादक - संतोष शर्मा
   लेख - ललितपुर जनपद का प्राचीन इतिहास - प्रो. बिहारीलाल बबेले, पृष्ठ - 22
6. चन्देल और उनका राजत्वकाल - केशवचन्द्र मिश्रा, पृष्ठ - 29
7. (1) मंदसौर अभिलेख सिलेक्टड इन्स्क्रपसन्स भाग - एक, डी. सी. सरकार, पृ0 - 386
   (2) ललितपुर स्वर्ण जंयती स्मारिका - 1998, सम्पादक - संतोष शर्मा
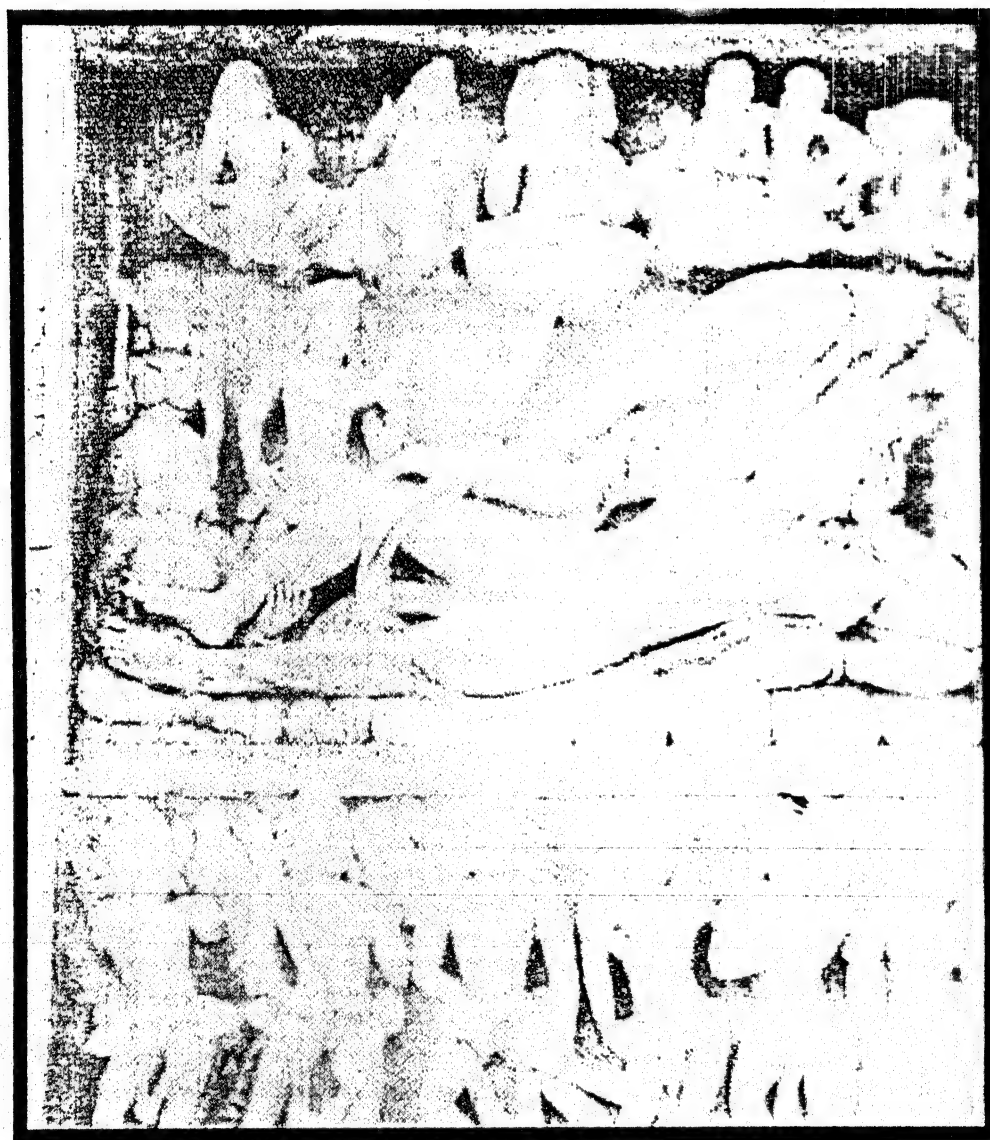
देवगढ का दशावतार मन्दिर (छटी शताब्दी)

के अर्द्ध भाग तक परिव्राजक महाराज हस्तिन यहां का शासक था।[1] यात्री हुएनसांग इस क्षेत्र में एक ब्राह्मण राजा का उल्लेख करता है।

वर्द्धन साम्राज्य से आयुध वंश तक डॉ.स्मिथ, नीहार, रंजन रे, डॉ. आर. सी. मजूमदार एवं डॉ. राधा कुमुद मुखर्जी तथा डॉ. बी. सी. पाण्डे के विवरण के अनुसार (नर्मदा तक) राजा हर्ष (606 ई. – 647 ई.) का राज्य इस जनपद में रहा है। ऐहोले के अभिलेख में उसे उत्तरापथनाथ कहा गया है। दक्षिणी सीमा नर्मदा तक थी।[2] हर्ष की मृत्यु के बाद यशोवर्मन (कन्नौज) ने इस प्रदेश पर अपना अधिकार जमा लिया था।[3] 840 ई0 के आसपास कश्मीर के मुक्तापीड़ ललितादित्य ने यशोवर्मन को पराजित करके इस प्रदेश पर अपना शासन स्थापित कर लिया।[4] परन्तु शीघ्र ही उसका शासन यहां समाप्त हो गया और कदाचित आयुध वंश ने अपनी सत्ता पर वह भी अधिक समय तक स्थिर न रह सके।[5]

गोड़ों का शासन गोंड़ यहां के प्राचीन निवासी हैं।[6] वे यहां के पहाड़ी एवं आदिवासी लोग हैं। गोंड़ शासकों का शासन क्षेत्र मालवा सूबा रहा है। धमोनी बालाबेहट, देवगढ़, बॉसी, दुधई आदि स्थानों पर गौड़ शासकों के शासन के भग्नावशेष प्राप्त होते हैं। गोंड़ शासकों का प्रमुख नगर हरीपुर जो बांसी परगना में है तथा दुधई उस मसय का प्रमुख नगर था।

गौड़ों का यहां आधिपत्य था। बेहट शब्द गौड़ों के दिये हुये हैं। जिसका अर्थ होता है ग्राम, ललितपुर के अन्तर्गत तालबेहट और बालाबेहट इसके प्रतीक हैं।[7]

---

1. ललितपुर स्वर्ण जंयती स्मारिका – 1998, सम्पादक – संतोष शर्मा
   लेख – ललितपुर जनपद का प्राचीन इतिहास – प्रो. बिहारीलाल बबेले, पृष्ठ – 22
2. (1) देवगढ़ की जैन कला – डॉ. भागचन्द्र जैन, पृष्ठ – 9
   (2) प्राचीन भारत – द. श. त्रिपाठी, पृ0 – 225
   (3) अर्ली हिस्ट्री आफ इण्डिया
   (4) इंण्डिन हिस्टोरिकल क्वार्टरली
   (5) ललितपुर स्वर्ण जंयती स्मारिका – 1998, पृ0 – 22
3. प्राचीन भारत – डॉ. राजवली पाण्डेय, पृ0 – 296
4. भारत का बृहत इतिहास – डॉ. आर. सी. मजूमदार, पृ0 – 176
5. देवगढ़ की जैन कला – डॉ. भागचन्द्र जैन, पृष्ठ – 9
6. झांसी गजेटियर – ई. वी. जोशी – 1965, पृष्ठ – 25
7. ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका – 1998, सम्पादक – संतोष शर्मा, पृष्ठ – 22
   लेख – ललितपुर जनपद का प्राचीन इतिहास – प्रो. बिहारीलाल बबेले

<u>गुर्जर प्रतिहार शासन</u> आठवीं सदी में गौड़ों के बाद जनपद ललितपुर में प्रतिहारों का राज्य स्थापित हुआ। गुर्जर प्रतिहार - शासन यहां देवगढ़ में बारहवे जैन मंदिर के अर्द्ध मण्डप में उत्कीर्ण वि. सं. 919 के अभिलेख से प्रमाणित है।[1] इस अभिलेख के अनुसार देवगढ़ और आस-पास के क्षेत्र पर भोजदेव प्रतिहार के महासामन्त विष्णुदेव का शासन था।[2] प्रारंभिक प्रतिहारों में वत्सराज और नागभट्ट द्वितीय का प्रभुत्व इस जनपद पर रहा है। नागभट्ट के राजत्वकाल में राष्ट्रकूट राजा गोविन्द तृतीय भोपाल-ललितपुर - झांसी से होता हुआ झांसी-ललितपुर के निकट लड़ा था, जिसमें नागभट्ट द्वितीय की पराजय हुयी थी। राष्ट्रकूट नरेश के कारण देवगढ़ का दुर्ग निर्मित तथा सुदृढ किया गया था।[3] तथा प्रान्त का मुख्यालय बनाया गया था, जिसके अन्तर्गत झांसी - ललितपुर जनपद भी थे।[4]

नागभट्ट द्वितीय के पौत्र महाराजाधिराज मिहिरभोज आदिवराह (836-62 ई0) के राज्य का यह स्थल अधिक महत्वपूर्ण था। विष्णु वर्मा या विष्णुराम के युग में कदाचित वाराह-देवायतन, देवगढ़ दुर्ग पहाड़ी पर बनाया गया। भोज का उत्तराधिकारी महेन्द्रपाल प्रथम (895-908 ई0) का इस जनपद पर आधिपत्य रहा। सीरोन खुर्द कलातीर्थ मे इस सन्दर्भ का एक अभिलेख उपलब्ध हुआ है। इस समय सीरोन मुख्यालय था, एवं उदाभट प्रतिपति था और यहाँ रहता था। प्रविहार वंशावली इसमें है। इसमें 903 ई0 से 968 ई0 तक की आठ तिथियां उत्कीर्ण हैं।[5] प्रतिहारों का पुरातत्व ललितपुर नगरी में बिखरा पड़ा है। अप्रैल 1998 में सहायक संभागीय परिवहन अधिकारी सुभाषचन्द्र कुशवाहा ने प्रतिहार शैली के अनेक पुरावशेष, जनपद के विकास खण्ड वार अंतर्गत ग्राम धनगोल (हथिनी टोर) दुनातर (ग्राम- कठवर के पास) चुनगी व चिगंलौआ आदि में मौजूद होना अपने शोध कार्य में दी।[6] इन स्थानों पर अनेक

---

1. (1) देवगढ़ में मन्दिर सं. 12 के अर्द्धमण्डप में दक्षिण-पूर्वी स्तम्भ पर उत्कीर्ण,
   (2) ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका - 1998, सम्पादक - संतोष शर्मा, पृ0 22
2. ललितपुर स्वर्ण जंयती स्मारिका - 1998, सम्पादक - संतोष शर्मा, पृ0 - 22
3. (1) दि ऐज आफ इम्पीरियल कन्नौज - डॉ. आर. सी. मजूमदार
   (2) ललितपुर स्वर्ण जंयती स्मारिका - 1998, पृ0 - 22
4. झांसी गजेटियर 1965, पृष्ठ - 26
5. (1) झांसी गजेटियर - 1909 ड्रेक ब्राकमैन, डी. एल. ए0, पृष्ठ - 317- 26
   (2) लालेतपुर स्वर्ण जंयती स्मारिका - 1998, पृ0- 22
6. दैनिक जागरण - झांसी, 16 अप्रैल - 1998
   शीर्षक - धनगोल सहित अनेक गांवों में प्रतिहार शैली के पुरावशेष मिले - शोध सुभाषचन्द्र कुशवाहा

विखरी हुयी मुर्तिया पड़ी है जिसकी गाथा प्रचलित जन श्रुतियों के साथ ग्रामीण निवासी भी सुनाते हैं धनगोल में स्थापित नृवाराह की मूर्ति मिहिर भोज आदिवराह के समय की हैं।[1] ऐसा प्रतीत होता है कि यह क्षेत्र प्रतिहार शासकों के आधीन रहा होगा। महेन्द्र पाल के बाद भोजदेव द्वितीय, महीपाल प्रथम (913-945 ई0) या क्षितिपाल (खजुराहो अभिलेख) के अधिकार में यह जनपद था। तत्पश्चात महीपाल द्वितीय (946-89 ई0) (प्रतापगढ़ अभिलेख) का इस जनपद पर राज्य रहा। फिर उसका पुत्र विनायक पाल (945 ई0) का उल्लेख खजुराहो अभिलेख में है।

"विनायकपाल देव पालयति वसुधाम"

तत्पश्चात ऐसा प्रतीत होता है कि इस जनपद एवं चेदि प्रदेश में चंदेल शक्ति का उदय हो चुका था।[2]

चंदेल काल — ललितपुर जनपद में चन्देल शक्ति गौड़ों को समाप्त करके विकसित हुयी थी।[3] परन्तु इनका प्रथम शासक और उसके उत्तराधिकारी प्रतिहारों के अन्तर्गत ही थे। नान्नुक (831-850 ई0) के बाद वाक्पति एवं जयशक्ति (जेजाक) शासक हुये। बुन्देलखण्ड को पहले जेजाक भुक्ति कहा गया है यह नाम चन्देल वंश के तृतीय शासक जयशक्ति (865 - 885 ई0) के नाम पर पड़ा था।[4]

जैजाख्यया अथ नृपतिः
सवभूव जैजाक भुकितः
पृर्थुइवयथा पृथिव्यामासीत।।[5]

तत्पश्चात विजयशक्ति एवं राहिल शासक हुये राहिल के बाद हर्ष (900 - 925 ई0) तक सर्वशक्तिमान राजा हुआ जिसके समय में राष्ट्रकुट इन्द्र तृतीय कन्नौज पर आक्रमण

---

1. व्यक्तिगत साक्षात्कार - धनगोल निवासी, प्रधानाध्यापक - नाथूराम मिश्रा।
2. (1) प्राचीन भारत - डा0 राजवली पाण्डे, पृष्ठ - 305
   (2) ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका - 1998, पृ0- 22
3. दि हिस्ट्री आफ चंदेलाज - नि. सा. बोस, पृष्ठ - 15
4. चन्देलाज आफ जैजाकभुक्ति - आर. के. दीक्षित, पृष्ठ - 28
5. महोबा शिलालेख, इपिग्राफिक इण्डिया भाग - एक, पृष्ठ - 220

करने भोपाल- ललितपुर- झांसी - कालपी मार्ग से आया था। हर्ष के बाद यशोवर्मन प्रतापी राजा हुआ।

यशोवर्मन ने अपनी सीमा उत्तर में यमुना तक वढ़ायी। यह जनपद उसके अधिकार में था।[1] परन्तु यशोवर्मन के बाद धंग (950 - 1002 ई0) चंदेलों में सर्वशक्तिशाली शासक था, जबलपुर व विदिशा उसके सीमान्त पर थे।[2] धंग ने प्रतिहारों के विरूद्ध स्वतंत्रता घोषित कर दी थी, तथा महाराजाधिराज का निरूद्ध धारण किया था। ललितपुर जनपद उसके अधिकार में ही था। घंग के अभिलेख ललितपुर के समीप दूधई कला तीर्थ में प्राप्त हुये हैं। अभिलेख में झांसी-ललितपुर को एक मण्डल के रूप में व्यक्त किया गया है। ये लेख दसवीं सदी के हैं।[3] अभिलेख वर्णन करते हैं कि देवलब्धि के पौत्र यशोवर्धन ने इस इलाके में मंदिर बनावाये थे तथा देवलब्धि के पिता कृष्णपाल को एक शहर (कदाचित दूधई) का 1000 ई0 में संस्थापक बतलाते हैं। कृष्णपाल घंग का अनुज था, देवलब्धि कृष्णपाल के बाद यहां का शासक बनता है ये दोनों यहां के महासामन्त थे। दूधई, झांसी - ललितपुर मण्डल का मुख्यालय था।[4]

इसके तीस वर्ष बाद के काल में अलबरूनी दूधई को एक बड़ा नगर बतलाता है। जिससे प्रतीत यह होता है कि ग्यारहवीं सदी में यह एक महत्वपूर्ण स्थान था।[5]

विद्याधर एक महान राजा था। उसकी उत्तरी भारत के शक्तिशाली शासकों में गणना थी। उसके समय में महमूद गजनवी के आक्रमण हो रहे थे। पंजाब की हिन्दूशाही इस आक्रमण से आतंकित एवं संत्रस्त हो चुकी थी। बुन्देलखण्ड (जेजाक भुक्ति) एवं इस जनपद की स्थिति चंदल नरेश के कारण सुरक्षित थी। 1019 ई0 में महमूद गजनवी पंजाब को रौंदता हुआ झांसी- ललितपुर जनपद से होता हुआ, ग्वालियर के कच्छपघातों से सन्धि करता हुआ

---

1. (1) दि हिस्ट्री आफ कन्नौज - डॉ. रमाशंकर त्रिपाठी, पृ0 - 272
   (2) ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका - 1998, पृ0 - 22
   लेख - ललितपुर जनपद का प्राचीन इतिहास - प्रो. बिहारीलाल बबेले
2. (1) दि हिस्ट्री आफ चंदेलाज - नि. सा. बोस - पृष्ठ - 42 - 43
   (2) ललितपुर स्वर्ण जंयती स्मारिका - 1998, पृ0- 22
3. ललितपुर स्वर्ण जंयती स्मारिका - 1998, पृ0- 22
4. आर्कियोलाजिकल सर्वे आफ इण्डिया - भाग - 1, ए0 कंनिधम, पृष्ठ - 95
5. (1) एन्टीक्वटीज आफ ललितपुर पृष्ठ - 1
   (2) इनसाइक्लोपीडिया भाग - 1, सचाऊ ई0, पृष्ठ - 202

कन्नौज आ पहुँचा। उसने धर्मरक्षक, प्रजापालक चन्देल राज विद्याधर से भी सिन्ध की।[1] विद्याधर भी ललितपुर जनपद को महत्वपूर्ण मानता था। उसने मदनपुर में एक शिव मन्दि बनवाया था। स्तम्भ पर उसका नाम भी उत्कीर्ण है।[2] 1030 ई0 में विजयपाल व 1050-1060 ई0 में देववर्मन का कलचुरि नरेश कर्णे देव से सामना हुआ था। सामरिक दृष्टि से देवगढ़ - दूधई इसके हेतु महत्वपूर्ण थे पर वह हार गया था।[3] कदाचित कलचुरियों ने इस जनपद पर अल्प समय के लिये आधिपत्य जमाया, पर कीर्तिवर्मन (1060-1100 ई0) ने कलचुरियों को पराजित करके अपने प्रदेशों को वापिस ले लिया था।

कीर्तिवर्मन का अभिलेख संवत 1154 (1098 ई0) का देवगढ़ में राजघाटी में उत्कीर्ण है कीर्तिवर्मन का एक सुयोग्य मंत्री वत्सराज था। उसने कीर्तिदुर्ग और वत्सराज घाटी का निर्माण कराया था। ऐसा प्रतीत होता है कि दुर्ग की उसने मरम्मत करवायी थी।[4] उसका दक्षिण में बेतवा तक राज्य था। तत्पश्चात सल्लक्षण (1100-1115 ई0) ने कलचुरियों एवं मालवा के परमारों को हराया था। देवगढ़ उसका सामरिक आधार था। उसके बाद जयवर्मन (1115 - 20 ई0) पृथ्वीवर्मन (1120-29 ई0) और मदनवर्मन (1129-63 ई0) चन्देल राजा हुये। मदनवर्मन ने इस बीच खोयी हुई, लक्ष्मी को प्राप्त किया। ललितपुर जनपद में उसने मदनपुर बसाया था। उसने यहां एक सरोवर एवं मन्दिर बनवाया। इस समय देवगढ़ - चांदपुर में उदयपाल उसका महासामन्त रहता था।[5] वीर चन्देल नरेश मदनवर्मन के बाद परमर्दिदेव (परमाल) (1165 - 1202 ई0) में प्रजापालक शासक हुआ। उसके आल्हा और ऊदल दो महासामन्त थे। जिनकी वीरता जगनिक के 'अल्हा' में दी गयी है। परमाल का शत्रु पृथ्वीराज चौहान तृतीय था। दोनों में संघर्ष हुआ, चौहान राजा विजय हुआ और जेजाक - भुक्ति का बहुत सा भाग अधिकृत किया। पृथ्वीराज चौहान ने प्रतिनिधि के रूप में शासन करने के लिए पज्जुनराय को नियुक्त किया।[6]

---

1. (1) आर्कियोलाजिकल सर्वे आफ इण्डिया - भाग - 16, पृष्ठ - 23-24
   (2) दि हिस्ट्री आफ चन्देललाज -, मि. सा. बोस, पृष्ठ - 5-9
   (3) ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका - 1998, पृष्ठ - 22
2. ललितपुर स्वर्ण जंयती स्मारिका - 1998, पृ0- 22
3. आर्कियोलाजिकल सर्वे आफ इण्डिया - भाग - 2, पृष्ठ - 453
4. (1) दि स्ट्रगल फार एम्पायर, पृष्ठ - 58
   (2) ललितपुर स्वर्ण जंयती स्मारिका - 1998, पृ0- 23
5. (1) झांसी गजेटियर - ई. वी. जोशी - 1965, पृष्ठ - 33
   (2) ललितपुर स्वर्ण जंयती स्मारिका - 1998, पृ0- 23
6. पुरातात्विक सवेक्षिण रिपोर्ट (1988-1989) सम्पादक - डा. राकेश तिवारी लेखक - डॉ. अम्बिका प्रसाद सिंह, पृष्ठ - 14

पृथ्वीराज चौहान के तीन अभिलेख मदनपुर के शैवमन्दिर में प्राप्त होते हैं।[1]

पृथ्वीराज चौहान के मदनपुर शिलालेख से प्रकट होता है कि 12 वीं शताब्दी तक यह भू-भाग जेजाकभुक्ति के नाम से जाना जाता था तथा ललितपुर जनपद पर चौहान राजा का आधिपत्य था।

ओं अर्न्नोराजस्य पौत्रेण श्री सोमेश्वर सुनुना।
जेजाकभुक्ति देशायं पृथ्वी राजेना लुनितः।।[2] (सं. 1239)

ऐसा प्रतीत होता है कि कुछ समय के लिये महोबा व ललितपुर जनपद के कुछ भाग पर चौहानों का आधिपत्य हुआ, पर परमाल ने उन्हें वापिस ले लिया था। परमाल के बाद यह जनपद त्रैलोक्यवर्मन का रहा। कुछ काल बाद उत्तरी भारत में संकट के बादल चौहान व गहड़वाल वंश पर मंडराने लगे मुहम्मद गौरी के आक्रमणों की वजह से तत्पश्चात उसके गुलाम कुतबुद्धीन ऐबक[3] के आक्रमणों से उक्त वंशों का पतन हो गया। तब इसके बाद चन्देल वंश की स्थिति संकटपूर्ण हो गयी कुतबुद्धीन ने आक्रमण किया। आक्रमण का समय 1202 ई0 है फरिश्ता[4] ने भी इस तथ्य का उल्लेख किया है। बहुत दिवसों तक चन्देल राजा परमार्दि देव (परमाली) ने अमित धैर्य और वीरता से कुतबुद्धीन ऐवक के आक्रमण का सामना किया, किन्तु अन्ततः उसने आत्मसमपर्ण कर दिया। इसी समय उसकी मृत्यु हो गयी। उसका दीवान अजयदेव युद्ध जोरी करने के पक्ष में था, उसने हथियार नहीं डाले और लड़ता रहा पर कालंजर किलेमें जल की कमी ने उसे भी आत्मसमर्पण के लिए नैतिक रूप से बाध्य कर दिया। कालंजर पर कुतबुद्धीन का अधिकार हो गया।[5] पृथ्वीराज चौहान (1177-1192ई0) एवं कुतबुउद्धीन ऐबक (1202-1210 ई0) के आक्रमणों के बाद इस भू-भाग पर से चन्देल शासन लगभग लुप्त हो गया था। परन्तु 1203 ई0 में यह भू-भाग एक बार फिर चन्देल शासकों के अधीन हो गया था। सवंत 1261 (1204

---

1. झांसी गजेटियर - ई. वी. जोशी - 1965, पृष्ठ - 33
2. आर्कियोलाजिकल सर्वे आफ इण्डिया - भाग - 10, ए0 कनिधंम, पृष्ठ - 98-99
3. (1) झांसी गजेटियर - ई. वी. जोशी - 1965, पृष्ठ - 35-36
   (2) प्राचीन भारत का इतिहास, डा. वी. सी. पाण्डेय भाग - 4, पृ0- 17
4. झांसी गजेटियर - ई. वी. जोशी - 1965, पृष्ठ - 36
5. (1) प्राचीन भारत का इतिहास, डा. वी. सी. पाण्डेय भाग - 4, पृ0- 18
   (2) ललितपुर स्वर्ण जंयती स्मारिका - 1998, पृ0- 13

ई0) का एक ताम्रपत्र गारा गांव जिला छतरपुर में प्राप्त हुआ जिसमें ललितपुर जनपद के वेदवारा गांव का वर्णन है, यह ताम्रपत्र चन्देल शासक त्रिलोकवर्मन का है।[1]

ललितपुर जनपद के टेहरी ग्राम में मिले अभिलेख से त्रिलोक वर्मन की शासन सीमा में टेहरी (वर्तमान – टेहानी वानपुर) सिरोज खुर्द, वेदवारा और मड़ावरा का वर्णन है।[2]

चन्देल कालीन अथवा चन्देल शासकों ने स्थान-स्थान पर जल एवं सिंचाई साधन के लिए कुएं एवं सरोवर बनयाये जो उस समय से वर्तमान तक जलपूर्ति के काम आते हैं।[3] इसके अतिरिक्त धनगोल, तालबेहट, टेंगा, हरगिरी, किरोंश, लिवोरा, पाली, बालाबेहट, सिरीन खुर्द, बानपुर, नरहट, दौलतपुर, गुरहा बुजुर्ग, सिरांज एवं सिनोरई में चन्देल कालीन स्थापत्य कला, मूर्तिकला एवं विश्राम गृह तथा जनपद के समस्त परगनों में सिंचाई के साधन प्राप्त होते हैं।[4]

सल्तनत काल (1000 - 1526 ई0)

इस भू-भाग में अथवा बुन्देलखण्ड में मुस्लिम शासकों का सर्व प्रथम प्रवेश 1019 ई0 में चन्देल शासक विद्याधर के समय में हुआ।[5] सुल्तान महमूद गजनवी ने इस राज्य पर आक्रमण किया था। दुवारा शक्ति जुटाकर महमूद ने 1022 ई0 में ग्वालियर होता हुआ कालिंजर पर आक्रमण किया परन्तु दोनों में संधि द्वारा मित्रता हो गयी।[6] बाद में 1202 ई0 में कुतबुउद्दीन ऐबक ने बुन्देलखण्ड पर आक्रमण कर चन्देल सत्ता को लगभग समाप्त कर, इस भू-भाग पर अपना अधिकार कर लिया था।[7] परन्तु 1204 ई0 से 1290 ई0 तक चन्देल शासक त्रिलोकवर्मन (1204-1242 ई0) वीरवर्मन (1242-1286 ई0) एवं भोजवर्मन (1286-1290 ई0) अपने शासन का अस्तित्व कायम रखने के लिये मुस्लिम शासकों से बराबर संघर्ष करते

---

1. चन्देलाज आफ जेजाकभुक्ति - आर. के. दीक्षित, पृष्ठ - 156-57
2. चन्देलाज आफ जेजाकभुक्ति - आर. के. दीक्षित, पृष्ठ - 157
3. (1) आर्कियोलाजिकल सर्वे आफ इण्डिया - भाग - 10, ए0 कनिंघम, पृष्ठ - 103
   (2) चन्देल कालीन बुन्देलखण्ड का इतिहास, डॉ. अयोध्याप्रसाद पाण्डेय, पृष्ठ - 78
4. चन्देल और उनका राजत्वकाल, केशवचन्द्र मिश्रा, पृष्ठ - 14
5. प्राचीन भारत का इतिहास एवं संस्कृति - के0 सी0 श्रीवास्तव, पृष्ठ 604
6. प्राचीन भारत का इतिहास एवं संस्कृति - के0 सी0 श्रीवास्तव, पृष्ठ 604
7. चन्देलाज आफ जेजाकभुक्ति - आर. के. दीक्षित, पृष्ठ - 156-57

रहे।[1] 1291-92 ई0 में इस जनपद का अधिकांश भाग मालवा सूबे (प्रान्त) के अन्तर्गत आता था। जिसका शासक हरनन्द था।[2] ऐसा प्रतीत होता है कि यह हरनव्द शासक गौड़ राजा था। इस समय खिलजी राज्य वंश की नींव पड़ चुकी थी तथा अलाउद्दीन खिलजी (1296-1316 ई0) का शासन था। अलाउद्दीन खिलजी ने इस भू-भाग को जीतने के लिए अपने गवर्नर आईन - उल्ल - मुल्क मुलतानी को एक विशाल सेना के साथ मालवा भेजा था। दिसम्वर 1305 ई0 को एक भयंकर युद्ध के बाद यह भू-भाग मालवा सूबे के अन्तर्गत जो कि उज्जैन से चन्देरी तक फैला हुआ था, खिलजी शासन के आधीन हो गया एवं मलिक तैमूर को (मुक्ता) प्रान्तीय गवर्नर नियुक्त किया।[3]

मुहम्मद बिन तुगलक (1325-51ई0) के काल में समस्त बुन्देलखण्ड भू-भाग, दिल्ली सुल्तान के अधीन था। ग्वालियर, कालपी और चन्देरी इस प्रान्त में आता था।[4]

इस समय प्रसिद्ध इतिहासकार इब्नेबतूता इस प्रान्त से 1335 ई0 में चन्देरी होकर गुजरा था। इसने इस विशाल प्रान्त का मुख्यालय चन्देरी बतलाया था। उसने समस्त प्रान्त, का वातावरण शान्तिपूर्ण बतलाया एवं इस समय सत्ता को लगभग समाप्त कर, इस भू-भाग पर अपना अधिकार कर लिया था।[5] परन्तु 1204 ई0 से 1290 ई0 तक चन्देल शासक त्रिलोकवर्मन (1204-1242 ई0) वीरवर्मन (1242-1286 ई0) एवं भोजवर्मन (1286-1290 ई0) अपने शासन का अस्तित्व कायम रखने के लिये मुस्लिम शासकों से बराबर संघर्ष करते रहे।[6] 1291-92 ई0 में इस जनपद का अधिकांश भाग मालवा सूबे (प्रान्त) के अन्तर्गत आता था। जिसका शासक हरचन्द था।[7] ऐसा प्रतीत होता है कि यह हरनव्द शासक गौड़ राजा था। इस समय खिलजी राज्य वंश की नींव पड़ चुकी थी तथा अलाउद्दीन खिलजी (1296-1216 ई0) का शासन था। अलाउद्दीन खिलजी ने इस भू-भाग को जीतने के लिए अपने गवर्नर आईन - उलल - मुल्क मुलतानी को एक विशाल सेना के साथ मालवा भेजा

---

1. (1) आर्कियोलाजिकल सर्वे आफ इण्डिया - भाग - 10, ए0 कनिधंम, पृष्ठ - 103
   (2) चन्देल कालीन बुन्देलखण्ड का इतिहास, डॉ. अयोध्याप्रसाद पाण्डेय, पृष्ठ - 78
2. चन्देल और उनका राजत्वकाल, केशवचन्द्र मिश्रा, पृष्ठ - 14
3. प्राचीन भारत का इतिहास एवं संस्कृति - के0 सी0 श्रीवास्तव, पृष्ठ 604
4. प्राचीन भारत का इतिहास एवं संस्कृति - के0 सी0 श्रीवास्तव, पृष्ठ 604
5. (1) हिस्ट्री आफ चन्देलाज - नि. सा. बोस, पृष्ठ - 107-108
   (2) चन्देल कालीन बुन्देलखण्ड का इतिहास, डॉ. अयोध्याप्रसाद पाण्डेय, पृष्ठ - 100-101
6. (1) हिस्ट्री ऑफ चन्देलाज - नि. सा. बोस, पृष्ठ - 107-108
   (2) चन्देल कालीन बुन्देलखण्ड का इतिहास- अयोध्या, पृष्ठ - 112-127
7. भारत का इतिहास, ए. एल. श्रीवास्तव, पृष्ठ - 118

था। दिसम्बर 1205 ई0 को एक भयंकर युद्ध के बाद यह भू-भाग मालवा सूबे के अन्तर्गत जो कि उज्जैन से चन्देरी तक फैला हुआ था, खिलजी शासन के आधीन हो गयी एवं मलिक तैमूर को (मुक्ता) प्रान्तीय गवर्नर नियुक्त किया।[1]

मुहम्मद बिन तुगलक (1325-51ई0) के काल में समस्त बुन्देलखण्ड भू-भाग, दिल्ली सुल्तान के अधीन था। ग्वालियर, कालपी और चन्देरी इस प्रान्त में आता था।[2]

इस समय प्रसिद्ध इतिहासकार इब्नेबतूता इस प्रान्त से 1335 ई0 में चन्देरी होकर गुजरा था। इसन इस विशाल प्रान्त का मुख्यालय चन्देरी बतलाया था। उसने समस्त प्रान्त, का वातावरण शान्तिपूर्ण बतलाया एवं एस समय चन्देरी का मुक्ता हजउद्दीन - अल-बनटानी था।[3] फिरोज तुगलक (1351-1388 ई0) के समय ऐरच एवं चन्देरी के साथ इस जनपद का समस्त भाग दिल्ली सल्तनत के अधीन था। 1373-74 ई0 को सुल्तान की सिन्ध वापिसी पर एरच और चन्देरी को फिरोजतुगलक ने एक सैनिक छावनी का रूप दिया जिसे मलिक मोहम्मद शाह अफगान जो कि तुगलकाबाद का गवर्नर था, उसके अधीन कर दिया।[4]

1388 ई0 से 1414 ई0 तुगलक वंश एवं शर्की सुल्तानों में परस्पर अपनी प्रभुता कायम रखने के लिए एक दूसरे के प्रान्तों पर आक्रमण करते रहे जिससे तुगलक शासन खण्डों में विभाजित हो गया। 1435 ई0 तक ललितपुर जनपद कभी राजपूतों और कभी दिल्ली सुल्तानों के अधीन रहा।[5] इस बीच इस भू-भाग पर एक नये राजवंश का उदय हो चुका था।1468 ई0 में बुन्देला राजा अर्जुनदेव की मृत्यु के बाद उसका एक मात्र

---

1. (1) कैम्ब्रिज हिस्ट्री आफ इण्डिया, भाग - 3, सर वल्डेलहेग, पृष्ठ - 110 - 111
   (2) स्टडीज इन साउथ इण्डियन कल्चर भाग - 1, क्लाउजवन, दि जिन इमेजेज आफ देवगढ़ पृष्ठ- 64-66
2. (1) द राइज एण्ड फाल आफमोहम्मद विन तुगलक- आगा मेंहदी हसन, पृष्ठ - 96
   (2) स्टडीज इन साउथ इण्डियन कल्चर भाग - 1, कलाउजवन, दी जिन इमेजेज आफ देवगढ, पृष्ठ - 64
3. (1) तुगलक कालीन भारत, भाग - 1 एस. ए. ए. रिजवी, अलीगढ, 1957, पृ0 - 270
   (2) स्टडीज इन साउथ एशियन कल्चर भाग - 1, क्लाउजवन दी जिन इमेजेज आफ देवगढ़ पृष्ठ - 64
   (3) इब्नेबतूता रेहला, अनुवादक - मेंहदी हसन, बडोदा - 1953, पृष्ठ - 166-167
4. तुगलक कालीन भारत भाग - 1, एस. ए. रिजवी, पृष्ठ - 244
5. उत्तर तैमूर कालीन भारत भाग - 1, एस. ए. रिजवी, अलीगढ़ से प्रकाशित, पृष्ठ - 8-10

पुत्र मलखान सिंह गढ़कुड़ार की गद्दी पर बैठा।[1] उस समय बुन्देला राजाओं के शासन की सीमा जनपद ललितपुर तक थी।[2] राजा मलखान सिंह बुन्देला ने बहलोल लोदी (1451–1489 ई0) की आधीनता स्वीकार नहीं की[3] 1501 ई0 में राजा मलखान सिंह की मृत्यु के बाद उसका बडा पुत्र गद्दी पर बैठा। 1512–13 ई0 में सिकन्दर लोदी (1489–1517 ई0) ने ललितपुर चन्देरी पर अपना अधिकार कर लिया।

1517 ई0 में एक बार फिर चन्देरी–ललितपुर पर राजपूत अपना अधिकार करना चाहते थे, पर इक्ता (प्रान्तीय सूबेदार) हुसैन करमाली ने चन्देरी पर अपना आधिपत्य कायम रखा।[4] 1525 ई0 तक लोदी शासकों की आपसी फूट और प्रान्तीय गवर्नर के विद्रोह एवं शासकों की विलासता के कारण दिल्ली सुल्तानों की लोकप्रियता घटने लगी, तभी देश की पश्चिमी सीमा पर एक नया राजवंश आक्रमण करने के लिए आ गया। मुगल राजवंश के प्रथम शासक बाबर ने अपनी नव निर्मित सेना के साथ दिल्ली पर आक्रमण किया। 1526 में पानीपत के मैदान में इब्राहीम लोदी एवं बाबर की सेनाओं में युद्ध हुआ जिसमें बाबर विजयी हुआ 1527 ई0 में खानवा के युद्ध में राणासांगा को पराजित कर बाबर समस्त उत्तरी भारत का शासक वन गया।[5] और 1527 ई0 में ही बाबर ने चन्देरी के मेंदनीराय के विरूद्ध स्वयं अभियान किया, 29 जनवरी 1528 ई0 को चन्देरी को विजय कर लिया[6] तथा यह जनपद ललितपुर मुगल शासन के अधीन हो गया।

मुगल काल (1526 - 1707 ई0)

1526 से 1530 ई0 तक बाबर ने उत्तरी भारत के अधिकांश भाग पर विजय प्राप्त कर ली। 1530 ई0 में उसकी मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र हुमायूं उसका उत्तराधिकारी हुआ, परन्तु वह अपने पिता के विभिन्न भू–भागों पर अधिकार न रख सका। 1542 ई0 में

1. बुन्देलों का इतिहास, भगवानदास श्रीवास्तव, पृष्ठ – 14
2. ईसटर्न स्टेट (बुन्देलखण्ड) गजेटियर – सी. डी. लुआई, पृष्ठ – 17
3. हिस्ट्री आफ इण्डिया – इलियर डाउसन, कलकत्ता – 1953, पृष्ठ – 123
4. भारत का इतिहास (1000 से 1707 ई0) ए. एल. श्रीवास्तव
   शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, 1996 – आगरा, पृष्ठ 320
5. (1) भारत का इतिहास (1000 से 1707 ई0) ए. एल. श्रीवास्तव
   शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, 1996 – आगरा, पृष्ठ 320
   (2) मुगल कालीन भारत – एस. ए. ए. रिजवी, पृष्ठ – 405
6. उत्तर तैमूर कालीन भारत, भाग – 1, एस. ए. ए. रिजवी, पृष्ठ – 235–237

अफगान शासक शेरशाह ने चन्देरी एवं ललिपुर जनपद के एक बड़े भाग पर अपना अधिकार कर लिया।[1] कुछ समय पश्चात बुन्देला शासक रूद्रप्रताप बुन्देला जो कि अपनी राजधानी गढ़कुंडार से ओरछा ले आया था, उसने झांसी एवं ललितपुर जनपद के बड़े भाग पर अपना अधिकार कर लिया। इस कार्य को रूद्रप्रताप की मृत्यु के पश्चात भारतीचन्द्र ने पूर्ण किया[2] हुमाँयू की मृत्यु के पश्चात 1556 ई0 में अकबर मुगल राजवंश का अगला शासक हुआ। अकबर के राज्यकाल में जनपद ललितपुर सूबा (प्रान्त) मालवा के सरकार चन्देरी के अन्तर्गत आता था। तब ललितपुर एवं थनवारा परगनों का क्षेत्रफल 10977 बीधा थां जिसका राजस्व 619997 दरहम वसूल होता था।[3] मधुकर शाह (1554-92 ई0) के काल में बुन्देले पहली वार मुगलों से टकराए।[4] 19 अगस्त 1602 ई0 में अकबर का युवराज सलीम (जहाँगीर) के शह पर वीरसिंह बुन्देला ने अकबर के प्रधानमंत्री अबुलफ़जल का वध दतिया के पास आंतरी में कर दिया।[5] 1605 ई0 में अकबर का पुत्र सलीम, जहाँगीर के नाम से मुगल शासक बना। जहाँगीर ने बादशाह बनने के बाद वीरसिंह बुन्देला को ओरछा, जतारा एवं समस्त बुन्देलखण्ड का अधिकार दे दिया।[6] वीरसिंह के कहने पर चन्देरी एवं वानपुर की जागीर रामशाह को दी गयी।[7] रामशाह की मृत्यु के बाद शाहजहाँ ने यह जागीर उसके पुत्र को दे दी थी।[8] वीरसिंह देव की मृत्यु के बाद जुझार सिंह ओरछा का उत्तराधिकारी हुआ, उसने शाहजहाँ के काल में 1629 ई0 में विद्रोह किया परन्तु वह दवा दिया गया। इस विद्रोह में जुझार सिंह की सहायता चन्देरी,

---

1. (1) द हिस्ट्री आफ इण्डिया एज टोल्ड वाय इट्स ओनहिस्टोरियन भाग - 1, इलियट डाउसन (कलकत्ता), पृष्ठ - 50 एवं 445 - 46
   (2) मुगलकालीन भरत - ए. एल. श्रीवास्तव, पृष्ठ - 95-96
2. द नासिर - उल - उमरा - शमशु - उद् दौला शाह नबाज खान, अनुवाद - वाई. एच. विवरेज - भाग - 2, पृष्ठ 106
3. बुन्देलों का इतिहास - भगवानदास श्रीवास्तव, पृष्ठ - 36
4. आइने अकबरी (अबुल फजल) अनुवाद - एच. एस. जेरट और सरकार, भाग - 2, कलकत्ता - 1949, पृष्ठ - 198
5. मध्यकालीन भारत खण्ड - II, (1540-1761) सं हरिश्चन्द्र वर्मा, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय (1998), पृष्ठ - 638
6. (1) तुजके जहाँगीरी भाग - I, अनुवाद - ए. रोजर्स एवं एच. वेवरिज, (लन्दन 1909) पृष्ठ - 24-25
   (2) मुगलकालीन भारत - ए. एल. श्रीवास्तव, पृष्ठ - 183
7. तुजके जहाँगीरी भाग - I, अनुवाद - ए. रोजर्स एवं एच. वेवरिज, पृष्ठ - 87
8. तुजके जहाँगीरी भाग - I, अनुवाद - ए. रोजर्स एवं एच. वेवरिज, पृष्ठ - 87

बानपुर के शासक भारत शाह ने भी नहीं की, वह शाही सेनाओं के साथ रहा।[1] 1635 ई0 में जुझार सिंह ने फिर विद्रोह किया परन्तु वह दबा दिया गया (अपने इस विद्रोह में सफल न हो सका) 1635 ई0 में ललितपुर जनपद के दक्षिण में धमोनी के निकट गोड़ों ने उसका वध कर दिया।[2] जुझार सिंह की मृत्यु के पश्चात शाहजहाँ ने ओरछा को अस्थाई रूप में चन्देरी और बानपुर के शासक के अधिकार में दे दिया। 2 वर्ष तक देवी सिंह चन्देरी एवं बानपुर के शासक के साथ ओरछा का भी शासक रहा। 1637 ई0 में ओरछा उसे छोड़ना पड़ा।[3] 1641 ई0 में शाहजहाँ ने ललितपुर जनपद के खनियाधात, तालबेहट, ओरछा एवं झांसी जनपद का एक बड़ा भाग बुन्देला राजा पहाड़ सिंह को दिया एवं उसका मनसब भी बढ़ाकर 2000 जुलूल कर दिया।[4] 1654 ई0 में पहाड़ सिंह की मृत्यु के पश्चात सुजानसिंह ओरछा का राजा हुआ, वह 1667 ई0 तक ओरछा का हाकिम रहा, उसकी मृत्यु को गयी।[5] उधर ओरछा में उसका पुत्र दुर्गसिंह चन्देरी का शासक बनया गया।[6]

ललितपुर जनपद का बार, जाखलौन एवं लहचूरा अभी भी राजा शमशाह (वीर सिंह देव का भाई) के वंशजों के अधिकार में था एवं झांसी और उससे लगे 58 गाँव शाहजहाँ ने मुकुन्द सिंह को दे रखे थे।[7]

बुन्देला शासन काल

शाहजहाँ की मृत्यु के बाद औरंगजेब मुगल सम्राट बना। उधर बुन्देलखण्ड के छत्रसाल ने सम्राट के प्रति विद्रोह कर दिया, परन्तु, इस विद्रोह में चन्देरी, बार, दतिया, ओरछा, के शासकों ने उसका साथ नहीं दिया।[8] छत्रसाल ने शीघ्र ही एक स्वतंत्र राज्य की स्थापना कर ली और ललितपुर जनपद के सिंरोज और ललितपुर जनपद के दक्षिण में घमोनी क्षेत्र पर अपना अधिकार कर लिया।[9] यह 1707 ई0 में औरंगजेब की मृत्यु के बाद बुन्देलखण्ड का

---

1. ओरछा का इतिहास – लक्ष्मण सिंह गोड़, पृष्ठ – 54
2. हिस्ट्री ऑफ शाहजहाँ – जी. पी. सक्सेना, दिल्ली से प्रकाशित, पृष्ठ – 88 – 89
3. बुन्देलों का इतिहास – भागवानदास श्रीवास्तव, पृष्ठ – 40
4. दी नासिर – उल – उमरा, भाग – I I, शमशु–उद्–दौला, शाह नवाज खाँन अनुवाद – वाई. एच. विवरिज, पृष्ठ – 471
5. ईस्टर्न स्टेट्स (बुन्देलखण्ड) गजेटियर, सी. ई. लुआई, पृष्ठ – 27
6. ईस्टर्न स्टेट्स (बुन्देलखण्ड) गजेटियर, सी. ई. लुआई, पृष्ठ – 27
7. ईस्टर्न स्टेट्स (बुन्देलखण्ड) गजेटियर, सी. ई. लुआई, पृष्ठ – 27
8. बुन्देलो का इतिहास – भगवानदास श्रीवास्तव, पृष्ठ 77
9. बुन्देलो का इतिहास – भगवानदास श्रीवास्तव, पृष्ठ 77

स्वतंत्र शासक बन गया।[1] 1707 ई0 के औरंगजेब के पुत्र उसके विशाल साम्राज्य की रक्षा नहीं कर सके इसके कारण छोटे - छोटे सूबेदारों ने अपने आपको स्वतंत्र घोषित कर दिया।

1722 ई0 में मुगल गवर्नर नवाब बंगश बुन्देलखण्ड - विजय अभियान पर निकाला। ओरछा, चन्देरी, दतिया आदि बुन्देला राजाओं ने नवाब का साथ दिया।[2] नवाव वंगश शीघ्र सेहड़ा, मेड़, मोटछा, बेलानी, अगवासी और सिमौनी दुर्गो पर अधिकार करता हुआ ललितपुर जनपद के दक्षिण में घमौनी आ पहुँचा, जहाँ पर बुन्देला ने उसका सामना किया, पर वंगश के कुशल सेनापतित्व के आगे उन्हें पीछे हटना पड़ा।[3] बंगश की बढ़ती हुई शक्ति को देखकर छत्रसाल ने मराठा सरदार बाजीराव प्रथम से सहायता माँगी जो उस समय गरहा दक्षिण जनपद ललितपुर में थे।[4] छत्रसाल ने वाजीराव को निम्नलिखित पद लिखकर भेजा।

जो गति ग्राह गजेन्द्र की सो गति भई है आय।
वाजी जात बुन्देल की, राखो बाजी राय।[5]

फरवरी 1729 ई0 को यह पत्र बाजीराव को प्राप्त हुआ था। पेशवा वाजीराव, छत्रसाल की सहायता के लिए तुरन्त आ गये। 12 मार्च 1729 को उनकी सेना महोबा पहुँची। वंगश को कई स्थानों पर पराजित किया।[6]

12 मार्च 1731 ई0 में छत्रसाल की मृत्यु हो गई, परन्तु इससे पूर्व पेशवा बाजीराव के बंगश के विरूद्ध सहायता देने पर छत्रसाल ने अपने राज्य का 1/3 भाग एवं धन बाजीराव को एक दरवार का आयोजन करके दिये थे। इससे बुन्देलखण्ड मराठों का एक उपनिवेश बन गया जिसमें झांसी, सागर, हृदयनगर, कालपी, जालौन एवं गुरसरांय आदि थे।[7]

1732 ई0 में मराठों ने बन्देलखण्ड में अपने राज्य का विस्तार करना आरम्भ

---

1. बुन्देखण्ड का ऐतिहासिक मूल्यांकन भाग - I, राधाकृष्ण बुन्देली एवं श्रीमती सत्यभामा बुन्देली, पृष्ठ - 112
2. बुन्देलो का इतिहास - भगवानदास श्रीवास्तव, पृष्ठ 90
3. बुन्देलो का इतिहास - भगवानदास श्रीवास्तव, पृष्ठ 90
4. महाराज छत्रसाल बुन्देला - भगवानदास गुप्ता (आगरा से प्रकाशित 1958), पृष्ठ - 90
5. बुन्देलखण्ड का ऐतिहासिक मूल्यांकन - भाग-I
   राधाकृष्ण बुन्देली एवं श्रीमति सत्यभामा बुन्देली पृष्ठ - 115
6. मराठों का नवीन इतिहास भाग - 2, गोविन्द सखाराम सरदेसाई, संस्करण 1980, पृ.-96
7. (1) बाजीराव फर्स्ट द ग्रेट पेशवा- सी.के.श्री निवासन, पृष्ठ - 72 - 73
   (2) मध्यकालीन भारत - एल. पी. शर्मा, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल- आगरा से प्रकाशित पृ0-210

किया। चन्देरी काशासक दुर्गसिंह की मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र दुर्जन सिंह चन्देरी का शासक हुआ। 1735 ई0 में मराठों ने चन्देरी पर आक्रमण किया तथा उसके प्रसिद्ध दुर्ग भरतगढ़ पर अपना अधिकार कर लिया।[1] 1745 ई0 में दुर्जन सिंह की मृत्यु हो गई। दुर्जन सिंह की मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र मानसिंह गद्दी पर बैठा। मानसिंह ने मराठों के आक्रमणों को रोकने के लिये ललितपुर जनपद के महरौनी स्थान पर एक दुर्ग का निर्माण कराया। परन्तु वह मराठों के आक्रमणों को रोक न सका और उसे अपने राज्य का एक बड़ा भाग (ललितपुर जनपद का समस्त दक्षिण का भाग) देना पड़ा।[2] मानसिंह की मृत्यु के बाद उसका बड़ा पुत्र अनिरूद्ध सिंह 1760 ई0 में गद्दी पर बैठा। उसने 15 वर्ष तक राज्य किया। 1775 ई0 में अनिरूद्ध सिंह की मृत्यु के बाद उसका पुत्र रामचन्द्र 3 वर्ष का था, इस कारण राज्य का प्रबन्ध उसके काका हटेसिंह के अधिकार में आ गया। हटेसिंह ने मसोरा खुर्द में एक दुर्ग का निर्माण करवाया था।[3] शीघ्र ही चन्देरी की राजमाता ने हटेसिंह के स्थान पर अचलगढ़ के जागीरदार चौधरी कीरत सिंह को राज्य का मंत्री नियुक्त किया और हटेसिंह को मसौरा, तालबेहट और 15 गांव की जागीर दी। 1787 ई0 में मराठा सेना ने मोरापंत के नेतृत्व में बुन्देलों की इस जागीर पर आक्रमण किया। इस आक्रमण का सामना सभी बुन्देला सरदार, राव उमराव सिंह – राजवारा, दीवान छतरसिंह जाखलौन, तथा ललितपुर और पनारी के जागीरदारों ने मिल कर किया।[4]

परन्तु इसी समय चन्देरी के शासक रामचन्द्र तीर्थ–यात्राा को चले गये और राज्य का कार्यभार अपने सम्बन्धी देवजू पनवई और उसकी पत्नी को सौंप गये। रामचन्द्र की अनुपस्थिति में मराठों ने सोरई, दबरानी और बालाबेहट अपने अधिकार में कर लिये। 1801 ई0 में उसका पुत्र प्रजापाल राजा बना, परन्तु वह एक युद्ध में रजवारा स्थान पर मारा गया। प्रजापाल के बाद उसका छोटा भाई मोर प्रहलाद राजा बना।

1811 ई0 में सिंधिया ने ब्रिटिश आफीसर कर्नल वैपटिस्ट फियोलस के नेतृत्व में एक सेना भेजी जिसने चन्देरी व समस्त बुन्देला क्षेत्र को अपनी सीमा में मिला लिया।[5] और मोर प्रहलाद परिवार सहित झांसी चले गये।[6] 1811–1842 ई0 तक मोर प्रहलाद बराबर

1. बुन्देलों का इतिहास – भगवानदास श्रीवास्तव, पृष्ठ – 117
2. बुन्देलो का इतिहास – भगवानदास श्रीवास्तव, पृष्ठ 117
3. बुन्देलो का इतिहास – भगवानदास श्रीवास्तव, पृष्ठ 117
4. बुन्देलो का इतिहास – भगवानदास श्रीवास्तव, पृष्ठ 117
5. झांसी गजेटियर – ईशा बसंत जोशी, पृष्ठ – 52
6. फ्रीडम स्ट्रगल इन उत्तर प्रदेश भाग – 3, एस. ए. ए. रिजवी, पृष्ठ – 4

मराठों और अंग्रेजों से बुन्देला सरदारों के साथ मिलकर संघर्ष करते रहे। इस समय सिंधिया के अधिकार में चन्देरी थी। बाद में वह वानपुर आकर बस गये और राजा बने। 1842 ई0 में राजा मर्दन सिंह बानपुर के राजा हुए।[1] दो साल के उपरान्त चन्देरी का राज्य सिंधिया के अधिकार से ब्रिटिश सरकार के आधीन हो गया।[2] परन्तु ललितपुर जनपद का दक्षिण-पूर्वी भाग और धमोनी पर 1707 ई0 में छत्रसाल ने अधिकार किया था। 1731 ई0 में यह क्षेत्र छत्रसाल के बड़े पुत्र हृद्धय शाह को मिला था। उसके बाद यह क्षेत्र उसके पुत्र सभासिंह को प्राप्त हुआ। सभा सिंह के ज्येष्ठ पुत्र पृथ्वीसिंह ने अपने पिता से अपने लिए एक स्वतंत्र भाग माँगा, परन्तु सभासिंह ने देने से इन्कार कर दिया। पृथ्वीसिंह ने मराठों से मिलकर शागढ़, गढ़कोट, मडोरा (मड़ावरा) का स्वतंत्र राज्य सभासिंह से प्राप्त कर लिया। पृथ्वीसिंह मराठों की सहायता से राजा बना और हमेशा उनका मित्र बना रहा। इसी वंश में अर्जुन सिंह (1810-1842 ई0) हुये अर्जुन सिंह की मृत्यु के पश्चात बख्तबली सिंह शाहगढ़ के अन्तिम जागीरदार बने थे।[3]

४. ललितपुर जनपद का प्रशासनिक गठन (सन् १८५७ से आगे)

सन् 1857 ई0 के प्रथम स्वतत्रंता संग्राम के समय भारत देश के अधिकांश हिस्सों में क्रांति की ज्वाला धधक रही थी, उस ज्वाला में ललितपुर जनपद भी था, पड़ोसी जनपद झांसी में क्रांति की महान नायक महारानी लक्ष्मीबाई क्रांति की मशाल उठाये अंग्रेजों से लोहा ले रही थी। उसी समय ललितपुर जनपद के बुन्देला ठाकुरों एवं राजपूतों ने मिलकर राजा मर्दनसिंह के नेतृत्व में अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह आरम्भ कर दिया।

अप्रैल 1857 ई0 के समय में ननुकपुर (ललितपुर जनपद) के राजा की मृत्यु हो गई। एक 'सन्धि - अनुबन्ध' के अनुसार उसके राज्य का तीसरा हिस्सा राजा बानपुर को दिया जावे एवं शेष भाग उसके उत्तराधिकारी को। परन्तु ब्रिटिश सरकार इस पर राजी नहीं हुयी, इस कारण ननुकपुर का शासक अंग्रेजो के खिलाफ हो गया। इसी समय इस जनपद का प्रशासन जैन - उल - आबदीन के हाथ में दे दिया गया, जो कुशल प्रशासनिक अधिकारी नहीं था। मई के प्रारम्भ में गनेशजू एवं उनके पिता जवाहर सिंह भी अंग्रेजों के विरुद्ध हो गये।[4] इस प्रकार इस जनपद

1. झांसी गजेटियर - 1965, ईशा बसंत जोशी, पृष्ठ - 53
2. झांसी गजेटियर - 1965, ईशा बसंत जोशी, पृष्ठ - 53
3. झांसी गजेटियर - 1965, ईशा बसंत जोशी, पृष्ठ - 53
4. झांसी गजेटियर - 1965, ईशा बसंत जोशी, पृष्ठ - 59

के हर भाग से बुन्देला राजाओं का एक बड़ा समूह अंग्रेजों के प्रति विद्रोह को उठ खड़ा हुआ जिसमें चन्देरी, ललितपुर, तालबेहट के राजा भी थे। राजा मर्दन सिंह को रोकने के लिए ह्यूरोज के नेतृत्व में विशाल सेना झांसी की ओर से तथा सेनापति गोसन के नेतृत्व में सागर की ओर से विशाल सेना भेजी गई किन्तु राजा मर्दनसिंह और उनके जाबांज सिपाहियों ने जून 11 एवं 12 सन् 1857 ई0 में मालथौन में भीषण युद्ध लड़कर गोसन को सागर की ओर वापिस खदेड़ दिया तथा उसके अनेक सैनिक अपनी ओर मिला लिए, मालथौन पर अपना अधिकार कर लिया।,[1] जिससे ह्यूरोज घबड़ा गया। राजा मर्दनसिंह ने अपनी सेना में मजबूती के लिए लडाकू सैनिक एवं तोपचियों को भर्ती कर लिया एवं झांसी से सम्पर्क बनाया।[2]

राजा मर्दनसिंह ब्रिटिश सरकार के विरूद्ध अपना विद्रोह बनाये रहे एवं अपना मुख्यालय मसोरा की गढ़ी को बनाया जो कि ललितपुर शहर से 4 मील दूर था। एक विशाल जन – समुदाय एवं बुन्देला राजा उनके झंडे के नीचे आ गये।[3]

13 जून 1857 को काफी बड़ी सेना एवं तोपों के साथ ललितपुर पर अधिकार कर लिया। जितने भी अंग्रेज अधिकारी एवं उनके परिवार वाले थे, उनको बन्दी बनाकर मसोरा की गढ़ी में रख्खा गया।[4] बाद में दो दिन बाद उन्हें बानपुर में अंग्रेजों के एजेन्ट को सौप दिया गया जिन्हें वह ओरछा ले गया।[5] 18 जुलाई 1857 में झांसी डिवीजन से इसका समाचार प्राप्त हुआ कि दिल्ली का पतन हो गया है। फरवरी 1858 ई0 में मर्दनसिंह ने चन्देरी, बानपुर, के अतिरिक्त नरहट पर भी अपना अधिकार कर लिया।[6] 3 मार्च 1858 ई0 को ब्रिटिश सेना अधिकारी ह्यूरोज ललितपुर जनपद की ओर बढ़ा और उसने शीघ्र ही पहले शाहगढ़, तालबेहट पर अपना अधिकार कर लिया[7]

---

1. (1) दैनिक जागरण झांसी 23 अगस्त 1997, पृष्ठ – 4
   आजादी के आन्दोलन में ललितपुर का योगदान – प्रस्तुति – अजय तिवारी 'नोनू'
   (2) फ्रीड्म स्ट्रगल आफ यू.पी. भाग – 3, एस. ए. ए. रिजवी, पृष्ठ – 110
2. फ्रीड्म स्ट्रगल आफ यू.पी. भाग – 3, एस. ए. ए. रिजवी, पृष्ठ – 10
3. फ्रीड्म स्ट्रगल आफ यू.पी. भाग – 3, एस. ए. ए. रिजवी, पृष्ठ – 10
4. फ्रीड्म स्ट्रगल आफ यू.पी. भाग – 3, एस. ए. ए. रिजवी, पृष्ठ – 10
5. फ्रीड्म स्ट्रगल आफ यू.पी. भाग – 3, एस. ए. ए. रिजवी, पृष्ठ – 10
6. दि रिवोल्ट आफ सेन्ट्रल इण्डिया – 1857 – 59 (शिलशा से 1908 में प्रकाशित) पृ0–105
7. (1) दि रिवोल्ट आफ सेन्ट्रल इण्डिया – 1857 – 59
   (शिलशा से 1908 में प्रकाशित) पृ0–105
   (2) दैनिक जागरण झांरी 23 अगस्त 1997, पृष्ठ – 4
   आजादी के आन्दोलन में ललितपुर का योगदान – प्रस्तुति – अजय तिवारी 'नोनू'

इस जनपद में अंग्रेजों का एवं स्वतंत्रता सेनानियों का संघर्ष इस प्रकार लगभग दो वर्ष तक चलता रहा। अन्त में 1858 ई0 के अन्त तक ललितपुर जनपद की समस्त बुन्देला रियासतें ब्रिटिश सरकार के आधीन हो गई। स्वतंत्रता संग्राम के पश्चात झांसी इस क्षेत्र का डिवीजन बनाया गया। झांसी के अतिरिक्त तीन जिले – ललितपुर, हमीरपुर व जालौन इस कमिश्नरी में शामिल किये गये।

ललितपुर जनपद जो कि पुराने जनपद चन्देरी[1] एवं नरहट ताल्लुका का एक भाग एवं बानपुर व शाहगढ़ के राजाओं का पुराना कस्बा था। 1860 ई0 में ब्रिटिश सरकार के प्रशासन का एक नया जिला बनाया जिसके आधीन दो तहसीलें मड़ावरा एवं बानपुर थीं। 1861 में तहसील चन्देरी को मुख्यालय भी ललितपुर बनाया गया। 1866 ई0 में मड़ावरा एवं बानपुर तहसील समाप्त कर, महरौनी को तहसील का दर्जा दिया गया। इस प्रकार ललितपुर एवं महरौनी दो तहसीलें जनपद ललितपुर में हो गयी। दिसम्बर 1891ई0 में जिला ललितपुर का विलीनीकरण झांसी जनपद में हो गया।[2]

अतः 1861ई0 से 1891ई0 तक जनपद ललितपुर स्वतंत्र जिला के रूप में ब्रिटिश काल का जनपद मुख्यालय रहा।[3]

1886 ई0 में कॉंग्रेस की स्थापना के बाद इस जनपद (झांसी-ललितपुर) से शिवपति घोष नामक सज्जन चुन कार आए जो इण्डिया कॉंग्रेस कमेटी के अधिवेशन में प्रतिनिधि बन कर गये थे।[4]

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में भी इस जनपद के श्री नन्दकिशोर किलेदार, श्री बृजनन्दन किलेदार, श्री बृजनन्दन शर्मा, श्री गुलई तिवारी, श्री बाबूलाल फूलमाली, श्री हुकुमचन्द बुखारिया, श्री मदनलाल किलेदार, श्री बाबूलाल निगम, श्री मथुराप्रसाद, श्री अहमद खॉं पहलवान, श्री चन्दन सिंह (जखौरा), श्री सुदामा प्रसाद गोस्वामी (तालबेहट), औलाद हुसैन कम्मर, रमानाथ

---

1. अनुक्रमणिका – 1996 – 97, शीर्षक – ललितपुर का इतिहास, पृष्ठ – 10
2. झांसी गजेटियर – 1965, ईशा बसंत जोशी, पृष्ठ – 2
3. (1) ललितपुर स्वर्ण जंयती स्मारिका – 1998 पृष्ठ – 8
   शीर्षक – जनपद ललितपुर – नितिर रमेश गोकर्ण (IAS) जिलाधिकारी, ललितपुर
   (2) अनुक्रमणिका – 1996 – 97, जिला सूचना कार्यालय, ललितपुर द्वारा प्रकाशित
4. झांसी गजेटियर – 1965, ईशा बसंत जोशी, पृष्ठ – 70

खैरा (ललितपुर), आदि नेताओं ने भी बढ़-चढ़ कर भाग लिया था। स्वतंत्र भारत में 1974 में ललितपुर विधानसभा से चन्दनसिंह विधायक चुने गये एवं 1977 में सुदामाप्रसाद गोस्वामी ललितपुर विधानसभा से विधायक चुने गये। 1952 में महरौनी विधानसभा से रमानाथ खैरा विधायक चुने गये थे।[1] स्वतंत्रता के पश्चात 1952 के पहले लोकसभा चुनाव में झांसी ललितपुर क्षेत्र से भी रघुनाथ विनायक धुलेकर (झांसी) पहले सांसद निर्वाचित हुये 1984 में श्री सुजानसिंह बुन्देला (ललितपुर निवासी) चुने गये।[2]

जनपद ललितपुर में दो विधानसभा क्षेत्र ललितपुर एवं महरौनी है जिनसे 1952 में क्रमशः पं. कृष्णचन्द्र वर्मा एवं रमानाथ खैरा विधायक निर्वाचित हुये थे।[3]

जनता की माँग पर समुचित विकास हेतु झांसी जनपद से ललितपुर, महरौनी तहसीलों को अलग कर नया जनपद ललितपुर तत्कालीन उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री सुन्दर लाल बहुगुणा ने श्री रामनारायण शर्मा की माँग पर तुवन मन्दिर के मैदान में 1 मार्च 1974 को घोषणा कर दी और नये जनपद ललितपुर का सृजन 1 मार्च 1974 को हुया। नई तहसील तालबेहट की स्थापना की गयी।

इस प्रकार वर्तमान में जनपद ललितपुर में तीन तहसीलें ललितपुर, महरौनी, एवं तालबेहट हैं।[4] और 6 विकास खण्ड बार, मड़ावरा, बिरधा, तालबेहट, जखौरा तथा महरौनी है।[5]

५. ललितपुर नामकरण का इतिहास

ललितपुर जनपद का नाम ललितपुर इसके प्रमुख नगर एवं मुख्यालय ललितपुर के नाम से जाना जाता है।

ललितपुर नगर के नामकरण के सम्बन्ध में जनश्रुति है कि गोंड राजा सुम्मेर सिंह चर्म रोग से पीड़ित थे, वह एक बार गंगा स्नान को जा रहे थे। मार्ग में एक (सिद्ध पोखर)

1. ललितपुर स्वर्ण जंयती स्मारिका - 1998, पृ0- 94
2. ललितपुर स्वर्ण जंयती स्मारिका - 1998, पृ0- 94
3. ललितपुर स्वर्ण जंयती स्मारिका - 1998, पृ0- 94
4. अनुक्रमणिका 1996-97 जिला सूचना कार्यालय ललितपुर द्वारा प्रकाशित - पृष्ठ - 10
5. अनुक्रमणिका 1996-97 जिला सूचना कार्यालय ललितपुर द्वारा प्रकाशित - पृष्ठ - 10

तालाब के निकट, जहाँ वह रूके थे, बीमार पड़ गये, रात्रि स्वप्न में अनकी रानी को दिखाई दिया कि अगर राजा उस तालाब में स्थान करें तो उनका चर्म रोग ठीक हो जायेगा। प्रातः रानी की जिद पर राजा ने तालाब में स्नान किया जिससे उनको चर्म रोग से मुक्ति मिल गई। राजा पत्नी सहित यही निवास करने लगे। समय बीतने पर उनके एक कन्या पैदा हुयी जिसका नाम उन्होंने ललिता कुंवर रखा तथा उसी तालाब के निकट एक नगर बसाया जिस नाम पर इस स्थल का नाम ललितपुर रखा गया।[1] उसी सिद्ध पोखर (तालाब) का विकसित रूप आज नगर के बीचोंबीच उन्हीं के नाम पर सुमेरा तालाब के नाम से जाना जाता है। जनपद का क्षेत्र लालित्यमयी होने के कारण नगर का नाम ललितपुर लालित्य शब्द को भी सार्थक करता है।

ललितपुर नाम का सर्वप्रथम उल्लेख "आइने अकबरी" से प्राप्त होता है। अबुल फजल ने सूबा (प्रान्त) मालवा में तीन सरकारों का वर्णन किया है। जिनके नाम हैं – चन्देरी, गरहा, एवं रायसेन। परगना ललितपुर चन्देरी सरकार में आता था। थनवारा एवं ललितपुर परगनों का क्षेत्रफल 10,977 वीधा था। इन परगनों 6,19,997 दाम राजस्व प्राप्त होता था यहां पर मुगलों की एक चौकी भी थी। इस चौकी में 200 पैदल सैनिक तथा 80 घुड़सवार की एक टुकड़ी रहती थी। इस तरह दोधई (दुघई) परगने का क्षेत्रफल 3,652 बताया है। जिससे 20,600 दाम का राजस्व प्राप्त होता था। दुघई में मुगलों की एक चौकी थी जहाँ पर राजपूत और गोड़ों की एक टुकड़ी 20 घुड़सवार, 700 पैदल सैनिक रहते थे।[2] चाँदपुर और देवगढ़ गरहा सरकार के परगने थे। जिनसे लगभग 9,00,000 दाम का राजस्व प्राप्त होता था। यहाँ पर भी एक सेना की टुकड़ी रहती थी जिसमें 1500 घुड़सवार एवं 500 पैदल सैनिक थे।[3]

---------------------o0o---------------------

1. अनुक्रमणिका 1988 जिला सूचना कार्यालय ललितपुर द्वारा प्रकाशित – पृष्ठ – 3
2. आईने अकबरी – अब्ल फ़ज़ल, दास, एच. एस. जेनेट और सरकार, पृष्ट– 211-213
3. आईने अकबरी – अब्ल फजल, दास, एच. एस. जेनेट और सरकार, पृष्ट– 211-213

अध्याय - द्वितीय

सामाजिक - आर्थिक पृष्ठभूमि

(1) प्रारम्भिक राजस्व प्रबन्ध तथा ब्रिटिश राजस्व - नीति

(2) जमींदारों की सामाजिक .... आर्थिक स्थिति।

(3) कृषि - व्यवस्था।

(4) कुटीर उद्योग धन्धों की दशा।

(5) ललितपुर में ऋण लेन - देन की परम्परा।

(6) सामाजिक - आर्थिक पिछड़ापन।

(7) जन साधारण की स्थिति।

अध्याय - द्वितीय

सामाजिक - आर्थिक पृष्ठभूमि

1. प्रारम्भिक राजस्व प्रबन्ध तथा ब्रिटिश राजस्व - नीति

ललितपुर जनपद की राजस्व व्यवस्था कई चरणों में बनाई गई थी। ललितपुर में पहला स्थायी बन्दोबस्त 1869 ई0 में हुआ। इससे पूर्व 1844 ई0 और 1860 ई0 के बीच यहाँ राजस्व की संक्षिप्त व्यवव्था की गयी थी।[1] ये बन्दोबस्त मुख्यतः अधिकारियों द्वारा किये गये थे। निःसन्देह सैनिक बन्दोबस्त की स्थायी व्यवस्था ललितपुर में 1858 ई0 में शान्ति व्यवस्था स्थापित हो जाने के बाद ही सम्भव हो सकी थी।

वस्तुतः ललितपुर जनपद में राजस्व निर्धारण की प्रक्रिया 1858 ई0 में कैप्टन टीलर ने प्रारम्भ की परन्तु 1860 ई0 में कैप्टन टीलर यूरोप चले गये जिससे बन्दोबस्त का कार्य कैप्टन कार्बेट को दिया गया।[2]

लेकिन 1862 ई0 में कार्वेट का जालौन के लिए स्थानान्तरण हो गया। इसी वर्ष कैप्टन टीलर यूरोप से वापस लौट कर पुनः ललितपुर आये और उन्होंने पुनः यह बन्दोबस्त का कार्य प्रारम्भ कर दिया।

सर्वप्रथम टीलर ने तालबेहट और ललितपुर के गाँवों का राजस्व निर्धारण किया। बाँसी का सर्वे चूँकि कैप्टन कार्वेट पहले कर चुके थे। किन्तु न ही कार्वेट ने और न ही कैप्टन टीलर ने इसकी कोई रिपोर्ट प्रकाशित की।

कर्नल डेविडसन ने फरवरी 1866 ई0 में यह कार्य प्रारम्भ किया जो तीन वर्षो तक चलता रहा और 1869 ई0 में पूरा हुआ। यह बन्दोबस्त 16 वर्ष के लिए किया गया।[3]

पूर्व निश्चित अवधि के अनुसार ललितपुर के पहले बन्दोबस्त की अवधि 1889 ई0 में समाप्त होनी थी, किन्तु अकाल आदि के कारण इसकी अवधि 10 वर्ष तक बढ़ा दी गयी। ललितपुर जनपद का दूसरा बन्दोवस्त होरे ने 1899 ई0 में किया। इसकी अवधि 30

---

1. झांसी गजेटियर - 1909, इलाहाबाद, ड्रेक ब्रॉक मैन, डी. एल., पृष्ठ - 141
2. बुन्देलखण्ड गजेटियर - एटकिन्सन, पृष्ठ - 335 - 336
3. बुन्देलखण्ड गजेटियर - एटकिन्सन, पृष्ठ - 335 - 336

वर्ष तक रखी गई यद्यपि ललितपुर जिला 1891 ई० में झाँसी में मिला लिया गया था। लेकिन बन्दोबस्त में ललितपुर को झाँसी में सम्मिलित नहीं किया गया था।[1] तीसरा बन्दोबस्त पिम ने 1903 ई० में किया इस समय ललितपुर भी झाँसी में सम्मिलित कर लिया गया था। इस प्रकार झाँसी और ललितपुर सब डिवीजन का बन्दोबस्त 1906 ई० में पूरा किया गया।[2]

ललितपुर जिले में पहले बन्दोबस्त के समय बन्दोबस्त अधिकारियों का प्रायः स्थानान्तरण होता रहा जिससे राजस्व निर्धारण की एक समान नीति का पालन नहीं किया गया।[3]

ललितपुर जिले में हुए बन्दोबस्त की असमान तथा कठोर दरों की पुष्टि इसी बात से होती है कि परवर्ती बन्दोबस्त में राजस्व की पूर्व निर्धारित दरों को कम करना पड़ा।[4] लगातार पड़ रहे अकालों (1783 ई., 1833 ई., 1837 ई., 1847 ई., 1848 ई., 1868-69 ई., 1876-78 ई., 1895 ई., 1896 ई.)[5] तथा अन्य प्राकृतिक आपदाओं ने किसानों की आर्थिक रीढ़ तोड़ दी थी और वे इस स्थिति में नहीं थे कि राजस्व का भुगतान कर सकें। अतः वाध्य होकर सरकार को 1903 ई. में इस बन्दोबस्त का पुनः निरीक्षण करना पड़ा जिससे पुनः राजस्व की दरें कम करनी पड़ी। राजस्व की इस छूट ने भी किसानों को कोई सहायता नहीं पहुँचाई क्योंकि प्राकृतिक आपदाओं से लोग इतने परेशान थे जिससे उनकी स्थिति निरन्तर दयनीय होती चली जा रही थी।

1903 ई. में यहाँ के बन्दोबस्त अधिकारी पिम ने लिखा था कि "इस जिले (ललितपुर) में पहले बन्दोबस्त से राजस्व की जो दरें निर्धारित की गई थी वे दरें उन गाँवों में जहाँ पर कि परिश्रमी किसान थे वहाँ काफी ऊँची रखी गई, किन्तु ऐसे गाँव जहाँ बुन्देला ठाकुरों का बोलबाला था उनके लिए राजस्व की दरें कम रखी गई"[6]

ऐसा प्रतीत होता है कि ब्रिटिश सरकार ने बुन्देला ठाकुरों को खुश करने का

---

1. झाँसी द्वितीय बन्दोबस्त (इलाहाबा 1892) फारवर्ड नोट नं. 75/1262, पृष्ठ – 1
2. झांसी ड्यूरिंग द ब्रिटिश रूल – डॉ. एस. पी. पाठक, पृष्ठ 97 – 98
3. झांसी ड्यूरिंग द ब्रिटिश रूल – डॉ. एस. पी. पाठक, पृष्ठ 111
4. फाइनल सिटिलमेन्ट ऑफ झाँसी (ललितपुर सहित), 1907, इलाहाबाद, ए. डब्लू, पिम, पृ.– 14
5. बुन्देलखण्ड गजेटियर – एटकिन्सन, पृष्ठ – 253
6. फाइनल सिटिलमेन्ट ऑफ झाँसी (ललितपुर सहित), 1907, इलाहाबाद, ए. डब्लू, पिम, पृ.– 14

प्रयास किया ताकि वे सरकार का सहयोग कर सकें।

निःसन्देह इस प्रणाली से परिश्रमी किसानों को नुकसान हुआ जिनसे राजस्व की उच्च दरें वसूल की जाती थी। इन किसानों को उत्साहवर्धन तथा प्रोत्साहन करने के स्थान पर सरकार ने राजस्व की दरें बढ़ाकर उन्हें हतोत्साहित करने का प्रयास किया।

इसलिए यहाँ के जन साधारण में असन्तोष व्याप्त था और इस समुदाय ने राष्ट्रीय आन्दोलन में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया।

२. जमीदारों की सामाजिक आर्थिक स्थिति

बुँदेले राजे - रजवाड़ों को मुगल शब्दावली में जमींदार कहा जाता था।[1] और उनके पहले से चले आये राज्यों को उनके 'वतन'।

बुन्देले शासक अपने - अपने 'वतन राज्यों' की आन्तरिक व्यवस्था करने के लिए स्वतंत्र होते थे। उसकी देख-रेख करने के लिए उनके जो अधिकारी और कर्मचारी होते थे, उनके काम विभाग और नाम मुगल शासन व्यवस्था के विभिन्न स्तरों के अधिकारियों कर्मचारियों जैसे होते थे। बुन्देला राजाओं के राज्यों में दीवान फौजदार, किलेदार, दरोगा, थानेदार, मुत्सद्दी, मुस्तौफी, बुतायती, खास, कलम, वकील, तहसीलदार, कानूनगो, पटवारी, चौधरी, मुकद्दम, वाकिया नवीस, अर्जीनवीस आदि के उल्लेख बहुतायत में मिलते हैं।[2]

अतः जमींदारों के साथ-साथ उनके यह अधिकारी एवं कर्मचारी भी सपन्न स्थिति में था। अधिकतर कर्मचारियों को जागीरें मिली हुयी थी।

---

1. मुगलों के अन्तर्गत बुन्देलखण्ड का सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक इतिहास (1531-1731) डॉ. भगवानदास गुप्त (प्रकाशन - हिन्दी बुक सेन्टर, 4/5, बी., आसफअली रोड नई दिल्ली, 1997 में प्रकाशित) - पृष्ठ - 150
2. मुगलों के अन्तर्गत बुन्देलखण्ड का सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक इतिहास (1531-1731) डॉ. भगवानदास गुप्त (प्रकाशन - हिन्दी बुक सेन्टर, 4/5, बी., आसफअली रोड नई दिल्ली, 1997 में प्रकाशित) - पृष्ठ - 150

ललितपुर के बुन्देला जमींदारों का वंश वृक्ष[1]
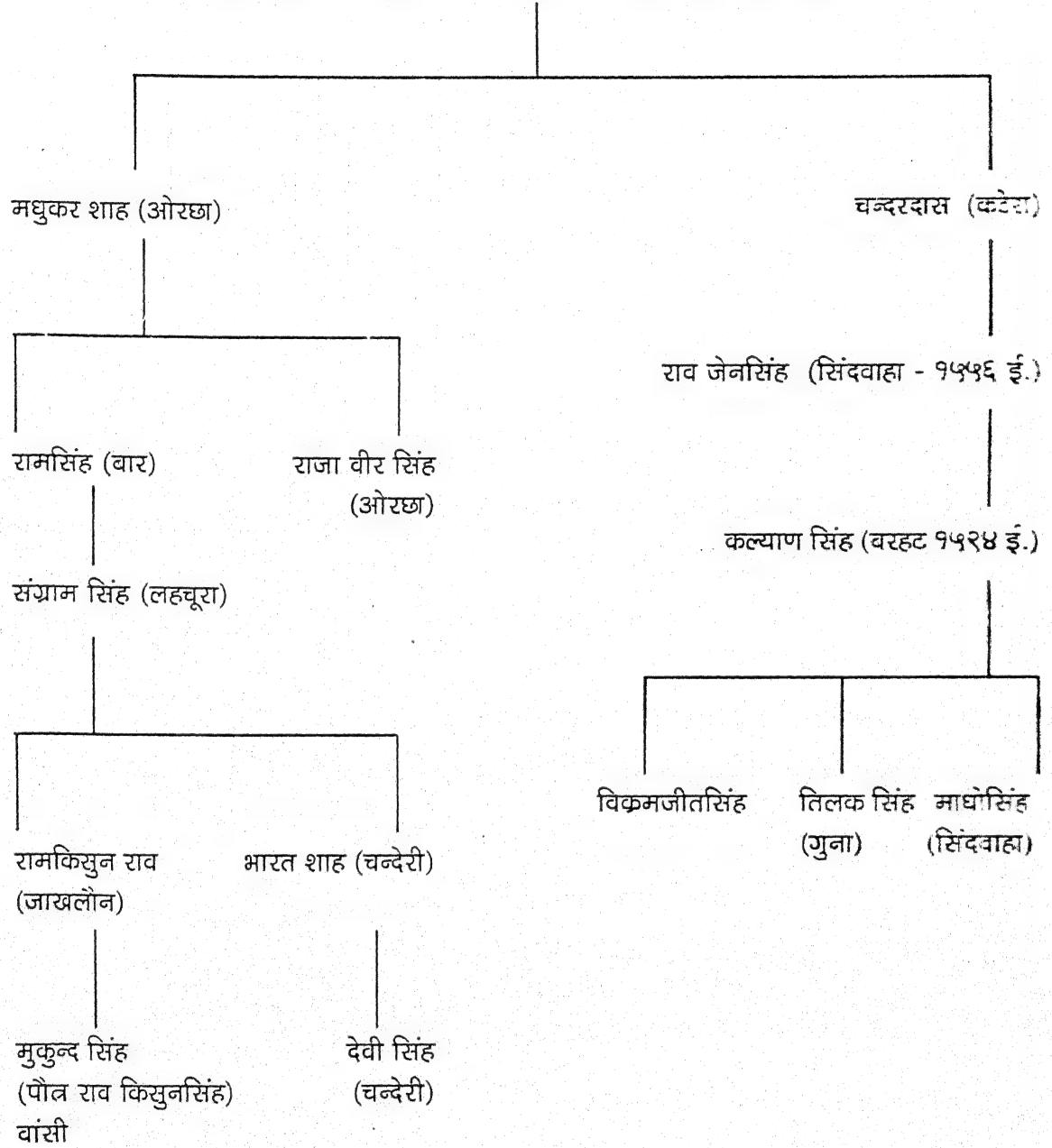
1. तवारीखे – बुन्देलखण्ड, मुंशी श्यामललाल देहल्वी, 1880, नौगांव, पृष्ठ – 47, भाग- 4 एवं बुन्देलों का इतिहास, पृष्ठ – 59, भगवानदास श्रीवास्तव एवं भगवानदास खरे, देहली, 1982

चन्देलो की राज्य सत्ता लुप्त होने के पश्चात इस भू-भाग पर एक नये राज वंश का उदय हुआ जो बुन्देला राजवंश के नाम से जाना जाता था। 1531ई. में इसी वंश के शासक रूद्रप्रताप ने अपनी राजधानी ओरछा बनायी।[1] और यहीं से समस्त बुन्देलखण्ड में इस वंश की शाखाएं फूटी। बुन्देलखण्ड की अनेक जागीर मराठा जमींदारों के अधीन रही मराठों का आगमन इस भू-भाग पर 1729 ई0 से हुआ जब बुन्देलखण्ड पर मुगल सूबेदार नवाब बंगश ने हमला कर छत्रसाल को जौनपुर के किले में घेर लिया। बाजीराव प्रथम की मदद के कारण छत्रसाल विजयी रहा। तब छत्रसाल ने अपने राज्य का एक चौथाई भाग बाजीराव प्रथम को दिया। बाजीराव के भाग में कालपी, सिरोंज, भेलसा, गुना और सागर प्राप्त हुए। बाजीराव ने अपना केन्द्र सागर बनाकर बुन्देलखण्ड में मिले अपने भू-भाग पर अपने अधिकारी नियुक्त किये।

ललितपुर क्षेत्र के प्रमुख जमीदार बुन्देला ठाकुर हैं। 1903ई. के फायनल सेटिलमेंन्ट में सेटिलमेन्ट अधिकारी ए. डब्लू. पिम ने झांसी जिले के सब डिवीजन ललितपुर में निम्न जमीदारों व जागीरदारों का वर्णन किया है। पिम महाशय के अनुसार -

इस ललितपुर में सबसे मजबूत स्थिति में जाखलौन के ठाकुर हैं, इसके अतिरिक्त उन्होंने निम्न जमीदारों का वर्णन किया है, उन कस्बों के नाम, राजबाड़ा, दलवाड़ा (दैलवारा), गेओरा, गंडेरा, सिरसी के महन्त, ललितपुर के चौबे, चन्देरी के चौधरी एवं बमराना के सेठ।[2] तवारीखे - बुन्देलखण्ड में श्यामलाल देहलवी ने जिला ललितपुर में निम्न जमींदार व जागीरदारों का वर्णन किया है। वह निम्न हैं - जाखलौन, राजवाड़ा, दहलवाड़ा, डोंगरा, कोटरा, राजगढ़, भलोनी, मोहदर, नरहट, गुना, गइहोना, गुगोरा, सिरसई।[3]

उपरोक्त जमींदारों एवं जागीरदारों के अधिकारों में ललितपुर जिले के अधिक्तर गाँव, कस्बे एवं कृषि भूमि थी।

<u>जाखलौन के जमींदार</u>- जाखलौन के जमींदार जिला ललितपुर के एक बड़े एवं प्रमुख

1. बुन्देली इतिहास - श्रीवास्तव खरे, भगवानदास, पृष्ठ - 13-14 (1982 दिल्ली)
2. फाइनल सेटिलमेन्ट रिपोर्ट, झांसी डिस्ट्रिक इन्क्लूडिंग सब डिवीजन - ललितपुर, इलाहाबाद - 1907, पृष्ठ - 9
3. तवारीखे बुन्देलखण्ड, भाग- 4, पृष्ठ - 11,12,13,14

जमीदार थे, यहाँ जागीर परगना बालाबेहट, के अन्तर्गत आती थी।[1] जमीदार जाखलौन के परिवार का सम्बन्ध ओरछा के राजा रूद्रप्रताप के वंशज से था। राजा रूद्रप्रताप का प्रौत्र एवं मधुकर शाह के ज्येष्ट पुत्र रामशाह ओरछा की गद्दी के अधिकारी थे परन्तु सम्राट जहांगीर ने ओरछा की गद्दी उनके छोटे भाई वीरसिंह देव को दी और रामशाह को प्रसन्न रखने के लिए उसे चन्देरी के पास बार की जागीर दी गयी।[2] 1643 ई0 में इस जागीर का मूल्य 75,000 ई0 रूपये था। एवं उसका अधिकारी रामशाह का पौत्र एवं संग्राम सिंह का पुत्र रावकिशुन राव हुआ। राव किशनु राव के पुत्र उदयभान एक लड़ाई में शाहजहाँ की शाही फौज में कावुल में मारा गया। शाहजहाँ ने उसके पुत्र मुकुन्दसिंह को दीवान की पदवी देकर 58 गाँव की जागीर इटवा परगने में (ललितपुर के दक्षिण-पश्चिम में) इनाम स्वरूप दी जो कि बाँसी का जागीरदार था। मुकुन्द सिंह का एक पुत्र था नारायण जू जो कि उसके बाद उसकी जागीर का अधिकारी हुआ। 1737 ई0 में वह दतिया के पास एक लडाई में मारा गया। उसका पुत्र धुमगदसिंह के बाद 1794 ई0 में यह जागीर उनके चार पुत्रों में बाँट दी गयी।[3] छत्तरसिंह एवं उदय सिंह को 3-8 के हिसाब से तथा बख्तसिंह को 1-8 के हिसाब से जागीर में भाग प्राप्त हुये।[4] वरोदा स्वामी की गढ़ी उमराव सिंह ने बनवायी थी जो देवीसिंह जाखलौन का पूर्वज था। छत्तर सिंह एवं उदयजीत सिंह इस परिवार के प्रमुख व्यक्ति हुये।[5] जाखलौन की जमीदारी निम्न थी – 19 गाँव/परगना बालाबेहट में, 8 गाँव परगना ललितपुर में, 6 गाँव बाँसी में, 2 गाँव वानपुर में,[6] इसके अतिरिक्त 12 अन्य गाँव सिंधिया एवं सागर से प्राप्त हुए थे।[7]

<u>पाली के जमींदार</u> – पाली की जागीर बालाबेहट परगने में आती है इसके वंशज भी ओरछा वाले रामशाह की शाखा के थे। राजा रामशाह के परपौत्र राजा दुरजन सिंह (1713-1758) तक चन्देरी के राजा रहे, उनके पुत्र राजा जोरावर सिंह को पाली की जागीर उनके पिता दुरजनसिंह ने दी थी। ड्रेक ब्रौक मैंन के अनुसार 1780ई. में चन्देरी की जागीर जब्त कर ली गई थी।,

---

1. झांसी ड्यूरिंग द ब्रिटिश रूल ' डॉ. एस. पी. पाठक
2. बुन्देलों का इतिहास, पृष्ठ – 58
3. ड्रोक ब्राउन, पृष्ठ – 108
4. ड्रेक ब्रोक मैन, डी. एल. झांसी गजेटियर (1909, इलाहाबाद) पृष्ठ – 108-109
5. ड्रेक ब्रोक मैन, डी. एल. झांसी गजेटियर (1909, इलाहाबाद) पृष्ठ – 108-109
6. ड्रेक ब्रोक मैन, डी. एल. झांसी गजेटियर (1909, इलाहाबाद) पृष्ठ – 108-109
7. ड्रेक ब्रोक मैन, डी. एल. झांसी गजेटियर (1909, इलाहाबाद) पृष्ठ – 108-109

एवजी के केवल 22 गॉव मिले थे। अगले दस वर्ष में 13 गॉव की इसमें और बढोत्तरी कर दी गयी थी।[1]

<u>नाराहट के जमींदार</u> - इस जागीर के वंशज भी ओरछा के बुन्देला सरदार थे। 1594ई. में राव जेट सिंह के बड़े पुत्र राव कल्याणसिंह ने सर्वप्रथम इस जागीर पर अपना अधिकार किया था।[2] इस जागीर में राव बख्तवली के अतिरिक्त दीवान परीक्षत सिंह, कुंअर बलवन्त व चहन सिंह आदि जागीरदारों का अधिकार था। इस जागीर का वार्षिक राजस्व 12,000.00 रू0 था[3]

<u>सिंदवाहा के जमींदार</u>- राजा रूद्रप्रताप (ओरछा के संस्थापक) के छोटे पुत्र चन्दरदास उर्फ चॉद पहाड़ ने 1556ई0 में सिंदवाहा जागीर अपने पुत्र राव जेटसिंह को दी थी।[4]

<u>डोंगरा कलां के जमींदार</u> - इस जागीर के जागीरदार या जमीदार बुन्देला ठाकुर थे यह जागीर मड़ावरा परगने में आती है। इस जागीर के वंशज उदयभानु पुत्र कल्याण सिंह नरहट वाले थे।[5] 1859ई0 में ब्रिटिश सरकार ने 7 गॉव डोंगरकलां के ठाकुरों को प्रदान किये थे जिसका राजस्व 1000.00 रू0 सरकारी सिक्का था।[6]

<u>गुना (गौना) के जमींदार</u> - इस परगना नरहट में आता था, इस जागीर के वंशज दंगलसिंह व दीवान गनेश जू व दीवान अर्जुन सिंह बुन्देला थे। इस जागीर का वार्षिक राजस्व 6000.00 रू. था जिसमें से 1700.00 रू. सरकार को देना होता था।[7]

<u>राजवाडा (रजवारा) के जमींदार</u> - इस जागीर के वंशज चन्देरी के बुन्देला ठाकुर थे इसके अंतिम जागीरदार अर्जुनसिंह थे। इसका राजस्व 10,000.00 रू0 साल था, जिसमें 1900.00 रूपये सरकार को देना पड़ता था।[8]

---

1. एटकिशन, ई. टी., पृष्ठ - 346
2. ड्रेक ब्रोक मैन, डी. एल. झांसी गजेटियर (1909, इलाहाबाद) पृष्ठ - 104
3. एटकिशन, ई. टी., पृष्ठ - 347
4. ड्रेक ब्रोक मैन, डी. एल. झांसी गजेटियर (1909, इलाहाबाद) पृष्ठ - 106
5. झांसी ड्यूरिंग द ब्रिटिश रूल ' डॉ. एस. पी. पाठक, पृष्ठ - 127
6. ड्रेक ब्रोक मैन, डी. एल. झांसी गजेटियर (1909, इलाहाबाद) पृष्ठ - 107
7. तवारीखे बुन्देलखण्ड, भाग- 4, पृष्ठ - 114-115
8. तवारीखे बुन्देलखण्ड, भाग- 4, पृष्ठ - 114-115

<u>सिरसी के जमींदार</u> – इस जागीर के वंशज महन्त दौलत गुरू चेले महन्त गोकुल थे इसका वार्षिक राजस्व 10,000.00 रू0 था इस जागीर के राजस्व में सरकार कोई भाग नहीं लेती थी।[1]

हिन्दू कानून के अनुसार क्षत्रिय शासक का यह कर्त्तव्य है कि वह स्मृतियों के नियमों के अनुसार समाज संगठन की रक्षा करें जब भारत पर प्राचीन युग में हिन्दू सम्राट और राजा शासन करते थे। किन्तु भारत के बड़े भू-भाग पर मुस्लिम शासन की स्थापना से क्षत्रिय राजा, सामन्त अथवा जमींदार की स्थिति तक गिर गये। जागीरी जमीनों में यदि जागीर बड़ी होती थी तो जागीरदारों का कारिन्दा भूमि कर संग्रह करता था। जागीरदारों के अतिरिक्त जमींदार थे जो भूमि पर वंशानुगत अधिकार भोगते थे। जमींदारों में प्राचीन घरानों के वंशज भी थे, जो कभी स्वतंत्र और प्रभुसत्ता धारी थे।

ललितपुर क्षेत्र के जमींदारों को भूमि से प्राप्त राजस्व से अनुमान लगाया जा सकता है कि उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति अच्छी थी। अधिकतर जमींदारों के पास अपनी सेना होती थी एवं कर संग्रह करने के लिए कर्मचारी भी उनके पास थे। यहाँ तक की वह जिस राजा के आधीन होते थे उसके युद्धों में भाग भी लिया करते थे तथा अपनी सेना की एक टुकड़ी भी भेजते थे।

जाखलौन (ललितपुर जनपद) के जमींदार रावकिशुनराव के पुत्र उदयभान एक लड़ाई में शाहजहाँ की शाही फौज में काबुल में मारा गया था।

अतः अंग्रेजी शासन से पहले ललितपुर क्षेत्र के जमीदारों की सामाजिक आर्थिक स्थिति ठीक थी।

(३)

<u>कृषि - व्यवस्था</u>

ललितपुर जनपद का मुख्य आर्थिक आधार कृषि रहा है, इस जनपद में दो प्रकार की मिट्टी पायी जाती है – काली मिट्टी, लाल मिट्टी या उपजाऊ मिट्टी और बंजर या बेकार

---

1. तवारीखे बुन्देलखण्ड, भाग- 4, पृष्ठ - 114-115

मिट्टी। उपजाऊ किस्म की मिट्टियों में मार, काबर, पड़वा एवं तारी बताई गई है, राकड़ वंजर और बेकार मिट्टी बतायी गयी।[1]

यहाँ के किसान कृषि के लिए मुख्य रूप से वर्षा पर निर्भर रहते थे। समय से वर्षा न होने या कम या अधिक होने पर फसलें क्षतिग्रस्त हो जाती थी। ये कुओं, तालाबों तथा नदियों से सिंचाई भी करते थे।[2] इस जनपद में रबी की फसल में गेहूँ, चना मटर आदि अधिक मात्रा में नहीं होता था। खरीफ की फसल में निम्न स्तर के अनाज - कोदों, सांवा एवं कुटकी अधिक उपजाया जाता था।[3] जनपद की अच्छी प्रकार की काली मिट्टी में उच्च किस्म की कपास पैदा होती थी। यह जनपद तथा बुन्देलखण्ड के वस्त्र उद्योग की मुख्य फसल थी। लेकिन अंग्रेजी शासन नीति के कारण इसका उत्पादन कम होता गया। 1874 ई. में एटकिन्सन ने लिखा था कि ललितपुर में कपास का जितना उत्पादन होता है वह अत्यन्त कम है। इससे स्थानीय आवश्यकताओं की भी पूर्ति नहीं होती, आसपास के जिलों से भी जनपद में कपास मंगानी पड़ती थी।[4]

जनपद ललितपुर के क्षेत्रों में तिलहन, सरसों, तिल और अलसी का भी अच्छा उत्पादन होता था। इससे मुख्यतः तिल का उत्पादन उच्च स्तर पर किया जाता था।[5] किन्तु कालांतर में अधिक लागत तथा कम लाभ के कारण तिलहन के उत्पादन में भी किसानों की अभिरूचि कम होती चली गयी।

यहाँ अल-नामक पौधे की खेती की जाती थी। अच्छी किस्म की मार भूमि में इस पौधे की खेती की जाती थी। लगभग एक एकड़ भूमि में इस पौधे की दस मन जड़ का उत्पादन हो जाता था।[6] इस पौधे की जड़ को खोद कर तथा उसे भट्टियों में जलाकर विभिन्न

---

1. झांसी गजेटियर - 1965, ईशा बसंत जोशी, पृष्ठ - 98
2. झांसी गजेटियर - 1965, ईशा बसंत जोशी, पृष्ठ - 98
3. स्टेटिस्टिकल, डेस्क्रिप्टिव हिस्टारिकल एकाउण्ट आफ एन. डब्लू प्राविन्सेंज आफ इण्डिया भाग - एक, (बुन्देलखण्ड) ई. टी. एटकिन्सन, पृष्ठ - 258
4. स्टेटिस्टिकल, डेस्क्रिप्टिव हिस्टारिकल एकाउण्ट आफ एन. डब्लू प्राविन्सेंज आफ इण्डिया भाग - एक, (बुन्देलखण्ड) ई. टी. एटकिन्सन, पृष्ठ - 258
5. स्टेटिस्टिकल, डेस्क्रिप्टिव हिस्टारिकल एकाउण्ट आफ एन. डब्लू प्राविन्सेंज आफ इण्डिया भाग - एक, (बुन्देलखण्ड) ई. टी. एटकिन्सन, पृष्ठ - 250 - 251, 316
6. स्टेटिस्टिकल, डेस्क्रिप्टिव हिस्टारिकल एकाउण्ट आफ एन. डब्लू प्राविन्सेंज आफ इण्डिया भाग - एक, (बुन्देलखण्ड) ई. टी. एटकिन्सन, पृष्ठ - 252

प्रकार के रंगों का निर्माण किया जाता था। जिसका उपयोग वस्त्रों के रंगने के कार्य में होता था।[1] 1873 ई0 में यह जड़ 8 रूपये प्रतिमन के हिसाब से बेची जाती थी।[2] लेकिन 1892 ई0 तक इसकी खेती काफी कम हो गयी।

अंग्रेजी शासन नीति 1857 ई0 की क्रान्ति से व्याप्त अस्थिरता और अशान्ति से जनपद की कृषि पर काफी बुरा असर पड़ा, 1868-69 ई0, 1895 - 96 ई0, 1896 - 97 ई0 के अकालों तथा अकाल के समय भूमि में उगी कॉश धास ने भी जनपद के किसानों की आर्थिक स्थिति को तोड़ कर रख दिया।[3] कॉश धास से भूमि की उर्वरा शक्ति नष्ट हो जाती है। 1869 ई0 के जून माह में ललितपुर में हैजा फैला जिससे अधिकांश मानव एवं पशु की हानि हुई जिससे कृषि व्यवस्था की रीढ़ टूट गयी।[4]

(४)

कुटीर उद्योग धन्धों की दशा

ललितपुर जनपद प्राकृतिक सुविधाओं (लोहा, ताँबा एवं अन्य कच्चा माल) से परिपूर्ण क्षेत्र को देखते हुए इस जनपद में उद्योग की स्थिति नगण्य थी यहाँ कोई वड़ा उद्योग स्थापित नहीं हो पाया जिससे यहाँ के लोगों को धंधा या नौकरी मिल सके। फिर भी निम्न कुटीर उद्योग या घरेलू उद्योग धीर-धीरे काम करते रहे।

ललितपुर को तिलहन और घी की एक बड़ी मण्डी माना जाता था।[5] परन्तु तेल पिरोने (निकालने) का कार्य पुरानी कोल्हू रीति से किया जाता था। यह कोल्हू आज भी ललितपुर

---

1. झांसी ड्यूरिंग दि ब्रिटिश रूल - डॉ. एस. पी. पाठक, पृष्ठ 57
2. स्टेटिस्टिकल, डेस्क्रिप्टिव हिस्टारिकल एकाउण्ट आफ एन. डब्लू प्राविन्सेंज आफ इण्डिया भाग - एक, (बुन्देलखण्ड) ई. टी. एटकिन्सन, पृष्ठ - 252
3. (1) स्टेटिस्टिकल, डेस्क्रिप्टिव हिस्टारिकल एकाउण्ट आफ एन. डब्लू प्राविन्सेंज आफ इण्डिया भाग - एक, (बुन्देलखण्ड) ई. टी. एटकिन्सन, पृष्ठ - 320
   (2) बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास - प्रतिपाल सिंह, पृष्ठ - 101
4. स्टेटिस्टिकल, डेस्क्रिप्टिव हिस्टारिकल एकाउण्ट आफ एन. डब्लू प्राविन्सेंज आफ इण्डिया भाग - एक, (बुन्देलखण्ड) ई. टी. एटकिन्सन, पृष्ठ - 252
5. ललितपुर जिले का सामाजिक आर्थिक इतिहास (1866 - 1947 ई0) शोध प्रबन्ध - महेन्द्र मोहन अवस्थी, पृष्ठ - 117

जनपद के अनेक गाँवों में देखने को मिलते हैं। 1940 ई0 में सर्वप्रथम मोहन ऑयल मिल्स नाम का तेल स्पेलर लगाया गया था।[1]

वस्त्र उद्योग यहां का प्रमुख उद्योग था, खरूआ वस्त्रों का उद्योग जनपद के कई भागों में विकसित था इसकी रंगाई भी होती थी। यहां के कुछ बुन्देला सरदारों ने कारीगरों को संरक्षण दिया जिससे बाहर के व्यापारियों ने इस क्षेत्र में आकर अपने औद्योगिक प्रतिष्ठान खोलने प्रारम्भ किये इसके अतिरिक्त, जनपद में सूची व ऊनी वस्त्रों की बुनाई भी होती थी।[2] साड़ी निमार्ण का कार्य भी यहाँ होता था। चन्देरी (ललितपुर क्षेत्र) में अच्छी प्रकार की साड़ियों के लिए प्रसिद्ध था। साड़ी का कुटीर उद्योग चलाने के लिए कुछ जुलाहे बाहर से आकर यहाँ बस गये थे। लेकिन 1865 ई0 में हैजा के फैल जाने के कारण उनमें से अधिकाशं जुलाहे मर गए तथा कुछ बाहर चले गये जिससे इस उद्योग को भारी क्षति हुयी।[3] इसके पश्चात् 1868-69 ई0 में अकाल पड़ गया जिससे लोग भुखमरी की स्थिति के कारण यहाँ के गाँवों में मर गये अथवा गाँवों को खाली करके चले गये।[4] ब्रिटिश शासन ने पीड़ित लोगों को सहायता देने के लिए ललितपुर जनपद के तालबेहट, बाँसी, बानपुर महरौनी तथा जाखलौन में सहायता केन्द्र खोले[5] परन्तु यह राहत कार्य नाम मात्र किए गये।

ललितपुर नगर के समीप के गाँवों में मुसलमान कलात्मक चुनरी बनाते थे।[6]

जनपद में सूती और ऊनी कालीन बनाने का भी उद्योग था जो कालांतर में अंग्रेजी शासन की नीति के कारण नष्ट हो गया।[7]

तालबेहट परगने में कम्बल बुनाई उद्योग विकसित था।[8] जनपद के कुछ

---

1. झांसी गजेटियर - 1965, ईशा बसंत जोशी, पृष्ठ - 148
2. ललितपुर जिले का सामाजिक आर्थिक इतिहास, पृष्ठ - 125 - 127
3. स्टेटिस्टिकल डेस्क्रिप्टिव, हिस्टारिकल एकाउन्डस आफ एन. डब्लू. प्राविन्सेज ऑफ इण्डिया भाग - I, ई. टी. एककिन्सन, पृष्ठ - 343
4. बुन्देलखण्ड गजेटियर, ई. टी. एककिन्सन, पृष्ठ -256
5. बुन्देलखण्ड गजेटियर, ई. टी. एककिन्सन, पृष्ठ -256
6. झांसी सेटिलमेन्ट रिपोर्ट 1892 डब्लू. एच. एल. इन्फे तथा जे. एस. मेस्टन, पृष्ठ - 23
7. ललितपुर जिले का सामाजिक - आर्थिक इतिहास (1866-1947), पृष्ठ - 117., 126
8. ललितपुर जिले का सामाजिक - आर्थिक इतिहास (1866-1947), पृष्ठ - 116, 126, 177

स्थानों पर दरी निमार्ण का कार्य कुछ कारीगर हाथों से करते थे।[1] दरी, कालीन साड़ियों तथा वस्त्रों को रंगने के लिए अल घास की जड़ से रंग तैयार (नील उद्योग) करने का उद्योग भी विकसित था।[2] यहाँ कारीगर टाट, बोरियों व चटाइयों की बुनाई भी हाथ से करते थे।[3] घोड़ों पर बैठने के लिए चमड़े की जीन एवं पर्दे भी यहाँ बनाये जाते थे।[4] अमेरिकन मिशनरियों ने सूअर की चर्बी से मसक बनाने का कार्य प्रारम्भ किया था।[5]

मड़ावरा और मदनपुर में पीतल व ताँबे के बर्तन बनाने का कार्य होता था।[6] यहाँ पीतल व लोहे की अनेक कलात्मक वस्तुएँ भी बनायी जाती थी जगह जगह पर सुनारों द्वारा सोने व चाँदी के अच्छे किस्म की स्त्री आभूषण बनाये जाते थे।[7]

जनपद में पत्थर उद्योग भी काफी विकसित अवस्था में था। चट्टानों को खदानों से निकालने, कटाई, छंटाई तथा उन पर पालिस करने का कार्य भी यहाँ होता था।[8] चट्टानों की लम्बी सिलाटें (पट्टी) भवन निमार्ण के कार्य में काम आती थी, वेतवा नदी की तलहटी में जो छोटे – छोटे किस्म के पत्थर पानी की रगड़ से चिकने हो जाते थे उन्हें यहाँ के कारीगर पालिस करके लकड़ी के गुटकों में मडकर अच्छी हस्तनिर्मित चीजें बनायी जाती थी इसके लिए यहाँ के कारीगरों ने देश की विभिन्न प्रदर्शिनियों में प्रस्तुत भी किया था।[9] लेकिन अंग्रेजी शासनकाल में निषेधात्मक तरीकें अपना कर इन्हें हतोत्साहित किया गया था।

पत्थरों से मूर्ति निर्माण का कार्य भी यहाँ बहुत अधिक होता था। जनपद में देवगढ़[10] एवं सेरोन जी[11] इसके प्रमुख केन्द्र थे। यहाँ निर्मित मूर्तियों में जैन तीर्थंकर देव-देवियों, साधु-साधुनियों, तीर्थंकर माता एवं स्रावक – स्राविकाओं आदि की मूर्तियां मुख्य थी तथा हिन्दू देवताओं की मूर्तियों में सूर्य, शिव, वाराह और विष्णु आदि की मूर्तियों का वाहुल्य

---

1. ललितपुर जिले का सामाजिक – आर्थिक इतिहास (1866-1947), पृष्ठ – 124-125
2. ललितपुर जिले का सामाजिक – आर्थिक इतिहास (1866-1947), पृष्ठ – 121-23
3. ललितपुर जिले का सामाजिक – आर्थिक इतिहास (1866-1947), पृष्ठ – 124-127
4. ललितपुर जिले का सामाजिक – आर्थिक इतिहास (1866-1947), पृष्ठ – 116-117
5. झांसी गजेटियर – 1909, डी. एल. ड्रेक, ब्रोकमैन, पृष्ठ – 75
6. झांसी गजेटियर – 1909, डी. एल. ड्रेक, ब्रोकमैन, पृष्ठ – 75
7. झांसी गजेटियर – 1909, डी. एल. ड्रेक, ब्रोकमैन, पृष्ठ – 75
8. झांसी गजेटियर – 1909, डी. एल. ड्रेक, ब्रोकमैन, पृष्ठ – 76-77
9. झांसी गजेटियर – 1909, डी. एल. ड्रेक, ब्रोकमैन, पृष्ठ – 76-77
10. देवगढ़ की जैनकला – भागचन्द्र जैन, पृष्ठ – 65
11. भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ भाग – 1, संकलन, सम्पादन – बालभद्र जैन, पृष्ठ – 196-97

पीतल की मूर्तियां (जखौरा)

गौरा पत्थर पाउडर बॉक्स (कैलगुवां)

ललितपुर की हस्तशिल्प कला

गौरा पत्थर के ज्वेलरी बॉक्स (कैलगुवां)
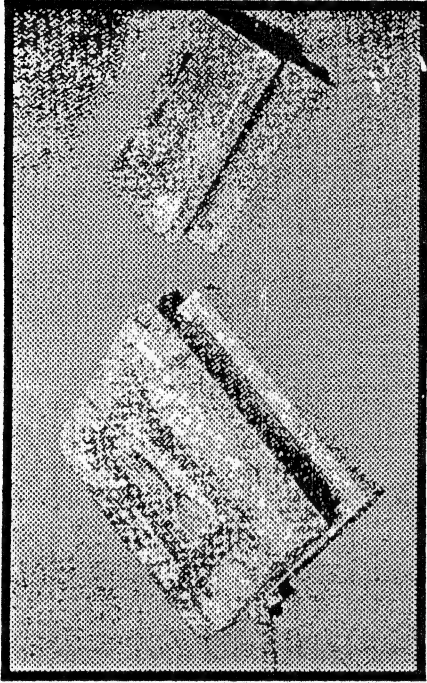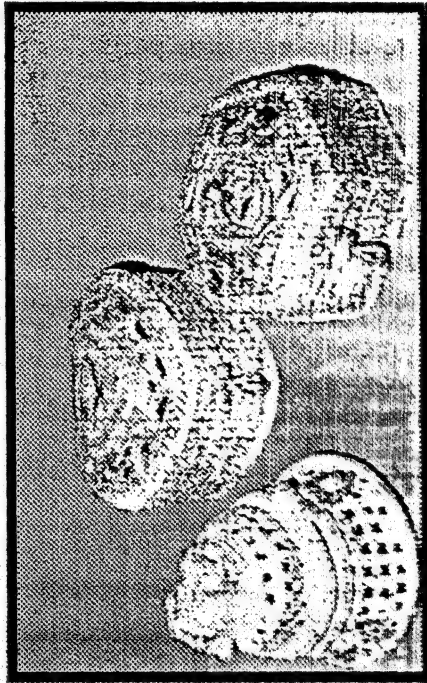
पीतल का रथ (जखौरा)

था।[1] परन्तु इन मूर्तिकारों को मुसलमान शासकों ने प्रताड़ित किया और आने वाले समय में अंग्रेजों शासकों से भी इनको कोई प्रोत्साहन नहीं मिला।

परन्तु स्वतंत्रता के बाद आज भी अनेक उद्योग अभी जीवित हो उठे हैं। जनपद के सभी अंचलों में लकड़ी के फर्नीचर कृषि यंत्र, चमड़े का सामान, बीड़ी निर्माण. बॉस की टोकरियों आदि का निर्माण पुनः होने लगा है। कैलगुँवा में गौरा पत्थर की विभिन्न प्रकार की आकर्षक वस्तुओं का निर्माण कुटीर उद्योग के रूप में परम्परागत तरीके से हो रहा है हथकरधों से वस्त्र बनाने के साथ ही विकासखण्ड जखौरा के ग्राम बुढ़वार में चन्देरी टाइप की साड़ी का निर्माण गृह उद्योग के रूप में हो रहा है। जखौरा में पीतल की मूर्तियों रथ आदि का निर्माण परम्परागत तरीके से आज भी किया जा रहा है।[2]

(५)

ललितपुर में ऋण लेन - देन की परम्परा

प्रचलित परम्परा के अनुसार देवपत तथा खेवपत नाम के दो जैनियों ने मेरठ से चलकर बुन्देलखण्ड में प्रस्थान किया तथा ललितपुर को अपने व्यापार का केन्द्र बनाया। यह ललितपुर के देवगढ़ नामक स्थान पर निवास करने लगे। इन जैनी व्यापारियों ने ऋण देने का कार्य प्रारम्भ किया जिले की गिरती हुयी दशा, लगातार पड़ने वाले अकालों का प्रकोप, अंग्रेज सरकार की कठोर राजस्व दरें, उद्योंग तथा व्यापार आदि नष्ट होने के कारण इस क्षेत्र में भुखमरी और गरीबी आयी। इसके कारण लोगों को अपनी भूमि गिरबी रखकर ऋण दाताओं से कर्ज लेना पड़ा किन्तु इस कर्ज का भुगतान न कर पाने के कारण किसानों की भूमि ऋण दाताओं के हाथ में आ गई।[3]

जिस समय लोग भुखमरी से मर रहे थे उस समय ललितपुर में जनता को सेठ, साहूकार, महाजनों आदि से उधार ऋण मिल जाता था। और अन्य जगह अंग्रेजों का कहर वरस रहा थां आज भी ललितपुर क्षेत्र में यह जनश्रुति प्रचलित है कि –

1. भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ भाग – 1, संकलन, सम्पादन – बालभद्र जैन, पृष्ठ – 191–97
2. अनुक्रमणिका 1988, जिला सूचना विभाग ललितपुर द्वारा प्रकाशित, पृष्ठ – 12
3. झाँसी ड्यूरिंग द ब्रिटिश रूल – डॉ. एस. पी. पाठक, पृष्ठ – 170–171

"झांसी गले की फाँसी, दतिया गये का हार।
ललितपुर न छोड़ियो, जब तक मिले उधार।।"[1]

ललितपुर में बुन्देला ठाकुर जो इस क्षेत्र के सफल जमीदार थे, आर्थिक मन्दी की चपेट के कारण धीरे-धीरे ऋणग्रस्त हो गये और उन्होंने भी बहुत सारी भूमि जैनी और मारवाड़ियों को गिरवी रख दी जो बाद में ऋणदाताओं के हाथ में आ गयी। इस क्षेत्र की ऋण की परम्परा ने लेफ्टीनेन्ट गवर्नर विलियम मयूर का ध्यान आकृष्ट किया।[2] जनवरी 1872 ई0 में उसने इस क्षेत्र का दौरा किया।

यह ऋण की परम्परा सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड में फैली हुयी अपनी बुन्देलखण्ड यात्रा के दौरान मयूर ने यह अनुभव किया कि शीघ्र ही एक कानून पास कर ऋणदाताओं के वास्तविक हिसाब की जानकारी प्राप्त की जाये तथा किसानों को मुक्त किया जाए।[3] लेफ्टीनेन्ट गर्वनर के आदेश के आधार पर 1874 ई0 में कमिश्नर कालबिन को जाँच - पड़ताल हेतु नियुक्त किया गया।[4] अन्त में अनेक रिपोर्टो के आधार पर 1882 ई0 में बुन्देलखण्ड भूमि हस्तान्तरण कानून पास किया गया जिसमें भूमि के हस्तान्तरण पर रोक लगा दी गयी। इसमें यह व्यवस्था कर दी गयी कि ऋण से लदे किसानों को वोझ को हल्का करने के लिए सम्बन्धित मजिस्ट्रेट इसके लेखे - जोखे का विवरण दें और ऋणग्रस्त किसान की भूमि का एक हिस्सा बेचकर शेष भूमि उन्हीं किसानों को सौप दी जाए। बेचे हुए भाग से प्राप्त धन से ऋणदाताओं के ऋण की पूर्ति कर दी जाए।[5]

लेकिन अन्ततः यह महसूस किया गया कि जब तक किसानों को भूमि वेचने पर रोक नहीं लगाई जावेगी तब तक कृषि योग्य भूमि ऋणदाताओं के हाथ में जाने से नहीं रोकी जा सकती। अन्ततः सरकार को वाध्य होकर बुन्देलखण्ड के कृषकों (ललितपुर सहित) की दशा सुधारने के लिए 1903 ई में भूमि हस्तान्तरण कानून पास करना पड़ा।[5] जिससे यह व्यवस्था कर दी गयी कि यदि कोई किसान किन्हीं कारणों से भूमि बेचना चाहता है

---

1. अनुक्रमणिका - 1996 - 97, जिला सूचना कार्यालय, ललितपुर से प्रकाशित, पृष्ठ - 7
2. झांसी सेटिलमेन्ट रिपोर्ट 1892 - इम्पे तथा मेसटन, पृष्ठ - 55
3. झांसी सेटिलमेन्ट रिपोर्ट 1892 - इम्पे तथा मेसटन, पृष्ठ - 55
4. झांसी सेटिलमेन्ट रिपोर्ट 1892 - इम्पे तथा मेसटन, पृष्ठ - 55
5. झांसी सेटिलमेन्ट रिपोर्ट 1892 - इम्पे तथा मेसटन, पृष्ठ - 55
6. झांसी गजेटियर 1909, डी. एल. ड्रेक ब्राकमैन, पृष्ठ - 154

तो वह उस भूमि का विक्रय केवल उसी वर्ग को करेगा जो वर्ग कृषि कार्य में संलग्न है. इस एक्ट के पास करने के पीछे विशेष उद्देश्य यह था कि ऋणदाताओं एवं गैर कृषक वर्ग में कृषि योग्य भूमि का विक्रय न होने दिया जाए।

ललितपुर की ऋणग्रस्ता ने इतना विकराल रूप धारण किया कि यहाँ के बुन्देला जो जमीदार थे भुखमरी व ऋणग्रस्ता के कारण चोरी डकैती की ओर उन्मुख हुये।

अठारह सौ सत्तावन के प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में आगे से भी आगे रहने वाले इस क्षेत्र के बहादुर सपूतों ने, देश के विशाल मानचित्र पर

"ललितपुर कबहुं न छोड़ियो, जब तक मिले उद्धार"

जैसी राष्ट्र व्यापी उक्ति के माध्यम से अपनी अलग पहचान जन – क्रान्ति के उठान व दमन के तूफानी दिनों में बनाई थी।

(६)

सामाजिक - आर्थिक पिछड़ापन

ललितपुर जनपद प्राचीन काल से ही बहुत प्रसिद्ध नगर और प्रमुख औद्यौगिक, व्यापारिक केन्द्र रहा है परन्तु अंग्रेजी शासन काल में इसकी स्थिति दयनीय हो गयी खासकर 1804 ई0 से लेकर 1947 ई0 तक ब्रिटिश शासनकाल में ललितपुर सामाजिक तथा आर्थिक रूप से पिछड़ापन स्थिति का शिकार रहा। यहाँ के कुटीर उद्योग धन्धों के विनाश से बेरोजगारी तथा गरीबी निरन्तर बढ़ती गई। चन्देरी साड़ी उद्योग, तालबेहट का कम्बल उद्योग, जनपद का पत्थर उद्योग, मूर्तिकला उद्योग, नील उद्योग सूती और ऊनी कालीन उद्योग, तेल एवं घी व्यवसाय, तथा कृषि व्यवसाय आदि के विनाश से इस क्षेत्र का आर्थिक पिछड़ापन बना रहा। ऐसा प्रतीत होता है कि यहाँ की स्वतन्त्रता प्रिय जनता से अंग्रेजी शासक चिढ़े हुये थे। 1857 के विद्रोह में बानपुर के राजा मर्दन सिंह, पाली के राव हम्मीर सिंह के अलावा देवी सिंह और उनके पुत्र भुजबल, दैलवारा के जसवन्त सिंह तथा जन्नू, बजुआ, छतरसिंह, बरजोर सिंह एवं दौलत सिंह जाखलौन के महीपत सिंह एवं पं. झुनारे रावत आदि नेताओं के नेतृत्व में ललितपुर की जनता ने अंग्रेजों को गहरा आघात पहुँचाया था। यद्यपि 1857 ई0 के विद्रोह का दमन हो

गया और 1858 ई0 में अंग्रेजों को इस क्षेत्र में शासन स्थापित करने में सफलता मिली. लेकिन अंग्रेज इस क्षेत्र की जनता से बदला लेने पर डटे हुये थे। अंग्रेज शासक यह भलिभाँति समझते थे कि यहाँ की विद्रोही जनता को सजा देने का सबसे बेहतर तरीका यह है कि ललितपुर को आर्थिक रूप से पिछड़ा बनाये रखा जाये। यह नीति 1858 ई0 से जारी रही। राजस्व नीति की कठोरता ने अंग्रेजों को अपनी योजना के क्रियान्वयन में भरपूर मदद प्रदान की

जनपद ललितपुर का समाज सभ्य, सरल और शान्त था एवं धार्मिक दृष्टि से उदार और निष्ठावान था आर्थिक दृष्टि से जनपद समृद्ध और सम्पन्न था लेकिन समाज में अर्थ का समान वितरण नहीं था इस दृष्टि से समाज उच्च व निम्न वर्ग में विभाजित था जो इस क्षेत्र के सामाजिक आर्थिक रूप से पिछड़ेपन का एक और कारण था।

मुस्लिम शासन काल में यहाँ मस्जिद और मखतब शिक्षा के केन्द्र थे, अंग्रेजी शासन काल में स्कूल - कालेज शिक्षा के केन्द्र बने। लेकिन 1861 ई0 तक केवल तहसील स्तर तक अर्थात ललितपुर महरौनी और मड़ावरा में केवल प्राइमरी स्तर तक ही स्कूल थे।[1] साथ ही लड़कियों की शिक्षा के लिए सरकार की ओर से जब स्कूल खोले गये तो थोडे ही दिन बाद लड़कियों की संख्या कम होने से सरकार को स्कूल बन्द करना पड़ा।[1] क्योंकि जनता लड़कियों का पढ़ाना उचित नहीं समझती थी। जिले में सतीप्रथा प्रचलित होने के भी प्रमाण है उदाहरण स्वरूप ब्लाक बार में कठ्वर (भावनी) गाँव में सतीमाता का चबूतरा है समीप का नाला सत्ती घाट के नाम से प्रसिद्ध है। जिले में ऐसे कई और प्रमाण भी हैं। परन्तु लार्ड विलियम वैंटिग ने 1829 ई0 में सती प्रथा पर रोक लगाई तथा स्त्रीयों की दशा में सुधार किया।

(७)

जन साधारण की स्थिति

1734ई. में इस क्षेत्र के एक बड़े भाग पर मराठा राजाओं का अधिपत्य हो गया था जो, 19वीं. शताब्दी के मध्य तक रहा। इस काल में कृषकों एवं जमीदारों में कोई भेद नहीं था, सभी वर्ग के लोग लगान अथवा भूमि कर सरकार को देते थे। जमीदार अधिक्तर उनसे बेकार का कार्य करवाते एवं बंधक के रूप में रखते थे, वह एक प्रकार से जमींदार के गुलाम रहते थे। परन्तु कृषक इतना सब कुछ होने पर भी उनके प्रति प्रत्येक बलिदान को

---

1. झांसी ड्यूरिंग द ब्रिटिश रूल, पृष्ठ - 152-152

तैयार रहते थे। जमीदार अथवा जागीरदारों को भी कृषक वर्ग की बाहरी एवं भीतरी विपत्तियों से उनकी रक्षा करनी पड़ती थी। इसके अतिरिक्त सेना पर सिंचाई पर एवं सिंचाई के लिये बनाये गये कुएं अथवा तालाबों की मरम्मत पर भी धन व्यय करना पढ़ता था। जमीदारों द्वारा भारी करों की बसूली पर कृषक वर्ग यह सोचकर सब अन्नाय सहते रहते कि यह हमारी जान एवं माल की रक्षा करते हैं समय पड़ने पर धन एवं बीज देते हैं, वह जमीदार को अन्नदाता कहते थे, फिर वह यह सोचकर सन्तुष्ट रहते थे कि हमें जीना मरना इसी गाँव में है।[1]

एक किसान और उसके वंशज धरती के एक टुकड़े अथवा टुकड़ों को तब तक अपने अधिकार में रख और उसका फलोपभोग कर सकते थे जब तक उसकी उपज का देय अंश वे राज्य को अदा करते रहते थे। 18वीं शताब्दी में श्रम कम मात्रा में उपलब्ध था इसलिए इसका महत्व और मूल्य अधिक था। राजा लोग कृषि क्षेत्र को बढ़ाने के लिए उत्सुक रहते थे। और अपने सूबेदारों, जागीरदारों तथा अन्य अधिकारियों को समय समय पर निर्देश देते रहते थे, कि किसान का हित उनका प्राथमिक कर्तव्य है। असह्य क्रूरताओं और अत्याचारों के विरुद्ध किसान के पास सबसे प्रभावशाली हथियार यही था कि वह असहयोग कर दें, गाँव छोड़ दें, और यदि आवश्यकता पड़े तो जंगल साफ करके नई बस्ती बसाने के लिए पड़ोस के वनों में आश्रय ले लें।

जागीरों के अपरिमित विस्तार से कृषक एवं जन साधारण की स्थिति खराब हुयी, जैसे – जैसे जागीरें बढ़ी उनका मूल्य घटता गया। उन पर प्रत्यक्ष नियंत्रण रखने में असमर्थ जागीरदारों ने भी जमींदार नियुक्त कर दिए, जो अत्याचारपूर्ण तरीके से राजस्व वसूल करते थे वे एक निर्दिष्ट राशि जागीरदार को देते थे और शेष अपने पास रख लेते थे।[2]

इतना सब होने पर भी 18वीं शताब्दी में जनसाधारण वर्ग की स्थिति अच्छी कहीं जा सकती है। ललितपुर क्षेत्र का यह वर्ग खेती, एवं उद्योग धन्धों जैसे चन्देरी में अच्छी प्रकार की साड़ी जैसा कुटीर उद्योग, तालबेहट परगने में आप-पास के गाँवों में कम्बल बुनाई का कार्य में लगा हुआ था। जिसमें उनकी जीविका आसानी से चल रही थी।

----------------------0 0 0----------------------

1. झांसी गजेटियर – 1965, पृष्ठ – 215
2. भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास, भाग – 1, ताराचंद, प्रकाशक – सूचना और प्रसारण मंत्रालय, दिल्ली से 1965 में प्रकाशित, पृष्ठ – 119

अध्याय - तृतीय

सन् 1857 के विद्रोह का प्रारम्भ एवं जनता की भागीदारी

(1) 1857ई० के पूर्व का बुन्देला विद्रोह

(2) ललितपुर विद्रोह का सूत्रपात

(3) बानपुर के राजा मर्दनसिंह एवं उनके द्वारा विद्रोह का नेतृत्व

(4) विद्रोह के समय तांत्याटोपे का ललितपुर प्रवेश एवं विद्रोह की गतिविधियां तीब्र ।

(5) ललितपुर क्षेत्र क्रांतिकारियों का शरण स्थल ।

(6) बुन्देला जमींदारों की सक्रियता ।

(7) अन्य वर्गों द्वारा विद्रोह में भागीदारी ।

(8) ब्रिटिश दमनात्मक तरीके एवं सन् 1858 के पश्चात जनपद का आर्थिक शोषण ।

अध्याय - तृतीय

सन् 1857 के विद्रोह का प्रारम्भ एवं जनता की भागीदारी

(1) 1857 ई० के पूर्व का बुन्देला विद्रोह

ललितपुर जनपद में बुन्देला विद्रोह अंग्रेजो की कुटिल नीतियों के कारण हुआ था तत्कालीन अंग्रेज शासकों ने राजे रजवाड़ों एवं जमींदारों पर भारी कर थोप दिया इस करारोपण के खिलाफ नाराहट के (ललितपुर जनपद) जमींदार मधुकर शाह एवं उनके अनुज गणेश जू सिविल न्यायालय सागर में गये, परन्तु उन्हें न्याय नहीं मिल सका क्योंकि न्यायालयों में क्रूर अंग्रेज ही बैठे थे। कर राशि के भुगतान के लिए न्यायालय ने डिग्री जारी कर उसे तामील कराते हुए सारी संपत्ति को कुर्क करने की धमकी दी।[1] इसलिए अंग्रेजों के दुर्व्यवहार से दोनों बुन्देला जागीरदार क्रुद्ध हो उठे और चन्द्रपुर के माल गुजार जवाहर सिंह को अपने साथ शामिल करके अंग्रेजों को सबक सिखाने का निर्णय लिया।

नाराहट (ललितपुर) के मधुकर शाह एवं गणेश जू ने सैन्य शक्ति एकत्रित कर 8 अप्रैल 1842 ई0 को प्रातः विद्रोह का विगुल फूक दिया।[2] 8 अप्रैल के दिन अंग्रेज सैनिक नाराहट के राव विजय बहादुर सिंह के बगीचे में एकत्र थे और आक्रमण के समय खाना खाने में व्यस्त थे। इस हमले में अनेक अंग्रेज सैनिक मारे गये और शेष ने भागकर जान बचायी। इस लड़ाई में मधुकर शाह, गणेश जू के साथ विक्रमजीत एवं चन्द्रभान सिंह आदि सहित अनेक साथी शामिल थे।[3] जिनकी संख्या करीब 200 थी। वर्तमान में नाराहट ललितपुर जिले में मुख्यालय से 25 किमी. दक्षिण में स्थित है। 8 अप्रैल 1842ई0 की घटना से पहले मधुकरशाह एवं गनेश जू अपने सशस्त्र साथियों सहित मालधोन पर कब्जा कर चुके थे उस समय इस घटनाके सम्बन्ध में अंग्रेज अधिकारी एम. सी. ओमेनी ने इनके पिता राव विजय बहादुर के साथ दोनों पुत्रों (मधुकर शाह एवं गनेश जू) को सागर बुलबाया। परन्तु मधुकर शाह व गनेश जू ने सागर जाने से इनकार कर दिया।[4]

---

1. बुन्देली माटी के सपूत – हीरासिंह ठाकुर, पृष्ठ – 68
   1993 में बन्देलखण्ड प्रकाशन, 179 शक्ति नगर दमोह, म0 प्र0 से प्रकाशित।
2. ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका – 1998, सं. – संतोष शर्मा,
   शीषर्क– भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में ललितपुर का योगदान – अजय तिवारी 'नीलू' पत्रकार
3. बुन्देली माटी के सपूत – हीरासिंह ठाकुर, पृष्ठ – 69
   1993 में बन्देलखण्ड प्रकाशन, 179 शक्ति नगर दमोह, म0 प्र0 से प्रकाशित।
4. बुन्देली माटी के सपूत – हीरासिंह ठाकुर, पृष्ठ – 68

1842 - 43 ई० में फिरंगियों के खिलाफ बुन्देला विद्रोह
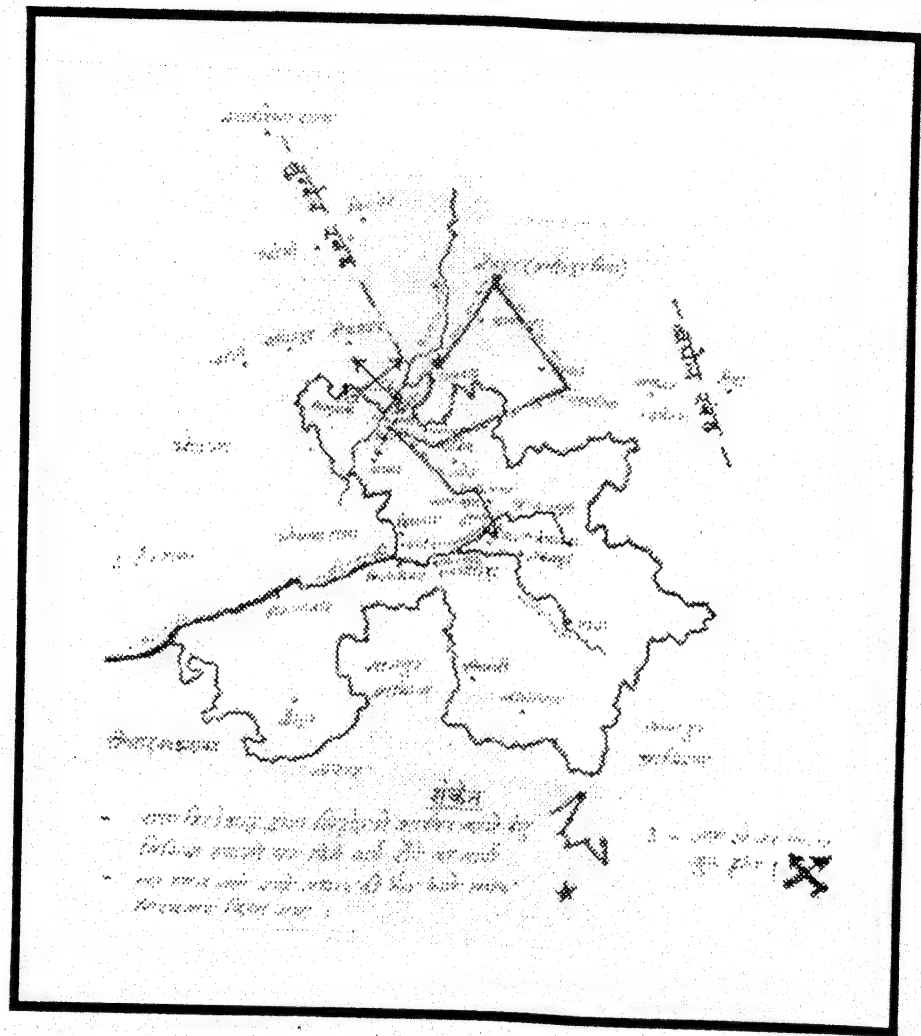
नाराहट की फतह के बाद विद्रोहियों के हौसले बुलन्द हो गये और उन्होंने 8 अप्रैल 1842 ई0 को ही खिमलासा में अंग्रेजी सेना को परास्त कर अपना कब्जा जमा लिया।[1] खिमलासा सागर से दक्षिण – पश्चिम में 41 मील की दूरी पर स्थित है। खिमलासा पर कब्जा करने के बाद इन आजादी के रणबांकुरों ने डोंगरा की ओर प्रस्थान किया तथा विमरखेड़ी व शाहपुर को भी अपने कब्जे में लिया।

अंग्रेजों पर विजय से उत्साहित आजादी के इन रणबांकुरों ने अमझरा घाटी में एक सभा का आयोजन किया जिसमें उन्होंने अनेक राजे–रजवाड़ों को अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ विद्रोह में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया। बुन्देली राजा रजबाड़ों की यह बैठक दो दिन तक चलती रही तथा अंग्रेजों को उखाड़ फेंकने की रणनीति तय की गई। इस गुप्त मंत्रणा बैठक के बाद विद्रोह की चिनगारी तीव्र गति से फूट निकली और क्रान्तिकारी एक के बाद एक फतह हासिल कर नर्मदा नदी की ओर बढ़ते गये।[2]

7 मई 1842 ई0 को बीना नदी के पास क्रान्तिकारियों की अंग्रेज सेना से जबरदस्त मुठभेड़ हुई और उसमें अनेक क्रांतिकारी मारे गये परन्तु अंग्रेज किसी भी मुखिया क्रांतिकारी को पकड़ने में कामयाब नहीं हो सके।

9 मई 1842ई0 को कुंद्रो गाँव के पास लेफ्टिनेंट फार्गोसन के नेतृत्त में अंग्रेज सेना ने क्रांतिकारियों पर पुनः नबाब भोपाल की मदद से हमला कर दिया।[3] इस हमले में क्रांतिकारियों की टुकड़ी का नायक राजघर शहीद हो गया। जिसे अंग्रेज एक खतरनाक सलाहकार मानते थे। इस शदमा के बाद क्रांतिकारियो ने अपनी सैन्य शक्ति को पुनः संगठित करके गौना एवं नाराहट में अंग्रेजी सैनिकों के साथ हुई मुठभेड़े में अंग्रेजों को करारी शिकस्त दी।[4]

गौना ललितपुर जनपद में नाराहट से करीब 8 मील उत्तर भाग में स्थित है। गौना नामक स्थान पर क्रांतिकारी होने की खबर एम. सी. ओमेनी ने केप्टिन मेकिनटोस को दी जिसके आधार पर एक सैनिक टुकड़ी नाराहट की ओर रवाना की गयी थी।

इन क्रांतिकारियों की गतिविधियों से अंग्रेज शासन बुरी तरह घबडा गया था, और उन्होंने मधुकर शाह, गनेश जू, दुर्ग सिंह आदि की सम्पत्ति को कुर्क कर लिया एवं उन्हें

---

1. बुन्देली माटी के सपूत – हीरासिंह ठुकर, पृष्ठ – 69
2. बुन्देली माटी के सपूत – हीरासिंह ठुकर, पृष्ठ – 70
3. बुन्देली माटी के सपूत – हीरासिंह ठुकर, पृष्ठ – 70
4. बुन्देली माटी के सपूत – हीरासिंह ठुकर, पृष्ठ – 70

जिन्दा या मुर्दा पकड़ने के लिए बड़ा ईनाम घोषित कर दिया।[1]

इन क्रांतिकारियों के साथ चिरगाँव के अपदस्थ जमींदार वखतसिंह, जैतपुर के अपदस्थ राजा पारीक्षत सिंह भी शान्लि हो लिए थे।[2]

9 जून 1842ई0 को क्रांतिकारियों ने बखतसिंह के नेतृत्व में पनवारी का शासकीय कोषालय लूट लिया। यह स्थान हटा के पास है तथा दमोह से 24 मील की दूर पर सुनारी नदी के किनारे स्थित है।

कुछ दिनों पश्चात एक मुठभेड़ में 8वी. रेजीमेन्ट के कमाण्डर कैपमूर के साथ विद्रोहियों का मुकाबला हुआ जिसमें बखतसिंह शहीद हो गये साथ ही अंग्रेज सेना को भी काफी क्षति उठानी पड़ी।[3]

मधुकरशाह के नेतृत्व में फिरंगी सेना के साथ क्रांतिकारियों की एक मुठभेड़ सागर जिले के पंचम नगर गाँव में हुई जिसमें अंग्रेज सेना को भारी क्षति झेलना पड़ी और विद्रोहियों ने आक्रमण करके ग्राम देवरी पर भी कब्जा कर लिया। उसी दिन रात्रि के समय वेसरा ग्राम को आग लगा दी जो मालथोन से दिखायी दे रही थी। वहाँ के थानेदार चोकूलाल ने इसकी सूचना एक हलकोर के द्वारा भेजी पर वह रास्तें में विद्रोहियों को देखकर उल्टे पांव लौट आया फिर चोकूलाल ने एक सूबेदार को भेजा जब तक सुबह हो चुकी थी। उस समय क्रांतिकारियों से टकराने को अंग्रेजी सैनिक इसलिए तैयार नहीं थे कि उनके मरने के बाद उनके परिवार की मदद कौन करेगा। इस पर गोर करते हुय सी. फ्रेजर ने यह घोषणा की कि मृतक सैनिक के परिवार वालों को आजीवन सुविधा शासन द्वारा प्रदान की जावेगी। 6 जुलाई 1842 ई0 को[4] जवाहर सिंह के नेतृत्व में क्रांतिकारियो ने घामौनी के दुर्ग पर हमला करके कब्जा कर लिया यह संघर्ष करीब 4 घण्टे तक चला अंत में जवाहर सिंह एवं उनके साथियों की विजय हुई जाते समय वह 7780 रूपये की सम्पत्ति 5 अरवी घोड़े, एक अनियमित केवलरी तथा काफी अस्त्र - शस्त्र अपने साथ ले गये। घामोनी एक समय सागर एवं दमोह दोनों जिलों का प्रशासनिक केन्द्र स्थल रहा है यह सागर के उत्तर में झांसी रोड पर 29 मील दूरी पर स्थित है।

जवाहर सिंह के नेतृत्व में क्रांतिकारियों ने शाहगढ़ रियासत के अंग रहे विनैका

---

1. ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका - 1998, सं. - संतोष शर्मा, पृष्ठ - 9
2. बुन्देली माटी के सपूत - हीरासिंह ठाकुर, पृष्ठ - 71
3. बुन्देली माटी के सपूत - हीरासिंह ठाकुर, पृष्ठ - 71
4. बुन्देली माटी के सपूत - हीरासिंह ठाकुर, पृष्ठ - 72

पर हमला बोल दिया लेकिन शाह बखतवली की सेना ने क्रांतिकारियों को पीछे खदेड़ दिया इसी बीच क्रांतिकारियों के दल में गिरार के दीवान पारीक्षत सिंह व शाहगढ़ के राजा बखतवली सिंह का छोटा भाई लक्ष्मण सिंह अपने सैन्य बल के साथ सम्मलित हो गये।[1]

बुन्देला राजाओं के इस विद्रोह से प्रेरित होकर लोधी जमींदारों की एक बैठक बहरौल गाँव में मलखान सिंह लोधी (जमींदार) के नेतृत्व में हुई[2] बहरौल सागर जिले में आज बंडा तहसील में स्थित है। जिसमें अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह का प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया इस बात की जानकारी होने पर अंग्रेज सेना बहरौल जा पहुँची लेकिन लोधी जमींदारों के संगठिन सैन्य बल ने अंगेजी सेना को करारी शिकस्त दी।[3] बाद में अंग्रेजों की बड़ी भारी फौज ने हमला कर बहरौल को अपने कब्जे में ले लिया परन्तु इस विद्रोह में लोध राजा, रजवाड़ों. के शामिल हो जाने से विद्रोह की यह चिंगारी नर्मदा घाटी में दावानल की तरह फैल गई।

इस विद्रोह में मदनपुर के गौंड़ राजा डेलन शाह के नेतृत्व में नर्मदा घाटी के अधिकांश राजे रजवाड़ों ने शामिल होकर फिरंगियों के खिलाफ मोर्चा संभाल लिया।[4] हीरापुर के लोधी नरेश राजा भी विद्रोह में शामिल हो गये हीरापुर रियासत उस समय जबलपुर जिले के अन्तर्गत आती थी। और इन्होंने अनके जगह अंग्रेजों को करारी शिकस्त दी। विद्रोह की इस आग में ललितपुर के साथ सागर, दमोह, जबलपुर आदि का इलाका भड़क उठा।[5] इस विद्रोह से अंग्रेज शासक काफी तंग आ गये और विद्रोह को दबाने के लिये अंग्रेजों ने पूरी ताकत के साथ क्रांतिकारियों को घेरने की कार्यवाही शुरू की। ब्रिटिश शासकों की विशाल एंव शक्तिशाली सेना के कारण विद्रोहियों की गतिविधियों मन्द पड़ने लगी तथा संसाधनों के अभाव में विद्रोही अंग्रेजी सेना के मुकाबले कमजोर पड़ने लगे।[6]

अतः क्रांतिकारी पारीक्षत सिंह ने जैतपुर के राजा खेतसिंह की सलाह पर समर्पण कर दिया मेजर डब्लू एस. स्लीमेन से क्षमा मांग ली एवं उन्हें क्षमा किया गया। इनकी गिरफ्तारी पर 5000 रूपये का इनाम था। विद्रोह का विगुल बजाने वाले नाराहट के वीर बुन्देला मधुकर शाह को फरवरी 1844 ई0 में केप्टिन हेमिल्टन ने गिरफ्तार कर लिया यह गिरफ्तारी बानपुर के राजा मर्दन सिंह के सहयोग से की गयी थी। शासन ने इनको जिंदा या मुर्दा पकड़ने

---

1. बुन्देली माटी के सपूत – हीरासिंह ठाकुर, पृष्ठ – 73
2. बुन्देली माटी के सपूत – हीरासिंह ठाकुर, पृष्ठ – 74
3. बुन्देली माटी के सपूत – हीरासिंह ठाकुर, पृष्ठ – 73
4. बुन्देली माटी के सपूत – हीरासिंह ठाकुर, पृष्ठ – 75
5. ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका – 1998, सं. – संतोष शर्मा, पृष्ठ – 9
6. बुन्देली माटी के सपूत – हीरासिंह ठाकुर, पृष्ठ – 83

हेतु 5000 रूपयों का इनाम रखा था। इनाम की राशि मर्दनसिंह ने लेने से इन्कार कर दिया था तब यह राशि अन्य सहयोगियों के बीच बांट दी गयी। जब इन्हें गिरफ्तार किया गया तब मधुकर शाह अपनी बहिन के घर पर सो रहे थे।

बाद में इस आजादी के दीवाने को फांसी की की सजा दे दी गई।[1] तथा उनका शव भी उनके परिवार वालों को नहीं दिया गया बाद में सागर जेल के पीछे उनका दाह संस्कार किया गया तथा वहाँ एक चबूतरा बना दिया गया। बड़े भाई मधुकर शाह की मृत्यु के पश्चात गणेश जू को भी अंग्रेजो ने बन्दी बना लिया एवं चन्द्रपुर के जमींदार जवाहर सिंह भी अंग्रेजों द्वारा गिरफ्तार कर लिये गये।[2] विद्रोह की शुरूआत में इनकी उम्र मात्र 19 वर्ष थी। इन पर भी अंग्रेजी शासन ने 5000 रूपया का इनाम घोषित किया था। इस बुन्देला विद्रोह को शुरू करने वाले दूसरे प्रमुख सेनानी थे चंद्रपुर के जवाहर सिंह यह जैतपुर के राजा खेतसिंह के चचेरे भाई थे। इन्हीं की प्रेरणा से इन्होंने जून 1843 ई0 ठाकुर में समर्पण किया था। इन पर 10,000 रूपया का इनाम रखा गया था। फरवरी 1843 में मदनपुर के राजा डेलनशाह एवं नरवर सिंह ने चांवर पाठा के तहसीलदार रामचरण के समक्ष समर्पण कर दिया। डेलनशाह पर 2000 रूपयों का इनाम रखा गया था। तमाम आघातों से विद्रोहियों का उत्साह ठण्डा पड़ गया एवं विद्रोह नेतृत्वहीन होने के कारण 8 अप्रैल 1842 ई0 को जो उठा अप्रैल 1843 ई0 में मंद्धिम में पड़ गया।

हीरापुर के लोधी राजा हिरदेशाह ने एक जोरदार संयुक्त महले की अपनी पूर्व योजना को मूर्तरूप देने के उद्देश्य से अपने समस्त रिस्तेदारों एवं बुन्देला जमींदारों के यहां स्वयं जाकर सहयोग लेने की बाद सोची जिससे समूचे नर्मदा क्षेत्र को अंग्रेजो के शिकंजे से मुक्त कराया जा सके। इसको कार्यरूप देते हुए वह जैसे ही शाहगढ़ राज्य की सीमा में पहुँचे उसी समय राजा बखतवली के सिपाहियों ने उन्हें 22 दिसम्बर 42 को परिवार के समस्त सदस्यों सहित गिरफ्तार कर लिया हिरदेशाह की इस यात्रा का उल्लेख भी जे. पी. मिश्रा ने अपनी पुस्तक "दी बुन्देला रेवैलीयन" में किया है। राजा शाहगढ़ का छोटा भाई लक्ष्मण सिंह वैसे क्रांतिकारियों के साथ था पर राजा बखतवली एवं राजा हिरदेशाह के मध्य कुछ महिनों से 2 आधुनिक बंदूकों को लेकर झगडा चल रहा था। बखतवली ने राजा हिरदेशाह को मेजर डब्लू.

---

1. बुन्देली माटी के सपूत – हीरासिंह ठुकर, पृष्ठ – 84
2. बुन्देली माटी के सपूत – हीरासिंह ठुकर, पृष्ठ – 84

एच. स्लीमेन को सौप दिया। राजा हिरदेशाह के पकड़े जाने के बाद बुन्देला विद्रोह को वड़ा धक्का लगा।

1842 - 43 ई० के बुन्देला विद्रोह के समय अंग्रेजी प्रशासन ने आजादी के दीवाने क्रांतिकारियों पर 24 नवम्बर 1842ई० को जिन्दा या मुर्दा पकड़ने के लिए इनाम की घोषणा जो निम्नानुसार है।[1]

क्र० सं०	क्रांतिकारियों के नाम	इनाम की राशि रूपयों में[2]
1.	मधुकर शाह (नाराहट) ललितपुर	2000
2.	गणेश जू नाराहट	2000
3.	डेलनशाह मदनपुर	2000
4.	दीवान पारीक्षत सिंह गिरार	2000
5.	जवाहर सिंह चंद्रपुर	2000
6.	दहलानसिंह मदनपुर	1000
7.	धुरमुंगद चंदेरी	1000
8.	नरवर सिंह धुधरी	1000

इसके पश्चात जब इन क्रांतिकारियों से अंग्रेजों के नाक में दम आ गया एवं हैरान हो गये तब 19 दिसम्बर 1842 ई० को इनामों की राशि बढ़ा कर निम्नानुसार घोषणा की गई।

ब्रिटिश शासन के खिलाफ जनपद ललितपुर के छोटे से ग्राम नाराहट में 8 अप्रैल 1842ई० से शुरू हुआ। विद्रोह पहला सशक्त सैन्य प्रतिरोध था जिसका मुख्य श्रेय अमर शहीद मधुकर शाह व उनके छोटे भाई गनेश जू को है। 1842 ई० का विद्रोह जनपद ललितपुर के राजा-रजवाड़ों द्वारा स्वतंत्र होने का पहला प्रयास था जिसका विराट रूप 1857 ई० के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में देखने को मिलता है।

1. जय जानकारी जे. पी. मिश्रा की पुस्तकक 'दि बुन्देला रैबैलीयन' म० प्र० संदेश का स्वाधीनता आन्दोलन विशेषांक एवं हीरासिंह ठाकुर की पुस्तक बुन्देली माटी के सपूत एवं अनेक स्थानों पर उपलब्ध जानकारी के आधार पर।
2. यह राशि 1842 ई० के विक्टोरिया सिक्के के आधार पर है।

क्र0 सं0	क्रांतिकारियों के नाम	इनाम की राशि रूपयों में[2]
1.	राजा हिरदेशाह हीरापुर (नरसिंहपुर)	10,000
2.	जवाहर सिंह चंद्रपुर	10,000
3.	मधुकर शाह (ललितपुर)	5,000
4.	गणेशजू नारहट	5,000
5.	लक्ष्मण सिंह शाहगढ़ (सागर)	5,000
6.	परीक्षित सिंह गिरार	5,000
7.	दहलान सिंह मदनपुर	2000
8.	धुरभंगद चंदेरी	2000

(2) ललितपुर विद्रोह का सूत्रपात

ब्रिटिश साम्राज्यवादी नीति के प्रतिक्रिया के रूप में चारों ओर असंतोष तथा निराशा का जन्म हो चुका था राजस्व की कठोर नीति ने कृषकों की स्थिति दयनीय बना दी थी। ब्रिटिश शासन काल में ईसाई मिशनरियों का बुन्देलखण्ड में प्रवेश से यहां लोगों में विदेशी धर्म के प्रति प्रतिक्रिया पैदा हुई। प्रायः सोचा जाता था कि इन मिशनरियों की नियुक्ति सरकार द्वारा होती थी तथा उनके कार्य में पुलिस मदद किया करती थी।[1] 1850 ई0 में जातीय अयोग्यता उन्मूलन कानून पास हुआ जिसमें यह नियम बनाया गया कि कोई व्यक्ति दूसरी जाति अथवा धर्म स्वीकार कर लेता है तो उसे पूर्वजों की सम्पत्ति से वंचित नहीं किया जायेगा इसके पूर्व 1802 ई0 में सती प्रथा पर प्रतिबन्ध लगाया दिया था और 1829 ई0 में वैटिंग ने इस पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाया।[2]

1856 में विधवा पुनर्विवाह कानून पास किया गया।[3] जिसमें विधवाओं को पुनः विवाह करने की छूट दे दी। यद्यपि उक्त दोनों अच्छे कार्य थे, किन्तु रूढ़िवादी हिन्दुओं ने धार्मिक विश्वासों में हस्तक्षेप समझा।

बुन्देलखण्ड में लार्ड डलहौजी ने रानी लक्ष्मीबाई को गोद लेने के अधिकार से बंचित रखकर झांसी की रियासत अंग्रेजी राज्य में मिला दी गयी।[4] जिससे असन्तोष चरमोत्कर्ष पर पहुँच गया। झांसी के राजा गंगाधर राव की मृत्यु 21 नवम्बर 1853 ई0 को हो गयी[5] और बानपुर नरेश राजा मर्दन सिंह 1853 ई0 में फेरा करने झांसी गय। लक्ष्मीबाई की करूण स्थिति देखकर राजा (मर्दनसिंह) का पौरूष जाग उठा, रानी झांसी को सांत्वना के उपरान्त बोले -

"बाई साहब................

---

1. दि रिबोल्ट ऑफ 1857 इन बुन्देलखण्ड - एस. एन. सिन्हा, लखनऊ सन् 1982 पृष्ठ - 39
2. रेगूलेशन्स ऑफ दि बंगाल कोड, पृष्ठ - 1145
3. लाइफ ऑफ दि मारक्युत डलहौजी भाग - 2, ली0 वारनर, पृष्ठ - 364
4. दि रिबोल्ट ऑफ 1857 इन बुन्देलखण्ड - एस. एन. सिन्हा, लखनऊ, पृष्ठ - 48
5. ललितपुर स्वर्ण जंयती स्मारिका 1998, सं. - संतोष शर्मा, शीर्षक - क्रांति की तपोभूमि. तालबेहट और राजा मर्दनसिंह - श्रावण कुमार त्रिपाठी, पृष्ठ - 12

का हम सब इन अंग्रेजन की कृपा पर जीवित रहने को ही इस संसार में रह गये हैं .... ?"

"अभी तो ऐसा ही दिखता है।"

बाई साहब दुःखी स्वर में बोली ....

"नहीं ! बिल्कुल नहीं ! मैं इन अंग्रेजन को साफ करके ही रहूंगा।"

प्रतिशोध का संकल्प लेकर राजा मर्दनसिंह लौट आये।[1]

अपने प्रतिशोध को कार्यरूप में परिणित करने के लिए जी जान से जुट गये और देश स्तर की बैठकें तालबेहट के दुर्ग भारत गढ़ में होती रही।[2] समूचे देश में एक साथ क्रांति करने का संकल्प लिया गया तथा 31 मई 1857 ई0 की तिथि निश्चित की गयी। क्रांति के प्रतीक के रूप में कमल और रोटी को चुना गया।

परन्तु संयोग से 29 मार्च 1857 ई0 को बैरकपुर छावनी (बंगाल) 34 एन. आई. वटालियन के देश भक्त सैनिक मंगल पाण्डे ने अंग्रेज अधिकारी ह्यूसन और गफ की हत्या कर दी।[3] अंग्रेजो ने 34 एन. आई. वटालियन भंग कर दी और मंगल पाण्डे को गिरफ्तार करके 8 अप्रैल 1857 ई0 को फाँसी दे दी गयी।[4] इससे देश में आक्रोश का उफान आ गया बैरकपुर की घटना के बाद 10 मई 1857 ई0 को सायंकाल 5 या 6 वजे के बीच मेरठ की 20 एन. आई. तथा 3 एल. सी. की पैदल सैन्य टुकडी ने चर्वी लगे कारतूसों को प्रयोग करने से स्पष्ट इंकार कर विद्रोह कर दिया अपने अधिकारियों की हत्या कर विद्रोही दिल्ली की ओर रवाना हो गये और 11 मई को प्रातः विद्रोहियों ने दिल्ली पर अधिकार कर बहादुर शाह द्वितीय को भारत का सम्राट तथा विद्रोह का नेता घोषित कर दिया।[5]

---

1. ललितपुर स्वर्ण जंयती स्मारिका 1998, सं. - संतोष शर्मा, शीर्षक - क्रांति की तपोभूमि, तालबेहट और राजा मर्दनसिंह - श्रावण कुमार त्रिपाठी, पृष्ठ - 12
2. ललितपुर महोत्सव 1996, भारतगढ़ दुर्ग प्रागंण, तालबेहट में 1-2 मार्च 1996 से प्रसारित पर्चा से।
3. आधुनिक भारत - विपिन चन्द्र, पृष्ठ - 98 (M.C.E.R.T. दिल्ली)
4. आधुनिक भारत - विपिन चन्द्र, पृष्ठ - 98 (M.C.E.R.T. दिल्ली)
5. आधुनिक भारत - विपिन चन्द्र, पृष्ठ - 98 (M.C.E.R.T. दिल्ली)

यह समाचार बुन्देलखण्ड में सुहावने सावन में मिला तब सागर ललितपुर की सेना ने विद्रोह कर दिया राजा मर्दनसिंह ने क्रांति से पूर्व ही अपने सैन्य दल का पुर्नगठ्न कर लिया था जैसे ही विद्रोह की शुरूआत हुई बानपुर नरेश ने सबसे पहले ललितपुर रेलवे स्टेशन को घेर कर उस पर अपना कब्जा जमा लिया।[1] उन्होंने ललितपुर में मौजूद अनेक अंग्रेज अधिकारियों को बन्दी बना लिया तथा अपने वंशजों के चन्देरी राज्य को स्वतंत्र घोषित कर दिया। मर्दनसिंह से प्रेरणा पाकर शाहगढ़ नरेश बखत वली तथा आमापानी के नवाब भी बानपुर नरेश की स्वराज्य सेना के साथ आ मिले।[2]

चन्देरी में भी क्रांतिकारियों का विशेष प्रभाव रहा। अपनी जागीरें छीन लिए जाने के कारण बुन्देला ठाकुरों ने चारों ओर विद्रोह कर दिया।[3] चन्देरी, तालबेहट तथा ललितपुर के चारों ओर बुन्देला ठाकुरों ने अंग्रेजी शासन के विरूद्ध झण्डे उठा लिए।

12 जून 1857 ई0 को मर्दनसिंह ने स्वराज सेना का नेतृत्व सम्हाला[4] और इस ललितपुर क्षेत्र में विद्रोह का विगुल बज गया।

(3) बानपुर के राजा मर्दनसिंह एवं उनके द्वारा विद्रोह का नेतृत्व

मधुकर शाह के पुत्र रामशाह ने पिता की मृत्यु के उपरान्त ओरछा की गद्दी सम्हाली सन् 1606ई. में अकबर बादशाह के उत्तराधिकारी जहांगीर बने बादशाह बनने पर जहाँगीर ने अपने परम सहयोगी वीरसिंह बुन्देला को बुन्देलखण्ड का राजा बनाया तथा रामशाह को चन्देरी का राज बनाया। इस चन्देरी राजवंश में सन् 1802 ई. की शरद पूर्णिमा के दिन मर्दनसिंह का जन्म हुआ।[5]

उनके पिता मोदप्रहलाद अयोग्य और बिलासी थे प्रजा उनसे असन्तुष्ट थी।

---

1. (1) बुन्देली माटी के सपूत – हीरासिंह ठाकुर, पृष्ठ – 115
   (2) दैनिक जागरण झांसी 23 अगस्त 1997, आजादी के आन्दोलन में ललितपुर का योगदान – प्रस्तुति – अजय तिवारी 'नीलू' पत्रकार, पृष्ठ –4
2. ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका – 1998
   शीषर्क – क्रांति की तपोभूमि तालबेहट और राजामर्दनसिंह – श्रावण कुमार त्रिपाठी, पृष्ठ–12
3. फारेन सीक्रेट कंसल्टेशन, 18 दिसम्बर 1857 ई0 नं. 237
4. ललितपुर महोत्सव 1996 के पत्र से।
5. ललितपुर महोत्सव 1996 के पत्र से।

अक्षय तृतीय के दिन विलासी राजा मोदप्रहलाद ने तालबेहट में महिलाओं पर बड़ा अत्याचार किये थे।[1] जिसके घाट आज तक हरे हैं शायद इसलिए आज भी तालबेहट में अक्षय तृतीय नहीं मनायी जाती।

पिता मोद प्रहलाद की अयोग्यता को ऑंककर ग्वालियर के सिन्धिया ने अपने सेनापति जान वप्टिष्ट के नेतृत्व[2] में चन्देरी राज पर आक्रमण कराया सन् 1811 में चन्देरी राज मिट गया मोद प्रहलाद झांसी आ गये।

तरूण होने पर मर्दनसिंह ने अपने खोये वैभव और प्रतिष्ठा को निजी पुरूषार्थ से पुनः अर्जितकर बानपुर का नया राज 1830ई0 में बनाया तथा अपने पिता मोदप्रहलाद को पुनः बानपुर का राजा बनया।[3] सन् 1842 में मोदप्रहलाद की मृत्यु के उपरान्त मर्दनसिंह बानपुर के राजा बने।[4] बानपुर महरौनी मार्ग पर महरौनी से 14 किमी. दूरी पर 24° 43' उत्तरी अक्षांश एवं 78° 25' पूर्वी देशान्तर के मध्य बानपुर गॉव स्थित है स्थानीय परम्परा के अनुसार इस गॉव का सम्बन्ध बाणासुर से बतलया जाता है। जिसके आधार पर इस गॉव का नाम नाभाभिधान बानपुर (बाणपुर) पड़ा।[5]

इस समय समूचे देश में अंग्रेजी शासन अपनी विस्तारवादी नीति का अनुशरण कर रहा था। डलहौजी के "व्यपगत का सिद्धान्त" से सतारा (1848ई0) जैतपुर और संभलपुर (1849ई0) बघाट (1850ई0) ऊदेपुर (1850ई0), झांसी (1853ई0) और नागपुर (1854ई0) का विलय[6] अंग्रेजी शासन में कर लिया गया।

जैसे ही अंग्रेजी ने झांसी पर अधिकार किया तो बुन्देलखण्ड की प्रजा वोखला गयी, झांसी की रानी को पेंशन दे दी गयी। सन् 1853ई0 में झांसी के राजा गंगाधर राव का देहान्त हो गया तब मर्दनसिंह फेरा करने के लिए झांसी गये।[7] और अंग्रेजों के क्रूर

---

1. दैनिक जागरण झांसी 23 अगस्त 1997, आजादी के आन्दोलन में ललितपुर का योगदान
2. झांसी गजेटियर - 1965 ईशाबसन्त जोशी - पृष्ठ - 52
3. झांसी गजेटियर - 1965 ईशाबसन्त जोशी - पृष्ठ - 53
4. झांसी गजेटियर - 1965 ई0 बी0 जोशी - पृष्ठ - 53
5. पुरातात्विक सर्वेक्षण रिपोर्ट (1989-90) विकास खण्ड-बार (ललितपुर)
   सं.-डॉ राकेश तिवारी, लेख - डॉ. ए. पी. सिंह
6. आधुनिक भारत का इतिहास - बी. एल. ग्रोवर एवं यशपाल
7. ललितपुर महोत्सव 1996 में प्रसारित पत्र।

अत्याचार तथा हिन्दू धर्म पर खुले आक्रमण को देखकर काँप गये।

रानी झांसी को सान्त्वना देकर उन्होंने प्रतिज्ञा की थी कि अंग्रेजो को भारत से खदेड़ कर ही दम लेगें।

राजा मर्दनसिंह ने अंग्रेजों की नीतिओं का सर्वप्रथम विरोध अंग्रेजों द्वारा आयोजित कलकत्ता अधिवेशन में किया जिसमें भारत के सभी नरेशों को आमंत्रित किया गया था जिसमें राजा मर्दनसिंह भी सम्मिलित हुये थे।[1] इस अधिवेशन में भारत की सामाजिक, धार्मिक परिपाटी पर विचार किया गया था और 84 रीति रिवाजों की सुधार सूची पढ़ी गई थी। जिसे सुनकर मर्दनसिंह ने संस्कृति का उल्लंघन एवं धार्मिक उत्पीड़न समझा था और सभा के मध्य में निर्भीक होकर उठ खड़े हुये और अंग्रेजी सुधारों को मानने से इन्कार कर दिया उसी समय उपस्थित राजाओं ने "जय हो' जय राजा मर्दनसिंह" सहज ही कह उठे और अंग्रेजों का कलकत्ता अधिवेशन विफल हो गया। जय बुन्देलखण्ड काव्य - कृति में कवि सीताराम चतुर्वेदी (अटल) जी ने भी यह वृत्तान्त उदृत किया है।

कम्पनी राज्य ने अधिवेशन, कलकत्ता में आहूत किया "भारत के सभी नरेशों को, जिसमें आमंत्रित सहज दिया।"

बानपुर नरेश मर्दनसिंह भी उसमें होने ओय,
राष्ट्रीय भावना से भूषित, हिन्दुत्व भाव में लहराये।
सबसे पहले प्रस्ताव वहाँ, आया कुछ कथित सुधारों का
भारत की सामाजिक, धार्मिक, परिपाटी और विचारों का।

चौरासी रीति रिवाजों की, प्रस्तावित सूची पढ़ी गई,
उनमें परिवर्तन करने की, फिर बात यकायक गढ़ी गई।
मर्दनसिंह मन में सोच चले, ये कैसी उल्टी बात अरे,
हमको विनष्ट कर देने का, ये अंग्रेजी उत्पात अरे।

उठ खड़े हुए वे सभा मध्य, निर्भीक निराले गति वाले,
आदर्श बता निज संस्कृति को, निम्नांकित वाक्य सुना डाले।

---

1. जय बुन्देलखण्ड भूमि - सीताराम चतुर्वेदी (अटल) 1983 ई0 में साहित्य निकेतन झांसी से प्रकाशित, पृष्ठ - 100

ये कर्मभूमि भारत भू है, हिन्दूत्व यहाँ का धर्म अमर,
ये देवस्थल जग जननी है, अवतार जहाँ लेते प्रभुवर।
इसकी संस्कृति की विश्व विदित, पावन तय सभी प्रथायें हैं,
जिनके प्रतिपालन करने की, ऋषि मुनियों की आज्ञायें है।

भारत का कोई भी नरेश, अनुकूल न इसके चल सकता,
ये अंग्रेजी प्रस्ताव यहाँ, स्वीकार न कोई कर सकता।
सुन बचन निडर मर्दनसिंह के, अंग्रेजी साहस डोल उठा,
'जय हो, जय राजा मर्दनसिंह' राजाओं का मन बोल उठा।।

ऐसा लगता था कि मानो, विध्वसं यही से होना है,
इस एकमात्र चिनगारी से, बस जलना कोना-कोना है।
हो गया विफल तब अधिवेशन, राजाज्ञा सारी विफल हुई,
सन् सत्तावन के विप्लन में, यो राष्ट्र भावना प्रबल हुई।।[1]

एक समय सागर, चंदेरी, नरसिंहपुर, ललितपुर के जिले बटमारों के प्रधान केन्द्र थे बटमारो (कुख्यात डकैत) को पकड़ने के लिए अंग्रेजों ने बड़े-बड़े इनाम घोषित किये पर परिणाम कुछ नहीं निकला। जनता त्राहि – त्राहि कर रही थी, उस समय मर्दनसिंह ने कुख्यात डकैतों अंग्रेजों की शब्दावली में परन्तु वह (क्रांतिकारि थे) को पकड़कर अंग्रेज कमिश्नर हैमिल्टन को ललितपुर में सौप दिया।[2] तब मर्दनसिंह सागर से झांसी तक के भू-भाग में मर्दनसिंह जनप्रिय हो गये साथ ही अंग्रेजों के मित्र[3] परन्तु अंग्रेजों की बर्वरता निरन्तर बढ़ती गयी और मर्दनसिंह का पौरूष जाग उठा और वह अंग्रेजों के विरूद्ध हो गये। राजामर्दनसिंह ने अपनी त्वरित सेना का संगठ्न किया था तथा यूरोपीय ढंक से सेना बनाने के लिए फ्रांसीसी नौकर रखे।[4] राजा मर्दनसिंह

---

1. जय बुन्देलखण्ड भूमि – सीताराम चतुर्वेदी (अटल) 1983 ई0 में, पृष्ठ – 100-101 साहित्य निकेतन झांसी से प्रकाशित।
2. ललितपुर स्वर्ण जंयती स्मारिक – 1998, सं. – संतोष शर्मा
   क्रांति की तपोभूमि तालबेहट और महाराज मर्दनसिंह – श्रावण कुमार त्रिपाठी, पृष्ठ – 12
3. ललितपुर स्वर्ण जंयती स्मारिक – 1998, सं. – संतोष शर्मा
   क्रांति की तपोभूमि तालबेहट और महाराज मर्दनसिंह – श्रावण कुमार त्रिपाठी, पृष्ठ – 12
4. ललितपुर स्वर्ण जंयती स्मारिक – 1998, सं. – संतोष शर्मा
   क्रांति की तपोभूमि तालबेहट और महाराज मर्दनसिंह – श्रावण कुमार त्रिपाठी, पृष्ठ – 12

1857 के महान स्वातंत्रता समर के अमर सेनानी वानपुर (ललितपुर) के
राजा मर्दन सिंह
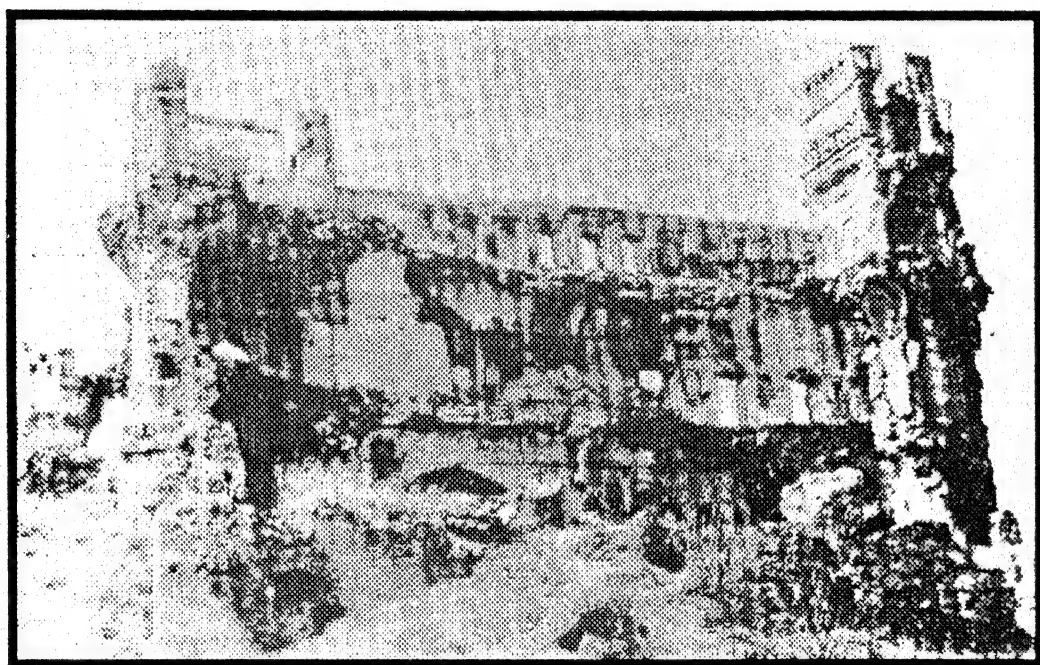
वानपुर (ललितपुर) के महाराजा मर्दन सिंह के वानपुर किले का ध्वंसावशेष

सन् 1857 के स्वतंत्रता समर के रणनीतिकारों में से एक थे। देश स्तर की बैठकें तालवेहट के दुर्ग भारत गढ़ में होती रही थी।[1] और समूचे देश में झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, तांत्याटोपे, नानासाहब आदि के साथ मर्दनसिंह ने क्रांति करने का संकल्प लिया था। तालबेहट में ऐसी जनश्रुति सुनने में आती हैं कि 31 मई 1857 की विद्रोह की तिथि जो निश्चिय की गयी थी वह भारत गढ़ दुर्ग (तालबेहट) में बनायी गई तथा देश में प्रसारित हुई थी।[2]

जैसे ही 10 मई 1857ई0 को मेरठ में सैनिकों ने विद्रोह कर 11 मई 1857 ई0 को दिल्ली पर अधिकार किया वैसे ही 12 मई 1857 ई0 को वानपुर नरेश महाराज मर्दनसिंह ने स्वराज सेना का नेतृत्व सम्हाला[3] जिसका वह क्रांति से पूर्व ही सैन्य दल का पुनर्गठन कर चुके थे और सबसे पहले ललितपुर रेलवे स्टेशन को घेर कर उस पर अपना कब्जा जमा लिया, उन्होंने ललितपुर में अनेक अंग्रेज अधिकारियों को बन्दी बना लिया तथा अपने वंशजों के चन्देरी राज्य को स्वतंत्र घोषित कर दिया।[4]

अपना मुख्यालय मसौरा की गढ़ी को बनाया जो[5] कि ललितपुर शहर से 4 मील की दूरी पर था। एक विशाल जन समुदाय एवं बुन्देला जमींदार उनके झण्डे के नीचे आ गये।[6]

ललितपुर में बन्दी बनाये गये अंग्रेज अधिकारियों एवं उनके परिवारों को मर्दनसिंह ने मसौरा की गढ़ी में रखा बाद में दो दिन बाद उन्हें बानपुर में अंग्रेजों के एजेन्ट को सौप दिया जो उन्हें वह ओरछा ले गया।[7]

मर्दनसिंह ने खिमलासा, खुरई, विनैका, बरौदिया के दुर्गो पर अधिकार करते हुये सागर का किला घेर लिया। सागर के इसी युद्ध में कर्नल डसेस मर्दनसिंह की गोली से मारा गया।[8] स्वराज्य सेना ने सागर के किले पर अधिकार कर लिया मर्दनसिंह आगे

---

1. ललितपुर महोत्सव 1996 में प्रकाशित पत्र
2. ललितपुर महोत्सव 1996 में प्रकाशित पत्र
3. ललितपुर महोत्सव 1996 में प्रकाशित पत्र
4. दैनिक जागरण, झांसी 23 अगस्त 1997, पृष्ठ – 4
   आजादी के आन्दोलन में ललितपुर का योगदान – प्रस्तुति अजय तिवारी 'नीलू'
5. फ्रीडम स्ट्रगल आफ यू.पी. भाग – 3, एस. ए. ए. रिजवी, पृष्ठ – 110
6. फ्रीडम स्ट्रगल आफ यू.पी. भाग – 3, एस. ए. ए. रिजवी, पृष्ठ – 110
7. फ्रीडम स्ट्रगल आफ यू.पी. भाग – 3, एस. ए. ए. रिजवी, पृष्ठ – 110
8. ललितपुर स्वर्ण जंयती स्मारिक – 1988, सं. – संतोष शर्मा, लेख – श्रावणकुमार त्रिपाठी

बढ़ते हुये दमोह, जबलपुर में अंग्रेजों से युद्ध करते नर्मदा के तट तक जा पहुँचे इन युद्धों में घायल अंग्रेजों तथा उनके परिवार वालों को नरयावली के किले में संरक्षित भिजवाया तथा उनकी चिकित्सा करायी।[1]

उनके इस मानवीय उच्च आदर्श की प्रशंसा उस समय के विचार अंग्रेजों ने लिखी मर्दनसिंह के चरित्र को अंग्रेज केयर्स तथा मैलसन ने लिखे ग्रन्थ, History of India Mutiny 1857, 1858 में लिखा है –

He (Raja) Comes on with Great Boldness his Standards Flying and his Men singing theoir Nalianl Hymms |[2]

समूचा बुन्देलखण्ड नर्मदा से जमुना तक अंग्रेजी राज से मुक्त हो गया तथा एक वर्ष तक पूर्ण स्वतंत्र रहा था।

राजा मर्दनसिंह की इन गतिविधियों से अंग्रेज हुकुमत थर्रा उठी. ब्रिटिश पार्लियामेन्ट ने विश्व में विखरी समूची अंग्रेज सेना तथा आधुनिक हथियारों से सजाकर सर ह्यूरोज को सेनापति बनाकर भेजा। ह्यूरोज के नेतृत्व में विशाल सेना झांसी की ओर से तथा गोसन सेनापति के नेतृत्व में सागर की ओर से कूच किया।[3] उस समय मर्दनसिंह नाराहट कर कब्जा कर चुके थे। राजा मर्दनसिंह और उनके जांबाज सिपाहियों ने मालथौन में भीषण युद्ध लड़कर गोसन को सागर की ओर वापिस खदेड़ दिया।[4] तथा उसके अनेक सैनिक अपनी ओर मिला लिए एवं उनको 12रूपया प्रतिमाह वेतन दिया ओर अंग्रेजों से टक्कर लेने के लिए सशस्त्र सैन्यबल में बृद्धि कर ली इस विजय का समाचार मिलने पर ह्यूरोज घबड़ा गया सर ह्यूरोज से मर्दनसिंह का पहला व निर्णायक युद्ध राहतगढ़ दुर्ग पर

---

1. (1) ललितपुर स्वर्ण जंयती स्मारिक – 1998, सं. – संतोष शमा, पृष्ठ – 12
   (2) ललितपुर महोत्सव 1996 में प्रकाशित पत्र
2. ललितपुर हमोत्सव 1996 का प्रसारित पत्र
3. दैनिक जागरण झांसी 23 अगस्त 1997, आजादी के आन्दोलन में ललितपुर का योगदान – प्रस्तुत – अजय तिवारी 'नीलू' पत्रकार, पृष्ठ –4
4. (1) दैनिक जागरण झांसी 23 अगस्त 1997, आजादी के आन्दोलन में ललितपुर का योगदान – प्रस्तुति – अजय तिवारी 'नीलू' पत्रकार, पृष्ठ –4
   (2) बुन्देली माटी के सपूत – हीरासिंह ठाकुर, पृष्ठ – 116

ब्रिटिश सेनापति सर ह्यू रोज

हुआ।[1] इसमें मर्दनसिंह ने अंग्रेजों को करारी मात दी थी। अंग्रेज सेना व ह्यूरोज पीछे भागा तव उससे जबलपुर की सेना आ मिली तब स्वराज सेना (मर्दनसिंह की सेना) के पांव उखड़ गये।

सर ह्यूरोज ने मर्दनसिंह से उलझनें की बजाय शाहगढ़ के राजा बखतवली सिंह जो मर्दनसिंह के साथ थे को घेरने का विचार बनाया किन्तु बीच में मर्दनसिंह की सेना डटी हुयी थी तब ह्यूरोज ने नाराहट की बजाय मदनपुर के इलाके से शाहगढ़ पहुँचने की योजना तैयार की राजा मर्दनसिंह को जैसे ही पता चला वह बुन्देलखण्ड की हल्दीघाटी मदनपुर पहुँच गए पर स्वराज के राहु नत्थे खाँ ने मर्दनसिंह के दीवान वक्सी बृजलाल को अपनी ओर फोड़ लिया और अंग्रेजों से मिल गये उन्होंने धोखा देकर मर्दनसिंह को मदनपुर घाट से हटवाकर अमझरा घाट पर कर दिया था।[2] और ह्यूरोज शाहगढ़ पहुँच गया तथा शाहगढ़ के राजा को शिकस्त दे दी। शाहगढ़ के राजा बखतवली का सम्बन्ध देशभक्त महानवंश के वंशज अपराजेय युगपुरूष महाराजा छत्रसाल के वंश से है। महाराज छत्रसाल के पुत्र हिरदेशाह को राज्य विभाजन में अन्य हिस्सों के अलावा गढ़ाकोटा एवं शाहगढ़ राज्य मिला था। 1739ई0 में हिरदेशाह की मृत्यु के बाद उनके पुत्र पृथ्वीसिंह गद्दी पर बैठे। उनके पश्चात क्रमशः हरिसिंह, मर्दनसिंह एवं अर्जुनसिंह राज्य के अधिकारी बने। अर्जुनसिंह के बाद शाहगढ़ की गद्दी पर बखतवली सिंह सिंहासनारूढ़ हुए। बखतवली अर्जुनसिंह के छोटे भाई तखतसिंह के पुत्र थे अर्थात् अर्जुनसिंह के भतीजे। शाहगढ़ सागर मुख्यालय से 43 मील की दूरी पर कानपुर मार्ग पर लांच नदी के दक्षिणी किनारे पर स्थित है। 1857 ई0 की क्राँति का यह निर्णायक मोड़ था यदि बानपुर नरेश समय पर शाहगढ़ के राजा की मदद को पहुँच जाते तो शायद बुन्देलखण्ड में अंग्रेजी शासन के पैर तो लगभग उखड़ ही गए थे।

राजा मर्दनसिंह अपनी विद्रोही गतिविधियां जारी रखे हुये थे, तभी उन्हें झांसी की रानी का पत्र मिला जिसमें झांसी की रानी ने मर्दनसिंह के पत्र का भी हवाला दिया

---

1. दैनिक जागरण झांसी 23 अगस्त 1997, आजादी के आन्दोलन में ललितपुर का योगदान – प्रस्तुत – अजय तिवारी 'नीलू' पत्रकार, पृष्ठ –4
2. (1) दैनिक जागरण झांसी 23 अगस्त 1997, आजादी के आन्दोलन में ललितपुर का योगदान – प्रस्तुति – अजय तिवारी 'नीलू' पत्रकार, पृष्ठ –4
   (2) बुन्देली माटी के सपूत – हीरासिंह ठाकुर, पृष्ठ – 116

शाहगढ नरेश राजा बखतबली सिंह

और कहा कि आप शाहगढ़ वाले राजा को लिवाउत कालपी कूच करें हम (रानी) व तांत्या टोपे वनानासाहब फौज की तैयारी में लगे सो आप (मर्दनसिंह) सीधे नौटघाट पर सर ह्यूरोज की फौज मारत वखेड़ेत कालपी कूंच करें इहां से हम आप सब जनें मिलकें ग्वालियर में अंग्रेजन पर धावा करें।[1]

यह पत्र रानी ने कालपी से सावन सुदी 14 सोमवार सं. 1914 को भेजा था पत्र को पाते ही नौटघाट का प्रसिद्ध युद्ध विजित कर झांसी आये तब उन्हें अजेय दुर्ग तालबेहट के पतन का समाचार मिला मड़ावरा आदि को ध्वस्त करता हुआ 12 मार्च 1858ई0 को सर ह्यूरोज तालबेहट आ गया तथा यहां नौ दिन तक रुका।[2]

मर्दनसिंह झांसी रानी की सहायता के लिए पहुँचे, अंग्रेजों ने रास्ता बताने हेतु ओरछा महाराज के दीवान नत्थे खाँ को साथ लिया था, जिसने दुश्मनों को झांसी तक पहुँचाया था रानी का साथ देते हुए बानपुर नरेश ने दूसरा मोर्चा खोल दिया भीषण युद्ध में राजा मर्दनसिंह अंग्रेजों द्वारा घेर लिये गये परन्तु वह किसी तरह घेरे से बाहर निकले एवं वापिस ललितपुर आ गये। तदोपरान्त वह राजा सिंधिया की मदद लेने ग्वालियर पहुँचे जहाँ उन्हें खाली हाथ लौटना पड़ा। वह निराश नहीं हुये, ओरछा, दतिया तथा समथर रियासतों में भी वह सहयोग मांगने गये पर चूंकि पूर्व में ही उनकी अंग्रेजों से संधि हो चुकी थी इसलिए यहाँ से भी मर्दनसिंह को निराशा ही हाथ लगी।[3] अपने इन प्रयासों में विफल होने के बाद भी राजा मर्दनसिंह अपनी सेना सहित पुनः झांसी के युद्ध में शामिल होने को चल दिये। झांसी की रानी का गोलंदाज गुलाम गौस खाँ युद्ध में मारा जा चुका था। इस युद्ध में राजा मर्दनसिंह एक ओर से अंग्रेजों पर धावा बोला और अंग्रेजी सेना को पीछे हटा दिया। ऐसे संकट के समय सहायता मांगने पर नाना साहब ने तांत्या टोपे (रामचन्द्रराव वास्तविक नाम) को 20 हजार सैनिकों सहित रानी के पास भेजा। इस समय बानपुर के राजा मर्दनसिंह शाहगढ़ के राजा बख्तवली भी अपनी अपनी सेना सहित उपस्थित थे एवं दमोह से विद्रोहियों की एक टुकड़ी राव सरूपसिंह के नेतृत्व में पहुँच गई। भीषण युद्ध हुआ एवं अंत में अंग्रेजों की शिकस्त हुई इसके बाद पुनः अंग्रेजों ने हमला किया परन्तु गद्दारों की मदद से गुप्त

---

1. महारानी लक्ष्मीबाई का पत्र महाराजा मर्दन सिंह के नाम, छाया प्रति संलग्न
2. ललितपुर स्वर्ण जंयती स्मारिका 1998, सं. – संतोष शर्मा,
   क्रांति की तपोभूमि तालबेहट और महाराज मर्दनसिंह – श्रावण कुमार त्रिपाठी, पृष्ठ – 14
3. बुन्देली माटी के सपूत – हीरासिंह ठाकुर, पृष्ठ – 47

झांसी की महारानी लक्ष्मीबाई के द्वारा वानपुर के नरेश राजा मर्दन को सावन सुदी 14 सोमवार सं. 1914 मुकाम कालपी से लिख गया पत्र

श्री

श्री महाराजाधिराज श्री महाराजा श्री राजा मर्दन सिंह बहादुर जू देव ऐते श्री महारानी श्री रानी लक्ष्मी बाई जू देवी के बांचने आपर उहाँ के समाचार भले चाहिये ईहा के समाचार भले है आपर अपुन की पाती आई सो हाल मालूम भओ और अपुन ने श्री महाराज साहगढ की पाती को हवालो दओ सो मालूम भओ आपर इहां से लिखी के आप सागर को कूच करें

ऊहां दो कम्पनी बीच में साहबन की है उनको मारत बखेड़त साहगढ वारे राजा खों लिवाउत फौज के सीधे कम्पनी कूच करें हम व तात्या टोपे व नाना साहब फौज की तैयारी में लगे सो आप सीधे नोटघाट पर सर हियूरोज की फौज को मारत बखेड़त कालपी कूंच करें इहा से हम आप सब जने मिलके गवालियर में अंग्रेजन पर धावा करें अब देर न भओ चाहिजे देखत पाती के समाचार देवे में आवै

सावन सुदी १४ सोम स. १९१४

मुकाम कालपी

रास्ते से अंग्रेजी फौज झांसी के किले में दाखिल हो गई और झांसी पर अंग्रेजों का कब्जा हो गया।

एक बार पुनः जमुना के किनारे कालपी के मैदान में सभी, स्वराज्य सेनानी एकत्र हुये, मर्दनसिंह, तात्याटोपे, नाना साहब, बखतवली तथा स्वराज की साक्षात दुर्गा लक्ष्मीबाई सहित अंग्रेजो के साथ भीषण युद्ध लड़ा।[1] किन्तु दुर्भाग्य से स्वराज्य सेना हार गयी, सभी तितर बितर हो गये। आजादी का वीर सपूत राजा मर्दनसिंह इस हार से घबराये नहीं बल्कि पुनः सेना एकत्रित कर अपने साथियों सहित ग्वालियर पर आक्रमण किया और विजय प्राप्त की इसके बाद राजा मर्दनसिंह वापिस आ गये परन्तु अंत में रानी झांसी ग्वालियर के युद्ध में 18 जून 1858 को मारी गयी।[2]

इस युद्ध में अंग्रेज सेनापति सर ह्यूरोज था स्वराज्य सेना की हार हुयी और बानपुर नरेश मर्दनसिंह वापिस बानपुर लौट आये।[3] बानपुर नरेश की आक्रमक कार्यवहियों उत्तेजित अंग्रेज सेनापति ह्यूरोज ने विशाल सेना के साथ बानपुर पर आक्रमण कर दिया। मर्दनसिंह ने अपनी फौज के साथ अंग्रेजों का वीरतापूर्वक मुकाबला किया अततः मर्दनसिंह को भूमिगत होना पड़ा।[4] ह्यूरोज ने बड़ी बेदर्दी से बानपुर के उनके किले को सुरंगें लगवाकर तहस नहस कर दिया तथा उनके बचे हुए सैनिकों को कत्ल करवा दिया। पुस्तकालयों को जला दिया और बानपुर पर अंग्रेजों का आधिपत्य 10 मार्च 1858 ई0 स्थापित हो गया।[5] अंग्रेज हुकूमत ने राजा मर्दनसिंह को जिन्दा या मुर्दा पकड़ने पर 8 हजार रूपया का ईनाम घोषित कर दिया।[6]

---

1. (1) ललितपुर स्वर्ण जंयती स्मारिका 1998, सं. – संतोष शर्मा,
   (2) दैनिक जागरण झांसी 23 अगस्त 1997, आजादी के आन्दोलन में ललितपुर का योगदान – प्रस्तुति – अजय तिवारी 'नीलू' पत्रकार, पृष्ठ –4
2. आधुनिक भारत का इतिहास, वी. एल. ग्रोवर एवं यशपाल 1981 में एस. चन्द एण्ड कम्पनी प्रा. लि. दिल्ली से प्रकासित, पृष्ठ – 260
3. झांसी दैनिक जागरण, 23 अगस्त 1997, पृष्ठ – 4
4. बुन्देली माटी के सपूत – हीरासिंह ठाकुर, पृष्ठ – 118 – 119
5. (1) झांसी दर्शन – मोतीलाल अशान्त, पृष्ठ – 39
   (1) बुन्देली माटी के सपूत – हीरासिंह ठाकुर, पृष्ठ – 118 – 117
6. (1) बुन्देली माटी के सपूत – हीरासिंह ठाकुर, पृष्ठ – 118 – 117
   (2) प्रेस लिस्ट्स ऑफ बुन्देलखण्ड रिकार्ड (1857–1876) जनरल ऐडीटर, जी. एन. सेल्यटोरे, 20 सितम्बर 1857, पृष्ठ – 2

इसके बाबजूद मर्दनसिंह भूमिगत रह कर अंग्रेजी शासन को नाकों चने चबुआते रहे अंततः 28 सितम्बर 1858 ई0 को उन्हें गिरफ्तार कर लाहौर जेल भेज दिया।[1] उनके साथ शाहगढ़ के राजा बखतवली जो मेवाढ़ जा रहे थे को भी गिरफ्तार कर लाहौर जेल भेजा गया था।[2]

अंग्रेजी हुकूमत बानपुर के वीर राजा मर्दनसिंह से किस कदर खौफ खाती थी इस बात की जानकारी उनके गिरफ्तार होने से पूर्व 10 जून 1858 ई0 को झांसी के कमिश्नर एफ0 डब्लू0 पिनकने द्वारा सागर के डिप्टी कमिश्नर को लिखे पत्र से मिलती है। इस पत्र में कहा गया यदि मर्दनसिंह आत्मसमर्पण करते तो शर्तों के अनुरूप उनकी जान बख्श दी जाऐगी और तमाम सुविधाएं प्रदान की जाऐगी। झांसी का कमिश्नर इस बात का पूरे क्षेत्र में व्यापक प्रचार कराने की हिदायत देता है।[3]

ललितपुर क्षेत्र में राजा बानपुर के प्रभाव से अंग्रेजी हुक्मरान किस कदर चिन्तित था इस बात का अंदाजा 15 फरवरी 1859 को झांसी के कमिश्नर पिनकने द्वारा उत्तर पश्चिम प्रान्त सरकार के सचिव को लिखे पत्र से भी लगता है जिसमें कहा गया कि बानपुर के पूर्व राजा मर्दनसिंह के पुत्र ने अपने स्टेट बानपुर में लौटने की इच्छा व्यक्त की है लेकिन उन्हें वर्तमान में चंदेरी जिला में कहीं भी रहने की अनुमति कदापि न दी जाए।[4]

इसके उपरान्त झांसी का कमिश्नर 10 मार्च 1859 को उत्तर पश्चिम सरकार को सूचना भेजता कि लेफ्टिनेण्ट गवर्नर के आदेशानुसार बानपुर के पूर्व राजा के पुत्र रावशंकर सिंह और कुँवर गिरवर सिंह को बानपुर सीमाक्षेत्र में रहने से मना कर दिया गया।[5]

---

1. (1) बुन्देली माटी के सपूत - हीरासिंह ठाकुर, पृष्ठ - 118 - 117
   (2) ललितपुर स्वर्ण जंयती स्मारिका, सं. - संतोष शर्मा
   (3) ललितपुर महोत्सव 1996 का पत्र
2. (1) ललितपुर महोत्सव 1996 का पत्र
   (2) दैनिक जागरण झांसी - 23 अगस्त 1997 पृष्ठ - 4
3. (1) दैनिक जागरण झांसी - 23 अगस्त 1997 पृष्ठ - 4
   (2) प्रेस लिस्ट ऑफ बुन्देलखण्ड रिकार्ड, पृष्ठ - 13
4. (1) दैनिक जागरण झांसी - 23 अगस्त 1997 पृष्ठ - 4
   (2) प्रेस लिस्ट ऑफ बुन्देलखण्ड रिकार्ड, पृष्ठ - 56
5. (1) दैनिक जागरण झांसी - 23 अगस्त 1997 पृष्ठ - 4
   (2) प्रेस लिस्ट ऑफ बुन्देलखण्ड रिकार्ड, पृष्ठ - 56

गिरफ्तारी के उपरान्त मातृभमि लौटने के लिए तड़फ रहे बानपुर के वीर राजा मर्दनसिंह और शाहगढ़ के वीर राजा बखतवली सिंह अपने परिवार सहित मथुरा में रहने की अनुमति मांगते हैं। 9 मई 1861 ई. को मध्य भारत सरकार का एजेन्ट पत्र लिखकर भारत सरकार के पास संस्तुति कर भेजता है[1] कि इन दोनों को अपने परिवार सहित मथुरा में रहने की इजाजत दी जाएं, उनके भागने की सम्भावना कम है। इसके उपरान्त 21 जून 1861 ई0 को उत्तर पश्चिम प्रान्त सरकार का अपर सचिव जे.डी. सेण्डफोर्ड पत्र लिखकर झांसी के कमिश्नर ए. एच. टर्नन से राय मांगता[2] कि बानपुर के राजा मर्दनसिंह को मथुरा में रहने की इजाजत देने से उसे कोई आपत्ति तो नहीं है।

इसके प्रतिउत्तर में झांसी का तत्कालीन कमिश्नर अपनी राय भेज देता कि वह तो ठीक है लेकिन 8 अगस्त 1861 ई0 को भारत सरकार का सेक्रेटरी सी. यू0 आटसन पत्र के द्वारा मध्य भारत सरकार के गवर्नर जनरल के एजेण्ट आर0 सेक्सपियर को जो अपनी राय भेजता है।[3] वह महत्वपूर्ण है वह कहता है मैं गवर्नर जनरल काउसिंल की इस राय से सहमत नहीं हूँ कि बानपुर और शाहगढ़ के पूर्व राजाओं को मथुरा में रहने की अनुमति दे दी जाए। वह कहता है कि इन दोनों पूर्व राजाओं को तो सतलज नदी के इस पार ही नहीं भेजा जाना चाहिए।[4] इन पत्रों से साबित होता है कि आजादी के वीर सेनानी राजा मर्दनसिंह से अंग्रेजी शासन किस कदर खौफ खाता था।[5] 18 फरवरी 1862 ई0 को मातृभूमि से विलग राजा मर्दनसिंह गुहार करते है कि पंजाब उनके लिए विदेश जैसा है, भत्ता कम मिलता, वातावरण सुविधाजनक नहीं है और अपने परिवार वालों से नहीं मिल पाता हूँ[6] अतः मथुरा में रहने की अनुमति दी जाए 7 मई 1862 ई0 को पत्र के द्वारा उनका

---

1. (1) दैनिक जागरण झांसी – 23 अगस्त 1997 पृष्ठ – 4
   (2) प्रेस लिस्ट ऑफ बुन्देलखण्ड रिकार्ड, पृष्ठ – 124
2. (1) दैनिक जागरण झांसी – 23 अगस्त 1997 पृष्ठ – 4
   (2) प्रेस लिस्ट ऑफ बुन्देलखण्ड रिकार्ड, पृष्ठ – 126
3. (1) दैनिक जागरण झांसी – 23 अगस्त 1997 पृष्ठ – 4
   (2) प्रेस लिस्ट ऑफ बुन्देलखण्ड रिकार्ड, पृष्ठ – 126
4. (1) दैनिक जागरण झांसी – 23 अगस्त 1997 पृष्ठ – 4
   (2) प्रेस लिस्ट ऑफ बुन्देलखण्ड रिकार्ड, पृष्ठ – 126
5. दैनिक जागरण झांसी – 23 अगस्त 1997 पृष्ठ – 4
6. (1) दैनिक जागरण झांसी – 23 अगस्त 1997 पृष्ठ – 4
   (2) प्रेस लिस्ट ऑफ बुन्देलखण्ड रिकार्ड, पृष्ठ – 126

यह अनुरोध भी ठुकरा दिया जाता है।[1]

इस दौरान राजा बानपुर का परिवार भी दतिया में निर्वासित जीवन व्यतीत करता रहता, उनके बड़े पुत्र की मृत्यु हो जाती है।[2]

अंग्रेजी प्रसाशन के पत्र बताते कि अंग्रेजी शासन असहाय हो गए उनके परिवार की देखभाल का जिम्मा तो ले लेती किन्तु राजा मर्दनसिंह को लाहौर से लौटने की इजाजत नहीं देती। 5 मार्च 1869ई0 के एक पत्र में इस बात का उल्लेख मिलता है।[3]

इस तरह राजा मर्दनसिंह करीब 5 बर्ष से ऊपर निर्वासित जीवन व्यतीत करने के उपरान्त उन्हें मथुरा वृन्दावन में रहने की अनुमति दे दी जाती है।[4] और जीवन के अन्तिम पाँच वर्ष मथुरा व्यतीत करते हुये राजा मर्दनसिंह 22 जुलाई 1879 ई0 को यही (मथुरा) से परलोक सिधार गये।[5]

राजा मर्दनसिंह का आजादी के आन्दोलन में योगदान दमकते हुये हीरे के समान है। बानपुर व तालबेहट में विशाल दुर्ग उनके वैभव के प्रतीक हैं।

तालबेहट के दुर्ग को ह्यूरोज ने आग लगाकर शून्य श्मशान बना दिया था मात्र नरसिंह भगवान के मन्दिर में किवाड़ (दरवाजे) लगे छोड़े थे राजनैतिक चाल के तहत कि कहीं विशाल हिन्दू समुदाय भड़क न उठे।[6]

राजा मर्दनसिंह ने राष्ट्रीय आन्दोलन को नेतृत्व प्रदान करते हुये अंग्रेजो से

---

1. (1) दैनिक जागरण झांसी – 23 अगस्त 1997 पृष्ठ – 4
   (2) प्रेस लिस्ट ऑफ बुन्देलखण्ड रिकार्ड, पृष्ठ – 142
2. (1) दैनिक जागरण झांसी – 23 अगस्त 1997 पृष्ठ – 4
   (2) प्रेस लिस्ट ऑफ बुन्देलखण्ड रिकार्ड, पृष्ठ – 198
3. (1) दैनिक जागरण झांसी – 23 अगस्त 1997 पृष्ठ – 4
   (2) प्रेस लिस्ट ऑफ बुन्देलखण्ड रिकार्ड, पृष्ठ – 198
4. (1) दैनिक जागरण झांसी – 23 अगस्त 1997 पृष्ठ – 4
   (2) प्रेस लिस्ट ऑफ बुन्देलखण्ड रिकार्ड, पृष्ठ – 198
5. (1) दैनिक जागरण झांसी – 23 अगस्त 1997 पृष्ठ – 4
   (2) ललितपुर महोत्सव – 1996 का पत्र
6. ललितपुर स्वर्ण जंयती स्मारिका 1998, सं. – संतोष शर्मा, पृष्ठ – 14

प्रतिशोध के समय कहा था कि -

धर्म न दूँगा, धरा न दूँगा। और न दूँगा आन।
राजपूत संतान हूँ हँस कर दूँगा प्रान।।[1]

जिससे ललितपुर क्षेत्र का सम्पूर्ण जन समुदाय उनके साथ हो चला था, और अंग्रेज बड़ी मुश्किल से इस क्षेत्र को शांत कर सके थे।

---

1. ललितपुर स्वर्ण जंयती स्मारिका 1998, सं. - संतोष शर्मा, पृष्ठ - 13

(4) विद्रोह के समय तात्याटोपे का ललितपुर प्रवेश एवं विद्रोह की गतिविधियां तीव्र

इस अमर शहीद तांत्याटोपे का जन्म 1814 में महाराष्ट्र के छोटे गांव में हुआ था आपके पिता का नाम पाण्डुरंग यवलेकर था जो बाजीराव पेशवा (द्वितीय) के यहां सेवारत थे।[1] तात्या टोपे का वास्तविक नाम रामचन्द्रराव था। इनका बचपन मनु (रानी लक्ष्मीबाई) के साथ विठूर में नाना साहब के यहां बीता। यहीं पर इन्हें देशभक्ति के संस्कार भी मिले। तात्या टोपे को नाना साहब ने क्रांतिकारियों की सेना का सेनापति बनाया था। 1857 एवं 1858 तक यमुना का दक्षिणी तथा विन्ध्याचल का उत्तरी प्रदेश करीब 11 माह तक क्रांतिकारियों के कब्जे में रहा जिसका श्रेय महारानी लक्ष्मीबाई तथा तात्या टोपे को था। 1857 के स्वतंत्रता समर में रानी लक्ष्मीबाई, बालासाहब सभी शहीद हो चुके थे। तात्या टोपे नर्मदा पार करना चाहते थे परन्तु अंग्रेज उनको गिरफ्तार करने के लिए नर्मदा के इस पार तथा उस पार काफी अंग्रेजी फौज कुशल सेनापतियों के नेतृत्व में तैनात किये थे। तात्या ने बुन्देलखण्ड के बीहड़ों एवं तंग घाटियों को किसी तरह से पार करके 25 अक्टूबर 1858 को नर्मदा के साड़िया घाट से जब नर्मदा पार की एवं नागपुर में प्रवेश किया[2] तब बंबई का गवर्नर एलफिस्ट दाँतो तले अंगुली दबाकर रह गया। नर्मदा पार करने के लिए 20 जून 1858 को ग्वालियर से निकलकर तांत्याटोपे, राव साहब एवं बाँदा के नबाब अली बहादुर द्वितीय मुट्ठीभर सैनिकों के साथ बिना धन के बिना सैन्य सामग्री के इधर - उधर भटकते रहे। तात्या टोपे को जब अंग्रेजों ने घेरना चाहा वह भरतपुर होते हुये जयपुर पहुँचे। चूकि कर्नल होम्स के नेतृत्व में फिरंगी सेना तांत्या का पीछा कर रहीं थी। वह जयपुर से भागकर टोंक पहुँचे, टोंक के नबाब को हराकर चार तोपें तथा सैन्य टुकड़ी लेकर आगे बड़े तो चम्बल नदी में बाढ़ आ गयी वह नया रास्ता निकलते हुए भीलवाड़ा पहुँच गये। सेनापति राबर्ट्स के नेतृत्व में अंग्रेजी सेना पीछे थी। 7 अगस्त को तांत्या पर हमला किया गया दिन भर छापामार लड़ाई चलती रही। रात्रि होते ही तांत्या सेना सहित उदयपुर रियासत में कोटरा गांव चल दिये। चम्बल नदी को अंग्रेजी सेना ने तीन ओर से घेर रखा था फिर भी वह चकमा देकर चम्बल पार कर गये और झालरापट्टम की ओर बढ़े और वहाँ के राजा ने तांत्या पर,

---

1. बुन्देली माटी के सपूत - हीरासिंह ठाकुर, पृष्ठ - 98
1. बुन्देली माटी के सपूत - हीरासिंह ठाकुर, पृष्ठ - 98

1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की सेना
के सेनापति
तात्या टोपे

1857 के स्वतंत्रता संग्राम में तात्या टोपे
के साथी बॉदा के
नाबाव अली बहादुर द्वितीय

सेना, हमला करने के लिए भेजी परन्तु वह सेना तात्या से मिल गयी यहां तांत्या ने 5 दिन विश्राम किया[1] तांत्याटोपे, विठूर के नाना धोड़ों पंत का भतीजा राव साहब एंव बाँदा के नबाब अली बहादुर द्वितीय नर्मदा पार करने के लिये अपनी योजनानुसार सेना को दो भागों में बाँट दिया। एक नेतृत्व स्वयं ने तथा दूसरे का नेतृत्व रावसाहब ने किया। दोनों ही अनेकों स्थानों पर मुठभेड़ करते हुए ललितपुर पहुँचे।[2] वहाँ पर उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम तथा चम्बल की ओर से पांच सेनापतियों को चकमा देकर उत्तर की ओर बढ़ना शुरू किया शत्रु समझा की तात्या ने नर्मदा पार करने का विचार त्याग दिया तात्या ने अपना रास्ता बदलकर दक्षिण की ओर मुड़कर जाखलौन से आगे देवगढ़ के पास बेतवा नदी पार की।[3] उस समय ललितपुर में भी यहाँ के बुन्देला ठाकुर एवं जमींदार विद्रोह बनाये हुये थे। तांत्या के आने पर बुन्देलखण्ड में चन्देरी, तालबेहट, ललितपुर, जाखलौन, आदि गतिविधियों के केन्द्र हो उठे।[4] क्रांतिकारियों में पुनः जोश का संचार आ गया। और ललितपुर सब डिवीजन में 1869 ई0 तक विद्रोह की गतिविधियां चलती रही। तांत्याटोपे का पीछा जनरल माइकेल ब्यावरा कर रहा था। माइकेल ब्यावरा ने तांत्याटोपे, राब साहब, नावाब अली बहादुर।। के सेना सहित मुंवावली में होने की खबर पाकर 10 अक्टूबर को वही पर उन पर आक्रमण कर दिया।[5] विद्रोही नेता पराजित हुये परन्तु तात्या, बचकर सेना सहित आगे निकल गये। मुंगावली ललितपुर से 28 मील दक्षिण - पश्चिम की और स्थित है।

तांत्या अंग्रेज सेनापतियों को मूर्ख बनाते हुये होशंगावाद जिले में स्थित साड़िया घाट से नर्मदा पार कर 25 अक्टूबर 1858 को नागपुर पहुँच गये परन्तु देर से पहुँचने पर नागपुर में स्थिति यह थी की लोग तात्या से मिलने को डर रहे थे।[6] तात्या ने जब देखा की यहाँ उनको कुछ मद्द नहीं मिल रही है तब वह बड़ौदा की तरफ वड़े अंग्रेजी सेना उनका पीछे किये हुयी थी रास्ता बदलते हुये तात्या राजस्थान की ओर आये तथा 21 जनवरी 1859ई0 को अलवर में दिखायी दिये दो वर्षो तक लगातार लड़ते-लड़ते एवं चलते

---

1. बुन्देली माटी के सपूत - हीरासिंह ठाकुर, पृष्ठ - 101
2. बुन्देली माटी के सपूत - हीरासिंह ठाकुर, पृष्ठ - 101
3. फ्रीडम स्ट्रगल इन उ. प्र0, भाग - 3, पृष्ठ - 517
4. मस्तानी बाजीराव और उनके वंशज बाँदा के नबाब - डा. भगवानदास गुप्ता, पृष्ठ - 124
5. मस्तानी बाजीराव और उनके वंशज बाँदा के नबाब - डा. भगवानदास गुप्ता, पृष्ठ - 124
6. बुन्देली माटी के सपूत - हीरासिंह ठाकुर, पृष्ठ - 102

- चलते वह बहुत थक गये थे अंग्रेज घेराबन्दी से तात्या को नहीं पकड़ सके। अंग्रेजों ने तात्या के साथी देशद्रोही मानसिंह को जागीर का लालच दिया और उसने 7 अप्रैल 1859 ई0 को अर्धरात्रि के समय सोते हुए तात्या टोपे को बन्दी बनवा दिया अन्त में अंग्रेजों ने 18 अप्रैल 1859 ई0 को इस देशभक्त को शिवपुरी जेल में फाँसी दे दी।[1] उस समय लंदन टाइम्स के एक संवाददाता ने लिखा था कि "हमारा अत्यंत अद्‌भुत मित्र तात्याटोपे इतना कष्ट देने बाला और चालाक शत्रु है कि उसकी प्रशंसा नहीं की जा सकती है। उसने मध्य भारत में तहलका मचा दिया, अनेक स्थानों को रौंद डाला, खजानों को लूटकर खाली कर दिया और हमारी मैंगजीनों को खाली कर दिया। वह रोज वीस-चालीस मील की यात्रा करता था। वह कभी पहाड़ों पर से कभी नदियों में, कभी वादियों में से कभी घांटियों में से कभी दलदल में से , कभी हमारी सेना के बीच में से कभी आगे से कभी पीछे से एवं कभी धूमकर निकल जाता था। फिर भी वह हाथ न आया"[2]

---

1. बुन्देली माटी के सपूत - हीरासिंह ठाकुर, पृष्ठ - 103-104
2. बुन्देली माटी के सपूत - हीरासिंह ठाकुर, पृष्ठ - 97

(5) ललितपुर क्षेत्र क्रांतिकारियों का शरण स्थल

1857 ई० की क्रांति के समय ललितपुर का इलाका क्रांतिकारियों का प्रमुख शरण स्थल बना हुआ था। सन् 1857 की क्रांति के नायक मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर द्वितीय का पुत्र फिरोजशाह, तांत्याटोपे, शाहगढ़ के नबाब बख्तबली, बानपुर के राजा मर्दनसिंह, विठूर नाना धोडोंपंत का भतीजा राव साहब, बाँद के नवाब अली बहादुर द्वितीय आदि सभी बालाबेहट, देवगढ़ और लखनजर पापरा के घने जंगलों में शरण पाकर क्रांतिकारी गतिविधियों का संचालन कर रहे थे और ब्रिटिश फौजें उनके पीछे यहाँ डेरा डाले पड़ी हुई थी।

सागर और ललितपुर की सीमा के बीच धसान व बेतवा नदी का इलाका घने जंगलों से आच्छादित रहा है। 1857 ई. में सागर जिले की सीमायें यहाँ नाराहट तक छूटी थी। तत्कालीन बालाबेहट परगना के पूरे प्रक्षेत्र में घने जंगल होने के कारण ब्रिटिश हुक्मरान क्रांतिकारियों की गतिविधियों को काबू में नहीं कर पा रहे थे। इस बात का सबूत 4 अक्टूबर 1858 ई. को हीरापुर के तत्कालीन किलेदार द्वारा शाहगढ़ के थानेदार को लिखे उस पत्र से मिलता है[1] जिसमें कहा गया कि सेनापति तांत्याटोपे के नेतृत्व में विद्रोही फौजें निरन्तर आगे बढ़ी आ रही हैं। और इस समय वह बालाबेहट के आसपास अपना ठिकाना बनाये हुये हैं।

इधर दिसम्बर 1858 ई० में अवध कमिश्नरी का सेक्रेटरी झांसी के कमिश्नर इफ. डब्लू. पिन्कने को सूचित करता है[2] कि मुगल बादशाह का पुत्र फिरोजशाह, तांत्याटोपे से मिलने के लिए बुन्देलखण्ड की ओर रवाना हो गया। इसके बाद 6 मार्च 1859 ई० को ललितपुर में तैनात अंग्रेज अफसर एफ. ए. टेन्टन ने अपने पत्र के द्वारा कमिश्नर झांसी ई. डब्लू. पिन्कने को तांत्याटोपे के विरूद्ध चलाये गये अभियान एवं ललितपुर में उनकी गतिविधियों के बारे में जानकारी देता है।

31 अगस्त 1859 को फील्ड फोर्स का कमांडर कालिन नॉट ललितपुर के

1. प्रेस लिस्ट ऑफ बुन्देलखण्ड रिकार्ड, पृष्ठ – 39
2. (1) प्रेस लिस्ट ऑफ बुन्देलखण्ड रिकार्ड, पृष्ठ – 39
   (2) दैनिक जागरण, झांसी, 12 अगस्त 1997, पृष्ठ – 4

तत्कालीन डिप्टी कमिश्नर टेलर को पत्र लिखकर जानकारी देता है कि रामप्रसाद तिवारी व नृपत सिंह लम्बरदार की मुखबिरी के आधार पर फिरोजशाह के खिलाफ अभियान चलाया गया। फिरोजशाह के विद्रोही झुण्ड पर आक्रमण किया गया जिसमें तीस जानें गयी। विद्रोहियों का गोला बारूद नष्ट कर दिया गया। फिरोजशाह अपने बाकी बचे साथियों सहित देवगढ़ के जंगलों की ओर भाग गया।[1] इसी सम्बन्ध में ललितपुर के डिप्टी कमिश्नर टेलर ने झांसी के कमिश्नर को 1 सितम्बर 1859 ई0 को पत्र लिखकर मुखबिर रामप्रसाद व नृपतसिंह लम्बरदार को पुरुष्कृत करने हेतु प्रस्ताव बनाकर भेजा।[2] ललितपुर क्षेत्र अन्तर्गत बालाबेहट में क्रांतिकारियों की गतिविधियों के संचालन का उल्लेख 1 सितम्बर 1859 ई0 को झांसी के कमिश्नर एफ. डब्लू. पिन्कने द्वारा ललितपुर के कमिश्नर टेलर को लिखे उस पत्र से भी मिलता है जिसके द्वारा उसने बालाबेहट के घने जंगल प्रक्षेत्र में क्रांतिकारी गतिविधियों को रोकने के लिए जाखलौन से रीतघाट, रीतघाट से कनपुरा, पाली से बालाबेहट एवं रीतघाट से दुधई आदि चार राजमार्गों के निमार्ण का सर्वे कराने तथा थाना बालाबेहट के थाने को दूधई में स्थानान्तरित करने का आदेश जारी किया था।

उसके उपरान्त इन मार्गों के सर्वे का कार्य शुरु हुआ और मार्ग के निर्माण पर चार सौ रूपया प्रति मील व्यय आंका गया था।

बाद में 15 अक्टूबर 1859 ई0 को ग्वालियर के कमाण्डर जनरल नेपियर के एक पत्र से उल्लेख मिलता है कि बॉम्बे शेपर्स की दो कम्पनियाँ इन चारों सड़कों के निर्माण के लिए भेजी गयी थी।[3]

ज्ञातव्य है कि जंगल प्रक्षेत्र में घने जंगल एवं यातायात के लिए कोई मार्ग न होने के कारण अंग्रेज सरकार को क्रांतिकारियों के खिलाफ अभियान संचालन में काफी कठिनाई उत्पन्न हो रही थी। इसलिए क्रांतिकारियों पर प्रभावी अंकुश के लिये अंग्रेज हुक्मरानों ने इन चार मार्गों के निर्मणि की प्रस्तावना तय की थी।

इस प्रकार उस समय ललितपुर क्षेत्र क्रांतिकारियों का शरण स्थल एवं क्रांतिकारी गतिविधियों का संचालन केन्द्र रहा है।

---

1. प्रेस लिस्ट ऑफ बुन्देलखण्ड रिकार्ड, पृष्ठ – 74
2. प्रेस लिस्ट ऑफ बुन्देलखण्ड रिकार्ड, पृष्ठ – 74
3. (1) प्रेस लिस्ट ऑफ बुन्देलखण्ड रिकार्ड, पृष्ठ – 85
   (2) दैनिक जागरण – झांसी, 12 अगस्त 1999, पृष्ठ – 4

(6) बुन्देला जमींदारों की सक्रियता

1857 ई0 के स्वतंत्रता आन्दोलन में ललितपुर क्षेत्र के बुन्देला जमींदार वानपुर नरेश मर्दनसिंह के नेतृत्व में संगठित हुये थे। मर्दनसिंह ने नाराहट के जमींदार गणेशजू एवं उनके पिता चन्द्रपुर के मालगुजार जवाहर सिंह को अंग्रेजी शासन के प्रति विद्रोह करने के लिए भड़काया[1] शाहगढ़ के राजा बखतवली भी मर्दनसिंह के नेतृत्व में अंग्रेजी शासन के विरूद्ध हो गये और अंग्रेजों से लोहा लेते रहे।[2] सर ह्यूरोज ने शाहगढ़ के राज्य को तहस नहस कर दिया था।[3] और राजा बखतवली मर्दनसिंह के साथ लाहौर जेल में कैद रहे।[4] पाली के जागीरदार राव हम्मीरसिंह, देवरान के दरयावसिंह, जाखलौन - देवगढ़ प्रक्षेत्र के वीर देवीसिंह एवं उनके पुत्र भुजबल, तथा दौलत सिंह एवं महीप सिंह दैलवारा के जसवंत सिंह, गुमराव सिंह बुन्देला, कुँवर लक्ष्मण सिंह बुन्देला (नाराहट), दलहला (मदनपुर), लालदुलारे लाल का यथ, राम बुन्देला (बानपुर), राव बखतबलि बुन्देला (नाराहट) आदि की सक्रियता ने इस क्षेत्र मेंविद्रोह को 1868 तक जारी रखा था। इन बुन्देला जमींदारों का विद्रोह में शामिल हो जाने से अंग्रेजी शासन वेचैन हो उठा था और इनकों पकड़ने के लिए अनेक योजनाएं बनाता रहा परन्तु यह आजादी के दीवानी अपने योजना को सफल बनाकर पुनः जगलों में भाग जाते थे। जिससे 30 मार्च 1860 ई0 को झांसी का कमिश्नर एफ. डब्लू. पिन्कने एक पत्र के द्वारा डिप्टी कमिश्नर चंदेरी के आदेश देता है कि विद्रोही गुटों पर काबू पाने के लिए मिलिट्री पुलिस का मुख्यालय तत्काल चंदेरी से हटाकर महरौनी अथवा मड़ावरा खास में स्थापित कर दिया जाए।[5]

इससे सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि विद्रोह का तेवर कितना तेज था। प्रमुख जमींदारों का 1857 ई0 स्वतंत्रता आन्दोलन में योगदान निम्न प्रकार है।

---

1. (1) झांसी गजेटियर, 1965, ईशाबसन्त जोशी, पृष्ठ - 59
   (2) एन. ई. झांसी डिवीजन, पृष्ठ - 3
2. रिवोल्ट ऑफ 1857 इन बुन्देलखण्ड - एस. एन. सिन्हा, पृष्ठ - 49
3. दैनिक जागरण, झांसी, 23 अगस्त 1997, पृष्ठ - 4
4. दैनिक जागरण, झांसी, 23 अगस्त 1997, पृष्ठ - 4
5. (1) दैनिक जागरण, झांसी, 23 अगस्त 1997, पृष्ठ - 4
   आजादी के आन्दोलन में ललितपुर का योगदान - प्रस्तुति - अजय तिवारी 'नीलू' पत्रकार
   (2) फ्रीडम स्ट्रेगल इन उ.प्र. भाग-3, बुन्देलखण्ड एण्ड एडजुआनिंग टेरीटोरियस,पृष्ठ-657

पाली के जागीरदार राव हम्मीर सिंह[1]

1857ई0 की क्रांति में ललितपुर क्षेत्र के पाली के जागीरदार राव हम्मीरसिंह ने उल्लेखनीय योगदान दिया। विद्रोह के प्रति वह त्वरित सक्रियता देखाते हुये उस में शामिल हो गये और अपनी विद्रोही गतिविधियां जारी रखकर पूरे बालाबेहट परगने को (अंग्रेजी शासन का परगना) अंग्रेजी शासन से मुक्त करा लिया।[2]

28 सितम्बर 1858 ई0 को मर्दनसिंह की गिरफ्तारी के पश्चात भी राव हम्मीर सिंह ललितपुर जनपद में क्रांति की ज्वाला धधकाते रहे। राव हम्मीरसिंह ने जाखलौन देवगढ़ क्षेत्र के वीर देवीसिंह को अपने साथ मिला लिया और अंग्रेजों को त्रस्त कर दिया था।[3] 20 दिसम्बर 1858ई0 के चन्देरी के डिप्टी कमिश्नर एफ. ए. फेन्टन एवं झांसी डिवीजन के कमिश्नर एफ. डब्लू. पिनकने के पत्र से ज्ञात होता है कि अंग्रेज उनसे वादा करते है कि आप यदि आत्मसमर्पण कर दे तो हम आपको आपकी जागीर वापिस कर देंगे।[4] परन्तु पाली राव हम्मीर सिंह अपनी गतिविधियों को जारी रख रहते हैं। यह जानकारी 6 अप्रैल 1860 ई0 को ललितपुर के तत्कालीन डिप्टी कमिश्नर टेलर द्वारा झांसी के कमिश्नर पिन्कने को लिखे पत्र से होती है।[5] तथा उन्हें पकड़ने के लिए ग्वालियर स्टेट से सहायता मांगी जाती है। अन्त में 6 फरवरी 1861 ई0 को डिप्टी कमिश्नर चंदेरी द्वारा झांसी के कमिश्नर पिन्कने को लिखा पत्र महत्वपूर्ण है जिसमें यह उजागर होता है कि पाली के राव हम्मीर सिंह और दीवान मर्दनसिंह सुनौरी ने अपने 30 सहयोगियों सहित आत्मसमपर्ण कर दिया है। 21 मार्च 1861ई0 को अपर सचिव भारत सरकार को एक पत्र के द्वारा उत्तर पशिचम प्रान्त सरकार को सूचित करता है कि गवर्नर जनरल की काउंसिल ने हम्मीरसिंह को मुरादाबाद भेजे जाने का प्रस्ताव मंजूर कर लिया है।[6] उन्हें अपने 13 साथियों सहित

---

1. फ्रीडम स्ट्रेगल इन उत्तर प्रदेश भाग-3, बुन्देलखण्ड एण्ड एडजुआनिंग टेरीटोरियस, पृ-657
2. (1) ललितपुर स्वर्ण जंयती स्मारिका, 1998, सं. - संतोष शर्मा, पृष्ठ - 11
   भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में ललितपुर का योगदान - अजय तिवारी 'नीलू'
   (2) फ्रीडम स्ट्रेगल इन उत्तर प्रदेश भाग-3, बुन्देलखण्ड एण्ड एडजुआनिंग टेरीटोरियस, पृ-657
3. ललितपुर स्वर्ण जंयती स्मारिका, 1998, सं. - संतोष शर्मा, पृष्ठ - 11
   भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में ललितपुर का योगदान - प्रस्तुति - अजय तिवारी 'नीलू'
4. प्रेस लिस्ट ऑफ बुन्देलखण्ड रिकार्ड - 1857 - 1876, पृष्ठ - 51
5. (1) प्रेस लिस्ट ऑफ बुन्देलखण्ड रिकार्ड - (1857-1876), पृष्ठ - 102-103
   (2) दैनिक जागरण, झांसी, 18 अगस्त 1997, पृष्ठ - 5
6. दैनिक जागरण, झांसी, 18 अगस्त 1997, पृष्ठ - 5

बन्दी बनाकर मुरादाबाद भेज दिया[1] साथ ही उनका नाबालिग पुत्र निर्वेकसिंह भी उनके साथ जाता है जिसे वह उसके मामा के घर पन्ना भेजने की इंतजा करते है अन्त में अंग्रेज हुकूतम उनके पुत्र को पन्ना भेजने के लिए राजी हो जाती है। 6 मई 1873 ई. को मुरादाबाद के मजिस्ट्रेट आर. एच. क्लोफर्ड द्वारा रोहेलखण्ड के तत्कालीन कमिश्नर को लिखे एक पत्र से ज्ञात होता है[2] कि हम्मीरसिंह ने अपनी मातृभूमि वापिस लौटने की इच्छा जाहिर की थी। उन्होंने अंग्रेज हुकुमत से यह भी माँग की थी कि उन्हें यदि ललितपुर या झांसी में रहने की इजाजत न दी जाए। तो कम से कम तीन माह के लिए अपने परिजनों से मिलने के लिए ही घर आने की इजाजत दे दी जाए परन्तु इजाजत नहीं दी जाती है।

तत्कालीन अंग्रेजी शासन राव हम्मीर सिंह से इतना खौफ खाती थी कि उन्हें ललितपुर की सीमा में नहीं आने देना चाहते थे की कहीं यहाँ की जनता उनके यहाँ आने पर भड़क उठेगी तो फिर उसे शान्त करना मुश्किल होगा।

---

1. प्रेस लिस्ट ऑफ बुन्देलखण्ड रिकार्ड - 1857 - 1876, पृष्ठ - 121-122
2. दैनिक जागरण, झांसी, 18 अगस्त 1997, पृष्ठ - 5

देवरान के दरयावसिंह

1857ई0 के स्वतंत्रता संग्राम के बाद जब बानपुर नरेश राजा मर्दनसिंह को वंदी बनाकर लाहौर भेज दिया गया।[1] अंग्रेजी हुकूमत के दमनचक्र के चलते जिले में क्रांति के झण्डाबरदार पाली के राव हम्मीरसिंह को भी नजरबंद कर मुरादाबाद भेज दिया गया।[2] लेकिन इसके बावजूद आजादी के पुरोधा देवीसिंह और देवरान के दरयावसिंह अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ वीर बुंदेली प्रसूता पर बगावत का बिगुल फूंकते रहे। सन् 1857 ई0 की क्रांति के इन महानायकों ने तत्कालीन अंग्रेजी प्रशासन की नाक में दम कर रखा था, जिसमें एक दरयाव सिंह भी थे।

क्रांति के इस महानायक के गृह निवास के बारे में तत्कालीन अंग्रेजी शासन के दस्तावेजों में एक स्थान पर उन्हें देवरान में अपने निवास में मार दिये जाने का उल्लेख मिलता है किन्तु एक स्थान पर पुलिस अधीक्षक थाना मड़ावरा अन्तर्गत उनके मारे जाने की सूचना देता[3] हो सकता है कि उस समय देवरान मड़ावरा थाने में रहा हो परन्तु जनश्रुतियों के आधार पर दरयावसिंह के देवरान का निवासी होने के ज्यादा संकेत मिलते हैं।[4]

दरयाव सिंह की विद्रोही गतिविधियां सन् 1860 ई0 के आसपास अपने चरम पर पहुँच गई थी और उनके विद्रोही तेवर से स्थानीय अंग्रेजी प्रशासन त्रस्त हो उठा था।

11 नवम्बर 1861 ई0 को ललितपुर का डिप्टी कमिश्नर कैप्टन टी. ए. कार्वेट अपने पत्र के द्वारा झाँसी के तत्कालीन कमिश्नर एफ. डब्लू. पिन्कने को सूचित करता है कि दरयावसिंह पुनः भूमिगत हो गए है।[5] पुनः भूमिगत हो गए से यह आभास प्राप्त

---

1. ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका 1998, सं. – संतोष शर्मा, पृष्ठ – 14
2. ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका 1998, सं. – संतोष शर्मा, पृष्ठ – 11
3. दैनिक जागरण, झांसी, 13 अगस्त 1997, पृष्ठ – 4
   आजादी के आन्दोलन में ललितपुर का योगदान – प्रस्तुति – अजय तिवारी 'नीलू' पत्रकार
4. दैनिक जागरण, झांसी, 13 अगस्त 1997, पृष्ठ – 4
5. (1) दैनिक जागरण, झांसी, 13 अगस्त 1997, पृष्ठ – 4
   (2) प्रेस लिस्ट ऑफ बुन्देलखण्ड रिकार्ड – (1857–1876), पृष्ठ – 129

होता है कि 1857 ई0 के गदर के समय भी दरयाव सिंह की क्रांतिकारी गतिविधियां जारी थी किन्तु ऐन-केन प्रकारेण अंग्रेजी हुकूमत ने उनको प्रतिबंधित कर दिया था।

ऐसा प्रतीत होता है कि आजादी के दीवाने दरयावसिंह को देश में अंग्रेजी हुकूमत रास नहीं आई और सन् 1861 ई0 के आसपास उन्होंने पुनः हाथों में हथियार उठाकर अंग्रेजी सरकार के खिलाफ बगावत का बिगुल फूंक दिया।

इस पत्र के उपरान्त झांसी का तत्कालीन कमिश्नर पिन्कने पुनः एक पत्र लिखकर ललितपुर के डिप्टी कमिश्नर कार्वेट को निर्देश देता है कि दरयावसिंह को पकड़ने के लिए 50 मिलिट्री पुलिस के जबानों का एक दस्ता तैनात कर दिया जाए।[1] उनकी गतिविधियों पर कड़ी निगाह रखी जाए तथा उनके बारे में साप्ताहिक रिपोर्ट के द्वारा मण्डल मुख्यालय को भी अवगत कराया जाए।[2]

कमिश्नर पिंकने अपने पत्र के द्वारा वागी नेता दरयाव सिंह और बुन्देलखण्ड के एक और कद्धावर नेता छत्तरसिंह के बीच आपसी सम्बन्धों के बारे में जानकारी मांगता है।[3]

जिससे यह भी सिद्ध होता है कि दरयावसिंह का बुन्देलखण्ड के अन्य वागी नेताओं से तादात्म्य बना हुआ था। इधर दरयावसिंह की बढ़ती आक्रामक गतिविधियों से त्रस्त झांसी का कमिश्नर पिंकने उनकी गिरफ्तारी के लिए ईनाम घोषित कर देता है उपर्युक्त पत्र के द्वारा वह दरयाव सिंह को पकड़ने वाले को तीन सौ रूपया माल गुजारी रहित नेकुनी (जमींदारी) देने की घोषणा करता है।[4] दरयावसिंह अपनी गतिविध्यिां निरन्त्र जारी रखते है लेकिन चालाक अंग्रेज कमिश्नर पिंकने की घोषणा ज्यादा दिनों तक वे असर नहीं रहती उसकी घोषणा के चार माह बाद ही स्थानीय गद्धारों की मदद से इस वीर सपूत को 7 फरवरी 1862 ई0 को अंग्रेजी फौज द्वारा देवरान में एक मुठभेड़ में शहीद होने की जानकारी मिलती

1. ललितपुर स्वर्ण जंयती स्मारिका 1998, सं. – संतोष शर्मा, पृष्ठ – 14
2. ललितपुर स्वर्ण जंयती स्मारिका 1998, सं. – संतोष शर्मा, पृष्ठ – 14
3. ललितपुर स्वर्ण जंयती स्मारिका 1998, सं. – संतोष शर्मा, पृष्ठ – 14
4. ललितपुर स्वर्ण जंयती स्मारिका 1998, सं. – संतोष शर्मा, पृष्ठ – 14

है।

10 फरवरी 1862 को ललितपुर का तत्कालीन डिप्टी कमिश्नर टी. ए. कार्वेट एक पत्र के द्वारा झांसी के कमिश्नर को सूचित करता कि 7 फरवरी 1862 को देवरान में एक मुटभेड़ में बागी दरयावसिंह आश्यर्चजनक ढंग से मारा गया।[1]

पत्र के द्वारा वह तत्कालीन विद्रोही नेता जाखलौन – देवगढ़ प्रक्षेत्र के वीर देवीसिंह और उनके पुत्र भुजबलसिंह पर भी वह ईनाम घोषित करने की मांग करता है।[2] चालाक अंग्रेज अफसर इन दोनों पर ईनाम की मांग क्यों करता ? क्योंकि दरयावसिंह के मारे जाने में वह ईनाम की घोषणा का असर महसूस कर चुका था।

ललितपुर का तत्कालीन पुलिस अधीक्षक ले. ए. एस. थेन भी 13 फरवरी 1862 ई0 को तत्कालीन डी.आई.जी. झांसी मेजर डब्लू. डेविस को पत्र लिखकर सूचित करता है[3] कि दरयावसिंह को उसके घर में मार गिराया गया। वह बताता है कि एक थानेदार के नेतृत्व में 25 सिपाहियों व जमादार के नेतृत्व में 36 नेटिव इन्फेन्ट्री के 20 जवानों ने संयुक्त रूप से दरयाव सिंह के घर पर धावा बोला और उनको मार गिराया। मड़ावरा के थानेदार ने सूचना भेजी है कि दरयाव सिंह के तीन साथी इस मुठभेड़ में धायल हुए। जबकि बाकी बचे साथी मौके से भाग गए।[4]

इस घटनाक्रम के सम्बन्ध में 24 फरवरी 1862ई0 को डिप्टी कमिश्नर ललितपुर द्वारा झांसी के कमिश्नर को लिखा पत्र महत्वपूर्ण है इस पत्र के द्वारा डिप्टी कमिश्नर बागी नेता दरयावसिंह पर घोषित ईनाम देवरान के किसी महीपसिंह को दिए जाने की संस्तुति करता है।[5] जिससे साफ जाहिर होता है कि देश की आजादी के इस पुरोधा को अंग्रेजी फौज के द्वारा मरवाए जाने में इसी महीपसिंह का हाथ था।

---

1. प्रेस लिस्ट ऑफ बुन्देलखण्ड रिकार्ड – 1857 – 1876, पृष्ठ – 51
2. ललितपुर स्वर्ण जंयती स्मारिका 1998, सं. – संतोष शर्मा, पृष्ठ – 14
3. ललितपुर स्वर्ण जंयती स्मारिका 1998, सं. – संतोष शर्मा, पृष्ठ – 14
4. प्रेस लिस्ट ऑफ बुन्देलखण्ड रिकार्ड – 1857 – 1876, पृष्ठ – 51
5. ललितपुर स्वर्ण जंयती स्मारिका 1998, सं. – संतोष शर्मा, पृष्ठ – 14

बाद में एक पत्र के द्वारा उसे घोषित ईनाम के तहत देवरान नीमखेरा, व खिरिया की जमींदारी प्रदान की जाती है।[1]

इस पत्र के द्वारा (24 फरवरी) 1862 ई0 को डिप्टी कमिश्नर ललितपुर बागी नेता दरयावसिंह के खिलाफ कार्यवाही में थानेदार रियाजुल हसन व जमादार दुर्गा प्रसाद सहित उनके साथियों के कार्यो की प्रसंशा करने की संस्तुति भी झांसी कमिश्नर को भेजता है।[1] इस प्रकार दरयावसिंह ने आजादी के लिए अपनी आहुति दे दी।

---

1. ललितपुर स्वर्ण जंयती स्मारिका 1998, सं. - संतोष शर्मा, पृष्ठ - 14
2. प्रेस लिस्ट ऑफ बुन्देलखण्ड रिकार्ड - 1857 - 1876, पृष्ठ - 51

दैलवारा के जसवंत सिंह

1857ई0 की क्रांति में दैलवारा के जसवंत सिंह ने भी अन्य क्रांतिकारियों की तरह अंग्रेजी प्रशासन की नाक में दम कर रखा था। जसवंत सिंह की गतिविधियों से उत्तेजित होकर अंग्रेजो ने जसवंत सिंह सहित दैलवारा के सभी बुन्देला ठाकुरों की सम्पत्ति जब्त कर ली थी।[1] जसवंत सिंह जनपद के अन्य क्रांतिकारियों की भाँति गुरिल्ला युद्ध में प्रवीण थे।[2] तथा अंग्रेजो को लगातार 1857ई0 से क्या देते आ रहे थे। वह अंग्रेजो को अपनी बुद्धि चातुर्य से बुरी तरह त्रस्त किये रहे जिसका उदाहरण उनकी मौत के बारे में अंग्रेजी शासन के यह दस्तावेज प्रस्तुत करते है। 26दिसम्बर 1863ई0 को ललितपुर के तत्कालीन पुलिस अधीक्षक थैन अपने पुलिस उपमहानिरीक्षक को सूचित करता है कि दैलवारा के जसवंत सिंह एक मुठभेड में मारा गया है। वह जसवंत सिंह पर घोषित ईनाम मुखबिर एवं पुलिस के सिपाहियों के देने तथा उसकी जब्त सम्पत्ति निराश्रित विधवा को दिये जाने की संस्तुति करता है।[3] जबकि सच्चाई यह हैं कि 4अप्रैल1864को जरावंत सिंह दमोह में पकड़ा गया था और दमोह के जिला प्रशासन ने जसवंत सिंह पर घोषित ईनाम की माँग की।[4] परन्तु 3फरवरी 1865ई0को उत्तर -पश्चिम प्रान्त के सचिव आर0सैम्पसन इलाहाबाद के कमिश्नर को सूचित करता है कि ईनाम बाँटा जा चुका है।[5] इससे विदित होता है कि 26 दिसम्बर 1863को ललितपुर पुलिस अधीक्षक थैन जसवंत सिंह के मारे जाने की जो जानकारी देते है वह जसवंत सिंह नही बल्कि उनका कोई आजादी का दीवाना साथी मारा गया। और उस मुठभेड में जसवंत सिंह अपने बुद्धि विवेक से भागने में सफल रहे।

इस प्रकार जसवंत सिंह एवं दैलवारा के साथी ठाकुर (बुन्देला) ललितपुर क्षेत्र में क्रांति का दीपक एक लम्बे समय तक प्रज्वलित रखे रहे। ऐसा नही है कि अकेले अंग्रेज सैनिको एवं सेना के अधिकारियों ने ललितपुर क्षेत्र के विद्रोहियो का दमन किया बल्कि भारी मात्रा में अंग्रेजो को भी नुकसान उठाना पढ़ा था सन 1857के विद्रोह में अंग्रेजो को अपने

---

1. ललितपुर के स्वर्ण जंयती स्मारिका 1998 पृ0 – 11
   स्वतंत्रता संग्राम में ललितपुर का योगदान (प्रस्तुति) अजय तिवारी (नीलू)
2. ललितपुर के स्वर्ण जंयती स्मारिका 1998 पृ0 – 11
3. प्रेस लिस्ट ऑफ बुन्देलखण्ड रिकार्ड – 1857 – 1876, पृष्ठ – 170
4. ललितपुर के स्वर्ण जंयती स्मारिका 1998 पृ0 – 11
5. प्रेस लिस्ट ऑफ बुन्देलखण्ड रिकार्ड – 1857 – 1876, पृष्ठ – 187

35 से 40 सैनिकों को खोना पड़ा। जो विद्रोहियों से मुठभेड़ करते मारे गये तथा उम्र भी करीब नवयुवकों की 20से 30बर्ष की रही। यह आज भी ललितपुर नगर में सदनशाह के पास ईसाई कब्रस्तान[1] में उस समय बनायी गयी समाधियों पर लगाये गये पत्थरो पर उत्कीर्ण लेखो को देखा जा सकता है। इसमें अधिकतर सैनिक 89 रेजिमेन्ट के थे। कुछ लेख जर्जर अवस्था में होने पर पढ़े नही जा सके कुछ पत्थरो पर उत्कीर्ण लेखों को मैंने पढ़ने का प्रयास किया जो सिपाही अंग्रेजो की ओर से लड़ते हुये मारे गये। अंग्रेज सैनिक जेम्स स्काट 30 बर्ष की उम्र में 23 अक्टूबर 1859ई0 को मारा गया।

जमेस्टेच 27 साल की अवस्था में 22 अगस्त 1859 को मारा गया। जेम्स रेइली 12सितम्बर 1859ई0 को मारा गया। एलेक्जेन्अर रोज 27 साल का सैनिक था जो 30 अक्टूबर 1859को मारा गया। विलियम प्लूवमन 29 बर्ष की अवस्था में 26 नवम्बर 1860ई0 में मारा गया तथा पैट्रिक फ्लानेरी 8दिसम्बर 1859 को युवा अवस्था में मारा गया। इस प्रकार कब्रिस्तान में बनी हुयी समाधियाँ पर लगे हुये शिलापट्टो पर उत्कीर्ण लेखो से आभास होता है कि लगभग 40 सैनिक[2] अंग्रेजो के मारे गये जिन्हें यही ससम्मान दफना दिया गया। जिनमें से अधिकतर सैनिक पहाड़ी प्रदेश की निवासी थे। कैप्टन विलियम डिप्टी कमिश्नर ऑफ ललितपुर (LU LL U T PORE) की भी मृत्यु 20 अगस्त 1865को यही होती है जिसे यहाँ दफनाया गया। पत्थरों पर उत्कीर्ण लेख यह बताते है कि 1857में शुरू हुआ विद्रोह ललितपुर क्षेत्र में एक लम्बे समय तक चलता रहा और उसे शान्त करने के लिये अंग्रेजो को भी अपने अनेक बहादुर सैनिको को खोना पड़ा था।

---

1. ईसाई कब्रस्तान – ललितपुर नगर में सदनशाह के पीछे स्थित है।
2. सैनिकों के नाम कब्रिस्तान में लगे शिलापट्टों से लिये गये हैं।
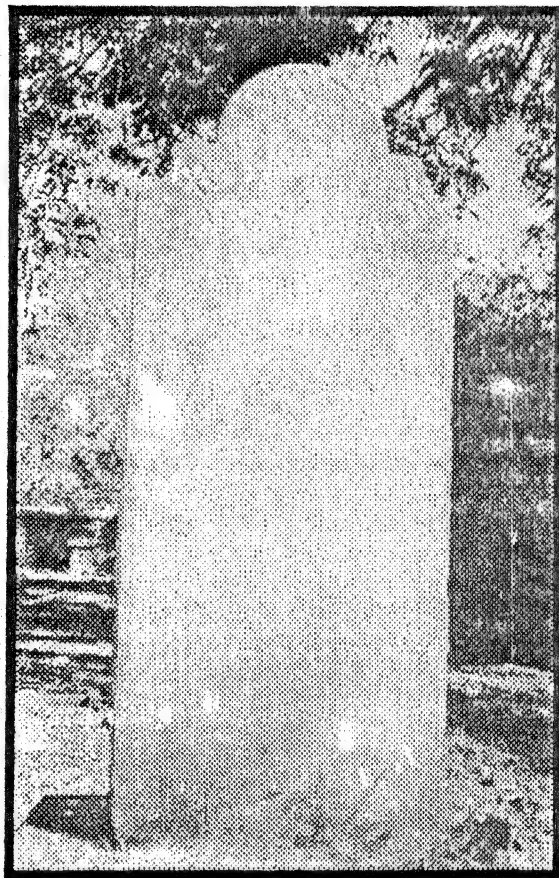
26 वर्षीय अंग्रेज सैनिक **Mitchell Walker**
का ईसाई कब्रिस्तान में समाधी स्थल। जो 1857 ई० की लडाई में मारे गये।
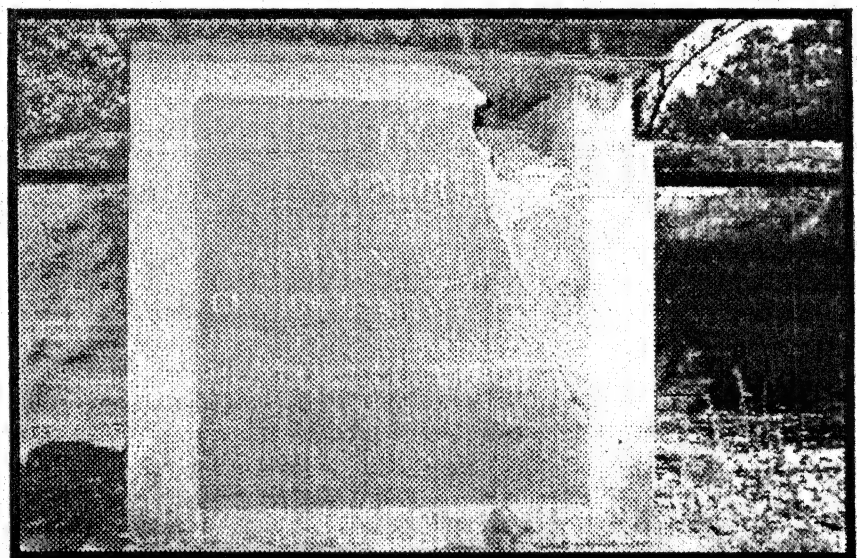
डिप्टी कमिश्नर आफ ललितपुर **Captan Willam**
की 1865 ई० में मृत्यु की पश्चात बनाया गया ईसाई कब्रिस्तान,
ललितपुर में उनका स्मारक।

जाखलौन - देवगढ प्रक्षेत्र के वीर देवीसिंह और उनके पुत्र भुजवल

पावन बुन्देली वसुंधरा के वीर देवीसिंह और उनके पुत्र भुजबल का ताल्लुक ललितपुर जिले से है श्रुतियों के आधार पर उनके जाखलौन – देवगढ़ प्रक्षेत्र से सम्बद्ध होने का उल्लेख मिलता है।[1] सन् 1857ई0 के विद्रोह में यह रणवांकुरे कूद पड़े थे और जब क्रांति के ज्वालाएं मन्दिम पड़ गई तब तथा उसके बाद वर्षों तक इस अंचल में विद्रोह को वुलंद किये रखा।[2] वीर देवी सिंह को जिन्दा या मुर्दा पकड़ने पर तत्कालीन अंग्रेजी शासन ने एक हजार रूपये का इनाम घोषित कर रखा था।[3]

वीर देवीसिंह की विद्रोही गतिविधियों की जानकारी झांसी के कमिश्नर एफ डब्लू. पिंकने द्वारा 25 अगस्त 1858 ई0 को मध्य भारत सरकार के एजेण्ट आर. हेमिलटन को लिखे पत्र से भी मिलती है।[4] जिसमें बताया जाता है कि नेता हम्मीरसिंह और देवीसिंह उस समय क्रमशः उमरा और समथर में छिपे हुए हैं उनकी गिरफ्तारी के आदेश दिये जाए। परन्तु वीर देवीसिंह को अंग्रेजों की योजना का पता लग जाता है और वह समथर से भाग निकलते हैं।[5]

इसके उपरान्त 28 अगस्त 1858ई0 को C.I.F. का कमाण्डर केप्टन एच. वर्नर अपने पत्र के द्वारा C.I.F. की दूसरी बिग्रेड के बिग्रेडियर लिड्ले को सूचित करता है कि वह देवीसिंह को पकड़ने में असफल रहा देवी सिंह के भागने में वहाँ के थानेदार का हाथ मालूम पड़ता है।[6] तब मध्य भारत सरकार का एजेण्ट आर. हेमिलटन अपने 31 अगस्त 1958 के पत्र के जरिए झांसी के कमिश्नर पिन्कने को निर्देश देता है कि वीर देवीसिंह को पकड़ने के लिए स्थानीय अधिकारियों को सूचित किए बिना ही कार्यवाही की

---

1. (1) ललितपुर स्वर्ण जंयती स्मारिका 1998, सं. – संतोष शर्मा, पृष्ठ – 14
   (2) दैनिक जागरण, झांसी, 25 अगस्त 1997, पृष्ठ – 4
2. दैनिक जागरण, झांसी, 25 अगस्त 1997, पृष्ठ – 4
3. दैनिक जागरण, झांसी, 25 अगस्त 1997, पृष्ठ – 4
4. (1) दैनिक जागरण, झांसी, 25 अगस्त 1997, पृष्ठ – 4
   (2) प्रेस लिस्ट ऑफ बुन्देलखण्ड रिकार्ड – 1857 – 1876, पृष्ठ – 34
5. दैनिक जागरण, झांसी, 25 अगस्त 1997, पृष्ठ – 4
6. (1) दैनिक जागरण, झांसी, 25 अगस्त 1997, पृष्ठ – 4
   (2) प्रेस लिस्ट ऑफ बुन्देलखण्ड रिकार्ड – 1857 – 1876, पृष्ठ – 35

जाए।[1]

वीर देवीसिंह की विद्रोही गतिविधियों से अंग्रेजी हुकूमत किस हद तक भयग्रस्त थी। इस बात का उल्लेख उत्तर पश्चिम प्रांत सरकार के सचिव जार्ज कपूर द्वारा 13 सितम्बर 1858 ई0 के पत्र में मिलता है जिसके द्वारा वह झांसी के कमिश्नर को आदेश देता है[2] कि पाली के राव हम्मीर सिंह को कुछ शर्तों के साथ क्षमा कर दिया जाए परन्तु देवीसिंह के प्रस्ताव को कतई नहीं माना जाए।[3]

वीर देवीसिंह वेखौफ अपने विद्रोही साथियों सहित विद्रोही गतिविधियों में संलग्न रहते है और अंग्रेजी फौजों से डटकर मुकाबला करते रहते हैं। इस बात का उल्लेख 14 सितम्बर 1859ई0 को चन्देरी मिलिट्री पुलिस के तत्कालीन कमाण्डर ले0 थेन द्वारा झांसी के कमाण्डिंग आफीसर मेजर डेविस को लिखे पत्र से मिलता है।[4] जिसके द्वारा वह बताता कि जाखलौन के विद्रोही नेता महीपसिंह को गिरफ्तार कर ललितपुर जेल में रखा गया है देवीसिंह और राव हम्मीरसिंह के अनेक साथी टूट गए तथा वह छोटे-छोटे ग्रुप में बट गये हैं।[5]

इसके उपरान्त 14 सितम्बर 1859ई0 को ही झांसी का कमिश्नर पिंक्ने पत्र लिखकर उत्तर पश्चिम प्रान्त सरकार के सचिव के पास देवीसिंह की विद्रोही गतिविधियों के बाबत आरोप पत्र भेजता तथा उन्हें कड़ी सजा व उनकी सम्पत्ति जब्त करने की सिफारिश करता है।[6]

---

1. (1) दैनिक जागरण, झांसी, 25 अगस्त 1997, पृष्ठ - 4
   (2) प्रेस लिस्ट ऑफ बुन्देलखण्ड रिकार्ड - 1857 - 1876, पृष्ठ - 35
2. (1) दैनिक जागरण, झांसी, 25 अगस्त 1997, पृष्ठ - 4
   (2) प्रेस लिस्ट ऑफ बुन्देलखण्ड रिकार्ड - 1857 - 1876, पृष्ठ - 37
3. (1) दैनिक जागरण, झांसी, 25 अगस्त 1997, पृष्ठ - 4
   (2) प्रेस लिस्ट ऑफ बुन्देलखण्ड रिकार्ड - 1857 - 1876, पृष्ठ - 37
4. (1) दैनिक जागरण, झांसी, 25 अगस्त 1997, पृष्ठ - 4
   (2) प्रेस लिस्ट ऑफ बुन्देलखण्ड रिकार्ड - 1857 - 1876, पृष्ठ - 76
5. (1) दैनिक जागरण, झांसी, 25 अगस्त 1997, पृष्ठ - 4
   (2) प्रेस लिस्ट ऑफ बुन्देलखण्ड रिकार्ड - 1857 - 1876, पृष्ठ - 76
6. (1) दैनिक जागरण, झांसी, 25 अगस्त 1997, पृष्ठ - 4
   (2) प्रेस लिस्ट ऑफ बुन्देलखण्ड रिकार्ड - 1857 - 1876, पृष्ठ - 76

3 जनवरी 1860 ई0 उत्तर पश्चिम प्रान्त सरकार का अवर सचिव जे.डी. सेण्डफोर्ड झांसी के कमिश्नर को पत्र लिखकर देवीसिंह की सम्पत्ति जब्त करने की मंजूरी दे देता है।[1] अंग्रेजों की इन कार्यवाहियों के बाबजूद देवसिंह, पाली के राव हम्मीरसिंह के साथ मिलकर परगाना बानपुर पर अपना आधिपत्य जमा लेते हैं। इस बात की तसदीक 6 अप्रैल 1860 ई0 को ललितपुर के डिप्टी कमिश्नर W.G.B. टेलर द्वारा झांसी के कमिश्नर को लिखे पत्र से होती है।[2] जिसमें कहा गया कि दल्लू सिपाही ने सूचना भेजी है कि बालाबेहट परगना को मुक्त करा लिया गया। विद्रोही नेता देवी सिंह व हम्मीर सिंह ने भागकर ग्वालियर स्टेट में शरण ली है अतः उन्हें पकड़ने ग्वालियर स्टेट से सहायता मांगी जाए। इसके उपरान्त 1 मई 1860 ई0 को ग्वालियर स्टेट का एजेण्ट झांसी के कमिश्नर को सूचित करता है कि देवीसिंह और हम्मीरसिंह की गिरफ्तारी के लिए दरबार के अपने मातहतों को आदेशित कर दिया।[3]

इसके पश्चात 6 जनवरी 1861 ई0 को पाली के राव हम्मीरसिंह तो साथियों सहित आत्मसमर्पण कर देते है और उन्हें गिरफ्तार कर मुरादाबाद जेल भेज दिया जाता[4] किन्तु देवीसिंह अपनी गतिविधियों के द्वारा अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह का झण्डा उठाए रहते हैं इधर देवीसिंह को पुत्र भुजबल भी अपने पिता के साथ आजादी की राह पर चल निकलता है।[5] 1863ई0 तक अंग्रेजी प्रशासन देवीसिंह को पकड़ने में असफल रहती है इस बात की जानकारी 29 अगस्त 1863 ई0 को ललितपुर के तत्कालीन पुलिस अधीक्षक [illegible] द्वारा डिप्टी कमिश्नर को लिखे पत्र से मिलती है।[6] जिसके द्वारा वह बताते हैं कि देवीसिंह के साथ मुठभेड़ असफल रही है। देवीसिंह के रिश्तेदारों ने मुखबिरों को गलत सूचना देने के लिए

---

1. (1) दैनिक जागरण, झांसी, 25 अगस्त 1997, पृष्ठ – 4
   (2) प्रेस लिस्ट ऑफ बुन्देलखण्ड रिकार्ड – 1857 – 1876, पृष्ठ – 95
2. (1) दैनिक जागरण, झांसी, 25 अगस्त 1997, पृष्ठ – 4
   (2) प्रेस लिस्ट ऑफ बुन्देलखण्ड रिकार्ड – 1857 – 1876, पृष्ठ – 103
3. (1) दैनिक जागरण, झांसी, 25 अगस्त 1997, पृष्ठ – 4
   (2) प्रेस लिस्ट ऑफ बुन्देलखण्ड रिकार्ड – 1857 – 1876, पृष्ठ – 105
4. (1) दैनिक जागरण, झांसी, 25 अगस्त 1997, पृष्ठ – 4
   (2) ललितपुर स्वर्ण जंयती स्मारिका 1998, सं. – संतोष शर्मा, पृष्ठ – 11
5. दैनिक जागरण, झांसी, 25 अगस्त 1997, पृष्ठ – 4
6. (1) दैनिक जागरण, झांसी, 25 अगस्त 1997, पृष्ठ – 4
   (2) प्रेस लिस्ट ऑफ बुन्देलखण्ड रिकार्ड – (1857–1876), पृष्ठ – [illegible]

मजबूर किया जिस कारण उन्होंने देवीसिंह को गलत दिशा में होने की जानकारी दे दी।

पुलिस अधीक्षक इस पत्र के द्वारा देवीसिंह के रिश्तेदारों के खिलाफ कार्यवाही की मांग करता है।[1]

इधर 19 सितम्बर 1863ई0 को देवीसिंह की विद्रोही गतिविधियों से त्रस्त सागर का डिप्टी कमिश्नर I.N.H. मैकमिलन भी ललितपुर के डिप्टी कमिश्नर टेलर को पत्र लिखकर देवीसिंह पर तीन हजार रुपये का इनाम घोषित कराने का अनुरोध करता है।[2]

साथ ही बागी नेता देवीसिंह का जांबाज पुत्र भुजबल सिंह भी अपनी विद्रोही गतिविधियों से अंग्रेजी शासन की नाक में दम कर देता है। 19 मई 1868 ई0 को उत्तर पश्चिम प्रान्त के आई0 जी0 का सहायक सी. ए. डॉट अपने पत्र के द्वारा उत्तर पश्चिम प्रान्त सरकार के सचिव आर0 सिम्पसन को पत्र लिखकर सूचित करता है[3] कि देवीसिंह के पुत्र भुजबल सिंह ने ललितपुर में भारी उत्पात मचा रखा है। उसे पकड़ने के लिए कड़े कदम उठाये जाएं तथा ललितपुर के पुलिस अधीक्षक को इस बाबत निर्देशित किया गया।[4]

इसके उपरांत पश्चात 19 जून 1868 ई0 को स्थानीय प्रशासन अपने पत्र के द्वारा उत्तर पश्चिम प्रान्त को सूचित करता है कि भुजबल सिंह की गिरफ्तारी के कड़े इंतजाम कर दिये गए।[5]

उनकी माँ और पुत्री को गिरफ्तार कर लिया गया। भुजबल सिंह के सम्बंधियों की भूमि जब्त कर ली गई तथा उसकी सहायता पहुँचने पर कड़े परिणामों की

---

1. (1) दैनिक जागरण, झांसी, 25 अगस्त 1997, पृष्ठ – 4
   (2) प्रेस लिस्ट ऑफ बुन्देलखण्ड रिकार्ड – 1857 – 1876, पृष्ठ – 166
2. (1) दैनिक जागरण, झांसी, 25 अगस्त 1997, पृष्ठ – 4
   (2) प्रेस लिस्ट ऑफ बुन्देलखण्ड रिकार्ड – 1857 – 1876, पृष्ठ – 167
3. (1) दैनिक जागरण, झांसी, 25 अगस्त 1997, पृष्ठ – 4
   (2) प्रेस लिस्ट ऑफ बुन्देलखण्ड रिकार्ड – 1857 – 1876, पृष्ठ – 194
4. (1) दैनिक जागरण, झांसी, 25 अगस्त 1997, पृष्ठ – 4
   (2) प्रेस लिस्ट ऑफ बुन्देलखण्ड रिकार्ड – 1857 – 1876, पृष्ठ – 1194–195
5. (1) दैनिक जागरण, झांसी, 25 अगस्त 1997, पृष्ठ – 4
   (2) प्रेस लिस्ट ऑफ बुन्देलखण्ड रिकार्ड – 1857 – 1876, पृष्ठ – [illegible]

चेतावनी दे दी गई है।[1]

अंग्रेजी शासन के दस्तावेज बताते है कि अपनी माँ और पुत्री की गिरफ्तारी के बाबजूद भुजबल सिंह आत्मसमर्पण नहीं करता और अंग्रेजो के खिलाफ अपना अभियान जारी रखता है।[2] इस बीच जेल में उसकी माँ की अंग्रेजों की यातनाओं के चलते दुःखद मृत्यु हो जाती है।[3] लेकिन जांबाज भुजबल सिंह इस पर भी अपने कर्त्तव्यपथ से विचलित नहीं होता। बाद में भुजबल सिंह को गिरफ्तार कर लिया जाता है।[4] और देवीसिंह की सारी संपत्ति को जब्त कर लिया जाता है। परन्तु इन वीर योद्धाओं ने ललितपुर क्षेत्र में एक लम्बे समय तक अंग्रेजी शासन को टक्कर दी थी जिससे अंग्रेजी शासन परेशान हो उठा था।

---

1. (1) दैनिक जागरण, झांसी, 25 अगस्त 1997, पृष्ठ - 4
   (2) प्रेस लिस्ट ऑफ बुन्देलखण्ड रिकार्ड - 1857 - 1876, पृष्ठ - 166
2. (1) दैनिक जागरण, झांसी, 25 अगस्त 1997, पृष्ठ - 4
   (2) प्रेस लिस्ट ऑफ बुन्देलखण्ड रिकार्ड - 1857 - 1876, पृष्ठ - [illegible]
3. (1) दैनिक जागरण, झांसी, 25 अगस्त 1997, पृष्ठ - 4
   (2) प्रेस लिस्ट ऑफ बुन्देलखण्ड रिकार्ड - 1857 - 187[illegible], [illegible] - [illegible]
4. ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका - 1998, सम्पादक - संतोष [illegible], [illegible] - [illegible]

(7) अन्य वर्गों द्वारा विद्रोह में भागीदारी

सन्1857ई0 की क्रांति में राजा मर्दनसिंह जसवंत सिंह एवं बुन्देला जमींदारों के साथ- साथ यहाँ की जनता भी उनके साथ थी और एक लम्बे समय तक यहाँ के जमींदार अंग्रेजो से लोहा लेते रहे क्योकि पहाड़ी इलाका होने से वह यहाँ शरण लेते थे तथा जनता उनकी आवश्यकताओं की अप्रत्यक्ष रूप से पूर्ति करती रहती थी। क्रांतिकारियों की गतिविधियों से परेशान होकर झाँसी का कमिश्नर 30मार्च 1860ई0 को एक आदेश द्वारा सेना का मुख्यालय चन्देरी से हटाकर मड़ावरा में स्थापित कराया और निगरानी के लिये अनेक चौकिया स्थापित की।[1]

इस सम्बन्ध में 17 जुलाई 1859ई0को कैप्टन F.W. पिंकने कमिश्नर झाँसी द्वारा

मध्य भारत के सहायक गर्वनर जनरल आर0 हेमिल्टन को लिखा गया पत्र महत्वपूर्ण है।[2] इस पत्र के द्वारा झाँसी कमिश्नर द्वारा यह सूचना दी गई थी कि आठ हजार विद्रोही 8 गनस के साथ जन्नू, बजुआ, एवं छत्तरसिंह के नेतृत्व में मऊरानीपुर में, एवं दो हजार विद्रोही बरजोर सिंह के नेतृत्व में मऊ में, तथा हजारों विद्रोही दौलतसिंह के नेतृत्व में कोंच में तैयार है यह सब समन्वित होकर ललितपुर में एक साथ आक्रमण करने की फिराक में है।[3] यह पत्र प्रदर्शित करता है कि बुन्देलखण्ड भर के क्रांतिकारी समन्वित होकर ललितपुर को अंग्रेजो के कुशासन से मुक्त करा लेना चाहते थे एवं स्थानीय विद्रोही गुटों का उनके पास तादात्म्य था अन्यथा अपरिचित बीहड़ो में वह घुसने का साहस कदापि न दिखा पाते। 27 मार्च 1860ई0 को ललितपुर के तत्कालीन डिप्टी कमिश्नर टेलर द्वारा कमिश्नर झाँसी को लिखे पत्र में माँग करता हैं कि कि दौलत सिंह के विद्रोही गुट ने इस क्षेत्र में पिछले सप्ताह जो मारकाट मचाई उसकी जाँच कराई जाए। साथ ही वह यह भी सूचना देता

1- (1) दैनिक जागरण झाँसी 13 अगस्त1997 पृ0 4
(2) ललितपुर स्वर्ण जयन्ती स्मारिका 1998 पृ0 10
(3) प्रेस लिस्ट ऑफ बुन्देलखण्ड रिकार्ड पृ0102

2- (1) दैनिक जागरण झाँसी 13 अगस्त 1997 पृ0 4
(2) ललितपुर स्वर्ण जयन्ती स्मारिका 1998 पृ0 10
(3) प्रेस लिस्ट ऑफ बुन्देलखण्ड रिकार्ड पृ0102

3- दैनिक जागरण झाँसी 13 अगस्त 1997 पृ0 4

है कि उसने दौलतसिंह के विरूद्ध कठोर कदम उठाने के लिये परगना मड़ावरा एवं बालाबेहट के जंगल प्रक्षेत्र का भ्रमण प्रस्तावित किया है।[1] इस पत्र से साफ जाहिर है कि अंततः दौलतसिंह के विद्रोही गुट ने ललितपुर पर धावा बोल दिया था तथा अंग्रेजो को करारी शिकस्त देकर वह बागियों सहित लखनजर और पापरो कि वियाबान जंगल में जाकर छिप गये। इसके उपरान्त मार्च 1860 ई0 को ललितपुर का डिप्टी कमिश्नर टेलर झांसी के कमिश्नर पिंकने को पत्र लिखकर पुनः सूचित करता है कि ग्राम लखंजर में घसान नदी के घाटों पर 30 पुलिस वालों को चौकसी के लिए तैनात कर दिया गया है ताकि विद्रोही गुट का घसान पर से आवागमन निरूद्ध किया जा सके।[2]

डिप्टी कमिश्नर टेलर ने पत्र द्वारा यह भी सूचना भेजी कि 20 पुलिस के जवानों को ग्राम वक्सपुर के जंगली इलाकों में भी तैनात कर दिया गया ताकि दौलत सिंह के विद्रोही गुट को आगे बढ़ने से रोका जा सके।

इस प्रकार दौलत सिंह की ललितपुर में सक्रिय गतिविधियों की बजह से अंग्रेजी प्रशासन हिल गया।

अतः 30 मार्च 1860 ई0 को झांसी का कमिश्नर एफ. डब्लू. पिंकने एक पत्र के द्वारा डिप्टी कमिश्नर चंदेरी को आदेश देता है कि दौलत सिंह के विद्रोही गुट पर काबू पाने के लिए मिलिट्री पुलिस का मुख्यालय तत्काल चंदेरी से हटाकर महरौनी अथवा मड़ावरा खास में स्थापित कर दिया जाए।[3] कमिश्नर पिंकने साथ में यह भी आदेश देता कि मड़ावरा, महरौनी प्रक्षेत्र के प्रत्येक गाँव के लम्बरदार एवं कलवार को सूचित कर दिया जाए कि वह विद्रोही गुट के प्रतिदिन की गतिविधियों के बारे में स्थानीय अधिकारियों व मिलेट्री पुलिस को सूचित करते रहे।[4] 5 अप्रैल 1860 ई0 को डिप्टी कमिश्नर टेलर झांसी के

---

1. (1) प्रेस लिस्ट ऑफ बुन्देलखण्ड रिपोर्ट पृ0101
   (2) ललितपुर स्वर्ण जयन्ती स्मारिका 1998 पृ0 14
2. (1) दैनिक जागरण झाँसी 13 अगस्त 1997 पृ0 4
   (2) प्रेस लिस्ट ऑफ बुन्देलखण्ड रिपोर्ट पृ0102
3. (1) दैनिक जागरण झाँसी 13 अगस्त 1997 पृ0 4
   (2) प्रेस लिस्ट ऑफ बुन्देलखण्ड रिपोर्ट पृ0102
4. (1) दैनिक जागरण झाँसी 13 अगस्त 1997 पृ0 4
   (2) प्रेस लिस्ट ऑफ बुन्देलखण्ड रिपोर्ट पृ0102

कमिश्नर को सूचित करता है कि दौलत सिंह की गिरफ्तारी के लिए मड़ावरा में सेना के कमाण्डिंग ऑफीसर थेन से मुलाकात कर अभियान की व्यापक रणनीति तय कर ली है।[1] 12 अप्रैल 1860 ई0 को डिप्टी कमिश्नर टेलर पुनः एक पत्र झांसी के कमिश्नर को लिखता है इस पत्र के द्वारा वह मड़ावरा, महरौनी के अनेक संवेदनशील स्थानों पर निरीक्षण चौकिया स्थापित करने की स्वीकृति मांगता है।[2]

इसी पत्र के तारतम्य में 17 अप्रैल 1860 को झांसी कमिश्नर पिंकन परगना मड़ावरा के मदनपुर भीकमपुर व रमगढ़ा आदि स्थानों पर निरीक्षण-चाकिया स्थापित करने की अनुमति देता है। साथ ही वह ललितपुर के डिप्टी कमिश्नर को यह निर्देश भेजता है कि इन इलाकों में 50 जवानों की एक इन्फेन्ट्री भी तैनात कर दी जाए।[3]

अंग्रेजी प्रशासन के इन पत्रों से यह विदित होता है कि 1857 की क्रांति में दौलतसिंह ने देश रक्षा के खातिर अपनी सुख सुविधाओं को त्याग दिया और अंग्रेजों के खिलाफ मोर्चा छेड़ा। दौलतसिंह का सम्बन्ध अवश्य ही ललितपुर से रहा होगा तभी तो यहाँ की जनता ने उन्हें एक लम्बे समय तक सहयोग दिया दौलतसिंह का आगे क्या होता इसका विवरण अंग्रेजी प्रशासन के रिकार्ड में अप्राप्त है।

---

1. (1) दैनिक जागरण झाँसी 13 अगस्त 1997 पृ0 4
   (2) प्रेस लिस्ट ऑफ बुन्देलखण्ड रिपोर्ट पृ0102
2. (1) दैनिक जागरण झाँसी 13 अगस्त 1997 पृ0 4
   (2) प्रेस लिस्ट ऑफ बुन्देलखण्ड रिपोर्ट पृ0103
3. (1) दैनिक जागरण झाँसी 13 अगस्त 1997 पृ0 4
   (2) प्रेस लिस्ट ऑफ बुन्देलखण्ड रिपोर्ट पृ0104

पं. झुनारे रावत की भागीदारी

पं. झुनारे रावत का परिवार ललितपुर में रहकर व्यापार करता था।[1] सन् 1857 के स्वतंत्रता आन्दोलन में पं. झुनारे रावत अपने परिवार को छोड़ कूद पड़े थे। सन् 1857 में अंग्रेजों की सेना जॉन वेवेस्टस के सेनापतित्व में युद्ध कर रही थी।[2] और चन्देरी राज्य का दो तिहाई राज्य अपने अधिकार में कर लिया था। इस समय अंग्रेजी सेना ललितपुर को छावनी बनाये हुयी थी। अंग्रेजी सेना की भूख मिटाने के लिए गायों की हत्या की जाने लगी।[3] यह देखकर पं. झुनारे रावत का मन द्रवित हो उठा और अंग्रेजों के प्रति नफरत पैदा हो गयीं।

पं. झुनारे रावत ने अंग्रेजों से बदला लेने की ठानी। उन्होंने ग्राम गौना में राजा मर्दनसिंह तथा शाहगढ़ के राजा बखतवली के मध्य कटुता को समाप्त कराकर मित्रता एवं भाईचारे के सम्बन्ध स्थापित कराये। इस दौरान उन्होंने ललितपुर आकर सैनिकों को इकट्ठा कर संगठित किया।[4] तभी अंग्रेजी सेना ने अमझरा घाटी की ओर से ललितपुर की ओर प्रस्थान किया।[5] सौंकली के निकट पं. झुराने रावत ने लगभग 200 सैनिकों के साथ अंग्रेजी सेना पर छापामार हमला बोल दिया।[6] अचानक हमला देखकर अंग्रेज सैनिक हड़बडा गये और जब तक अपने हथियार सम्भालते तब तक पं. झुनारे रावत एवं उनके सैनिकों ने अंग्रेजी सेना को भारी नुकसान कर अनेकों सैनिकों को मौत के घाट सुला दिया।[7] और अपने आक्रोश का बदला लिया।

---

1. ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका – 1998 सं. – संतोष शर्मा
   शीर्षक–1857 में शहीद हुये पं. झुनारे रावत – बृजमोहन रिछारिया, पत्रकार, पृष्ठ–15
2. ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका – 1998 सं. – संतोष शर्मा
   शीर्षक–1857 में शहीद हुये पं. झुनारे रावत – बृजमोहन रिछारिया, पत्रकार, पृष्ठ–15
3. ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका – 1998 सं. – संतोष शर्मा
   शीर्षक–1857 में शहीद हुये पं. झुनारे रावत – बृजमोहन रिछारिया, पत्रकार, पृष्ठ–15
4. ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका – 1998 सं. – संतोष शर्मा
   शीर्षक–1857 में शहीद हुये पं. झुनारे रावत – बृजमोहन रिछारिया, पत्रकार, पृष्ठ–15
5. ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका – 1998 सं. – संतोष शर्मा
   शीर्षक–1857 में शहीद हुये पं. झुनारे रावत – बृजमोहन रिछारिया, पत्रकार, पृष्ठ–15
6. ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका – 1998 सं. – संतोष शर्मा
   शीर्षक–1857 में शहीद हुये पं. झुनारे रावत – बृजमोहन रिछारिया, पत्रकार, पृष्ठ–15
7. ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका – 1998 सं. – संतोष शर्मा, पृष्ठ – 15
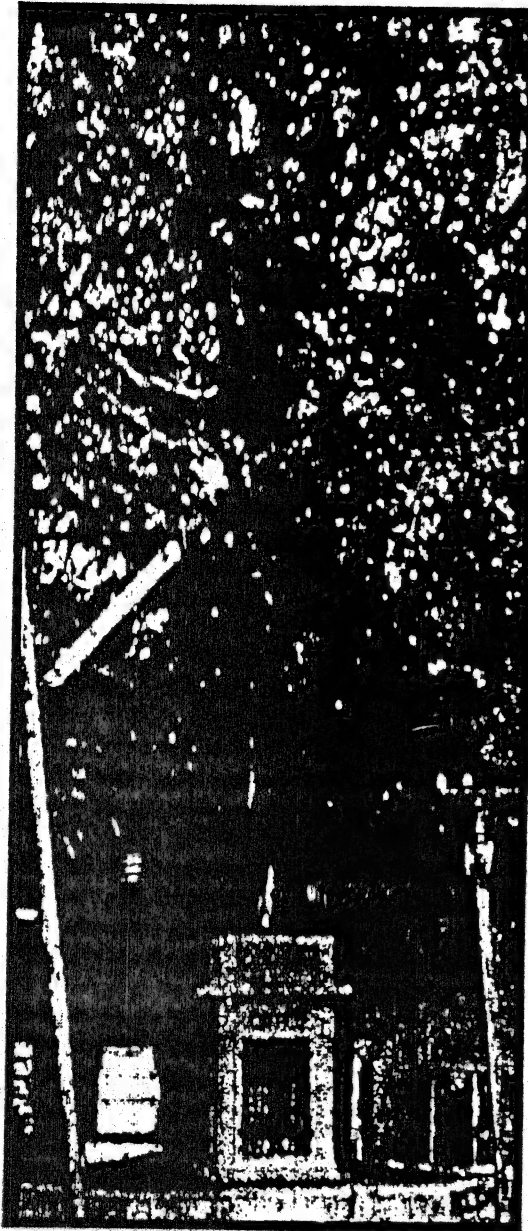
1857 के स्वतंत्रता संग्राम में ललितपुर नगर
(सुभाषपुरा मुहल्ला) में स्थित पीपल का वृक्ष
जिस पर पं. झुनारे रावत को फांसी की सजा दी गयी थी।
एवं पेड के नीचे ही उनका स्मारक।

भारी मारकाट कर झुनारे रावत के सैनिक चारों ओर भाग गये परन्तु झुनारे रावत का घोड़ा गिर पड़ा। पीछा कर रही अंग्रेजी सेना ने उन्हें चारों तरफ से घेरकर बन्दी बना लिया।[1] झुनारे रावत को बांधकर अंग्रेजी सेना ललितपुर स्थित वर्तमान सुभाषपुरा, मुहल्ला में उनके पैतृक मकान पर ले आयी और उसी के समाने ही पीपल के पेड़ पर रस्सी का फंदा गले में डालकर उन्हें फांसी दे दी।[2] अंग्रेजों का आतंक उस समय लोगों के मन में इतना घर कर गया था कि उनकी लाश कई दिनों तक पेड़ पर लटकती रही। अंग्रेज लोग खुलेआम धमकी दे गये थे कि जिसने भी लाश को उतारा, उसका भी यही हस्र होगा यह जनचर्या आज भी लोगों द्वारा सुनी जाती है।[3] ललितपुर नगर में घंटाघर के बगल में सुभाषपुरा मुहल्ला स्थित उनके पैतृक निवास के सामने पीपल का पेड़ आज भी अंग्रेजों की क्रूर दास्तान कह रहा है। पेड़ के नीचे ही उनका स्मारक है अतः पं. झुनारे रावत 1857 ई0 में आजादी के लिए शहीद हो गये और आने वाले समय में वह लोगों की प्रेरणा का स्रोत बने।

वस्तुतः 1857 के विद्रोह में ललितपुर क्षेत्र की जनता के प्रत्येक वर्ग ने राजा मर्दनसिंह एवं बुन्देला जमीदारों की सेना में भर्ती होकर अपनी भागीदारी दी तथा जनसमूह द्वारा विद्रोही गुटों को एक लम्बे समय तक रसद आदि की पूर्ति की जिससे वह विद्रोह को 1870 ई0 तक बनाये रखने में सफल रहे। जनसमूह के बिना सहयोग के यह सम्भव नही था।

---

1. ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका – 1998 सं. – संतोष शर्मा
   शीर्षक : 1857 में शहीद हुये पं. झुनारे रावत – बृजमोहन रिछारिया, पत्रकार
2. (1) ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका – 1998 सं. – संतोष शर्मा
   (2) हिन्दी साप्ताहिक 'मध्यदेश' – संस्थापित – डॉ. पं0 विश्वनाथ शर्मा,
3. (1) व्यक्तिगत साक्षात्कार – संतोष शर्मा 'पत्रकार' सुभाषपुरा, ललितपुर
   (2) हिन्दी साप्ताहिक 'मध्यदेश' – संस्थापित – डॉ. पं0 विश्वनाथ शर्मा,

1857 के महान स्वातंत्रता समर के अमर सेनानियों को जिन्दा या मुर्दा पकड़ने पर अंग्रेजी प्रशासन द्वारा घोषित किये गये इनामों की सूची निम्नानुसार है।[1]

क्र. सं.	क्रांतिकारियों के नाम	उस समय घोषित इनाम की राशि
1.	झांसी की रानी लक्ष्मीबाई	20,000
2.	राजा बानपुर मर्दनसिंह	10,000
3.	राजा शाहगढ़ बखतवली सिंह	20,000
4.	दल्हला मदनपुर	2,000
5.	दौलत सिंह (सागर जिला)	1,000
6.	लक्ष्मण राव पंडित (झांसी इलाका)	1,000
7.	देवी सिंह (झांसी इलाका)	1,000
8.	जवाहर सिंह (झांसी इलाका)	1,000
9.	छत्तर सिंह (झांसी इलाका)	1,000
10.	गम्भीर सिंह (झांसी इलाका)	1,000
11.	जगजीत सिंह (झांसी इलाका)	1,000
12.	गंगाधर (झांसी इलाका)	1,000
13.	मन्साराम (झांसी इलाका)	1,000
14.	कासीनाथ (झांसी इलाका)	1,000
15.	लाला दुलारे लालकायथ (बानपुर)	1,000
16.	रामा बुन्देला (बानपुर)	1,000
17.	महीपसिंह बुन्देला (जाखलौन)	1,000
18.	राव बखतवलि बुन्देला (नारहट)	1,000
19.	उमराव सिंह बुन्देला (जाखलौन)	500
20.	कुं. लक्ष्मण सिंह बुन्देला (नारहट)	500
21.	पंचम सिंह बुन्देला गोरो (खिमलासा)	500
22.	गणेश जू बुन्देला (नारहट)	500

1. बुन्देली माटी के सपूत, हीरासिंह ठाकुर, पृष्ठ - 149 एवं 150

(8) ब्रिटिश दमनात्मक तरीके एवं सन् १८५८ के पश्चात जनपद का आर्थिक शोषण

1857 ई0 के विद्रोह के दमन के लिए सरकार ने जो तरीके अपनाये वह अत्यन्त बर्बर और अमानुषिक थे। विद्रोह के दमन के लिए अंग्रेजी सेना भयंकर लूटपाट करती थी। ऐसा उसने ललितपुर में भी किया। ऐसा प्रतीत होता है कि तैमूर लंग और चंगेज खॉं जैस बर्बर आक्रमणकारियों ने जो अमानुषिक तरीके अपनाये थे वे सभी 1857 ई0 में अपनाये गये ब्रिटिश तरीकों की तुलना में कम थे।[1] अंग्रेजी सेना ने आधुनिक अस्त्र- शस्त्रों से लैस होकर विद्रोहो के खिलाफ मोर्चा लिया अंग्रेज विद्रोही को पकड़ कर तुरन्त फांसी पर चढ़ा देते थे जैसा उन्होंने पं. झुनारे रावत के साथ किया।

अंग्रेज राजे महाराजाओं को तुरन्त फॉसी पर नहीं चढ़ाते थे अन्यथा जनता और विद्रोह पर उतारू हो सकती थी इसलिए वह उनको दूसरे प्रान्तों के जेलों में भेज देते थे जिससे विद्रोह नेतृत्व हीन हो जाता था ऐसा उन्होंने राजा मर्दनसिंह, बखतवली को लाहौर जेल भेजकर किया।

अंग्रेजों ने विद्रोही नेताओं पर इनाम घोषित कर भी उनके दमन का रास्ता अपनाया इससे प्रलोभी देश द्रोही व्यक्ति लालच में आकर विद्रोही नेताओं को पकड़वा देते थे इस तरीके से देवरान के दरयाव सिंह मारे गये थे। अंग्रेजों ने जिस प्रकार नवाबों के महलों को लूटा, उसे देखकर 'टाइम्स' का संवाददाता रसले भी हैरान रह गया था। उसने लिखा कि दिल्ली में दंड तथा फॉँसी देने का कार्य महीनों तक चलता रहा। कई गॉँव जला दिए गये। बहुत से अंग्रेज प्राधिकारियों ने सख्ती की नीति अपनाने का परामर्श दिया।[2] इसी प्रकार ललितपुर क्षेत्र में भी अंग्रेजों ने दमन के यही तरीके अपनाये।

विद्रोही नेता बहादुरी से अनियोजित युद्ध लड़ते थे जबकि अंग्रेज उनके खिलाफ एक शक्तिशाली नियोजित युद्ध की योजना को क्रियान्वित करते थे उनके पास जान लारेंस, आउटम, हेवलाक, नील, कैपबेल और ह्यूरोज जैसे सैनिक ख्याति प्राप्त ब्रिटिश कमानदार

---

1. दि रिवोल्ट आफ 1857 इन सेन्ट्रल इण्डिया एण्ड मालवा, 1966 पृष्ठ - 188
2. आधुनिक भारत का इतिहास - रामलखन शुक्ल, पृष्ठ - 136
   हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय, ई. ए. /6, मॉडल टाउन, दिल्ली

थे।[1] ह्यूरोज जैसे ख्याति प्राप्त व्यक्ति के नेतृत्व में ललितपुर क्षेत्र के विद्रोह का दमन सौपा गया था। 1857 के क्रान्तिवीर अजीमुल्ला ने शहीद राष्ट्र गीत की रचना की[2] जो 1857 के क्रांतिकारी सिपाहियों का झण्डा गीत बना –

हम है इसके मालिक हिन्दुस्तान हमारा।
पाक वतन है कौम का, जन्नत से भी प्यारा।।
ये है हमारी मिल्कियत, हिन्दुस्तान हमारा।
इसकी रूहानियत से रोशन है जन सारा।।
कितना कदीम, कितना नईम, सब दुनियाँ से न्यारा।
करती है जरखेज जिसे गंगो – जमुन की धारा।।
ऊपर बर्फीला पर्वत पहरेदार हमारा।
नीचे साहिल पर बजता सागर का नक्कारा।।
इसकी खानें उगल रहीं है सोना हीरा पारा।
इसकी शानों शौकत का दुनियाँ में जयकारा।।
आया फिरंगी दूर से ऐसा मंतर मारा।
लूटा दोनों हाथ से प्यारा वतन हमारा।।
आज शहीदों ने है तुमको अहले वतन ललकारा।
तोड़ो गुलामी की जंजीरें, बरसाओ अंगारा।।
हिन्दू मुसलमों सिख, हमारा भाई – भाई प्यारा।
यह है आजादी का झण्डा इसे सलाम हमारा।।[3]

1857 के सिपाहियों का यह गीत तत्कालीन क्रांतिकारी अखवार "पयामे – आजादी" में छपा था।[4] जिसकी एक प्रति ब्रिटिश म्यूजियम में सुरक्षित रखी गयी है परन्तु हिन्दुस्तान में इसकी सभी प्रतियाँ ढूँढ – ढूँढकर न केवल नष्ट कर दी गयी थी बल्कि जिसके पास इसकी कोई प्रति मिलती थी तो बिना किसी प्रकार का मुकदमा चलाये या तो उसे

---

1. आधुनिक भारत – विपिन चन्द, पृष्ठ – 106, N.C.E.R.T. अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली
2. उत्तर प्रदेश जब्तशुदा साहित्य विशेषंका अगस्त 1997, लेख – क्रांतिकारी और साहित्य, पृष्ठ– 3 श्रीमती यमुना देवी माहौर, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश लखनऊ से प्रकाशित,
3. उत्तर प्रदेश जब्तशुदा साहित्य विशेषंका अगस्त 1997, लेख – क्रांतिकारी और साहित्य, पृष्ठ– 4
4. उत्तर प्रदेश जब्तशुदा साहित्य विशेषंका अगस्त 1997, लेख – क्रांतिकारी और साहित्य, पृष्ठ– 4

फाँसी दे दी जाती थी या गोली मार दी जाती थी।

इस प्रकार अपने क्रूर तरीकों से 1857 के विद्रोह को शान्त कर दिया परन्तु जनता के अन्दर पनप रही भावना को वह शान्त नहीं कर सके जो 20वी. शताब्दी के प्रारम्भ में तीव्र बेग से प्रस्फुटित हुयी।

अंग्रेजी शासन काल में पूरे देश का आर्थिक शोषण हुआ। 1857 ई0 के पश्चात यह अधिक तीव्र हो गया। धीरे – धीरे ईस्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा इंग्लैण्ड में हो रहे उत्पादन तथा व्यापारिक वस्तुओं को इस क्षेत्र में प्रवेश दिलाया गया अतः शीघ्र ही विदेशी कपड़े, लोहे तथा अन्य जरूरत की लगभग सभी चीजें मानचेस्टर, सीबरपूल, लंकाशायर, आदि औद्योगिक नगरों से लाकर पूरे देश की ही भाँति बुन्देलखण्ड सहित ललितपुर में भी इसकी बिक्री प्रारम्भ की गयी। विदेशी बस्तुओं की बिक्री को प्रसिद्ध बनाने के लिए इस बात की आवश्यकता महसूस की गयी कि यहाँ के उद्योग तथा धन्धों का विनाश किया जाए। और यदि इस क्षेत्र का व्यापार चौपट हो जायेगा तो ऐसी स्थिति में लोगों को अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए इंग्लैण्ड के उद्योग पर आधारित होना पड़ेगा यह नीति सम्पूर्ण भारत सहित ललितपुर क्षेत्र में भी अपनायी गयी।

सरकार की इस नीति के परिणाम स्वरूप लिटन जैसे गवर्नर जनरल के समय इंग्लैण्ड से भारत आने वाली बस्तुओं पर से कर या तो बिल्कुल नाममात्र कर दिया गया अथवा बिलकुल ही समाप्त कर दिया गया। साथ ही विदेशी व्यापार को प्रोत्साहन देने के लिए इस क्षेत्र में हो रहे औद्योगिक उत्पादनों तथा कुटीर उद्योग धन्धों को नष्ट किया गया।

ललितपुर में चन्देरी में अच्छी प्रकार की साड़ी जैसा कुटीर उद्योग था परन्तु 1865 ई. में फैले हैजा में अधिकांश जुलाहे मर गये।[1] और इसे कभी भी प्रोत्साहन नहीं दिया गया और इस उद्योग का पतन होना आरम्भ हो गया।

यहाँ के कपास उद्योग का भी पतन हुआ। निम्न कोटि की भूमि के कारण इस फसल का उत्पादन अधिक नही था। 1874ई0 में एटकिन्शन ने लिखा था – "ललितपुर में कपास का जितना उत्पादन होता है वह अत्यन्त कम है। इससे केवल स्थानीय

---

1. बुन्देलखण्ड गजेटियर – ई. टी. एटकिन्शन, पृष्ठ – 348

आवश्यकताओं की ही पूर्ति होती है जिससे आस - पास के जिलों से भी ललितपुर में कपास मंगानी पड़ती है।"[1] ऐसा प्रतीत होता है कि इसका उत्पादन बढ़ाने के लिए कोई प्रयत्न सरकार द्वारा नहीं किये गये जिससे किसान इसको छोड़ने के लिए मजबूर हुआ। 1864ई0 में झांसी जिले में लगभग 9, 266 एकड़् में तिली का उत्पादन हुआ।[2] उस समय ललितपुर सब डिवीजन में तिलहन झांसी से अधिक प्रसिद्ध था। 1869ई0 के बन्दोबस्त के समय यह पता चला कि वहॉं की 10.7 प्रतिशत खेती योग्य जमीन में तिली वोई गयी थी।[3]

खरूआ वस्त्रों का उद्योग जनपद के कई भागों में विकसित था इसकी रंगाई भी होती थी यहॉं सूती, ऊनी कालीन तथा कम्बल उद्योग भी विकसित थे परन्तु अंग्रेजी शासन की नीति के कारण नष्ट हो गये।[4] मड़ावरा व मदनपुर में पीतल व तॉंबे के वर्तन बनाने का कार्य होता था जिसे प्रोत्साहन नहीं दिया गया। एटकिन्सन ने 1872 ई. में लिखा था कि यहॉं व्यापारिक कार्यो से जुड़े लोगों के साथ - साथ आयत - निर्यात तथा ऋण लेन-देन का काम करने वाले भी निवास करते हैं यहॉं कुछ ऐसे जैन व्यापारी थे जो गल्ला, तम्बाकू तथा ऋण का लेन - देन का व्यापार करते थे।[5]

इस प्रकार ललितपुर क्षेत्र के उद्योग धन्धों को नष्ट करके अंग्रेजी शासकों ने यहॉं के किसान, मजदूर व आम जनता का आर्थिक शोषण किया ओर 1857 ई0 के विद्रोह जैसी पुनः पुनरावृत्ति न हो इसलिए इस क्षेत्र को पिछड़ा बनाये रखा गया।

------------------------o O o------------------------

1. बुन्देलखण्ड गजेटियर - ई. टी. एटकिन्शन, पृष्ठ - 348
2. बुन्देलखण्ड गजेटियर - ई. टी. एटकिन्शन, पृष्ठ - 316
3. बुन्देलखण्ड गजेटियर - ई. टी. एटकिन्शन, पृष्ठ - 250-251
4. ललितपुर जिले का सामाजिक आर्थिक इतिहास (1866-1947) - पृष्ठ-116,126,177 महन्द्र मोहन अवस्थी
5. बुन्देलखण्ड गजेटियर - ई. टी. एटकिन्शन, पृष्ठ - 348

अध्याय - चतुर्थ

राष्ट्रीय आन्दोलन में ललितपुर जनपद की भागीदारी
(सन् 1858 से सन् 1905 तक)

(1) ब्रिटिश दमनात्मक तरीकें

(2) बुन्देलखण्ड में एक विश्वसनीय प्रजा के निर्माण का प्रयास तथा ईसाई मिशनरियों को प्रोत्साहन।

(3) जनमानस के मस्तिष्क में राष्ट्रीयता की भावना का परिवर्द्धन।

(4) कॉंग्रेस की स्थापना तथा उसके कार्यक्रमों का जनपद पर अनुकूल प्रभाव।

सभी अधिकारियों द्वारा निर्धारित की गई राजस्व की दरें अत्यन्त कठोर थी। ऐसा प्रतीत होता है कि ये अधिकारी इस क्षेत्र से अधिक से अधिक राजस्व प्राप्त कर अपने उच्च अधिकारियों को प्रसन्न करना चाहते थे जिससे किसान वर्ग मजबूर होकर ऋण के लिए महाजनों के पास गये। यहाँ तक कि बुन्देला जमींदार भी आर्थिक मन्दी के समय ऋणग्रस्त हो गये और उन्होंने भी बहुत सारी भूमि जैनी और मार वाड़ियों को गिरबी रख दी। इस क्षेत्र की ऋण दशा का ध्यान लेफ्टीनेन्ट गवर्नर बिलियम मयूर ने आकृष्ट किया।[1]

सरकार को मजबूर होकर बुन्देलखण्ड भूमि हस्तान्तरण कानून 1882ई0[2] एवं भूमि हस्तान्तरण कानून 1903ई0 पास करने पड़े थे। साथ ही इस क्षेत्र में पड़े 1868-69 ई0 तथा 1895-96 ई0 के अकालों ने जनता की रीढ़ तोढ़ दी परन्तु अंग्रेजों ने दमन का ही इसे एक सहारा बनाया और जनता को कोई सहायता नहीं पहुँचाई।

ब्रिटिश सरकार के दमन के यह नये तरीके थे जिन्होंने यहाँ की जनता को सामाजिक व आर्थिक रूप से पिछड़ा बनाये रखा। ऐसा जानबूझकर किया गया क्योंकि यहाँ के लोगों ने 1857ई0 के विद्रोह में अंग्रेजो का डटकर विरोध किया था।

---

1. झांसी सेटिलमेन्ट रिपोर्ट - 1892, पृष्ठ - 55, इम्पे तथा मेस्टन
2. झांसी ब्रिटिश रूल - डॉ. एस. पी. पाठक, पृष्ठ - 88-89
3. झांसी गजेटियर - 1909 - ड्रेक ब्राक मेंन, डी. एल., पृष्ठ - 154

(२) बुन्देलखण्ड में एक विश्वसनीय प्रजा के निर्माण का प्रयास तथा ईसाई मिशनरियों को प्रोत्साहन

1698ई0 के चार्टर एक्ट के समय पर्लियामेन्ट ने कम्पनी के कारखानों तथा इसकी बस्तियों में इंग्लैण्ड के प्रोटेस्टेन्ट धर्म के प्रसार के लिए व्यवस्था की थी। 1700ई0 में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के डारेक्टरों ने कम्पनी के जहाजों तथा एजेन्टों को लन्दन के धर्माध्यक्ष द्वारा प्राप्त निर्देश के आधार पर भारत में ईसाई धर्म के प्रचार के लिये सुविधायें प्रदान करने के लिये आदेश दिये लार्ड बेलेजली जब भारत का गवर्नर जनरल बनकर भारत आये। तो उसने मिशनरियों को सुविधायें देना प्रारम्भ कर दिया तथा विलियम कैरी को उसने एक अध्यापक के रूप में नियुक्त किया 1813 ई0 के चार्टर इंग्लैण्ड की पार्लियामेन्ट में जब प्रस्तुत हुआ उस समय मिशनरियों को भारत भेजने तथा ईसाईयत के प्रचार के लिए इंग्लैण्ड में जन –समर्थन उमड़ने लगा।[1] कम्पनी के ईसाई मत प्रचार सम्बन्धी कार्यो की देख – रेख के लिए एक पादरी कैथरीन को नियुक्त कर दिया गया। फलतः 1813 से 1833 ई0 के बीच मिशनरियों ने हिन्दुस्तान में अनेकों की संख्या में ईसाई बना लिये।[2] 1858ई0 के एक्ट को पास करके पार्लियामेन्ट ने कम्पनी के हाथ से भारतीय शासन की सत्ता अपने हाथ में ले ली, और भारत में ईसाई मिशनरियों का आगमन तेजी से होता रहा तथा धर्म परिवर्तन हेतु उनके प्रयास यथावत चलते रहे। बुन्देलखण्ड के पिछड़े हुये इलाके में ईसाईयत के प्रचार तथा प्रसार का कार्य सर्वप्रथम प्रोटेस्टैण्ट मिशनरियों ने ही किया था।[3] 1857 में अंग्रेजी सेनाओं की दमन की नीतियों से लोगों में अंग्रेजी सेना के विरूद्ध घृणा की भावना जागृत हुई उपरोक्त घृणा के वातावरण में अंग्रेजी शासकों ने यह उचित समझा कि इस कटूता को दूर करने का एक रास्ता यह हो गया कि इसाई मिशनरियों को बुन्देलखण्ड के क्षेत्रों में धर्म प्रचार की सुविधाऐं दी जायें ताकि मानवीय कार्यो जैसे – स्कूल, अस्पताल तथा अन्य कल्याणकारी संगठनों के माध्यम से जनता का दिल जीत सके।[4] वास्तव में 1857 ई0 के विद्रोह की समाप्ति के बाद पूरा बुन्देलखण्ड भुखमरी की कगार पर आ गया इसके बाद लगातार कुछ अन्तराल के बाद अकाल पड़ते रहे तथा बाढ़ आदि से स्थिति विषम होती गई।[5] इस परिस्थिति में मिशनरियों को अपने कल्याणकारी कार्यो

---

1. मिल और बिलसन हिस्ट्री ऑफ ब्रिटिश इण्डिया भाग – 1, पृष्ठ – 389
2. द कैम्ब्रिज हिस्ट्री आफ इण्डिया भाग – 6, पृष्ठ – 124
3. ए क्रिस्टिकल इनक्वायरी इनटू द बुन्देलखण्ड मसीही मित्र समाज वर्ग इन द बुन्देलखण्ड एरिया, रत्नाकर. एम. राव (रिसर्च पेपर) पृष्ठ – 10-1-85
4. झांसी ड्यूरिंग द ब्रिटिश रूल, पृष्ठ – 149
5. झांसी ड्यूरिंग द ब्रिटिश रूल, पृष्ठ – 149

को आगे बढ़ाने का मौका मिला। इसके अतिरिक्त बुन्देलखण्ड के अधिकांश क्षेत्रों में निम्न वर्गो की जनता पर्याप्त मात्रा में थी जिससे आसानी से इसाईयत की ओर आकृष्ट किया जा सकेगा। उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखकर क्रिश्चियन मिशनरी सोसायटी ने झांसी में अपने मिशनों की स्थापना की[1] इस मिशन की दो शाखाएं थी पहली ललितपुर तथा दूसरी मऊरानीपुर[2] बुन्देलखण्ड में आने वाले मिशनरियों के एक महत्वपूर्ण मिशन अमेरिका के प्रेसविटेरियन चर्च का था 1886 ई0 में प्रसेविटेरियन चर्च के कुछ मिशनरी झांसी आये तथा यहाँ धर्म प्रचार का केन्द्र बनाया।[3] ललितपुर जिला जो झांसी की तुलना में अत्यन्त ही पिछड़ा हुआ था। यहाँ ईसाई धर्म के प्रचार की प्रबल सम्भावनएं थी। 1858ई. के बाद के वर्षो में जैसे 1868ई0 1873ई0 1892ई0, 1890ई0, 1899 ई0 आदि के वर्षो में ललितपुर जिले में भंयकर अकाल पड़े। इन अकालों का प्रभाव बुन्देलखण्ड के सभी जिलों पर था, लेकिन ललितपुर का जिला इससे बुरी तरह प्रभावित हुआ। इस जिले में किसी भी प्रकार का उद्योग नहीं था अतः लोगों की जीविका खेती पर निर्भर करती थी। चूँकि सरकार ने सिंचाई की सुविधाओं की ओर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया इसलिये अकाल से होने वाली क्षति कई गुना अधिक हो गई। 1868 और 69 ई0 के अकालों की भयंकरता को तो लोग अब भी याद करते हैं। इस अकाल की विभीषिका का वर्णन करते हुये हैनवी ने लिखा है – कि यद्यपि पूरा ललितपुर जिला अकाल की विभीषिका से ग्रस्त था किन्तु सबसे प्रभावित इलाके तालबेहट, बाँसी और बानपुर थे।[4]

अकालों द्वारा उत्पन्न भयावह स्थिति में बुन्देलखण्ड में आये मिशनरियों ने लोगों को मदद देकर ईसाई बनाना प्रारम्भ किया। वर्तमान में ललितपुर में सदनशाह के पास निवास कर रहे फ्रेंडलाल बताते हैं कि हमारा परिवार पाली का निवासी था और हम यादव जाति के थे। सैनिक छावनी में हमारे पिता प्यारेलाल दूध देने का काम करते थे। उसी समय हमारे पिताजी ने ईसाई धर्म स्वीकार किया था। आज भी हम दूध का धन्धा करते हैं। ललितपुर मिशन ने अनाथ बच्चों की देख रेख तथा पालन पोषण कार्य करने के लिये एक अनाथालय खोला जिसकी संचालिका अमरिकन लेडी श्रीमती ऐलिजबिथ मर्सी बेकन तथा पादरी डेबिड टी बेनहोर्न थे। पादरी वेनहोर्न की मृत्यु भी यही 1914 ई0 में हुयी। लेडी बेकन की 1900 ई0 में ललितपुर में ही मृत्यु हुई तथा वर्तमान में सदनशाह बाबा की आगे (ललितपुर शहर) इसाई कब्रिस्तान

---

1. झांसी ड्यूरिंग द ब्रिटिश रूल, पृष्ठ – 149
2. ड्रेन ब्रोक मैन, डी. एल. झांसी गजेटियर 1909, इलाहाबाद, पृष्ठ – 87
3. ड्रेन ब्रोक मैन, डी. एल. झांसी गजेटियर 1909, इलाहाबाद, पृष्ठ – 87
4. बुन्देलखण्ड गजेटियर – ई. टी. एटकिन्शन, पृष्ठ – 318

में उनकी समाधि संगमरमर की बनी हुयी है। जिस पर उनकी यादगार बनाये रखने के लिए लेख भी उत्कीर्ण है वर्तमान में गोविन्द सागर बांध पर बने चर्च के पादरी श्री जार्ज लूक्स द्वारा लेडी बोकन के सन्दर्भ में अमरीका से 16 अक्टूबर 1902 ई0 में एक पत्रिका[1] में प्रकाशित लेख मुझे दिया जिसमें भी यह जानकारी प्राप्त होती है। प्रथम चर्च भवन वर्तमान पुरूषोत्तम नारायण टंडन पुस्तकालय में था। गोविन्द सागर बांध के पास स्थापित चर्च 1925ई0 का हैं जिसे एल. एल. लीस ने स्थापित किया था। जरया गांव (समोगर के पास, महरौनी रोड पर) में इसाई चर्च के अवशेष हैं। अनाथालय में ऐसे बच्चों को लाकर पाला जाने लगा जो अकालों के समय अपने मां - बाप द्वारा फेंक दिये गये थे। इन अनाथालायों में बच्चों को विभिव्न प्रकार के हस्त शिल्प और कारीगरी की ट्रेनिंग दी जाती थी।[2]

शीघ्र ही इन मानवतावादी तरीकों का परिणाम दिखाई पड़ा और इससे इस क्षेत्र में ईसाई अनुयाइयों की संख्या बढ़ने लगी झांसी जिले में इससें अभूतपूर्व प्रगति हुई। इसकी पुष्टि जनगणना की रिपोर्टो से होती है। 1901 ई0 की जनगणना के अनुसार झांसी जिला (ललितपुर सब डिवीजन सहित) ईसाईयों की संख्या 3064 थी।[3] अंग्रेजी सैनिक छावनियों में भी ईसाई मत का प्रचार किया जाता था एवं प्रत्येक छावनी में प्रार्थना सभा एवं चर्च की स्थापना की जाती थी। 1884ई0 में स्थापित चर्च वर्तमान में ललितपुर शहर में राजकीय इण्टर कालेज के पास स्थित है जो पूर्णतः सैनिक चर्च था। जो गैरीसन चर्च के नाम से प्रसिद्ध है।

ईस्ट इण्डिया कम्पनी के भारत आगमन के पश्चात् मिशनरी धर्म प्रचारकों का कम्पनी के जहाजों में किसी प्रकार का किराया नहीं लिया जाता था। बुन्देलखण्ड स्थित अंग्रेजी छावनियों में अंग्रेज अधिकारियों तथा सैनिकों की पूजा पाठ के लिए ईसाई धर्म प्रचारक रखे जाते थे जो नियमित रूप से धार्मिक कार्य किया करते थे। इसके अलावा यूरोप से आने वाले मिशनरियों को बुन्देलखण्ड के अंग्रेजी अधिकारी संरक्षण ही नहीं देते थे बल्कि उन्हें अनेकों प्रकार की सहायता भी देते थे। इस नीति को अपनाने का कारण यह था कि धर्म प्रचार के द्वारा ये अंग्रेज अधिकारी भारत के मध्य में स्थित इस क्षेत्र में एक ऐसी प्रजा का निर्माण करना चाहते थे जो धार्मिक रूप से अंग्रेजों से जुड़ी हुयी हो ऐसा करके इस क्षेत्र में एक वफादार प्रजा का निमार्ण किया जा सकता था।

---

1. (1) Cpiscopral recurder, 16 अक्टूबर, 1902, अमरीका से प्रकाशित रिपोर्ट आर्फ डी. टी. वेनहार्न
2. (1) ड्रेन ब्रोक मैन, डी. एल. झांसी गजेटियर 1909, इलाहाबाद, पृष्ठ - 87
   (2) इम्पेरियल गजेटियर ऑफ इण्डिया भाग - 2, पृष्ठ - 91
3. (1) ड्रेन ब्रोक मैन, डी. एल. झांसी गजेटियर 1909, इलाहाबाद, पृष्ठ - 87
   (2) इम्पेरियल गजेटियर ऑफ इण्डिया भाग - 2, पृष्ठ - 91
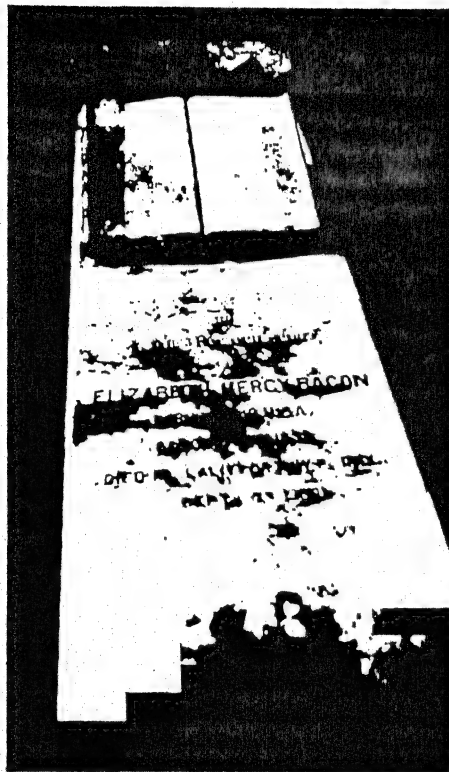
अनाथालय की संचालिका अमरिकन **लेडी श्रीमति ऐलिजबिथ मर्सी बेकन** की स्मृति में 1900 ई० में ईसाई कब्रिस्तान (ललितपुर) में बनायी गयी समाधि।
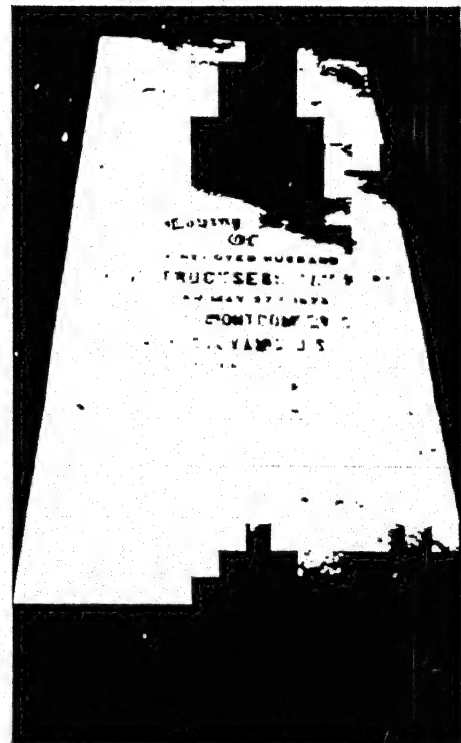
लेडी श्रीमति ऐलिजबिथ मर्सी बेकन के पति **पादरी डेबिड टी बेनहोर्न** की स्मृति में 1914 ई० में ईसाई कब्रिस्तान (ललितपुर) में बनायी गयी समाधि।

(३) जनमानस के मस्तिष्क में राष्ट्रीयता की भावना का परिवर्द्धन

1857 ई0 के विद्रोह की समाप्ति के बाद बुन्देलखण्ड सहित ललितपुर क्षेत्र में स्वतंत्रता की भावना अन्दर ही अन्दर सुलगती रही चूँकि ब्रिटिश शासन की असीमित शक्ति, दमन और आतंक का प्रभाव अधिक था जिसके कारण लोग खुलकर तुरन्त बाद ही विद्रोह नहीं करना चाहते थे। साथ ही साथ 1857 ई0 के विद्रोह के समय क्रांतिकारियों के सैनिक सामान में काफी क्षति भी हो चुकी थी। साथ ही साथ नेतृत्व प्रदान करने वाले वर्ग रानी लक्ष्मीबाई, तात्यां टोपे, नाना साहब, अली बहादुर, बानपुर के राजा मर्दनसिंह, शाहगढ़ के राजा बख्तवली, पाली के राव हम्मीर सिंह, जाखलौन – देवगढ़ क्षेत्र के वीर देवीसिंह व भुजबल सिंह, देवरान के दरयाव सिंह, दैलवारा के जसंबत सिंह आदि भी दृश्य से बाहर हो गये थे।

1856 से 1876 ई0 के बीच के 20 वर्षों के समय को कुछ इतिहासकारों ने भारत में ब्रिटिश शासन की प्रगति तथा पुनः स्थापना का युग माना है।[1] इन दिनों देश में राजनैतिक गतिविधियों का अन्दर ही अन्दर प्रस्फुटन हो रहा था। 8 जून 1880ई0 को जैसे ही लार्ड रिपन ने भारत के गवर्नर जनरल का पद भार ग्रहण किया[2] वैसे ही भारत में राजनैतिक आन्दोलन की दिशा में नई दिशा और आशा का संचार हुआ।[3]

रिपन एक उदारवादी गर्वनर जनरल थे जिन्हें भारत में इसलिए भेजा गया था कि ब्रिटिश प्रजा के मन में इस देश में जो असंतोष पनप रहा था उसे रिपन अपने उदारवादी तरीकों द्वारा शान्त कर दें। वास्तव में लार्ड रिपन का समय भारत के राष्ट्रीय आन्दोलनों के बीजारोपण का समय था।[4]

अंग्रेजों ने एक महत्वपूर्ण कार्य यह किया था कि भारत में केन्द्रीय सत्ता की स्थापना की जिसके कारण भारतीय इतिहास में पहली बार वास्तविक और आधारभूत राजनैतिक एवं प्रशासनिक एकीकरण हुआ। भारत में भौगोलिक एकता और हिन्दुओं की धार्मिक सांस्कृतिक एकता पहले भी थी लेकिन अंग्रेजों की वजह से राजनैतिक एकता स्थापित हुई[5]

---

1. इण्डियन नेशनलिस्ट मूवमेन्ट, एम. वी. पी. एस. रघुवंशी, पृष्ठ – 31
2. फ्रीडम मूवमेन्ट इन दिल्ली (1858 से 1919 तक) एस. सिंह, 1992 नई दिल्ली, पृष्ठ – 57
3. दि क्रोनोलॉजी आफ इण्डियन हिस्ट्री – जैम्स बरगेस, पृष्ठ – 404
4. इण्डियन नेशनलिस्ट मूवमेन्ट, रघुवंशी, पृष्ठ – 58
5. आधुनिक भारत का इतिहास – रामलखन शुक्ल, पृष्ठ – 383

यहाँ राष्ट्रीययता की भावना इसलिए पनपी की ब्रिटिश साम्राज्यवादी भारत को वुरी तरह से लूट रहे थे और गरीबी का मूल कारण वे ही थे।[1] लार्ड लिटन की नीतियों ने तो कटे पर नमक छिड़कने का काम किया था। दूसरे अफगान युद्ध (1878-80ई0) वित्तीय वोझ और 1877ई0 के असंयत अतिव्यापी और भव्य दिल्ली दरबार के कारण लोगों का असन्तोष वढ़ा क्योंकि यह अकाल और भुखमरी का ज़माना था जबकि 1869ई0 में ललितपुर में राजस्व की उच्च दरों को लागू किया गया[2] जो इस समय में भी लागू थी।

फिर 1878ई0 के वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट से भारतीय प्रेस की स्वतंत्रता पर रोक लगाई और 1879ई0 के इंडियन प्रेस एक्ट और आर्म्स एक्ट के कारण लोगों में असंतोष की ज्वाला प्रकट हुई और स्थिति विस्फोटक हो गयी।[3]

1874ई0 में सुरेन्द्रनाथ बनर्जी को जिस तरह सिविल सर्विस से हटाया गया उससे भारतीयों को विश्वास हो गया कि अंग्रेज शासक भारतीयों को सिविल सर्विस में घुसने नहीं देना चाहते थे। साथ ही 1877ई0 में इंग्लैण्ड में होने वाली सिविल सर्विस परीक्षा के लिए आयु सीमा घटाकर 21 से 19 वर्ष कर दी गई तो सुरेन्द्र नाथ बनर्जी ने इसके विरूद्ध आन्दोलन संगठित किया।[4]

1857ई0 के बाद के दशकों में जब उच्च शिक्षा का प्रसार हुआ तो बुद्धिजीवियों ने यह अनुभव किया कि जमींदारों के संगठन के अलावा उन्हें भी अलग से अपने विचार रखने चाहिए। और विभिन्न संस्थाऐं स्थापित की गयी तथा मध्य वर्ग उनसे जुड़ गया।[5] विद्रोह के वाद भारत व ब्रिटेन के सम्बन्धों के इतिहास में एक नया दौर शुरू हुआ 1857ई0 तक अंग्रेजों का उद्देश्य सभी रियासतों का विलय करना और सारे भारत पर कंपनी का प्रयत्क्ष शासन स्थापित करना था 1857ई0 के अनुभव के आधार पर इस उद्देश्य का परित्याग किया गया और इसके बाद यह नीति अपनाई गई कि जिन देशी रियासतों पर कब्जा नहीं हुआ उन्हें ज्यों का त्यों छोड़ दिया जाए ब्रिटेन की नई नीति अब यह थी कि इन रियासतों के राजाओं को दोस्त और अंग्रेजी शासन का देश भक्त समर्थक बना लिया जाए।[6]

---

1. आधुनिक भारत का इतिहास - रामलखन शुक्ल, पृष्ठ - 385
2. बुन्देलखण्ड गजेटियर - एक किन्सन, पृष्ठ - 335-336
3. आधुनिक भारत का इतिहास - रामलखन शुक्ल, पृष्ठ - 389
4. आधुनिक भारत का इतिहास - रामलखन शुक्ल, पृष्ठ - 389
5. आधुनिक भारत का इतिहास - रामलखन शुक्ल, पृष्ठ - 390
5. आधुनिक भारत का इतिहास - रामलखन शुक्ल, पृष्ठ - 387

देश में इस नई नीति का महत्वपूर्ण परिणाम निकला। कालान्तर में देशी रियासतों के लोग दमनपूर्ण नीतियों के प्रति जागरूक हुए और रजवाड़ों के निरंकुश शासन के विरूद्ध प्रतिनिधि सरकार और अन्य जनतांत्रिक माँगों केलिए एकट्ठे होने लगे।[1]

परन्तु ललितपुर व झांसी क्षेत्र 1857ई0 के बाद से अंग्रेजों के अधीन आ चुके थे और यहाँ भी अंग्रेजों का दमनचक्र चालू था। अंग्रेजों के खिलाफ जो लहर सम्पूर्ण भारत में चल रही थी इस लहर में यह क्षेत्र भी सम्मिलित हो गया।

---

1. आधुनिक भारत का इतिहास - रामलखन शुक्ल, पृष्ठ - 387

(४) कांग्रेस की स्थापना तथा उसके कार्यक्रमों का जनपद पर अनुकूल प्रभाव

28 दिसम्बर 1885 ई0 को अवकाश प्राप्त अंग्रेज आई0 सी0 एस0 अधिकारी अलन आक्टैवियन ह्यूम ने बम्बई स्थित गोकुल दास तेजपाल संस्कृत विद्यालय में कांग्रेस की स्थापना की थी।[1] भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का कांग्रेस शब्द उत्तरी अमरीका के इतिहास से लिया गया जिसका अर्थ है "लोगों का समूह"

कांग्रेस की स्थापना का मुख्य ध्येय यह था कि तत्कालीन भारतीय समाज में एक बड़ा वर्ग जो शिक्षित होकर उभरा था, उसके अन्दर अथवा उस शिक्षित वर्ग में किसी प्रकार की राजनैतिक चेतना का प्रभाव हो, यह जानने के लिए तत्कालीन वासरॉय लॉर्ड डफरिन (1884-1888 ई0) में कांग्रेस की स्थापना कराई थी एवं उसकी स्थापना का अप्रत्यक्ष रीति से समर्थन भी किया था।

इसका पहला अधिवेशन बंगाली बैरिस्टर व्योमेश चन्द्र बनर्जी की अध्यक्षता में हुआ था।[2] कांग्रेस स्थापना के प्रारम्भिक दस साल तक यह ब्रिटिश सरकार के रूप में कार्य करती रही तथा इस पर ब्रिटिश साम्राज्य की कृपा दृष्टि बनी रही परन्तु धीरे - धीरे इसमें अनेक राष्ट्रवादी नेता एवं उच्चकोटि के विद्वानों का प्रवेश आरम्भ हुआ तथा ब्रिटिश सरकार के अनेक गलत कार्य जैसे बंगाल विभाजन, मार्ले मिन्टो सुधार आदि से तो यह दल ब्रिटिश सरकार की आलोचना का मुख्य केन्द्र बन गया। प्रथम विश्व युद्ध के बाद तथा महात्मा गांधी का राजनीति में प्रवेश से तो इसका रूप ही बदल गया।

अतः 1920 ई0 के चक्रवर्ती विजय राधवाचारी की अध्यक्षता में नागपुर अधिवेशन में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने अपना ध्येय खुलकर उजागर कर दिया। वह ध्येय था 'सभी उचित तथा शांतिपूर्ण उपायों से पूर्ण स्वराज्य की प्राप्ति था।'[3]

कांग्रेस की स्थापना और उसके कार्यक्रम का प्रभाव ललितपुर पर भी पड़ा। कांग्रेस की नीतियों एवं उद्देश्य से प्रभावित होकर ललितपुर क्षेत्र के जमींदार सेवनी निवासी पं. नन्दकिशोर किलेदार सर्वप्रथम इलाहाबाद अधिवेशन में भाग लेने गये।[4]

---

1. भारत का बृहत इतिहास भाग - 3, मजुमदार, राय चौधरी दत्त, पृष्ठ - 259
2. भारत का बृहत इतिहास भाग - 3, मजुमदार, राय चौधरी दत्त, पृष्ठ - 259
3. भारतीय इतिहा कोष - श्री सच्चिदानन्द भट्टाचार्य, पृष्ठ - 331-332
4. (1) व्यक्तिगत साक्षात्कार - पं. नन्दकिशोर किलेदार के पुत्र सेनानी पं. बृजनन्दन किलेदार
   (2) हिन्दी साप्ताहिक मध्यदेश -सं.- डॉ पं. विश्वनाथ शर्मा,
   शीर्षक : क्या कोई फाँसी का चढने को तैयार है, पृष्ठ-4 लेखक : देवेन्द्र

फिर लौट कर पं. नन्दकिशोर किलेदार जी ने कांग्रेस का दायरा फैलाया। लोग आकर उन्हें घेर जाते थे और कहा करते थे कि दाऊ बताइये कि अधिवेशन में क्या नीति निर्धारित की गयी पं. नन्दकिशोर किलेदार जी दाऊ की नाम से प्रसिद्ध थे।[1]

ललितपुर क्षेत्र की जनता की जिज्ञासा उस समय उफान पर आ गयी जव 1905 ई0 में कर्जन ने बंगाल का विभाजन कर दिया और बंगाल सहित सारे भारत में विरोध हुआ। उस समय ललितपुर जनपद में बाहर से समाचार पत्र उपलब्ध होने का कोई साधन नहीं था और न ही उच्च शिक्षा की व्यवस्था थी किन्तु किन्हीं सूत्रों से यह समाचार पाकर पं. नन्दकिशोर किलेदार अपने साथी पं. गुलाबराय तिवारी उर्फ गुलई तिवारी के साथ कर्जन के निर्णय का विरोध करने के लिऐ व्यापारियों एवं प्रबुद्ध वर्ग को लाने एवं आन्दोलन करने के लिए प्रचार करने लगे।[2]

श्री नन्दकिशोर किलेदार ने झांसी जाकर पता लगाया[3] कि समाचार पत्र कहाँ से निकलते हैं उन्हें प्राप्त करने के साधन क्या हैं क्योंकि उस समय ललितपुर क्षेत्र झांसी जिले का एक अंग था। श्री किलेदार जी ने बम्बई से बैक्टेश्वर तथा पूना से केशरी पत्र मंगाना आरम्भ कर दिया। वे अखवार आते ही लोगों को एकत्रित करके उसे सुनाते थे।[4] तथा बतलाते थे कि अंग्रेज सरकार भारतवासियों के लिए अत्यन्त दुःखदायी और लूटने वाली है तथा उसे खदेड़ने के लिए कांग्रेस अथग प्रयास कर रही है। इस प्रकार जनसमूह को कांग्रेस के उद्देश्य व नीतियों का ज्ञान हुआ और यह वर्ग अंग्रेजों के खिलाफ कांग्रेस के साथ राष्ट्रीय आन्दोलन से जुड़ गया।

चूकि इस समय ललितपुर क्षेत्र झांसी जिले का एक भाग था और वुन्देलखण्ड में सर्वप्रथम कांग्रेस की स्थापना झांसी नगर में हुई थी प्रथम विश्व युद्ध के वाद झांसी ललितपुर क्षेत्र के कुछ राष्ट्रवादी विचार धारा के लोगों का एक समूह एकत्रित होने लगा था

---

1. व्यक्तिगत साक्षात्कार – पं. नन्दकिशोर किलेदार के पुत्र सेनानी पं. वृजनन्दन किलेदार से
2. (1) व्यक्तिगत साक्षात्कार–पं. नन्दकिशोर किलेदार के पुत्र सेनानी बृजनन्दन किलेदार से
   (2) सामाजिक दायरा (मासिक पत्रिका)
   स्वाधिनता संग्राम में ललितपुर जनपद का योगदान – डॉ. कृष्णानन्द हुण्डैत, पृष्ठ – 9
3. (1) व्यक्तिगत साक्षात्कार–पं. नन्दकिशोर किलेदार के पुत्र सेनानी बृजनन्दन किलेदार से
   (2) सामाजिक दायरा (मासिक पत्रिका)
   स्वाधिनता संग्राम में ललितपुर जनपद का योगदान – डॉ. कृष्णानन्द हुण्डैत, पृष्ठ – 9
4. (1) व्यक्तिगत साक्षात्कार–पं. नन्दकिशोर किलेदार के पुत्र सेनानी बृजनन्दन किलेदार से
   (2) सामाजिक दायरा (मासिक पत्रिका)
   स्वाधिनता संग्राम में ललितपुर जनपद का योगदान – डॉ. कृष्णानन्द हुण्डैत, पृष्ठ – 9

इसका मुख्य केन्द्र झांसी में सरस्वती पाठशाला एवं मास्टर रूद्रनारायण का टकसाल मुहल्ला[1] और ललितपुर में श्री नन्दकिशोर किलेदार का घर था।[2] 1916ई0 में ही झांसी से "संयुक्त प्रान्त राजनैतिक कॉन्फ्रेस" का आयोजन उस भू-भाग पर हुआ था जहाँ पर वर्तमान में सरस्वती पाठशाला इण्टस्ट्रियल काजिल है। इस कॉन्फ्रेस के स्वागत अध्यक्ष सी. वाई. चिन्तामणि थे और प्रमुख आयोजक श्री हरनारायण गोरहार थे 1916ई0 में इस स्थान पर कांग्रेस कमेटी की स्थापना की गई थी।[3]

1916ई0 के कांग्रेस लखनऊ अधिवेशन में बुन्देलखण्ड से सी. वाई. चिन्तामणि प्रतिनिधि बनकर गये थे।[4] उपरोक्त व्यक्तियों द्वारा झांसी नगर में होमरूल आन्दोलन भी चलाया तथा झांसी में होमरूल लीग की स्थापना की गई थी तभी पं. नन्दकिशोर किलेदार व गुलई तिवारी जी ने प्रेरणा लेकर ललितपुर में भी होमरूल आन्दोलन चलाया था क्योंकि पं. किलेदार जी मुख्यालय झांसी से जुड़े हुये थे।[5] 1920ई0 में गांधी जी ने झांसी नगर स्थित कांग्रेस कमेटी कार्यालय का विधिवत उद्घाटन किया था।[6]

कांग्रेस की स्थापना के पश्चात् ललितपुर क्षेत्र की जनता को पं. किलेदार व पं. गुलई तिवारी जी ने नेतृत्व दिया तथा कांग्रेस की नीतियों को जनसमूह में प्रचारित करके राष्ट्रीय आन्दोलन की कतार में उसे खड़ा कर लिया।

-------------------------0 0 0-------------------------

1. यश की धरोहर - श्री भगवानदास माहौर, पृष्ठ - 59
2. व्यक्तिगत साक्षात्कार - बृजनन्दन शर्मा (कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष - ललितपुर) से
3. सरस्वती पाठशाला हीरक जयन्ती अंक - रमेशचन्द्र, पृष्ठ - 5
4. जिला झांसी गजेटियर - 1965, ई. वी. जोशी
5. व्यक्तिगत साक्षात्कार-पं. नन्दकिशोर किलेदार के पुत्र सेनानी पं. बृजनन्दन किलेदार से
6. जिला झांसी गजेटियर - 1965, ई. वी. जोशी

अध्याय - पंचम

असहयोग आन्दोलन और श्री नन्दकिशोर जी किलेदार की भागीदारी

(1) रौलट एक्ट एवं जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड से उत्पन्न असन्तोष।

(2) खिलाफत आन्दोलन के समय हिन्दु - मुस्लिम प्रबल सहयोग।

(3) असहयोग आन्दोलन का प्रारम्भ तथा ललितपुर के लोगों का सहयोग।

(4) स्वदेशी का प्रसार एवं विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार।

(5) श्री नन्दकिशोर जी किलेदार की सक्रिय भागीदारी।

(6) श्री गुलई तिवारी की सक्रियता।

(7) श्री चिन्तामणि (महरौनी) का प्रेरक नेतृत्व।

(8) श्री हरिचन्दी तेली की भागीदारी।

(9) दमन और गिरफ्तारी।

अध्याय - पंचम

असहयोग आन्दोलन और नन्दकिशोर जी किलेदार की भागीदारी

(1) रौलट एक्ट एवं जलियांबाला बाग हत्याकाण्ड से उत्पन्न असन्तोष

सन् 1919 ई० का वर्ष भारतीय इतिहास में गाँधी युग का प्रारम्भ एवं राजनैतिक तूफानों का वर्ष था। रौलट एक्ट जो 1918 ई० में जस्टिस सिडनी रौलट की अध्यक्षता में स्थापित 'सेडीशन कमेटी' की कुछ सिफारिशों पर आधारित था, को 18 मार्च 1919 ई० को तमाम गैर सरकारी भारतीय सदस्यों के विरोध के बाद भी 'इंपीरियल लेजिस्लेटिव काउंसिल' ने शीघ्रता से स्वीकार कर लिया था।[1] इस कानून के तहत जिस व्यक्ति पर राजद्रोही होने का संदेह हो, उसकी गतिविधि पर नियंत्रण रखा जा सकता था तथा जिस व्यक्ति से शांति भंग होने का संदेह होने की संभावना हो उसे गिरफ्तार कर बिना मुकदमा के दो वर्ष तक बंदी बनाये रखने की व्यवस्था थी।[2] इस रौलट विधेयक को जनता ने 'काला कानून' कहा।[3] इसे बिना वकील, बिना अपील, बिना दलील का कानून भी कहा गया।[4]

भारतीय जनमानस में रौलट एक्ट को लेकर काफी आक्रोश था। गांधी जी ने विरोध का एक अनोखा तरीका लोगों के सामने प्रस्तुत किया जिसमें स्वयं सेवकों को निर्पद्ध वस्तुओं को सार्वजनिक रूप से बेचने का निर्देश दिया गया।[5]

30 मार्च 1919 ई० तथा 6 अप्रैल 1919 ई० को अखिल भारतीय स्तर पर हड़ताल का आयोजन किया गया।[6] अपने सत्याग्रह में गांधी जी ने तीन प्रकार के राजनैतिक संगठनों - होमरूल लीग, अखिल इस्लामी समूह तथा सत्यागृह सभा का सहयोग लिया।[7]

---

1. आधुनिक भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृति इतिहास (1707से1950)-डॉ. ए.के. मित्तल साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा, पृष्ठ - 412
2. आधुनिक भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृति इतिहास (1707से1950)-डॉ. ए.के. मित्तल साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा, पृष्ठ - 412
3. आधुनिक भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृति इतिहास (1707से1950)-डॉ. ए.के. मित्तल साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा, पृष्ठ - 412
4. आधुनिक भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृति इतिहास (1707से1950)-डॉ. ए.के. मित्तल
5. आधुनिक भारत - विपिन चन्द्र, पृष्ठ - 196
6. आधुनिक भारत - विपिन चन्द्र, पृष्ठ - 196
7. आधुनिक भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृति इतिहास (1707से1950)-डॉ. ए.के. मित्तल

सत्याग्रह सभा की स्थापना गांधी जी ने 24 फरवरी 1919 ई0 को वम्वई में की थी।[1]

रौलट एक्ट के विरूद्ध समस्त देश में विरोध एवं प्रदर्शन हुए। पंजाव में इस आन्दोलन ने विराट रूप धारण कर लिया। गांधी जी के सत्यागृह के समर्थन में अमृतसर में सभाएँ आयोजित की गई परन्तु इन सभाओं में पंजाब के लोकप्रिय नेता सैफुद्दीन किचलु तथा डॉ. सत्यपाल को भाषण देने से रोका गया। 10 अप्रैल को इन दोनों नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया।[2] परिणामस्वरूप टाउन हॉल, पोस्ट ऑफिस पर हमले हुये। अन्ततः नियंत्रण के लिए स्थानी प्रशासन को सेना बुलानी पड़ी।[3] सेना की एक टुकड़ी जनरण डायर के नेतृत्व में अमृतसर पहुँची[4] 13 अप्रैल 1919 ई. को वैशाखी के दिन दोपहर में नेताओं की गिरफ्तारी के विरोध में जलियाँवाला बाग में एक सभा का आयोजन हुआ जिसे जनरल डायर ने गैर कानूनी घोषित कर दिया फिर भी सभा में करीब 20,000 व्यक्ति उपस्थित हुए। जनरल डायर ने सभा स्थल पर 150 सशस्त्र सैनिकों के साथ पहुँचकर निहत्थी भीड़ पर गोली चलाने का आदेश दिया।[5] 10 मिनट तक लगातार गोलाबारी हुई जिसमें भारी संख्या में लोग मारे गये और घायल हुए।[6] जलियांवाला बाग बहुत बड़ा बाग था मगर इसमें से निकलने का केवल एक रास्ता था, शेष तीन ओर से यह मकानों से घिरा था। निकास द्वार पर फौजी दस्ता तव तक गोली वरसाते रहे जब तक कि गोलियां खत्म न हो गई।[7] पूरे पंजाब में मार्शल लॉ लगा दिया गया।[8] सरकारी रिपार्ट के अनुसार मरने वालों की संख्या 379 थी।[9] जबकि कांग्रेस ने मरने वालों की संख्या 1000 के आसपास, घायलों की संख्या 1500 बतायी।[10]

---

1. आधुनिक भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृति इतिहास (1707से1950) डॉ. ए. के. मित्तल साहित्य भवन पब्लिकेशन - आगरा, , पृष्ठ - 413
2. आधुनिक भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृति इतिहास (1707से1950) डॉ. ए. के. मित्तल
3. आधुनिक भारत - विपिन चन्द्र, पृष्ठ - 196
4. आधुनिक भारत - विपिन चन्द्र, पृष्ठ - 196
5. राजनैतिक भारत का राजनैतिक - डॉ. ऐ. के. मित्तल, पृष्ठ - 413
6. आधुनिक भारत - विपिन चन्द्र, पृष्ठ - 196-197
7. आधुनिक भारत - विपिन चन्द्र, पृष्ठ - 196-197
8. आधुनिक भारत - विपिन चन्द्र, पृष्ठ - 196-197
9. आधुनिक भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृति इतिहास (1707से1950) डॉ. ए. के. मित्तल साहित्य भवन पब्लिकेशन - आगरा,
10. आधुनिक भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृति इतिहास (1707से1950) डॉ. ए. के. मित्तल साहित्य भवन पब्लिकेशन - आगरा,

इस हत्याकाण्ड से समस्त सभ्य संसार के लोगों के रोंगटे खड़े हो गये थे। इस हत्याकाण्ड की समस्त विश्व में निन्दा की गई।[1]

अंग्रेजों के इस बर्बरतापूर्ण अमानुषिक कृत्य पर देश भर में रोष एवं गुस्से की लहर दौड़ गई।

हत्याकाण्ड के विरोध में रवीन्द्रनाथ टैगोर ने 'नाइट हुट' की उपाधि वापस कर दी। सर शंकरन नायर ने गवर्नर जनरल की कार्यकारी परिषद से इस्तीफा दे दिया।[2]

जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड का आक्रोश ललितपुर क्षेत्र की जनता में भी प्रस्फुटित हुआ था। 1919 में जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड के विरोध में अन्य स्थानों की भाँति ललितपुर में भी पं. नन्दकिशोर किलेदार एवं पं. गुलई तिवारी के प्रयासों से हड़ताल एवं जुलूस का आयोजन किया गया था।[3]

रौलट एक्ट एवं जलियावाला बाग हत्याकाण्ड के विरोध में ललितपुर क्षेत्र की जनता ने अपना असंतोष प्रकट किया और उसे अपने प्रिय नेता दाऊ पं. नन्दकिशोर किलेदार तथा पं. गुलई तिवारी ने नेतृत्व में जारी रखा[4] परन्तु 18 अप्रैल 1919 ई. को गांधी जो ने रौलट सत्याग्रह को जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड हो जाने से समाप्त घोषित कर दिया। परन्तु जनता अंग्रेजों के विरूद्ध एकजुट हो गयी।

(2) खिलाफत आन्दोलन के समय हिन्दु - मुस्लिम प्रबल सहयोग

प्रथम विश्व युद्ध में अंग्रेजों और उनके मित्र राष्ट्रों में तुर्की साम्राज्य को तोड़कर अरब को उससे अलग कर दिया एवं उसके इराक, फिलिस्तीन, सीरिया, आदि प्रान्तों पर अधिकार कर लिया। भारतीय मुसलमान प्रारम्भ से ही तुर्की सुल्तान को इस्लाम का खलीफा मानते चले आ रहे थे। खलीफा का साम्राज्य टूटते देख भारतीय मुसलमानों में बहुत असंतोष फैला।[5]

---

1. हिस्ट्री ऑफ इण्डिया - भाग - 2, पर्सीवल स्पीयर, पृष्ठ - 120-21
2. आधुनिक भारत - विपिन चन्द्र, पृष्ठ - 196
3. (1) व्यक्तिगत साक्षात्कार - पं. नन्दकिशोर किलेदार के पुत्र सेनानी पं. बृजनन्दन किलेदार प्रत्यक्ष दर्शी
   (2) सामाजिक दायरा - लेख - स्वधीनता संग्राम में ललितपुर जनपद का योगदान डॉ. कृष्णानन्द हुण्डैत, पृष्ठ - 9
4. व्यक्तिगत साक्षात्कार - पं. बृजनन्दन शर्मा
5. इतिहास प्रवेश - जयचन्द्र विद्यालंकार, पृष्ठ - 743

परन्तु अंग्रेजों में कूटनीति का आश्रय लेते हुए घोषणा की कि तुर्क साम्राज्य की अखण्डता व पवित्र स्थलों की रक्षा की जायगी।[1] अतः भारतीय मुसलमानों ने प्रथम विश्व युद्ध में अंग्रेजों के द्वारा तुर्की को अपमान जनक शर्ते स्वीकार करने को विवश किया गया जिससे भारतीय मुसलमानों की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँची।[2]

1916 ई0 के लखनऊ समझौते में हिन्दुओं और मुसलमानों की साझी राजनीति गतिविधियों के लिए पहले ही जमीन तैयार कर रखी थी। रौलट कानून विरोधी राष्ट्रीय आन्दोलन ने समूची भारतीय जनता को एकसमान प्रभावित किया था और हिन्दू मुसलमान दोनों को राजनीतिक में ले आया था।[3]

उदाहरण के लिए राजनीतिक गतिविधियों के क्षेत्र में हिन्दू-मुसलमान एकता की मिसाल दुनियां के सामने रखने के लिए मुसलमानों ने कट्टर आर्य समाजी नेता स्वामी श्रद्धानन्द को आमंत्रित किया था।[4] कि वे दिल्ली की जामा मस्जिद के मिंबर से अपना उपदेश दें।

इसी तरह अमृतसर में सिखों ने अपने पवित्र स्थान स्वर्ण मंदिर की चाभियां एक मुसलमान नेता डॉ. किचल को सौप दी थी।[5] अमृतसर में यह राजनीतिक एकता सरकार के दमन के कारण थी। हिन्दुओं और मुस्लमानों को एक ही बेड़ियां पहनाई गई थी, एक साथ जमीन पर रेंगकर चलने के आदेश दिये गए थे, और एक साथ पानी पीने को कहा गया था।[6] जबकि एक हिन्दू आमतौर पर किसी मुसलमान के हाथों से पानी नहीं पीता था।

इस वातावरण में मुसलमानों के बीच राष्ट्रवादी प्रवृत्ति ने खिलाफत आंदोलन की शक्ल ले ली।

---

1. आधुनिक भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृति इतिहास - डॉ. ए. के. मित्तल (1707से1950) साहित्य भवन पब्लिकेशन - आगरा, , पृष्ठ - 415
2. आधुनिक भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृति इतिहास - डॉ. ए. के. मित्तल (1707से1950) साहित्य भवन पब्लिकेशन - आगरा, , पृष्ठ - 415
3. आधुनिक भारत - विपिन चन्द्र, पृष्ठ - 199
4. आधुनिक भारत - विपिन चन्द्र, पृष्ठ - 199
5. आधुनिक भारत - विपिन चन्द्र, पृष्ठ - 199
6. आधुनिक भारत - विपिन चन्द्र, पृष्ठ - 199

19 मार्च 1919 ई0 को एक खिलाफत कमेटी का निर्माण बम्बई में की जिसकी कमान कुछ प्रमुख मुसलिम व्यवसायियों ने हाथ में थी।[1]

21 सितम्बर 1919 ई0 को लखनऊ में एक सम्मलेन आयोजित किया गया जिसमें अखिल भारतीय खिलाफत समिति का निर्माण किया गया जिसके अध्यक्ष सेठ छोटानी तथा मंत्री मौलाना शौकत अली नियुक्त किए गए।[2] जहाँ 17 अक्टूबर 1919 ई0 को खिलाफत दिवस के रूप में मनाने का निश्चय किया। नवम्बर 1919 ई. में दूसरा सम्मेलन दिल्ली में हुआ जिसमें गांधीजी, मोतीलाल नेहरू तथा मदनमोहन मालवीय ने भाग लिया और गांधी जी को इस सभा का सभापति चुना गया।[3]

लोकमान्य तिलक और महात्मा गांधी सहित तमाम कांग्रेसी नेताओं ने भी खिलाफत आन्दोलन को हिन्दू-मुसलमान एकता स्थापित करने का मुसलमान जनता को राष्ट्रीय आन्दोलन में लाने का सुनहरा अवसर जाना।

जून 1920ई0 में इलाहाबाद में सभी दलों का एक सम्मेलन हुआ जिसमें स्कूलों, कालेजों और अदालतों के बहिष्कार का एक कार्यक्रम किया गया।[4] ऐसे समय में जव सम्पूर्ण भारत में हिन्दू - मुसलमान एकता प्रबल हो चली थी, कांग्रेस के नेता आन्दोलन का नेतृत्व कर रहे थे। उसी समय ललितपुर का हिन्दू एवं मुस्लिम सम्प्रदाय एक दूसरे के वैमनस्य को त्यागकर अंग्रेजों के विरुद्ध हो चले थे। जिस समय श्री नन्दकिशोर किलेदार जी के नेतृत्व में विरोध रैली निकाली गयी उसमें सभी वर्ग के लोगों ने भाग लिया।[5] और अंग्रेजों को अपनी एकता का सबूत प्रस्तुत किया। चूँकि इस समय तक श्री किलेदार जी एक प्रतिष्ठित कांग्रेसी नेता स्थापित हो चुके थे और जिला झांसी होने के कारण वह सारी सूचनाएँ झांसी से प्राप्त करते और उनको ललितपुर क्षेत्र में क्रियान्वित करते थे।

---

1. आधुनिक भारत का इतिहास - रामलखन शुक्ल, पृष्ठ - 480
2. आधुनिक भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृति इतिहास - डॉ. ए. के. मित्तल (1707से1950) साहित्य भवन पब्लिकेशन - आगरा, , पृष्ठ - 480
3. आधुनिक भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृति इतिहास - डॉ. ए. के. मित्तल (1707से1950) साहित्य भवन पब्लिकेशन - आगरा, , पृष्ठ - 480
4. आधुनिक भारत - विपिन चन्द्र, पृष्ठ - 199
5. व्यक्तिगत साक्षात्कार - पं. नन्दकिशोर किलेदार के पुत्र सेनानी पं. बृजनन्दन किलेदार प्रत्यक्ष दर्शी

(3) असहयोग आन्दोलन का प्रारम्भ तथा ललितपुर के लोगों का सहयोग

जून 1920 ई0 में इलाहाबाद में प्रमुख कांग्रेसी नेताओं के साथ खिलाफत कमेटी की बैठक हुई और मोतीलाल नेहरू, लाजपतराय और चितरंजन दास के विरोध के बावजूद खिलाफत के प्रश्न पर असहयोग आन्दोलन प्रारम्भ करने का निश्चय किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए एक उप समिति की स्थापना की गई जिसके अध्यक्ष गांधी जी थे।[1]

सितम्बर 1920 ई. में लाला लाजपतराय की अध्यक्षता में कांग्रेस के कलकत्ता विशेष अधिवेशन में गाँधी जी ने प्रसिद्ध असहयोग प्रस्ताव प्रस्तुत किया जो 804 के विरुद्ध 1826 मतों से पारित हो गया। असहयोग आन्दोलन के उद्देश्य के दो स्वरूप थे – (i) रचनात्मक (ii) नकारात्मक। पहले के अन्तगर्त स्वदेशी बस्तुओं को प्रोत्साहन, 20 लाख चरखों का वितरण, स्वयं सेवकों की संख्या बढ़ाना तथा तिलक कोष के अन्तगर्त एक करोड़ रू. की राशि एकत्र करना था।[3] नकारात्मक स्वरूप के अन्तगर्त अनेक बस्तुओं का बहिष्कार करना था, जो प्रमुख निम्नलिखित थी।

1. सरकार से प्राप्त उपाधियों एवं अवैतनिक पदों का त्याग।
2. सरकारी समारोहों में सम्मिलित न होना।
3. सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों का त्याग व राष्ट्रीय महाविद्यालयों की स्थापना करना।
4. अंग्रेजी न्यायालयों का वकीलों द्वारा बहिष्कार तथा राष्ट्रीय पंचायतों की स्थापना करना।
5. विदेशी बस्तुओं का बहिष्कार
6. मद्य निषेध

विदेशी बस्तुओं का बहिष्कार को व्यावहारिक बनाने के लिए प्रस्ताव में राय दी गई थी कि लोग स्वदेशी बस्त्रों का प्रयोग करें और प्रत्येक घर में चरखे और

---

1. आधुनिक भारत का इतिहास -- रामलखन शुक्ल, पृष्ठ – 480
2. आधुनिक भारत का इतिहास – रामलखन शुक्ल, पृष्ठ – 480
3. आधुनिक भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृति इतिहास – डॉ. ए. के. मित्तल (1707से1950) साहित्य भवन पब्लिकेशन – आगरा, , पृष्ठ – 416

खादी का प्रयोग करें।[1]

विदेशी कपड़ों का बहिष्कार होने पर स्वदेशी मिलों का कपड़ा काफी न होगा, इसलिए हाथ की कताई बुनाई को बढ़ावा देने का निश्चय हुआ। गांधी जी का बनाया हुआ नया संविधान जो अधिकतर भाषानुसार प्रान्तों के आधार पर बनाया गया था स्वीकार किया गया।[2]

नये संविधान से कांग्रेस जनता की देश व्यापी संस्था बनने लगी। कांग्रेस की पुकार पर सरकारी स्कूल कालेजों के विद्यार्थी अपने – अपने विद्यालय छोड़ने लगे और राष्ट्रीय शिक्षण संस्थाओं – काशी विद्यापीठ, बिहार विद्यापीठ, राष्ट्रीय कॉलेज, लाहौर, जामियां मिलिया इस्मालिया दिल्ली तथा अलीगढ़ विश्वविद्यालय की स्थापना की गई। अदालतें खाली होने लगी। अनेक महान नेताओं, मोतीलाल नेहरू, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, जवाहरलाल नेहरू, सी. आर. दास, वल्लभ भाई पटेल आदि ने अंग्रेजी न्यायालयों में वकालत करना छोड़ दिया। सुभाषचन्द्र बोस ने आई. सी. एस. से इस्तीफा दे दिया। विधान सभाओं में कांग्रेसी नहीं गये। कार्यक्रम पर अमल करते हुये गांधी जी ने कैसर हिन्द पदक, जुलू युद्ध पदक व बोअर पदक लौटा दिए।

महात्मा गांधी जी ने सम्पूर्ण भारत का दौरा किया। स्थान-स्थान पर सभाएं हुई जिसमें आन्दोलन की प्रगति को देखकर गांधी जी ने दृढ़ शब्दों में यह घोषणा की कि 31 दिसम्बर 1921 ई0 तक भारत को स्वराज्य प्राप्त हो जायेगा।[3] महात्मा गांधी और उनके सत्याग्रह की मार्मिक मीमांसा 24 जनवरी 1920 के कर्मवीर साप्ताहिक समाचार पत्र के दूसरे अंक में की गयी थी इसके संपादक पं. माखनलाल चतुर्वेदी थे। चतुर्वेदी जी ने महात्मा गांधी और सत्याग्रह शीर्षक अग्रलेख में लिखा कि सत्याग्रह निष्क्रिय विरोध का नाम नहीं दोनों में पूर्व और पश्चिम का सा विरोध है। विरोध वे करते हैं जो कमजोर है, सत्याग्रह वह करता है जो बलवान है। इसका उपयोग करते समय शक्ति का जरा भी उपयोग नहीं करना पड़ता है।[4]

---

1. कांग्रेस का इतिहास भाग – 3, पट्टभिसीतारम्मैया, पृष्ठ – 54
2. इतिहास प्रवेश– विद्यालंकार जयचन्द्र, पृष्ठ – 744
3. आधुनिक भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृति इतिहास – डॉ. ए. के. मित्तल (1707से1950) साहित्य भवन पब्लिकेशन – आगरा, , पृष्ठ – 417
4. हिन्दी पत्रकारिता और राष्ट्रीय आन्दोलन – डॉ. पद्यामाकार पाण्डेय, पृष्ठ – 15

राष्ट्रीय आन्दोलन में जन साधारण के भाग लेने का एक प्रमुख कारण गांधी जी का नेतृत्व तो था ही साथ ही इसके कई अन्य कारण भी थे। ब्रिटिश सरकार ने युद्ध में बहुत धन व्यय किया था इससे भारतीयों की आर्थिक दशा पहले से भी अधिक खराब हो गयी।

इनफ्लुएंजा के रोग के व्यापक रूप से फैलने से बहुत से लोगों को अपनी जान भी खोनी पड़ी। महायुद्ध की समाप्ति पर संसार के अनेकों देशों में राष्ट्रीयता की भावना उत्पन्न हो गई थी। महायुद्ध के कारण यूरोप में तीन देशों के निरंकुश शासन की समाप्ति हो गयी। जर्मनी में होनेनजोर्खन वंश, आस्ट्रिया में हेब्सवर्ग वंश और रूस में रोमनोव वंश का शासन समाप्त हो गया। इन निरंकुश शासन व्यवस्थाओं की समाप्ति का संसार के राजनीतिक वातावरण पर अच्छा प्रभाव पड़ा रूस की क्रॉति के फलस्वरूप उस देश में समाजवाद का विकास हुआ।[1]

मांटेग्यू चेक्सफोर्ड सुधारों की योजना सन् 1919 ई0 के गवर्नमेन्ट ऑफ इण्डिया एक्ट के रूप में आयी। इसमें केन्द्रीय और प्रान्तीय सरकारों के अधिकारों का स्पष्ट रूप से अलग - अलग विवेचन किया गया। केन्द्र के विधान मण्डल में अब दो सदन रखे गये, जिनमें चुने हुए प्रतिनिधियों का बहुमत रखा गया, किन्तु मतदान का अधिकार बहुत सीमित था और विधान मण्डल के हाथ में कोई शक्ति नहीं थी। विधान परिषद में चुने हुए सदस्यों का बहुमत था। मतदान का अधिकार सम्पत्ति रखने वाले व्यक्ति को ही था और निर्वाचन क्षेत्र साम्प्रदायिक आधार पर निर्धारित थे। कुछ प्रान्तीय विषय विधान परिषदों के आधीन रखे गये, किन्तु राज्यपालों को हस्तक्षेप करने का बहुत व्यापक अधिकार दिये गये थे इस प्रकार विधान मण्डल वास्तव में शक्तिहीन थे।[2] ये सुधार भारतीय जनता की स्वराज्य की मांग को सन्तुष्ट करने की दिशा में सर्वथा निष्फल हुए।

कांग्रेस और मुस्लिम लीग दोनों ने ही इन सुधारों की कटु आलोचना की। इन सुधारों की घोषणा से जनता में अधिक रोष फैल गया और अधिकतर राजनीतिक दलों ने इन्हें पूर्णतय असंतोषजनक बतलाया।[3]

---

1. भारतीय राजनीति - रामगोपाल, पृष्ठ - 285
2. भारतीय इतिहास कोष - सच्चिदानन्द भट्टाचार्य, पृष्ठ - 357 - 58
3. भारतीय इतिहास कोष - सच्चिदानन्द भट्टाचार्य, पृष्ठ - 285

महायुद्ध में तुर्की की हार हुई और विजेता राष्ट्रों ने 10 अगस्त 1920 ई० को सीवर्स की संधि के तहत उसका विभाजन कर डाला। इस कारण भारतीय मुसलमानों में वहुत रोष फैला और उनमें ब्रिटिश सरकार के प्रति विरोध की भावना व्यापक रूप में फैल गई। ब्रिटिश सरकार ने दमन चक्र फिर चलाया। सन् 1919ई. में 'रौलट एक्ट' पास किया गया। इसके अन्तर्गत सरकार को बिना मुकदमा चलाये किसी भी व्यक्ति को कारागार में डालने का अधिकार मिल गया। रौलट एक्ट से जन साधारण में रोष की भावना फैल गई। इस कारण जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड हुआ[1]

उपरोक्त कारणों से महात्मा गांधी को असहयोगी होना पड़ा तथा अपने नेतृत्व में असहयोग आन्दोलन चलाया। उधर महायुद्ध की समाप्ति पर साथी राष्ट्रों ने तुर्की के साथ जो अन्याय किया था, उस पर रोष प्रकट करने के लिए मुहम्मद अली और शौकत अली नाम के दो भाइयों ने खिलाफत आन्दोलन का संगठन किया।[2]

वस्तुतः इस आन्दोलन के साथ मुस्लिम जनता पूर्ण रूप से राष्ट्रीय आन्दोलन में कूद पड़ी। कांग्रेस के नेता भी खिलाफत आन्दोलन में सम्मिलित हुए और उन्होंने सारे देश में इसको संगठित करने में मुस्लिम नेताओं को सहायता दी। सन् 1920 ई0 में कांग्रेस ने अंहिसात्मक असहयोग आन्दोलन का कार्यक्रम निर्धारित किया। असहयोग के अभियान को सुचारु रूप से चलाने के लिए कांग्रेस ने 1,50,000 स्वयं सेवक भर्ती करने का निश्चय किया था।

असहयोग आन्दोलन सफल हुआ हिन्दुओं और मुसलमानों ने कंधा से कंधा मिलाकर इस आन्दोलन में भाग लिया। समस्त भारत में भाईचारें का वातावरण दिखाई दिया। सिक्खों ने सरकार के पिट्ठू और भ्रष्ठ महन्तों को उनकी शक्तिशाली गद्दियों से उतारने के लिए आन्दोलन चलाया हजारों व्यक्ति स्वयं सेवक बने।

परन्तु जिस समय यह आन्दोलन अपने पूर्ण उग्र रूप में था, ठीक उसी समय गोरखपुर जिले के चौरी-चौरा नामक स्थान पर क्रुद्ध भीड़ ने 5 फरवरी 1922 ई0 को एक थानेदार व 21 पुलिसकर्मियों को थाने में बन्द कर जीवित जला दिया।[3] इस

---

1. ए हिस्ट्री ऑफ इण्डिया भाग - 2, पर्सीवल स्पीयर, पृष्ठ - 199
2. आधुनिक भारत - विपिन चन्द्र, पृष्ठ - 198
3. आधुनिक भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृति इतिहास - डॉ. ए. के. मित्तल (1707से1950) साहित्य भवन पब्लिकेशन - आगरा, , पृष्ठ - 480

घटना से गाँधी जी को मार्मिक क्लेश हुआ और उन्होने इसे ईश्वर की ओर से चेतावनी समझा। उन्होंने तुरन्त समस्त आन्दोलन को स्थगित करने का निश्चय किया। गाँधी जी ने 12 फरवरी 1922 ई० को बारदोली में कांग्रेसी कार्यसमिति की बैठक बुलाकर, यह निर्णय लिया कि असहयोग आन्दोलन को स्थगित कर देना चाहिए। इस प्रकार असहयोग आन्दोलन सर्वोच्च शिखर पर पहुँचकर अचानक समाप्त हो गया।

असहयोग आन्दोलन में बुन्देलखण्ड क्षेत्र से ललितपुर ने भी अपनी भागीदारी दी। बुन्देलखण्ड में सर्वप्रथम झांसी में 1916 ई. में एक संयुक्त प्रान्त राजनैतिक कॉफ्रेन्स का आयोजन किया गया था, जिसके स्वागताध्यक्ष सी. वाई. चिन्तामणि थे। बाद में सी. वाई. चिन्तामणि और श्यामाचरण घोष ने 1919 ई. के अमृतसर में कॉग्रेस अधिवेशन में भी भाग लिया।[1] इस कॉफ्रेन्स में अन्य जिलों के भी कॉग्रेस विचारधारा के लोग एकत्रित हुए थे चूकि ललितपुर झांसी जिले का अंग था उस समय ललितपुर क्षेत्र से भी श्री किलेदार, गुलई तिवारी तथा चिन्तामणि कांग्रेसी विचारधारा से जुड़ चुके थे, श्री किलेदार तो 1892 ई0 के इलाहाबाद अधिवेशन में भी गये थे। दिसम्बर 1919 ई. को गांधी जी के असहयोग आन्दोलन के आह्वान पर समस्त बुन्देलखण्ड में इसकी प्रतिक्रिया आरम्भ हो गई थी। इसमें बुन्देलखण्ड के सभी जिले प्रभावित हुए झांसी जिले की जनता में असहयोग आन्दोलन की तीव्र प्रतिक्रिया हुई, ललितपुर क्षेत्र से इस आन्दोलन में श्री नंदकिशोर किलेदार, श्री गुलई तिवारी, हरिचन्दी साहू एवं चिन्तामणि (महरौनी) की प्रमुख भूमिका रही।[2] श्री नन्दकिशोर जी किलेदार के सम्बन्ध आत्माराम गोविन्द खैर (झांसी) कुंजबिहारी लाल शिवानी (झांसी) भगवत नारायण भार्गव, कृष्णगोपाल शर्मा, कालका प्रसाद अग्रवाल (वकील) मु0 शेर खाँ, खुदाबख्श आदि जैसे क्रांतिकारी सेनानियों से थे।[3]

ललितपुर क्षेत्र की जनता ने भी सत्याग्रहों व आन्दोलनों में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान किया।

महरौनी तहसील में चिन्तामणि के नेतृत्व में जनता ने भागीदारी दी जबकि ललितपुर नगर में किलेदार, गुलई तिवारी व हरचन्दी साहू के नेतृत्व में जनता का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ।

---

1. झांसी गजेटियर, 1965, ई. बी. जोशी, पृष्ठ – 72
2. रजत नीराजना – सं. डॉ. परशुराम शुक्ल विरही
3. (1) व्यक्तिगत साक्षात्कार – श्री किलेदार के पुत्र बृजनन्दन किलेदार
   (2) हिन्दी साप्ताहिक मध्य प्रदेश, 10 से 23 अगस्त 1997, पृष्ठ – 4 शीषर्क – क्या कोई फाँसी चढ़ने को तैयार है? देवेन्द्र 'मनोज' पृष्ठ – 6

(4) स्वदेशी का प्रसार एवं विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार

असहयोग आन्दोलन के प्रस्ताव की एक प्रमुख शर्त स्वदेशी वस्तुओं की अपनाना तथा विदेशी बस्तुओं का बहिष्कार करना था। इस शर्त को स्वदेशी प्रसाद आन्दोलन कहा गया। इस का प्रभाव सम्पूर्ण देश पर हुआ। स्वयं सेवकों ने घर-घर जाकर इसका प्रचार किया। विदेशी वस्तुएं बेचने वाली दुकानों पर घरना दिया गया। एवं विदेशी वस्तुओं की होली जलाई गई।

यह आन्दोलन अनेक नगर, गाँव एवं कस्बों में चलाया गया। ललितपुर नगर में विदेशी कपड़ों की होली पुरानी कोतवाली के सामने किलेदार जी के नेतृत्व में जलाई गई।[1]

इस आन्दोलन में गुलई तिवारी, प्यारेलाल ढीमर व हरिचन्दी तेली सहित जनता ने भी भाग लिया। किलेदार अपने साथियों सहित बन्दी बना लिये गये एवं सभी को छः - छः माह की सजा हुयी।[2]

इस प्रकार देशव्यापी आन्दोलन ने यह स्पष्ट कर दिया कि जनता अव और अत्याचार सहन नहीं करेगी।

गांधी जी इस आन्दोलन के द्वारा भारत की जनता को स्वराज्य प्राप्ति के लिए एक सूत्र में बांधने में सफल रहे, जनता द्वारा बृहत स्तर पर इस आन्दोलन में भाग लिए जाने के कारण जनता के मन से आन्दोलन करने व सजा से डरने का भय निकल गया।

(5) श्री नन्दकिशोर जी किलेदार की सक्रिय भागीदारी

ललितपुर सब डिवीजन में राष्ट्रीय आन्दोलन का श्री गणेश स्वं. पं. श्री नन्दकिशोर जी किलेदार ने ही किया था। किलेदार जी ने सन् 1904 ई0 में इलाहाबाद जाकर कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण की थी।[3] इसके बाद कांग्रेस के सभी कार्यक्रम की सूचना किलेदार जी तक सहज ही आ जाती थी। जब सन् 1920 ई0 में महात्मा गांधी जी के नेतृत्व में असहयोग

---

1. व्यक्तिगत साक्षात्कार - श्री किलेदार के पुत्र बृजनन्दन किलेदार
2. सामाजिक दायरा, डॉ. कृष्णानन्द हुण्डैत, पृष्ठ - 10
3. (1) व्यक्तिगत साक्षात्कार - श्री किलेदार के पुत्र बृजनन्दन किलेदार
   (2) हिन्दी साप्ताहिक मध्य प्रदेश, 10 से 23 अगस्त 1997
   शीर्षक - क्या कोई फांसी चढ़ने को तैयार है? - देवेन्द्र 'मनोज' पृष्ठ - 4-6
   (3) दैनिक जनप्रिय 11जनवरी 1999, पं. बृजनन्दन किलेदार की मुलाकात-राहुल सिंघई

आन्दोलन प्रारम्भ किया गया तब असहयोग आन्दोलन को 1920 ई. में इस क्षेत्र में व्या.पक बनाकर आपने नेतृत्व सम्भाला[1] और असहयोग आन्दोलन के प्रस्ताव में निहित उद्देश्यों पर अमल किया आप जो कि स्वयं एक जमीदार थे अंग्रेजो के साथ असहयोग का व्यवहार करना आरम्भ कर दिया। जनता को स्वदेशी वस्तुओं को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया तथा विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार को उकसाया और अपने साथ गुलई तिवारी जी व हरिचन्दी साहू को भी आर्कषित करके इस आन्दोलन को गति प्रदान की। आपने एक जुलूस निकाला और अपने असहयोग का परिचय अंग्रेज अफसरों को दे दिया। सैतीसवां कांग्रेस अधिवेशन 1921 ई0 में अहमदाबाद में हुआ जिसमें आपने भाग लिया।[2] इस अधिवेशन के अध्यक्ष हकीम अजमल खॉ थे[3] अध्यक्ष पद के लिए चुनाव चितरंजन दास का हुआ था परन्तु वह उस समय जेल में थे इसलिए अध्यक्षता अजमल खॉ ने की।

श्री किलेदार जी असहयोग आन्दोलन को ललितपुर सब डिवीजन में जारी रखे रहे। जब पं. नन्दकिशोर किलेदार को कांग्रेस कमेटी के द्वारा 17 नवम्बर 1921ई. को प्रिंस ऑफ वेल्स की भारत यात्रा के विरोध में पूरे भारत में हड़ताल के आयोजन का समाचार प्राप्त हुआ तो उस समय आप ने विरोध प्रर्दशित किया था। इस समय सरकार ने कुद्ध होकर कांग्रेस दल एवं खिलाफत कमेटी को गैर कानूनी घोषित कर दिया था तथा सार्वजनिक सभाओं पर प्रतिबन्ध लगा दिया था।[4]

31 जुलाई 1920 को जब लोकमान्य तिलक का देहावसान हो गया तब उनकी शव यात्रा ललितपुर सब डिवीजन में निकाली गयी और उसमें अपने भाग लिया तथा अपना नेतृत्व प्रदान किया एवं तिलक कोष के लिए धनराशि एकत्र की थी।[5]

---

1. (1) व्यक्तिगत साक्षात्कार - श्री किलेदार के पुत्र बृजनन्दन किलेदार
   (2) हिन्दी साप्ताहिक मध्य प्रदेश, 10 से 23 अगस्त 1997
   शीर्षक - क्या कोई फांसी चढ़ने को तैयार है? देवेन्द्र 'मनोज' पृष्ठ - 4-6
   (3) दैनिक जनप्रिय 11जनवरी 1999, पं. बृजनन्दन किलेदार की मुलाकात-राहुल सिंघई
2. (1) सामाजिक दायरा - लोख - डॉ. कृष्णानन्द हुण्डैत, पृष्ण - 10
   (2) व्यक्तिगत साक्षात्कार - उनके पुत्र सेनानी वृजनन्दन किलेदार
3. आधुनिक भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृति इतिहास (1707से1950)-डॉ. ए. के. मित्तल साहित्य भवन पब्लिकेशन - आगरा, , पृष्ठ - 417
4. आधुनिक भारत - विपिन चन्द, पृष्ठ - 202
5. सामाजिक दायरा - लेख - डॉ. कृष्णानन्द हुण्डैत, पृष्ठ - 10

अन्त में आपकी गतिविधियों से अंग्रेज सरकार ने परेशान होकर साथियों सहित किलेदार जी को गिरफ्तार कर लिया और छः माह की सजा सुनायी। सन् 1921 ई0 में ही श्री नन्दकिशोर किलेदार की माफी की जमीन जो ललितपुर में स्थित थी उसे जब्त कर लिया गया। किन्तु कुछ ही दिनों के उपरान्त गवर्नर ने इस निर्देश के साथ की माफी जब्द करना नियम संगत नहीं है इसलिए उनकी माफी लौटाने के आदेश दिये।[1]

अब तक असहयोग आन्दोलन 5 फरवरी 1922 की चौरी-चौरा की घट्ना से समाप्त हो चुका था और सम्पूर्ण भारत में गतिविधियां मन्द पड़ चुकी थी।

(6) श्री गुलई तिवारी की सक्रियता

पं श्री गुलाबराय तिवारी उर्फ गुलई तिवारी का जन्म ललितपुर में हुआ था।[2] आपने स्वतंत्रता संग्राम के राष्ट्रीय आन्दोलन में अंग्रणी भूमिका ललितपुर सब डिवीजन क्षेत्र से निभाई। सन् 1920 के असहयोग आन्दोलन में गांधी जी के आह्वान पर आप ललितपुर में राष्ट्र ध्वज लेकर निकल पड़े थे।[3]

श्री गुलाबराय तिवारी अपने साथी पं. नन्दकिशोर किलेदार एवं हरचन्दी तेली के साथ जन सामान्य में लोकमान्य तिलक के आन्दोलन से सम्बन्धित गतिविधियों का प्रचार करते थे। सन् 1919 ई. जलियांवाला बाग के विरोध में श्री तिवारी व किलेदार के सहयोग से हड़ताल का आयोजन किया गया था।[4] लोकमान्य तिलक की मृत्यु के 13 जुलाई 1920 ई0 को हो जाने पर पं. गुलबराय तिवारी ने उनकी शव यात्रा निकाली।[5] शव के प्रतीक स्वरूप जन समूह के साथ श्री किलेदार जी के नेतृत्व में शव यात्रा सीतापाठ नामक (गोविन्द सागर वॉध) स्थान पर समाप्त करके तिलक की ऊर्द दैहिक संस्कार के प्रतीक रूप में शवदाह किया गया यहां तक कि पं. श्री गुलाबराय उर्फ गुलई तिवारी ने अपनी दाडी मूंछे एवं सिर के बाल भी मुड़वा दिये तथा

1. सामाजिक दायरा - लेख - डॉ. कृष्णानन्द हुण्डैत, पृष्ठ - 10
2. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक (झांसी डिवीजन) सम्पादक - एस. पी. भट्टाचार्य, पृष्ठ - 58
   (2) ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका - 1998, पृष्ठ - 93
   (3) रजत नीराजना - सं. डॉ. परशुराम शुक्ल 'विरही' पृष्ठ - 102
3. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक (झांसी डिवीजन) सम्पादक - एस. पी. भट्टाचार्य, पृष्ठ - 58
4. सामाजिक दायरा - लेख - डॉ. कृष्णानन्द हुण्डैत, पृष्ठ - 10
5. सामाजिक दायरा - लेख - डॉ. कृष्णानन्द हुण्डैत, पृष्ठ - 10

धूमधाम से तेरहबी के भोज का आयोजन करके ब्राह्मण भोज कराया था।[1]

पं. श्री गुलई तिवारी वैंक्टेश्वर एवं केशरी पत्र (जो श्री किलेदार जी के घर पर आते थे) में प्रकाशित समाचारों से जन समूह को आकर्षित करते थे तथा आगे की योजनाओं की रूपरेखा बनाया करते थे।

असहयोग आन्दोलन के समय जब आप राष्ट्र ध्वज लेकर निकले उस समय जन समूह आपके साथ हो चला था क्योंकि आपने पहले से ही जनता में बौद्धिक एवं राजनैतिक चेतना जाग्रत कर दी थी। श्री तिवारी अपने साथियों सहित गिरफ्तार कर लिये गये थे. और 1921 ई. में आप को 6 माह का कारावास दिया गया।[2]

आपकी कांग्रेस के कार्यक्रमों में गहरी आस्था थी, कांग्रेस द्वारा संचालित सभी गतिविधियों को आप ललितपुर सव डिवीजन में क्रियान्वित करते थे। आप जिला कांग्रेस कमेटी के कार्यालय झांसी से भी जुड़े थे। झांसी नगर के क्रांतिकारियों से भी आपके गहरे सम्बन्ध थे।[3]

(7) श्री चिन्तामणि (महरौनी) का प्रेरक नेतृत्व

आजादी के लिए जब सम्पूर्ण राष्ट्र गॉंधी जी ने नेतृत्व में 1920 ई0 में असहयोग आन्दोलन में बढ़ चढ़ कर हिस्सा ले रहा था उसी समय ललितपुर सव डिवीजन की महरौनी तहसील में श्री चिन्तामणि के नेतृत्व में असहयोग आन्दोलन ने तीव्र गति पकड़ी थीं जब 1921 ई0 में राष्ट्र ध्वज हाथ में लेकर श्री चिन्तामणि निकले पड़े[4] तब जन समूह अंग्रेजों के भय को नकारते हुये उनके साथ हो लिये था। जिस समय पूरे राष्ट्र में स्वदेशी आन्दोलन एवं बहिष्कार आन्दोलन तीव्र गति से चल रहा था उसी समय श्री चिन्तामणि ने इसे महरौनी में क्रियान्वित किया था।[5] जब ललितपुर नगर में श्री नन्दकिशोर किलेदार, पं. गुलई तिवारी व हरचन्दी तेली

---

1. (1) सामाजिक दायरा - लेख - डॉ. कृष्णानन्द हुण्डैत, पृष्ठ - 10
   (2) व्यक्तिगत साक्षात्कार - पं. वृजनन्दन किलेदार
2. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक , पृष्ठ - 58
   (2) रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल 'विरही' पृष्ठ -
3. व्यक्तिगत साक्षात्कार - पं. बृजनन्दन जी किलेदार एवं डॉ. पं. कृष्णानन्द हुण्डैट
4. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल 'विरही' पृष्ठ - 2
5. व्यक्तिगत साक्षात्कार - सेनानी पं. बृजनन्दन जी किलेदार

असहयोग आन्दोलन जारी रखे थे तभी चिन्तामणि ने महरौनी में इसे गति प्रदान की थी। श्री चिन्तामणि का ललितपुर नगर के सभी आन्दोलनकारियों से निकट के सम्वन्ध थे और श्री किलेदार के घर पर आन्दोलन की रणनीति बनाई जाती थी।[1] क्योंकि श्री किलेदार के पास कांग्रेस की सारी गतिविधियों की सूचना आती थी।

श्री चिन्तामणि ने अपना प्रचार क्षेत्र गांव की अशिक्षित जनता को वनाया वह गाँव - गाँव जाकर लोगों को समझाते थे कि विदेशी वस्तुओं को खरीदना वन्द करो स्वदेशी वस्तुओं को अपनाओं यह अंग्रेज हम सभी को लूट रहे हैं। इनकों अपन सव लोगों को यहां से भगाने हैं यह तभी भगेंगे जब हम सभी इनके साथ असहयोग का व्यवहार करें। इसलिए श्री चिन्तामणि गाँव - गाँव के प्रिय नेता बन गये और उनके एक आह्वान पर जनता सड़कों पर उतर आती थी। अतः श्री चिन्तामणि ने महरौनी तहसील में असयोग आन्दोलन को क्रियान्वित करके उसे गति प्रदान की थी।

(8) श्री हरिचन्दी तेली की भागीदारी

प्रथम असहयोग आन्दोलन में जब देश - भक्त वकील अदालतें छोड़ रहे थे, देश - प्रेमी सरकारी कर्मचारी अपनी नौकरियां छोड़ रहे थे, विद्यार्थी स्कूल-कॉजेल का वहिष्कार कर रहे थे, सरकारी अलकारणों और अवैतनिक पदों को लोग त्याग रहे थे, विदेशी माल की होली जला रहे थे उस समय ललितपुर क्षेत्र ने भी अपनी राजनैतिक कर्त्तव्य का निर्वाह किया और अपनी राष्ट्रीय चेतना को प्रभाणित किया।

सन् 1920-21ई. के असहयोग आन्दोलन में श्री गुलई तिवारी जी के साथ श्री हरिचन्दी तेली भी राष्ट्रध्वज लेकर निकल पड़े थे।[2] श्री हरिचन्दी तेली बन्दी बना लिये गये थे। उनके साथी असहयोग आन्दोलन के प्रमुख नेतृत्वी श्री नन्दकिशोर किलेदार, श्री गुलई तिवारी, श्री प्यारेलाल ढीमर तथा कुछ अन्य साथी जिन्होंने भाग लिया था सभी गिरफ्तार किये गये और सभी को छः-छः माह की सजा मिली।[3]

---

1. व्यक्तिगत साक्षात्कार - सेनानी पं. बृजनन्दन जी किलेदार
2. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक - एस. पी. भट्टाचार्य, पृष्ठ - 90
   (2) रजत नीराजना - सं. - डॉ. परशुराम शुक्ल 'विरही', पृष्ठ - 20
3. सामाजिक दायरा - लेख - डॉ. कृष्णानन्द हुण्डैत, पृष्ठ - 10

श्री हरिचन्दी तेली पं. नन्दकिशोर किलेदार एवं पं. श्री गुलई तिवारी के प्रमुख सहयोगी थे। श्री हरिचन्दी तेली जी श्री किलेदार जी को ही अपना गुरु मानते थे। और उनके बताये रास्ते पर ही चलते थे। बहिष्कार आन्दोलन में भी श्री तेली जी ने भाग लिया था।[1] समाचार पत्रों में प्रकाशित समाचार को भी श्री तेली जी जनसमूह में गुप्त रूप से प्रसारित करते थे।

श्री हरिचन्दी तेली, पं. किलेदार व गुलई तिवारी की आजादी की सेना के सेनानायक कहे जाते थे।

(9) दमन और गिरफ्तारी

गांधी जी के आह्वान पर कांग्रेस पार्टी द्वारा चलाया गया अहिंसात्मक असहयोग आन्दोलन पूरे जोश एवं सफलता से समस्त भारत में चला जिससे ब्रिटिश सरकार अपंग बन कर रह गई। जुलूस, हड़तालें, प्रदर्शन; विदेशी बस्तुओं का बहिष्कार तथा वकीलों, शिक्षकों व अन्य सरकारी सेवाओं का जनता ने बहिष्कार किया। इन सब बातों से घबराकर और आन्दोलन की तीव्रता को देखते हुए ब्रिटिश सरकार ने आन्दोलन को क्रूरता एवं शक्ति से दबाने की नाकाम कोशिश की। क्योंकि 1919 ई. के प्रारम्भ में ही 'रौलट एक्ट' कानून बना रक्खा था जिसके अन्तर्गत सरकार को बिना मुकदमा चलाये किसी भी व्यक्ति को बन्दी बनाने का अधिकार प्राप्त था।[2] सर्वप्रथम अली बन्धुओं को बन्दी बनाया गया, किन्तु इससे इस आन्दोलन में कोई कमी न आई ठीक इसी समय 17 नवम्बर 1921 ई. को इंग्लैण्ड के युवराज, प्रिंस ऑफ वेल्स भारत आये।[3] जब उन्होंने भारत की भूमि पर कदम रक्खा तो उनका स्वागत भारतीय जनता ने हड़तालों और प्रदर्शनों से किया अनेक स्थानों पर प्रदर्शनकारियों पर गोली चलायी गयी। दमन चक्र चलता रहा दिसम्बर 1921 ई. तक गांधी जी के अतिरिक्त सभी प्रमुख कांग्रेसी नेताओं को जेल में डाल दिया गया। अली बन्धु, मोतीलाल नेहरू, चितरंजनदास, जवाहरलाल नेहरू, सभी को जेलों में बन्द कर दिया गया। तथा 3,000 दूसरे लोग जेलों में बन्द थे।[4] फरवरी 1919ई. में वायसराय ने विदेश सचिव[5] को पत्र लिखा कि "शहरों के निम्न वर्गो पर असहयोग आन्दोलन का गहरा प्रभाव पड़ा है...."

---

1. सामाजिक दायरा - लेख - डॉ. कृष्णानन्द हुण्डैत, पृष्ठ - 10
2. हिस्ट्री ऑफ इण्डिया भाग-2, पर्सीवल स्पीयर, पृष्ठ-120-121
3. आधुनिक भारत - विपिन चन्द्र, पृष्ठ - 202
4. आधुनिक भारत - विपिन चन्द्र, पृष्ठ - 202
5. आधुनिक भारत - विपिन चन्द्र, पृष्ठ - 202-203

.... कुछ क्षेत्रों में खासकर असम घाटी, के कुछ भागों, संयुक्त प्रांत, बिहार, उड़ीसा और वंगाल में किसान भी प्रभावित हुए हैं।''

इधर समस्त बुन्देलखण्ड सहित ललितपुर सब डिवीजन में असहयोग आन्दोलन अपने पूरे वेग से चल रहा था। प्रदर्शन, हड़ताल, जुलूस आदि समस्त बुन्दलेखण्ड में निकाले जा रहे थे। अदालतें, शिक्षण संस्थाओं तथा सरकारी सेवाओं का बहिष्कार जारी था विदेशी कपड़ों एवं अन्य वस्तुओं की होली अनेक नगर ग्रामों एवं कस्बों में जलाई जा रही थी। इन सब को दबाने के लिए सरकार ने गिरफ्तारियां एवं दमन चक्र चालू कर दिया। समस्त बुन्देलखण्ड में 1500 से अधिक व्यक्ति गिरफ्तार किये गये जिसमें ललितपुर सब डिवीजन के श्री नन्दकिशोर किलेदार, पं. श्री गुलई तिवारी, हरिचन्दी तेली, प्यारेलाल ढीमर तथा चिन्तामणि (महरौनी) आदि सम्मिलित है। चूकि ललितपुर सब डिवीजन उस समय झांसी जनपद का एक भाग था। झांसी जनपद में चिरगाँव, मोंठ, ललितपुर आदि अनेक स्थानों पर लोगों ने ब्रिटिश शासन के विरूद्ध जुलूस निकाला एवं अपनी गिरफ्तारी दी।[1]

ललितपुर में अंग्रेजों के दमन चक्र ने श्री नंदकिशोर किलेदार, पं. श्री गुलई तिवारी, हरिचन्दी तेली, श्री चिन्तामणि (महरौनी), प्यारेलाल ढीमर एवं उनके अन्य साथी जिन्होंने कांग्रेस के आन्दोलन में भाग लिया था। सभी को बन्दी बनाया गया और 6 माह की सजा दी गयी। श्री किलेदार जी कि 1921ई0 में माफी की जमीन जब्त कर ली गई थी। बाद में गवर्नर के निर्देश पर माफी की जमीन लौटाने के आदेश दिये गये थे।[2]

चूकि दिसम्बर 1920 में कांग्रेस के नागपुर[3] अधिवेशन में प्रांतीय कांग्रेस कमेटियों का अब भाषायी आधार पर पुनर्गठित किया गया था तथा सदस्यता शुल्क घटाकर चार आने (आज के 25 पैसे) कर दिया गया ताकि निर्धन ग्रामीण और नगर के निर्धन लोग भी इसके सदस्य बन सकें।[4]

ऐसी ही समय में श्री किलेदार व गुलई तिवारी ने अनेक लोगों को कांग्रेस का सदस्य बनाया था।[5] और लोगों ने बढ़-चढ़ कर आन्दोलन में हिस्सा लिया थ। और बन्दी बनाये

1. घासीराम व्यास, मित्र हयारण, पृष्ठ - 20-21
2. सामाजिक दायरा - लेख - डॉ. कृष्णानन्द हुण्डैत, पृष्ठ - 10
3. आधुनिक भारत - विपिन चन्द्र, पृष्ठ - 200
4. आधुनिक भारत - विपिन चन्द्र, पृष्ठ - 200
5. व्यक्तिगत साक्षात्कार - सेनानी पं. बृजनन्दन जी किलेदार

गये थे।

1 फरवरी 1922 को महात्मा गांधी जी ने घोषणा की कि अगर सात दिनों के अन्दर राजनीतिक बन्दी रिहा नहीं किए जाते और प्रेस पर सरकार का नियंत्रण समाप्त नहीं होता तो वे करों की गैर-अदायगी समेत एक सामूहिक नागरिक अवज्ञा आन्दोलन छेड़ेंगे।[1]

परन्तु 5 फरवरी 1922ई0 को चौरी-चौरा घटना घटित हो गई और 12 फरवरी 1922 ई0 को वारदोली में गांधी जी को आन्दोलन स्थगित की घोषणा करनी पड़ी।

जब तक आन्दोलन स्थगित की सूचना ललितपुर में प्राप्त नहीं हुई यहाँ आन्दोलन जारी रखा गया था।

------------------------o O o------------------------

1. आधुनिक भारत - विपिन चन्द्र, पृष्ठ - 203

अध्याय - षष्ठ

स्वतंत्रता आन्दोलन में ललितपुर क्षेत्र के अन्य स्वतंत्रता सेनानी

(सन् 1920 से सन् 1930 तक)

(1) असहयोग आन्दोलन की समाप्ति से उत्पन्न प्रतिक्रिया।

(2) स्वराज्य दल की स्थापना से जनपद में उत्पन्न उत्साह।

(3) श्री नन्दकिशोर जी किलेदार का परिचय एवं जेल यात्रा।

(4) श्री बृजनन्दन जी किलेदार की जेल यात्रा।

(5) अन्य राष्ट्रीय घटनाओं का प्रभाव।

अध्याय - षष्ठ

स्वतंत्रता आन्दोलन में ललितपुर क्षेत्र के अन्य स्वतंत्रता सेनानी (1920 ई० से 1930 ई० तक)

(1) असहयोग आन्दोलन की समाप्ति से उत्पन्न प्रतिक्रिया-

असहयोग आन्दोलन ने तमाम स्थानीय आन्दोलनों को जन्म दिया तथा पहले से चले आ रहे आन्दोलनों को सम्बल प्रदान किया । विधान मण्डलों के चुनावों में लगभग दो-तिहाई मतदाताओं ने मतदान नही किया, शिक्षा संस्थाओं में न विद्यार्थी पहुँचे,न

अध्यापक, काशी विद्यापीठ, विहार विद्यापीठ गुजरात विद्यापीठ जामियां मिलिया जैसी राष्ट्रीय शिक्षा संस्थायें स्थापित हुई । अनेक भारतीयों ने सरकारी नौकरियां छोड दी । विदेशी वस्तुओं का वहिष्कार किया गया । देश भर में हडतालें हुई । जिस समय असहयोग आन्दोलन पूरे वेग पर था और सरकार का दमन चक्र भी पूरे वेग से चल रहा था उसी समय 1921 ई0 में कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन अहमदाबाद में हुआ।[1] इस समय जनता की भावना का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि इस अधिवेशन में बहुत से व्यक्ति केवल स्वराज्य की मांग से संतुष्ठ न थे क्योंकि इस का अर्थ उस समय पूर्ण स्वतंत्रता नहीं समझा जाता था । एक प्रतिष्ठित राष्ट्रीय नेता और उर्दू के प्रसिद्ध कवि मौलाना हसरत मोहानी ने सुझाव रखा कि इस शब्द का अर्थ हर प्रकार के विदेशी नियन्त्रण से मुक्त व पूर्ण स्वतंत्रता समझा जाय।[2]

इस प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया गया, किन्तु इससे यह बात स्पष्ट है कि भारतीय जनता इस समय अपने राजनीतिक आधिकारों के प्रति पूर्णतया जागरूक हो चुकी थी ।

---

1. कांग्रेस का इतिहास भाग - 2 - पट्टाभि सीता रम्मैया
2. भारतीय राजनीति - रामगोपाल पृ0 296

गांधी जी ने 1 फरवरी 1922 ई0 को वायसराय के पास अल्टीमेटम भेजा कि अगर बन्दियों को तुरन्त रिहा न किया गया व दमन चक्र बन्द न किया गया तो नागरिक अवज्ञा आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया जायेगा किन्तु 5 फरवरी 1922 ई0 की चौरी चौरा घटना से गांधीजी ने आन्दोलन को स्थगित करने का निश्चय किया । और 12 फरवरी 1922 ई0 को बारदोली में कांग्रेस की कार्यकारिणी ने इस निश्चय की स्वीकृति दी । समिति ने चरखा प्रचार, हिन्दू-मुस्लिम एकता, और अछूतोद्धार के कार्यक्रमों पर अपनी पूरी शक्ति लगाने का निश्चय किया ।[1]

जब कांग्रेस के उन नेताओं को , जो उस समय जेलों में थे यह पता लगा कि आन्दोलन स्थगित कर दिया गया है, तो उन्हें बहुत दुःख हुआ।

बारदोली के प्रस्ताव ने पूरे देश को सकते में डाल दिया। आश्चर्य चकित राष्ट्रवादियों में इसकी मिली - जुली प्रतिक्रिया हुई । कुछ को तो गांधीजी में पूरी श्रद्धा थी और उन्हें विश्वास था कि आन्दोलन पर यह रोक संघर्ष की गांधीवादी रणनीति का ही एक भाग हैं । परन्तु दूसरों ने खासकर युवक राष्ट्रवादियों ने आन्दोलन रोके जाने के निर्णय का विरोध किया । सुभाषचन्द्र बोस कांग्रेस के एक अत्यन्त लोकप्रिय युवक नेता थे उन्होंने अपनी आत्मकथा "दि इण्डियन स्ट्रगल"[2] में लिखा है कि " जिस समय जनता का उत्साह अपनी चरम सीमा को छूने बाला था, उस समय पीछे हट जाने का आदेश देना राष्ट्रीय अनर्थ से कम नहीं था । महात्मा जी के प्रमुख सहयोगी देशबंधुदास, पं0 मोतीलाल नेहरू और लाला लाजपत राय , जो सब जेलों में थे, भी इस सामूहिक खिन्नता में भागीदार थे । मैं (बोस) उस समय देशबन्धु के साथ था और मैंने देखा कि जिस तरह महात्मा गांधी जी बार - बार गोलमाल कर रहे थे उस पर वे क्रोध और दुःख से आपे से बाहर हो रहे थे ।" जवाहरलाल नेहरू जैसे दूसरे युवक नेताओं ने भी ऐसी ही प्रतिक्रिया व्यक्त की। गांधीजी के इस आदेश से सरकार, जो अब तक गांधी जी को गिरफ्तार करने का साहस न कर सकी थी, अचानक बलशाली हो उठी । स्थिति का पूरा लाभ उठाकर सरकार ने तीखा प्रहार करने का निश्चय किया । उसने 10 मार्च 1922 ई0 को महात्मा गांधी जी को गिरफ्तार

---

1. कांग्रेस का इतिहास - भाग -3 पट्टाभि सीता रमैया
2. आधुनिक भारत - विपिनचन्द पृ0 203
3. आधुनिक भारत - विपिनचन्द पृ0 203

करके उन पर सरकार के प्रति असंतोष भड़काने का आरोप लगाया।[3] और गांधीजी को छः वर्षों की कैद की सजा सुनाई गई ।[1] बाद में खराब स्वास्थ्य के कारण 2 वर्ष पश्चात रिहा कर दिया गया।[2] उन्होंने चरखा प्रचार, अछूतोद्धार और राष्ट्रीय शिक्षा का अपना राष्ट्रीय रचनात्मक कार्यक्रम प्रारम्भ कर दिया, इस कार्यक्रम से कांग्रेस को वल मिला।[3]

असहयोग आन्दोलन का झांसी (मण्डल) में व्यापक असर हुआ, जनता में ब्रिटिश सरकार के प्रति घृणा तथा स्वराज्य की प्राप्ति की भावना जागृत हुई । ललितपुर क्षेत्र में कुछ नागरिकों के अनुसार विदेशी वस्तुओं के प्रति नफरत तथा स्वदेशी वस्तुओं के प्रति आकर्षण उत्पन्न हुआ। खादी, चरखा आदि का व्यापक प्रचार हुआ, हिन्दू मुस्लिम एकता स्थापित हुई । कांग्रेस पार्टी की प्रत्येक नगर कस्बे, गांव में शाखाऐं स्थापित हुयी । स्वयं सेवको की भर्ती आरम्भ की गई । जनता में स्वराज्य के प्रति भावना जागृत हो गई । इन सब के परिणाम स्वरूप आगे चलकर 15 अगस्त 1947 ई॰को स्वतंत्रता प्राप्त हुई।[4] आन्दोलन के स्थगित होने पर ललितपुर क्षेत्र में भी मिली जुली प्रतिक्रिया हुई। एक ओर पं0 नन्दकिशोर किलेदार जो पूर्व गांधीवादी थे उन्होंने इसे गांधीवादी रणनीति का हिस्सा माना।[5]

परन्तु गुलई तिवारी जिनकी लोकमान्य तिलक में गहरी आस्था थी इसका विरोध किया था।[6] गुलई तिवारी उस समय झांसी (मण्डल) के सत्याग्रहीयों के साथ जेल में बन्द थे।[7]

परन्तु राष्ट्रीय एवं स्थानीय नेताओं तथा जनता दोनों की गांधीजी में आस्था थी और वे सार्वजनिक रूपसे उनके आदेश का उल्लंघन नहीं करना चाहते थे । खुलकर विरोध किए बिना उन्होंने फैसले को स्वीकार कर लिया।[8]

---

1. आधुनिक भारत - विपिनचन्द्र पृ0 203
2. आधुनिक भारत का राजनीतिक एवं सांकृतिक इतिहास-डा. ए0 के0 मित्तल, पृ. 419
3. कांग्रेस का इतिहास भाग -3 पट्टभि सीता रमैया
4. व्यक्तिगत साक्षात्कार - पं0 बृजनन्दन किलेदार, पं0 बृजनन्दन शर्मा, आदि
5. व्यक्तिगत साक्षात्कार - पं0 नन्दकिशोर किलेदार के पुत्र सेनानी बृजनन्दन किलेदार से।
6. व्यक्तिगत साक्षात्कार - पं0 नन्दकिशोर किलेदार के पुत्र सेनानी बृजनन्दन किलेदार से।
7. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग-एक (झांसी मण्डल)
   (सूचना विभाग का प्रकाशन 1963 ई0)
8. आधुनिक भारत- विपिनचन्द्र पृ0 203

(2) स्वराज्य दल की स्थापना से जनपद में उत्पन्न उत्साह

1922 ई0 में कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन चितरंजन दास की अध्यक्षता में गया में हुआ,[1] इस अधिवेशन का कांग्रेस के इतिहास में विशिष्ट स्थान है क्योंकि इस अधिवेशन में कांग्रेस के नेताओं के भावी कार्यक्रमों एवं नीतियों को लेकर मतभेद उत्पन्न हो गये। मुख्य मुद्दा विधान परिषदों के बहिष्कार का था जिस पर अन्त में मत विभाजन हुआ । प्रस्ताव के पक्ष में 1740 एवं विरूद्ध 890 मत मिले । चितरंजनदास ने तुरन्त त्याग पत्र देकर कहा "मैं और मेरे साथी विधान परिषदों के बहिष्कार के प्रस्ताव के विरूद्ध है।[2]

इस प्रकार 1923 ई0 के आरम्भ में कांग्रेस दो दलों में बट गयी । एक परिवर्तनवादी तथा दूसरी अपरिवर्तनवादी । चितरंजनदास, पं0 मोतीलाल नेहरू एवं हकीम अजमल खान, जो कि परिवर्तनवादी गुट के थे, उन्होंने स्वराज्य पार्टी अथवा स्वराज्य दल के नाम से इलाहाबाद में मार्च 1923 ई0 में एक अलग दल बनाया।[3]

इन परिवर्तन वादी नेताओं का विचार था कि चुनाव में भाग लेने से कांग्रेस द्वारा जनता का विश्वास पुनः प्राप्त किया जा सकेगा, वरन् सरकार की विधान सभाओं में आलोचना एवं विरोध से जनता में जाग्रति एवं उत्साह बढेगा इसके अतिरिक्त असहयोग के कार्यक्रमों को विधान सभाओं में जाकर सरकारी निरंकुशता को रोकने तथा अवसर वादियों व सरकार के समर्थकों का भी विरोध अधिक सक्षमता से किया जा सकेगा ।

इन नेताओं की योजना यह थी कि 1919 ई0 के सुधार अधिनियम के अर्न्तगत होने वाले 1923 ई0 के आम चुनाव में भाग लिया जाय, ताकि चुने जाने पर विधान सभाओं में जाकर सरकार का विरोध किया जा सके ।[4] अपरिर्वतन वादी कहे जाने वाले सरदार वल्लभ भाई पटेल, डा. अनसारी, बाबू राजेन्द्र प्रसाद तथा दूसरे

---

1. आधुनिक भारत का राजनीतिक एवं सांकृतिक इतिहास-डा0 ए. के. मित्तल पृ0 421
2. भारतीय राजनीति - रामगोपाल पृ0 302
3. आधुनिक भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास - पृ0 421-422
4. आधुनिक भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास - पृ0 421-422

लोगों ने विधान मंडलों में जाने का विरोध किया।[1] उन्होंने चेतावनी दी कि संसदीय राजनीति में भाग लेने से जनता के बीच काम की उपेक्षा होगी, राष्ट्रवादी उत्साह कमजोर पड़ेगा और नेताओं के बीच प्रतिद्वंद्विता पैदा होगी। इसलिए ये लोग चरखा चलाने, चरित्र-निर्माण, हिन्दु-मुसलिम एकता, छुआछूत का खात्मा तथा गांव में और गरीबों के बीच निचले स्तर पर कार्य, जैसे रचनात्मक कार्यो पर जोर देते रहे।[2] उनका कहना था कि इससे देश धीरे - धीरे जन - संघर्ष के एक और दौर से तैयार होगा ।

गांधी जी जो कि अपरिवर्तन वादी थे उन्होंने भी कांग्रेस की बागडोर पं0 मोतीलाल नेहरू के स्वराज्य दल को ही सौप दी और अपने अनुयायियों से रचनात्मक सेवा कार्य तथा खादी प्रचार में लग जाने के लिए कहा।[3]

सन् 1923 ई0 में स्वराज्य दल ने चुनाव में भाग लिया और केन्द्रीय विधान मण्डल, बंगाल, तथा मध्य प्रान्त में स्वराज्यवादियों को स्पष्ट वहुमत प्राप्त हुआ और अन्य प्रान्तों में वह प्रमुख विरोधी दल बन गया । इन चुनावों में केन्द्रीय परिषद में 145 में से 47 स्थान स्वराज्य दल को प्राप्त हुये।[4]

केन्द्रीय परिषद में मोतीलाल नेहरू के सहयोगियों में मदनमोहन मालवीय, विठ्ठलभाई पटेल तथा रामास्वामी आयंगर आदि थे।[5]

ललितपुर क्षेत्र में स्वराज्य दल की स्थापना से खुशी की लहर दौड़ गयी झांसी - ललितपुर जनपद में झांसी से 8 मील दूर बड़ागांव में स्वराज्य दल का कैम्प लगाया गया । इस कैम्प को स्वराज्य आश्रम का नाम दिया गया । इस आश्रम से बाद में 28 कार्यकर्ता बन्दी बनाये गये।[6]

---

1. आधुनिक भारत-विपिनचन्द, पृ0 205
2. आधुनिक भारत-विपिनचन्द, पृ0 205
3. उत्तर प्रदेश में गांधीजी - श्री रामनाथ, पृ0 103
4. आधुनिक भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास-डा0 मित्तल पृ0 423
5. आधुनिक भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास-डा0 मित्तल पृ0 423
6. झांसी गजेटियर 1965 -ई0 वी0 जोशी, पृ0 73

1923 ई0 के चुनाव में स्वराज्य पार्टी को यहां सफलता नहीं मिल सकी। सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड में एक मात्र स्वराज्य पार्टी के विधायक कुं0 हरप्रसादसिंह हमीरपुर से चुने गये थे।[1]

इस प्रकार स्वराज्य पार्टी की स्थापना से जनपद की जनता व नेताओं में उत्साह की लहर तो पैदा हुई परन्तु स्वराज्य पार्टी के प्रत्याशी को विजय अपने क्षेत्र से नहीं दिला सके।

16 जून 1925 ई0 को श्री सी. आर. दास की मृत्यु हो गई[2] जिससे स्वराजियों को भारी क्षति हुई, अन्त में 6 फरवरी 1931 ई0 को पं0 मोतीलाल नेहरू की मृत्यु के साथ स्वराज्य पार्टी समाप्त हो गयी ।

---

1. अनासक्त मनस्वी पृ0 198
2. आधुनिक भारत - विपिनचन्द -पृ0 206

(3) श्री नन्दकिशोर जी किलेदार का परिचय एवं जेल यात्रा

ललितपुर क्षेत्र में स्वतंत्रता आन्दोलन की लौ जगाने वाले पं0 श्री नन्दकिशोर किलेदार जी ही थे। आपका जन्म वैसाख सुदी 14, 1934 वि0 सं0 अर्थात सन 1877 में सेवनी ग्राम में हुआ।[1] सेवनी ग्राम ललितपुर नगर से 4 किलोमीटर दूर है । आपके पिता पं0 श्री सरजू प्रसाद किलेदार जमीदार थे[2] जिनसे विरासत में पं0 नन्दकिशोर जी को जमींदारी प्राप्त हुई थी । पं0 सरजूप्रसाद किलेदार जी के पिता ललनजू किलेदार ने 1857 ई0 के स्वतंत्रता संग्राम में बानपुर नरेश मर्दनसिंह का साथ दिया था[3] 20 वीं0 सदी के प्रारम्भ में पं0 नन्दकिशोर किलेदार जी का मन अंग्रेजी नीतियों से उद्वेलित हो उठा । और किलेदार जी ने सर्वप्रथम कांग्रेस में जुड़कर इलाहाबाद में कांग्रेस का अधिवेशन ज्वाइन किया।[4] फिर लौटकर किलेदार जी ने ललितपुर में कांग्रेस का दायरा फैलाया ।

बंगाल विभाजन का सारे भारत में विरोध हुआ उस समय ललितपुर जनपद में बाहर से समाचार पत्र उपलब्ध होने के कोई साधन नहीं थे । और न ही उच्च शिक्षा की व्यवस्था थी, किन्तु किन्हीं सूत्रों से यह समाचार पाकर (बंगाल विभाजन का) पं0 नन्दकिशोर किलेदार अपने साथी पं0 गुलाबराय तिवारी उर्फ गुलई तिवारी के साथ इसका विरोध करने के लिए व्यापारियों एवं प्रबुद्ध वर्ग को लाने एवं आन्दोलन करने के लिए प्रचार करने लगे। पं. किलेदार जी ने झांसी जाकर पता लगाया कि समाचार पत्र कहां से निकलते हैं तथा उन्हें प्राप्त करने के क्या साधन हैं चूँकि ललितपुर उस समय सब डिवीजन था और

---

1. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ – 65
   (2) व्यक्तिगत साक्षात्कार – पं. नन्दकिशोर किलेदार के पुत्र सेनानी पं. ब्रजनन्दन किलेदार जी से
   (3) रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल 'विरही' पृष्ठ – 10
2. (1) व्यक्तिगत साक्षात्कार – पं. नन्दकिशोर किलेदार के पुत्र सेनानी पं. ब्रजनन्दन किलेदार जी से
   (2) रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल 'विरही' पृष्ठ – 10
3. व्यक्तिगत साक्षात्कार – पं. नन्दकिशोर किलेदार के पुत्र सेनानी पं. ब्रजनन्दन किलेदार जी से
4. (1) व्यक्तिगत साक्षात्कार – पं. नन्दकिशोर किलेदार के पुत्र पं. ब्रजनन्दन किलेदार से
   (2) दैनिक जनप्रिये ललितपुर 11 जनवरी 1999, पृष्ठ – 6
   (3) हिन्दी साप्ताहिक मध्यदेश, 10 से 23 अगस्त 1997, पृष्ठ – 4

गाँधीवादी एवं क्रांतिकारी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

स्व. पं. श्री नन्दकिशोर जी किलेदार

झांसी जिले में सम्मिलित था और झांसी के अन्य आन्दोलनकारी श्री हरनारायण गौरहार, श्री आत्माराम गोविन्द खेर, श्री रघुनाथ विनायक धुलेकर, श्री कालका प्रसाद अग्रवाल (वकील), पं. श्री कृष्ण गोपाल शर्मा आदि से श्री नन्दकिशोर किलेदार जी के मधुर सम्वन्ध थे। तथा विवाह या दावत आदि के अवसर पर एक दूसरे के यहाँ यह आते - जाते रहते थे।[1] पं. किलेदार जी ने बम्बई से प्रकाशित बेंक्टेश्वर तथा पूना से प्रकाशित तिलक जी का केशरी और इलाहाबाद से प्रकाशित होने वाला प्रमुख क्रांतिकारी पत्र 'अभ्युदय' भी मंगाते थे।[2] राजस्थान के चुरु नगर निवासी (वीकानेर राज्य) सेठ खेमराज ने बम्बई में अपने इष्टदेव श्री वेंकटेश्वर के नाम से मुद्रणालय स्थापित कर 1896 ई0 में साप्ताहिक पत्र श्री वेंकटेश्वर समाचार नाम से पत्र प्रकाशित किया।[3] इस पत्र के प्रथम संपादक दिनकर प्रकाश के जन्मदाता बाबू रामदास वर्मा हुए।[4] पं. बृजनन्दन किलेदार बताते है कि इस पत्र में यजुर्वेद से लेकर बिहारी सतसई और प्रेमसागर तक वेद, संस्कृत और हिन्दी का साहित्य एवं अंग्रेजों के कार्यकलाप प्रकाशित होते थे।

लोकमान्य तिलक ने केसरी का हिन्दी संस्करण हिंन्दीकेसरी नाम से 1907 ई0 में प्रकाशित किया इसके संपादक माधवराव सप्रे थे[5] यह गमर दल का अखवार था अतः चाव से पढ़ा जाता था। अभ्युदय महामना पं. मदनमोहन मालवीय के संपादन में 1907ई0 में प्रारम्भ हुआ था। उत्तर प्रदेश की राजनीतिक जागृति में इसका पूर्ण योग रहा है।[6] उस समय ललितपुर में किलेदार जी के मकान का पता पूछने पर लोग बतलाते थे कि उनका वही मकान है जहाँ अखबार आता है। अखबार की प्रसिद्धि का मुख्य कारण यह था कि वे सिर्फ अखबार अपने पड़ने के लिए नहीं मांगाते थे बल्कि शहर भर की सीधी और गरीव

---

1. (1) व्यक्तिगत साक्षात्कार - पं. नन्दकिशोर किलेदार के पुत्र पं. ब्रजनन्दन किलेदार से
   (2) हिन्दी साप्ताहिक मध्यदेश, 10 से 23 अगस्त 1997, पृष्ठ - 4
2. (1) व्यक्तिगत साक्षात्कार - पं. नन्दकिशोर किलेदार के पुत्र पं. ब्रजनन्दन किलेदार से
   (2) हिन्दी साप्ताहिक मध्यदेश, 10 से 23 अगस्त 1997, पृष्ठ - 4
   (3) रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल 'विरही' पृष्ठ - 10
   (4) दैनिक जागरण ललितपुर, 13 अगस्त 1997, पृष्ठ - 4
3. हिन्दी पत्रकारिता और राष्ट्रीय आन्दोलन - डॉ. पद्माकर पाण्डे, पृष्ठ - 92
4. समाचार पत्रों का इतिहास - डॉ. अंबिका प्रसाद बाजपेशी, पृष्ठ - 229-230
5. हिन्दी पत्रकारिता और राष्ट्रीय आन्दोलन - डॉ0 पद्माकर, पृष्ठ - 95
6. हिन्दी पत्रकारिता और राष्ट्रीय आन्दोलन - डॉ0 पद्माकर, पृष्ठ - 95

सिवनी गांव में स्थित पं. नन्दकिशोर किलेदार का मकान जिसमें क्रांतिकारी चन्द्रशेखर आजाद अपने अज्ञातवास के दौरान रहे।

अनपढ़ जनता को सहानुभूति पूर्वक पास विठाल लेते थे फिर राजनैतिक उथल - पुथल और स्वतंत्रता आन्दोलन की समकालीन तस्वीर भोली - भाली जनता के सामने रखते थे। शायद यही कारण रहा होगा जब समाज के अगड़े ताबकों के साथ ललितपुर में पिछड़ों व दलितों ने भी स्वतंत्रता आन्दोलन में खूब बढ़ - चढ़ कर हिस्सा लिया था। पं. किलेदार जी 1920 में कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन, 1921 ई0 में कांग्रेस के अहमदाबाद अधिवेशन, 1925ई0 में कांग्रेस के कानपुर अधिवेशन तथा 1939ई0 में कांग्रेस के त्रिपुरी अधिवेशन में जाते हैं।[1] पं. किलेदार का घर कांग्रेस का कार्यालय हुआ करता था व पं. किलेदार कांग्रेस अध्यक्ष तथा उनके पुत्र सेनानी पं. बृजनन्दन किलेदार कांग्रेस कमेटी के मंत्री थे।[2]

ललितपुर अहिंसक आन्दोलन के साथ - साथ क्रांतिकारी आन्दोलन का गढ़ रहा है जिसका नेतृत्व भी श्री पं. नन्दकिशोर किलेदार व उनके पुत्र पं. बृजनन्दन किलेदार करते।[3] खनियाधना के महाराज खलक सिंह जूदेव प्रसिद्ध क्रांतिकारी चन्द्रशेखर आजाद को अपना बड़ा भाई मानते थे। झांसी जिले के प्रसिद्ध क्रांतिकारी डॉ. भगवानदास माहौर ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "यश की धरोहर" में चन्द्रशेखर आजाद व महाराज खनियाधाना की प्रगाढ़ता को बड़ी खूबी से दर्शाया है। महाराजा खलक सिंह ने अपनी रियासत खनियाधाना सिर्फ अपनी देश भक्ति के पीछे छोड़ दी। अंग्रेज सरकार ने उनसे देश भक्ति के एवज में उनसे राज्याधिकार छीनकर सुपरिण्टेण्डेण्ट शासन स्थापित कर दिया।[4] आजाद जी को खनियाधाना क्षेत्र बहुत पसन्द आया यहाँ पर जंगलों दल के लोगों को निशाना लगाने के अभ्यास का प्रशिक्षण दिया जाने लगा। खनियाधाना नरेश खलकसिंह ने क्रांतिकारियों को अपनी बसई ग्राम (अब म. प्र. में है।) की कोठी मे रक्खा था। परन्तु गुप्तचर विभाग को इसका पता लग गया। रातों रात सभी क्रांतिकारी वहाँ से निकल गये।[5]

---

1. (1) हिन्दी साप्ताहिक मध्यदेश, 10 से 23 अगस्त 1997, पृष्ठ - 4
   (2) दैनिक जनप्रिय ललितपुर 11 जनवरी 1999, पृष्ठ - 6
   (3) व्यक्तिगत साक्षात्कार - पं. नन्दकिशोर किलेदार के पुत्र पं. ब्रजनन्दन किलेदार से
   (4) सामाजिक दायरा - लेख - डॉ. कृष्णानन्द हुण्डैत, पृष्ठ - 9
2. (1) दैनिक जनप्रिय ललितपुर 11 जनवरी 1999, पृष्ठ - 6
   (2) व्यक्तिगत साक्षात्कार - पं. नन्दकिशोर किलेदार के पुत्र पं. ब्रजनन्दन किलेदार से
3. अमर उजाला - 14 अगस्त 1997, पृष्ठ - 12
4. यश की धरोहर - डॉ. भगवानदास माहौर, पृष्ठ - 95
5. यश की धरोहर - डॉ. भगवानदास माहौर, पृष्ठ - 95

इसी समय अक्टूबर 1924 ई0 में क्रांतिकारियों युवकों का कानपुर में एक सम्मेलन हुआ तथा हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (H.R.A.) की स्थापना हुई। जिसका उद्देश्य सशस्त्र क्रांति द्वारा ब्रिटिश सत्ता को समाप्त कर एक संघीय गणतंत्र की स्थापना। जिसे संयुक्त राज्य भारत कहा जायेगा।[1] क्रांतिकारियों को व्यापक धन की आवश्यकता थी जिसकी पूर्ति के लिए H.R.A. के सदस्यों ने 9 अगस्त 1925 ई0 को काकोरी में '8 डाउन ट्रेन' को रोक कर सरकारी खजाने को लूट लिया।[2] तब 26 सितम्बर 1925 ई0 को काकोरी काण्ड में भारी संख्या में गिरफ्तारियां हुई, बाद में राजेन्द्र लाहिड़ी, पं. रामप्रसाद बिस्मिल, रोशन सिंह और अशफाक उल्लाह खान गिरफ्तार कर लिये गये। इस केस का ऐतिहासिक मुकदमा 18 माह तक लखनऊ में चला।[3] दफा 121 (सम्राट के विरूद्ध यह घोषणा), 120 (अ) (राजनैतिक साजिश), 396 (कत्ल डकैती), 202 (कत्ल) के अन्तर्गत मुक्द्मा चलाये गये। अन्त में 17 दिसम्बर 1927 को राजेन्द्र लाहिड़ी को गोण्डा जेल में 19 दिसम्बर को, पं. रामप्रसाद बिस्मिल को एवं रोशन सिंह को इलाहाबाद जेल में तथा अशफाक उल्लाह को फैजाबाद जेल में फाँसी दे दी गयी।[4]

इस मुसीबत के समय में खनियाधाना नरेश की सलाह पर चन्द्रशेखर आजाद पं. नन्दकिशोर किलेदार के पास ललितपुर नगर आये। उस समय किलेदार जी के मकान पर सरकार द्वारा नियुक्त एक सी. आई. डी. का आदमी रहने लगा था।[5] असुरक्षा और संकटपूर्ण वातावरण होने के कारण चादरों (कपड़ा) से ढकी बैंलगाड़ी में बिठ्लाकर किलेदार जी ने चन्द्रशेखर आजाद को अपने जमींदारी के गॉव सेवनी भेज दिया था। रास्तें में पुलिस के लोगों के टोकने पर किलेदार जी ने कहा था कि बैंलगाड़ी में मेरे परिवार की महिला है। बाद में सेवनी के पास ही स्थित ललितपुर स्टेशन से आजाद झांसी चले गये थे।[6] खनियॉधाना नरेश खलक सिंह जूदेव और किलेदार जी एक उत्सव में झांसी में जब मिले

1. आधुनिक भारत - विपिनचन्द्र, पृष्ठ - 209
2. आधुनिक भारत का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास - डॉ. ए. के. मित्तल, पृष्ठ - 382
3. क्रांतिकारी आजाद - शंकर सुल्तानपुरी, पृष्ठ - 79
4. सिंहावलोकन, यशपाल, पृष्ठ - 210
5. (1) हिन्दी साप्ताहिक मध्यदेश, 10 से 23 अगस्त 1997, पृष्ठ - 4
   (2) व्यक्तिगत साक्षात्कार - पं. नन्दकिशोर किलेदार के पुत्र पं. ब्रजनन्दन किलेदार से
6. (1) हिन्दी साप्ताहिक मध्यदेश, 10 से 23 अगस्त 1997, पृष्ठ - 4
   (2) व्यक्तिगत साक्षात्कार - पं. नन्दकिशोर किलेदार के पुत्र पं. ब्रजनन्दन किलेदार से

तब इस घटना को लेकर काफी देर तक हँसते रहे।[1] पं. नन्दकिशोर किलेदार जी. चन्द्रशेखर आजाद के साथ – साथ शम्भूनाथ व शौकत अली आदि को भी अवसरानुकूल सहयोग दिया तथा उन्हें अपने घर पर ठहराया और भरसक सहायता की।[2]

किलेदार जी का आन्दोलन केवल विद्रोहात्मक नहीं था बल्कि रचनात्मक भी था वे गीतों और लोकोक्तियों के माध्यम से भी लोगों को विदेशी शासकों के विरुद्ध उकसाते थे।

12 मार्च 1930ई0 को गांधी जी ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन छेड़ने की घोषणा कर दी तथा प्रातः 6 बजकर 30 मिनट पर साबरमती आश्रम से गांधी जी अपने 78 अनुयायियों के साथ 241 मील दूर डाण्डी नामक स्थान के लिए पद यात्रा प्रारम्भ की। और 6 अप्रैल को प्रातः काल में गांधी जी समुद्र तट पर पहुँचे और गांधी जी ने नमक एकत्र कर नमक कानून को भंग कर दिया। इस प्रकार 6 अप्रैल 1930 को सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारम्भ हो गया।[4] शीघ्र ही यह आन्दोलन सम्पूर्ण भारत में फैल गया जगह – जगह नमक कानून को तोड़ा गया[5] अनेक स्थानों पर विदेशी बस्त्रों को जलाया गया व स्त्रियों द्वारा शराब की दुकानों का घिराव किया गया। ललितपुर क्षेत्र में पं. किलेदार एवं उनके पुत्र बृजनन्दन किलेदार ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन शुरू किया तो पिता व पुत्र को 1930 में बन्दी बना लिया गया।[6]

भारतीय दण्ड संहिता (ताजीरात हिन्द) के सेक्शन 107 के अन्तर्गत एक वर्ष की सजा काट कर पिता – पुत्र जेल से बाहर आये।[7] इसके पश्चात पं. नन्दकिशोर किलेदार 1932ई. में पुनः सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भाग लेने के कारण पुनः 6 माह की जेल

---

1. (1) हिन्दी साप्ताहिक मध्यदेश, 10 से 23 अगस्त 1997, पृष्ठ – 4
   (2) व्यक्तिगत साक्षात्कार – पं. नन्दकिशोर किलेदार के पुत्र पं. व्रजनन्दन किलेदार से
2. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ – 65
   (2) रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल 'विरही' पृष्ठ – 11
   (3) 28 जूलाई 1997 अमर उजाला, पृष्ठ – 12
3. आधुनिक भारत का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास – डॉ. ए. के. मित्तल, पृष्ठ – 439
4. आधुनिक भारत का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास – डॉ. ए. के. मित्तल, पृष्ठ – 439
5. आधुनिक भारत – विपिनचन्द्र, पृष्ठ – 215
6. (1) रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल 'विरही' पृष्ठ – 10
   (2) दैनिक भास्कर, 8 अक्टूबर 1997, पृष्ठ – 3
   (3) व्यक्तिगत साक्षात्कार – पं. नन्दकिशोर किलेदार के पुत्र पं. व्रजनन्दन किलेदार से
7. व्यक्तिगत साक्षात्कार – पं. नन्दकिशोर किलेदार के पुत्र पं. व्रजनन्दन किलेदार से

की सजा पाते हैं।[1] तथा 1942ई0 में देश व्यापी आन्दोलन में सक्रिय सहयोग देने के कारण एक वर्ष के लिए झांसी जेल में नजर बन्द किये जाते हैं।[2] सन् 1942 का वर्ष किलेदार जी के जीवन की बड़ी मार्मिक घटना जुड़ी हुयी है। जिस समय पिता व पुत्र जेल में थे उसी समय बृजनन्दन किलेदार जी की स्वाभिमानी लड़की शकुन्तला की शादी थी। शकुन्तला बहन के मन में तो हर लड़की की तरह बाबुल के घर रहने की चाह थी परन्तु समाज के बन्धन जो सामने थे फिर भी शकुन्तला बहन चाहती थी कि पिता व भाई का झुकना नहीं चाहिए चाहे भले ही शादी अकेले ही हो या फिर न हो।"[3] झांसी जेल के अफसरों ने पिता, पुत्र दोनों से कहा कि "तुम दोनों को मैं पैरोल पर छोड़ दूँगा तुम अपनी लड़की की शादी में शामिल हो जाना"[4] लेकिन पिता, पुत्र दोनों ने स्वाभिमानपूर्वक पैरोल पर छूटने से इन्कार कर दिया बाद में उनकी शादी हो गयी। शादी की रात दोनों पिता – पुत्र को नींद नहीं आई थी। अन्धेरी जेल में आँधी रात के बाद एक कैदी देर तक अमीर खुसरों का प्रसिद्ध गीत गाता रहा था–

"काहे को ब्याही विदेश अरे
लंख बाबुल मोरे।।"[5]

और पिता – पुत्र बुलन्दी से अपने आँसूओं को आँखों के अन्दर ही जप्त करते रहे थे। राष्ट्रीय आन्दोलन में ललितपुर क्षेत्र से आपका योगदान[6] अविस्मर्णिय है।

---

1. (1) रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल 'विरही' पृष्ठ – 10,11,13
   (2) 28 जूलाई 1997 अमर उजाला, पृष्ठ – 12
   (3) व्यक्तिगत साक्षात्कार – पं. नन्दकिशोर किलेदार के पुत्र पं. ब्रजनन्दन किलेदार से
   (4) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ – 65
2. (1) रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल 'विरही' पृष्ठ – 10,11,13
   (2) 28 जूलाई 1997 अमर उजाला, पृष्ठ – 12
   (3) व्यक्तिगत साक्षात्कार – पं. नन्दकिशोर किलेदार के पुत्र पं. ब्रजनन्दन किलेदार से
3. (1) हिन्दी साप्ताहिक मध्यदेश, 10 से 23 अगस्त 1997, पृष्ठ – 4
   (2) व्यक्तिगत साक्षात्कार – पं. नन्दकिशोर किलेदार के पुत्र पं. ब्रजनन्दन किलेदार से
4. (1) हिन्दी साप्ताहिक मध्यदेश, 10 से 23 अगस्त 1997, पृष्ठ – 4
   (2) व्यक्तिगत साक्षात्कार – पं. नन्दकिशोर किलेदार के पुत्र पं. ब्रजनन्दन किलेदार से
5. (1) हिन्दी साप्ताहिक मध्यदेश, 10 से 23 अगस्त 1997, पृष्ठ – 4
   (2) व्यक्तिगत साक्षात्कार – पं. नन्दकिशोर किलेदार के पुत्र पं. ब्रजनन्दन किलेदार से
   (4) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ – 65
6. झांसी दर्शन – मोतीलाल अशान्त, पृष्ठ – 52
   प्रकाशन – लक्ष्मी प्रकाशन, 86, पुरानी नझाई, झांसी से 1973 में प्रकाशित

(4) श्री बृजनन्दन जी किलेदार[1] की जेल यात्रा

श्री ब्रजनन्दन जी किलेदार का जन्म 1 जनवरी 1902 ई0 को पं. नन्दकिशोर किलेदार के घर हुआ था।[2] आपके पिता पं. नन्दकिशोर किलेदार ललितपुर क्षेत्र के स्वतंत्रता आन्दोलन के प्रमुख नेता थे। राष्ट्रीय आन्दोलन की प्रेरणा आपको विरासत में मिली। पं. नन्दकिशोर किलेदार की अंग्रेजों का लगातार विरोध और जेल जाने की व्यवस्था ने घर की हालत असामान्य कर दी उस समय पं. नंदकिशोर किलेदार सोच रहे थे कि हमारा युवा पुत्र घर की व्यवस्था को देखेगा परन्तु ब्रजनन्दन किलेदार पिता से आगे तिरंगा थामे अंग्रेजों की लाठियों और हन्टरों की बौछार में भी आगे बढ़ते जाते हैं तब पं. नंदकिशोर किलेदार मन में विचार करते है कि चलों भारत माँ अकेले मुझसे संतुष्ट नहीं है वे परिवार से और आहुतियाँ चाहती हैं। फिर तो पिता – पुत्र में जेल जाने की होड़ सी लग गयी जिसका परिणाम यह होता था कि पिता पुत्र अक्सर एक साथ एक जेल में होते थे। पं. ब्रजनन्दन किलेदार सन् 1930 में इण्डियन पेनल कोड की धारा 107 के तहत एक वर्ष की सजा काट्कर बाहर आते हैं।[3]

पं. ब्रजनन्दन किलेदार चन्द्रशेखर आजाद से बहुत करीब से मिले क्योंकि आजाद फरारी जीवन में श्री किलेदार के यहाँ कई दिनों तक रहे। श्री किलेदार एक रोचक संस्मरण सुनाते हे कि वालिन्टियरों के कैम्प पूरे बुन्देलखण्ड में लगते थे बैसा ही वालिनटियर प्रशिक्षण कैम्प सुम्मेरा तालाब के पास लगा हुआ था, पं. नन्दकिशोर किलेदार व उनके साथी इस कैम्प में उपस्थित थे। रात के सवा ग्यारह बजे के लगभग एक हट्टा कट्टा ब्रह्मचारी या संयासी कैम्प के सामने आ खड़ा हुआ और बोला "बाबा में क्या यहाँ रात्रि विश्राम कर सकता हूँ।" पं. नन्दकिशोर किलेदार के साथी स्वतंत्रता सेनानी श्री चन्दनसिंह के कहा "बाबा यह स्वतंत्रता सेनानियों का कैम्प है यहाँ सदैव जेल का खतरा बना रहता है, कभी भी गिरफ्तारी हो सक्ती

---

1. (1) रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल 'विरही' पृष्ठ – 10
   (2) व्यक्तिगत साक्षात्कार – सेनानी पं. ब्रजनन्दन किलेदार जी
2. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक (झांसी डिवीजन) एस. पी. भट्टाचार्य, पृष्ठ – 72
   (2) रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल 'विरही' पृष्ठ – 14
   (3) झांसी दर्शन – मोतीलाल अशान्त, पृष्ठ – 55
3. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक (झांसी डिवीजन) एस. के. भट्टाचार्य, पृष्ठ – 7[illegible]
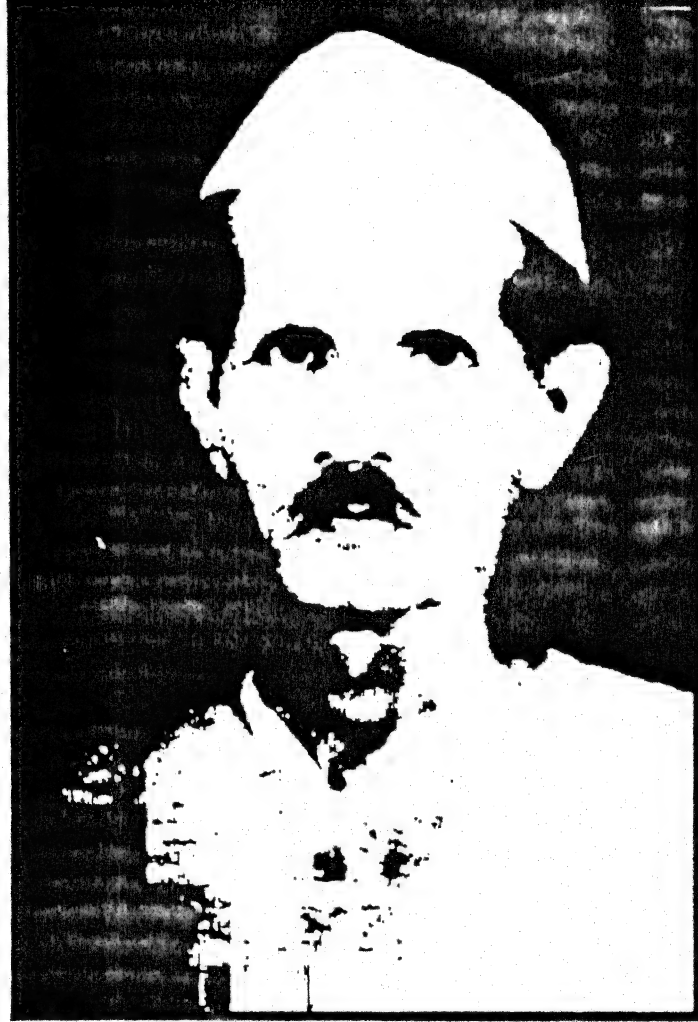
गाँधीवादी एवं स्वतंत्रता संग्राम सेनानी
पं. श्री बृजनन्दन जी किलेदार

है, यहाँ ठहर के क्या जेल जाना चाहते हो?'' सन्यासी एक मिनिट थमा फिर वापिस चार कदम आगे जाकर रूका और बोला''अरे जेल जाने वालो क्या तुम में से कोई फाँसी पर चढ़ने को तैयार है? तो मेरे साथ आओ''[1] श्री चन्दनसिंह ने लालटेन लाने के लिए साथियों से कहा तब तक वह सन्यासी चला गया। बाद में पं. नन्दकिशोर किलेदार जी की चन्द्रशेखर आजाद जी से मुलाकात होती है। तब वह यह घटना सुनाते हैं कि वह मैं (आजाद) ही था।[2] फिर नंदकिशोर किलेदार अपने साथियों को बताते हैं कि वह सन्यासी आजाद जी थे। इस घटना के पं. ब्रजनन्दन किलेदार साक्षात गवाह हैं क्योंकि आप भी उसी वालिनटियर कैम्प में थे।[3]

1926ई0 से 1929ई0 तक झांसी और उसके आसपास की रियासतें क्रांतिकारियों का बहुत बड़ा केन्द्र रही। 8 अप्रैल 1929 को दिल्ली में केन्द्रीय विधानसभा के विशाल कक्ष में फेंके जाने वाले बमों का परीक्षण झांसी (बुन्देलखण्ड) के पहाड़ों में हुआ था इसके लिए फणीन्द्र घोष तथा भगतसिंह आए थे।[4]

सन् 1932 में भी आप गिरफ्तार होते हैं और 6 माह की सजा पाते हैं।[5] फिर 1942 में भी आप सक्रिय योगदान के कारण 1 वर्ष के लिए नजरबंद कर लिये जाते हैं।[6]

---

1. (1) व्यक्तिगत साक्षात्कार - सेनानी पं. ब्रजनन्दन किलेदार जी
   (2) हिन्दी साप्ताहिक मध्यदेश, 10 से 23 अगस्त 1997, पृष्ठ - 4
   शीर्षक - क्या कोई फाँसी चढ़ने को तैयारी है - देवेन्द्र मनोज
2. (1) व्यक्तिगत साक्षात्कार - सेनानी पं. ब्रजनन्दन किलेदार जी
   (2) हिन्दी साप्ताहिक मध्यदेश, 10 से 23 अगस्त 1997, पृष्ठ - 4
3. व्यक्तिगत साक्षात्कार - सेनानी पं. ब्रजनन्दन किलेदार जी
4. अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद - विश्वनाथ वैशम्पायन, पृष्ठ - 76
5. (1) रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल 'विरही' पृष्ठ - 14
   (2) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक (झांसी डिवीजन) एस. पी. भट्टाचार्य, पृष्ठ - 72
6. (1) रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल 'विरही' पृष्ठ - 14
   (2) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक (झांसी डिवीजन) एस. के. भट्टाचार्य, पृष्ठ - 72

(5) अन्य राष्ट्रीय घटनाओं का प्रभाव

भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में गांधी जी के आगमन से सम्पूर्ण भारत की जनता एकता के सूत्र में बधती जा रही थी। साथ ही उसी समय कुछ ऐसी घटनाएं घटी जिससे जनता का आक्रोश और तीव्र हो गया, इस समय की जो राष्ट्रीय घटनाएं घटी जैसे साइमन कमीशन, बारदोली सत्याग्रह, नेहरू रिपोर्ट, 1929 का कांग्रेस का लाहौर अधिवेशन तथा मेरठ षडयंत्र केस आदि ने जन मानस पर अपना अलग प्रभाव छोड़ा।

भारतीय सरकार द्वारा 1919 में सुधार अधिनियम पारित किया गया था।[1] जिसमें यह भी प्रावधान रखा गया था कि इस अधिनियम के परिणामों का अध्ययन करने के लिए दस वर्ष पश्चात 1929 में एक कमीशन की नियुक्ति की जायगी। किन्तु ब्रिटिश सरकार ने अनेक कारणों से प्रेरित होकर कमीशन की नियुक्ति 1927 ई0 में करने का निर्णय लिया। 1929 ई0 में इग्लैण्ड में आम चुनाव होने वाले थे तथा उसमें मजदूर दल (लेबर पार्टी) की विजय का स्पष्ट आभास हो रहा था।[2] तत्कालीन सत्तारूढ़ अनुदारवादी टोरी सरकार यह नहीं चाहती थी कि इस आयोग की नियुक्ति मजदूर दल के शासन के द्वारा की जाए क्योंकि मजदूर दल की सहानुभूति भारत के साथ थी। अन्य प्रमुख कारण यह भी थे कि सरकार 1926ई0 में भारत में साम्प्रदायिक तनाव से उत्पन्न स्थिति से लाभ उठाना चाहती थी। गांधी जी का प्रभाव तब असहयोग आन्दोलन को अचानक रोकने के कारण जनता पर कम हो गया था, भारत में शनैः शनैः युवक संगठन व मजदूर संगठन शक्तिशाली होते जा रहे थे जिन पर रूसी क्रॉन्ति, समाजवादी विचारों एवं वामपंथी विचार धाराओं का स्पष्ट प्रभाव था अतः सरकार उपरोक्त संगठनों के विचारों की दिशा में परिवर्तन करना चाहती थी।

उपरोक्त विचारों को ध्यान में रखते हुये ब्रिटिश सरकार ने 8 नवम्बर 1927 को साइमन कमीशन की घोषणा की।[3] सर जॉन साइमन की अंध्यक्षता में नियुक्त किये जाने के कारण इस आयोग का नाम साइमन आयोग पड़ा। इस कमीशन में सात सदस्य थे, जिसमें 3 टोरी दल, 2 उदार दल, तथा 2 मजदूर दल के सदस्य थे। इस कमीशन के

---

1. आधुनिक भारत का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास – डॉ. ए. के. मित्तल, पृष्ठ – 426
2. आधुनिक भारत का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास – डॉ. ए. के. मित्तल, पृष्ठ – 426
3. आधुनिक भारत का इतिहास, डॉ रामलखन शुक्ल, पृष्ठ – 564

सदस्यों में एक भी भारतीय नहीं था।[1] जिस कारण दिसम्बर 1927 ई. में डॉ. मुख्तार अहमद अंसारी की अध्यक्षता में मद्रास में हुए कांग्रेस के अधिवेशन में आयोग के बहिष्कार का निर्णय लिया गया।[2] तेज बहादुर सप्रू की लिबरल फेडरेशन, भारतीय औद्योगिक वाणिज्यिक कांग्रेस, हिन्दू महासभा, किसान मजूदर पार्टी, मुसलिम लीग आदि ने बहिष्कार का समर्थन किया।[3]

3 फरवरी 1928 ई0 को जब आयोग बम्बई पहुँचा तो बम्बई सहित समस्त भारत में पूर्ण हड़ताल और काले झण्डे से साइमन कमीशन का स्वागत किया गया। 'साइमन वापस जाओ' के नारे लगाये गये।[4] सारे देश में साइमन कमीशन का विरोध करने के लिए समितियाँ बनाई गयी। इन समितियों ने जहाँ कहीं भी साइमन कमीशन के सदस्य गये, प्रदर्शन व हड़तालें की। अनेक स्थानों पर पुलिस ने शान्तिपूर्वक प्रदर्शन करने वाले व्यक्तियों पर लाठियों के प्रहार किये। मद्रास में टी. प्रकाशम, लखनऊ में खलीकुज्जमा, पं. जवाहर लाल नेहरू, गोविन्द बल्लभ पंत को पुलिस ने लाठियों से पीटा।[5]

लाहौर में पंजाब के प्रतिष्ठित नेता लाला लाजपतराय के नेतृत्व में निकल रहे जुलूस पर 30 अक्टूबर 1928 को पुलिस ने लाजपत राय पर लाठियों से प्रहार किये जिसके कारण दो सप्ताह बाद उनकी मृत्यु हो गयी।[6] इनकी मृत्यु ने युवा क्रांतिकारियों को पुनः व्यक्तिगत क्रांतिकारी की राह पर चलने के लिए मजबूर किया। 17 दिसम्बर 1928 को भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, राजगुरू ने लाठी चार्ज का नेतृत्व करने वाले ब्रिटिश पुलिस अधिकारी सांडर्स को गोलियों से भून दिया तथा एक अन्य पुलिस अधिकारी स्कॉट बच गया।[7]

ललितपुर क्षेत्र में साइमन कमीशन के बहिष्कार और बाद में लाला लाजपत राय की मृत्यु का व्यापक प्रभाव हुआ। समस्त बुन्देलखण्ड सहित झांसी जिला एवं ललितपुर

---

1. वही
2. भारतीय इतिहास कोष - सच्चिदानन्द भट्टाचार्य, पृष्ठ - 467
3. आधुनिक भारत का इतिहास - डॉ. आर. एल. शुक्ला, पृष्ठ - 564
4. आधुनिक भारत का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास - डॉ. ए. के. मित्तल, पृष्ठ - 426
5. आधुनिक भारत का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास - डॉ. ए. के. मित्तल, पृष्ठ - 427
6. आधुनिक भारत का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास - डॉ. ए. के. मित्तल, पृष्ठ - 427
7. आधुनिक भारत - विपिनचन्द्र, पृष्ठ - 209

क्षेत्र के प्रमुख नगर एवं जिला मुख्यालयों पर लोगों ने प्रदर्शन किये इन शान्ति पूर्वक प्रदर्शन करने वालों पर पुलिस ने लाठी चार्ज किया, झांसी रेल्वे स्टेशन पर काला झण्डा लगाया गया क्योंकि जिस ट्रेन से साइमन कमीशन के सदस्य बम्बई से दिल्ली जा रहे थे, वह ट्रेन झांसी स्टेशन से होकर गुजरने वाली थी। जिस समय रेलगाड़ी झांसी स्टेशन पर रुकी, उस समय झांसी जिले के अनेक कॉंग्रेसी एवं गैर कॉंग्रेसी सदस्यों ने "साइमन कमीशन वापस जाओ (साइमन कमीशन गो बेक)" के नारे लगाये। पुलिस ने प्रदर्शनकारियों पर लाठी चार्ज किया एवं अनेक प्रदर्शनकारियों को बन्दी बना लिया।[1] प्रदर्शनकारियों में प्रमुख जन थ - आत्माराम गोविन्द खेर, का. बैजोमिन, का. रूस्तम सेटिन, कुंजबिहारी लाल शिवानी, का. पन्नालाल शर्मा, मास्टर रूद्रनारायण, लाड़िलीप्रसाद श्रीवास्तव[2] आदि सभी झांसी नगर तथा ललितपुर क्षेत्र से (जो कि उस समय झांसी जिले का अंग था) पं. नन्दकिशोर किलेदार, पं. ब्रजनन्दन किलेदार, पं. ब्रजनन्दन शर्मा, मथुरा प्रसाद वैद्य, बृन्दावन इमलिया एवं बाबूलाल निगम आदि।[3]

बारदोली का प्रसिद्ध सत्याग्रह इसी समय हुआ। 30 जून 1927 ई0 को बम्बई प्रदेश की सरकार ने सूरत जिले के बारदोली नामक स्थान पर लगान में 20-25 प्रतिशत की वृद्धि कर दी[4]। अतः बारदोली के किसानों ने इसके विरोध में सत्याग्रह का रास्ता अपनाया। 12 फरवरी 1928 ई0 को कांग्रेस ने किसानों का सम्मेलन आयोजित कर निर्णय लिया कि जब तक सरकार लगान नहीं घटाती तब तक किसान लगान का भुगतान नहीं करेंगे। समाचार पत्रों के द्वारा बारदोली के समाचार भारत के कोने - कोने तक पहुँचे।[5] गांध ी जी ने 12 जून 1928 ई0 को बारदोली दिवस मनाने का आह्वान किया जो सफल रहा अन्ततः सरकार को झुकना पड़ा। इस आन्दोलन से कांग्रेस तथा महात्मा गांधी और सरदार पटेल की लोकप्रियता में असीमित बृद्धि हुई व जनतांत्रिक शक्तियों को बढ़ावा मिला तथा किसान आन्दोलनों में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेने लगे।[6]

---

1. जिला झांसी गजेटियर - 1965 - ई0 वी. जोश, पृष्ठ - 72
2. व्यक्तिगत साक्षात्कार - पं. ब्रजनन्दन किलेदार
3. व्यक्तिगत साक्षात्कार - पं. ब्रजनन्दन किलेदार, पं. ब्रजनन्दन शर्मा
4. आधुनिक भारत का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास - डॉ. ए. के. मित्तल, पृष्ठ - 427
5. आधुनिक भारत का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास - डॉ. ए. के. मित्तल, पृष्ठ - 427
6. आधुनिक भारत का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास - डॉ. ए. के. मित्तल, पृष्ठ - 427

नये संविधान निमार्ण का दिशा में फरवरी 1928 ई0 को एक सर्वदलीय सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें अनुदार पंथी राज्य सचिव 'लाई विरकेन हेड' की यह चुनौति की भारतीय लोग संवैधानिक सुधार के लिए ठोस प्रस्ताव बनाने में असमर्थ हैं, को स्वीकार किया गया।[1] लगभग तीन महीनें तक विचार – विमर्श के बाद मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में एक कमेटी का गठ्न हुआ। जिसे भारत के भावी संविधान की रूप रेखा तैयार करने की जिम्मेदारी सौपी गई। जुलाई 1928 में रिपोर्ट प्रस्तुत की गयी। जिसमें भारतीय सरकार को डोमिनियन स्टेट का दर्जा, सभी वयस्कों को मताधिकार, महिलाओं को समान अधिकार, संगठ्न बनाने की स्वतंत्रता आदि अन्य सुझाव थे।[2] जिसका भारतीय जनता पर अनुकूल प्रभाव पड़ा।

1929ई0 में मेरठ षडयंत्र केस के अन्तर्गत बहुत से साम्यवादियों एवं मजदूर संघ के नेताओं को गिरफ्तार कर लिया। इससे जनसाधारण में रोष की भावना फैल गई थी। झांसी जिले के दो प्रमुख साम्यवादी दल के सदस्य का. अयोध्या प्रसाद (मऊरानीपुर) एवं ए. के. खान (अब्दुल करीम खान) एवं लक्ष्मण राव इस षड्यंत्र केस में बन्दी बना लिये गये थे।[3] यह केस 3 वर्ष तक चला जो राष्ट्रीय स्तर पर खूब चर्चित रहा। बन्दी बनायें गये लोगों में तीन ब्रिटिश नागरिक फिलिप स्प्रेट, बेन ब्रैडले एवं लेस्टर हचिन्सन भी थे। अभियुक्तों को बचाने के लिए पं. जवाहर लाल नेहरू, एम. ए. अंसारी कैलास नाथ काट्जू और एम. सी. छागला ने पैरवी की थी।[4]

मेरठ षडयंत्र केस ने भारत में साम्यवाद की जड़ों को मजबूत कर दिया। 1929ई0 में कॉंग्रेस का अधिवेशन लाहौर में पं. जवाहर लाल नेहरू की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।[5] सम्मेलन पूर्णतः गांधीजी की पकड़ में था। वही प्रस्ताव पास हुये जिन्हें गांधीजी ने चाहा। 31 दिसम्बर 1929ई0 की आधी रात को रावी नदी के तट पर भारतीय स्वतंत्रता का प्रतीक 'तिरंगा झण्डा' पूर्ण स्वराज्य, बंदेमातरम तथा इंकलाब जिन्दाबाद के नारों

---

1. आधुनिक भारत का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास – डॉ. ए. के. मित्तल, पृष्ठ – 429
2. आधुनिक भारत का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास – डॉ. ए. के. मित्तल, पृष्ठ – 429
3. बुन्देलखण्ड में स्वतंत्रता आन्दोलन,
4. आधुनिक भारत – विपिनचन्द्र, पृष्ठ – 212
5. आधुनिक भारत का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास – डॉ. ए. के. मित्तल, पृष्ठ – 432

के बीच फहराया गया।[1] पं. जवाहरलाल नहेरू ने कहा कि "आज हमारा सिर्फ एक लक्ष्य है, स्वधीनता का लक्ष्य। हमारे लिए स्वाधीनता है पूर्ण स्वतंत्रता"[2]

उनकी पूर्ण स्वराज्य की मॉग से जनता में खुसी की लहर दौड़ गयी और जनता कांग्रेस के साथ हो चली 26 जनवरी 1930 ई0 को सम्पूर्ण देश में स्वतंत्रता दिवस मनाने की घोषणा की गयी।[3] जिसका भी जनता को एक सूत्र में बांधने में व्यापक प्रभाव रहा।

---

1. आधुनिक भारत – विपिनचन्द्र, पृष्ठ – 215
2. आधुनिक भारत का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास – डॉ. ए. के. मित्तल, पृष्ठ – 434
3. आधुनिक भारत – विपिनचन्द्र, पृष्ठ – 215

अध्याय - सप्तम

सविनय अवज्ञा आन्दोलन (1930- 1934 ई0) तथा व्यक्तिगत सत्याग्रह में ललितपुर क्षेत्र के स्वतंत्रता सेनानियों का योगदान

(1) गांधी जी के भाषणों से उत्पन्न चेतना।

(2) नमक कर का विरोध एवं डाण्डी मार्च का प्रभाव।

(3) गोलमेज सम्मेलन तथा गांधी-इरविन समझौता का प्रभाव

(4) पं. नन्दकिशोर किलेदार एवं पं. बृजनन्दन किलेदार का प्रेरक नेतृत्व।

(5) श्री बृजनन्दन शर्मा का परिचय एवं जेल यात्रा।

(6) श्री बाबूलाल निगम का अवज्ञा आन्दोलन।

(7) श्री भैरों प्रसाद राय की जेल यात्रा।

(8) श्री कन्हैया लाल कडोरे का योगदान।

(9) श्री कल्लूराम यादव के कार्य

(10) कामरेड चन्दनसिंह की सक्रिय भागीदारी।

(11) सविनय अवज्ञा आन्दोलन में अन्य सेनानियों का योगदान।

(12) व्यक्तिगत सत्याग्रह एवं सेनानियों का योगदान।

अध्याय - सप्तम

सविनय अवज्ञा आन्दोलन (१९३० - १९३४ ई०) तथा व्यक्तिगत सत्याग्रह में ललितपुर क्षेत्र के स्वतंत्रता सेनानियों का योगदान

1929 ई0 को कॉंग्रेस के लाहौर अधिवेशन में कॉंगेस कार्यकारिणी को "सविनय अवज्ञा आन्दोलन" छेड़ने का अधिकार दिया गया। तथा कार्यकारिणी ने निम्नलिखित प्रस्ताव पास किया।

"भारत की ब्रिटिश सरकार ने भारतीय जनता को स्वतंत्रता से ही वंचित नहीं किया है, अपितु उसका आधार ही जनसाधारण का शोषण है। उसने भारत को आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक सभी रूप से अत्याधिक हानि पहुँचाई है। इसलिए हमारा विश्वास है कि भारत को ब्रिटेन से सम्बन्ध विच्छेद करके पूर्ण स्वराज्य करना चाहिए। जिस - व्यवस्था ने हमारे देश की उपर्युक्त चारों प्रकार से महान क्षति की है उसको स्वीकार करना अब हम मनुष्य मात्र और ईश्वर के प्रति अपराध समझते हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति का श्रेष्ठ ढंग अहिंसात्मक आन्दोलन ही है इसलिए हम अपने को सविनय अविज्ञा आन्दोलन के लिये तैयार करेंगे और करों (टिक्सेस) का न देना भी इस आन्दोलन का मुख्य अंग होगा।"[1]

फरवरी 1930ई0 को साबरमती आश्रम में हुई कॉंग्रेस कार्यकारिणी की बैठक में महात्मा गांधी को अपनी इच्छा से सविनय अवज्ञा आन्दोलन शुरू करने का उत्तरदायित्व सौंपा गया।

1. गांधी जी के भाषणों से उत्पन्न चेतना

गांधी जी ने 30 जनवरी 1930ई0 को "यंग इण्डिया" में एक लेख के द्वारा सरकार के समक्ष (वायसराय लार्ड इरविन) ग्यारह सूत्री मांग पत्र पेस किया और स्पष्ट किया कि यदि सरकार इन्हें स्वीकार कर लेगी तो सत्याग्रह नहीं किया जायेगा। ये माँगें निम्नलिखित थी।[2]

---

1. कॉंग्रेस का इतिहास - पट्टाभिसीतारम्मैया भाग - 2, पृष्ठ - 272
2. आधुनिक भारत का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, डॉ. ए. के. मित्तल, पृष्ठ - 437

1. रुपए की विनियम दर घटाकर 1 शिलिंग 4 पैंस की जाए।
2. लगान 50% कम की जाए।
3. सिविल सर्विस के कर्मचारियों का वेतन आधा किया जाए।
4. पूर्ण नशाबन्दी लागू की जाए।
5. भारतीयों को बन्दूकें रखने का लाइसेंस प्रदान किया जाए।
6. नमक पर से कर समाप्त किया जाए।
7. अहिंसात्मक ढंग से कार्य करने वाले राजनीतिक बन्दियों को छोड़ दिया जाए।
8. गुप्तचर विभाग बन्द कर दिया जाए अथवा उस पर सार्वजनिक नियंत्रण स्थापित हो।
9. तटीय यातायात रक्षक विधेयक पारित किया जाए।
10. सैनिक व्यय में कम से कम 50% की कटौती की जाए।
11. रक्षात्मक शुल्क लगाए जाएं और आयातित कपड़ों के आयात में कमी की जाए।

सरकार ने गांधी जी की उपरोक्त मांगों की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। इसके साथ ही सरकार ने कॉंग्रेस के प्रमुख नेताओं को बन्दी बनाना प्रारम्भ कर दिया। आन्दोलन प्रारम्भ करने से पूर्व 2 मार्च 1930 ई0 को गांधी जी ने पुनः वायसराय को पत्र लिखा, जिसमें अपनी मांगें स्वीकार करने के लिए अनुरोध करने के साथ उन्होंने अंग्रेजी शासन को भारत के लिए अभिशाप बताया। तथा यह भी लिखा कि 11 मार्च 1930ई0 तक यदि उनकी मांगे स्वीकार न की गयी तो 12 मार्च 1930ई0 को नमक कानून का उल्लंघन करके सविनय अवज्ञा आन्दोलन शुरू कर देंगे।

वायसराय ने गांधी जी की शर्तों को स्वीकार करने से मना कर दिया तथा कहा कि उसे खेद है कि गांधी जी ऐसे मार्ग पर जा रहे हैं जिससे कानून का उल्लंघन होता है तथा जन शान्ति खतरे में पड़ सकती है। गांधी जी ने इसका उत्तर देते हुए कहा -[1]

"मैने घुटने टेककर रोटी मांगी, परन्तु मुझे रोटी के बजाय पत्थर मिला।"

उन्होंने पुनः कहा "भारत एक विशाल कारागार है। मैं इस कानून को नहीं मानता देश में डण्डे के जोरे से शान्ति स्थापित है। देश इससे ऊब गया है और इससे मुझे बड़ा दुःख होता है। मैं उसको भंग करना अपना कर्तव्य समझता हूँ, इस शान्ति से राष्ट्र की सांस रुक

---

1. आधुनिक भारत का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, डॉ. ए. के. मित्तल, पृष्ठ-437
2. आधुनिक भारत का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, डॉ. ए. के. मित्तल, पृष्ठ-437

रही हैं, क्योंकि उसका निकलने का कोई मार्ग नहीं है।"[2]

निश्चित ही गांधी जी के उपरोक्त विचारों ने जनमानस के मष्तिष्क में एक नयी चेतना का संचार किया। सम्पूर्ण देश गांधी जी के साथ चलने को तैयार था। ललितपुर क्षेत्र से सविनय अवज्ञा आन्दोलन में जनसमूह ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया इसका कारण गांधी जी की विचार शक्ति ही थी।

2. नमक कर का विरोध एवं डाण्डी मार्च का प्रभाव

वायसराय इरविन द्वारा मांगे स्वीकार न किए जाने पर महात्मा गांधी जी के समक्ष यह समस्या उत्पन्न हुयी कि आन्दोलन किस प्रकार प्रारम्भ किया जाए व भविष्य में इसकी रूपरेखा क्या हो ? क्योंकि ऐसी स्थिति में आन्दोलन का प्रारम्भ ऐसे कार्य से होना आवश्यक था जिससे आन्दोलन लोकप्रिय हो व जनसमूह को उसमें भाग लेने हेतु आकर्षित कर सकें।

अतः गांधी जी ने आन्दोलन का शुभारम्भ 'नमक कानून' को तोड़कर करने का निर्णय किया, क्योंकि इस कानून से समाज के प्रत्येक वर्ग व विशेषकर गरीब वर्ग अधिक प्रभावित होता था।

इस प्रकार पूर्व नियोजित कार्यक्रम के अनुसार 12 मार्च 1930ई0 को प्रातः 6 बजकर 30 मिनिट पर साबरमती आश्रम से गांधी जी ने अपने 78 अनुयायियों के साथ 241 मील दूर डाण्डी नामक स्थान के लिए पद यात्रा प्रारम्भ की।[1] रास्ते में जन समूह द्वारा गांधी जी का अद्‌भुत स्वागत किया गया। रास्ते में पानी का छिड़काव किया गया तथा "गांधी जी की जय" के नारों का उद्‌घोष किया गया। रास्ते में गांधी जी के उपदेशों से प्रभावित होकर कितने ही लोग कॉंग्रेस के सदस्य बन गए एवं सरकारी कर्मचारी त्याग पत्र देने लगे। 24 दिनों में यात्रा पूरी करके गांधी जी व उनके सहयोगी 5 अप्रैल को डाण्डी पहुँचे तथा 6 अप्रैल को प्रातः काल में गांधी जी समुद्र तट पर पहुँचे और वहाँ नमक एकत्र कर कानून को भंग कर दिया[2] इस प्रकार 6 अप्रैल 1930ई0 को सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारम्भ हो गया। गांधीजी ने 9 अप्रैल 1930ई0 को

---

1. आधुनिक भारत – विपिन चन्द्र, पृष्ठ – 215
2. उत्तर प्रदेश में गांधीजी – श्री रामनाथ सुमन, पृष्ठ – 150
3. आधुनिक भार का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, डा. मित्तल, पृष्ठ – 439

इस आन्दोलन के कार्यक्रम की घोषणा की जिसमें प्रमुख बातें निम्नलिखित थीं[1]

1. गांव – गांव में नमक कानून तोड़ा जाए।
2. छात्र सरकारी विद्यालयों व कर्मचारी दफ्तर को छोड़ दें ।
3. विदेशी बस्त्रों को जलाया जाए।
4. सरकार को कर न दिया जाए।
5. नारियां शराब, अफीम व विदेशी बस्त्रों की दुकानों का धिराव करें।

आन्दोलन तेजी से फैला और पूरे देश में नमक कानून तोड़े गए। देश में हर जगह जनता हड़तालों, प्रदर्शनों और विदेशी बस्त्रों के बहिष्कार में भाग लेने लगी और कर अदा करने से इनकार करने लगी। हजारों स्त्रियाँ घरों के अन्दर से बाहर निकली और सत्याग्रह में भाग लिया विदेशी बस्त्रों व शराब बेचने वाली दुकानों पर घरना देने में उनकी सक्रिय भूमिका रही।

गढ़वाली सिपाहियों के दो प्लाटूनों ने अहिंसक प्रदर्शनकारियों पर गोली चलाने से मना कर दिया इसके नेता चन्द्रसिंह गढ़वाली थे।[1] इस घटना से स्पष्ट हो गया कि राष्ट्रवाद की भावना जनता के साथ – साथ भारतीय सेना तक में फैल चुकी थी जो ब्रिटिश शासन का प्रमुख आधार थी।

महात्मा गांधी जी द्वारा नमक कानून भंग करने का समाचार समाचार – पत्रों के माध्यम से गांव – गांव तक काँग्रेस कार्यकर्ताओं ने पहुँचाया। झांसी जिला सहित सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड में अप्रैल के दूसरे सप्ताह को राष्ट्रीय सप्ताह के रूप में नमक बनाने और कानून भंग करने के रूप में मनाया गया। झांसी जिले में सबसे पहले सुपारागांव में चार व्यक्ति नमक बनाते हुए पकड़े गये।[2] बाद में 150 सत्याग्रही नमक कानून भंग करते हुए पकड़े गये।[3] जिसमें ललितपुर क्षेत्र से पं. नन्दकिशोर किलेदार, पं. ब्रजनन्दन किलेदार, पं. ब्रजनन्दन शर्मा, बाबूलाल निगम, वृन्दावन इमलिया, मथुराप्रसाद वैद्य, पं. हरीराम चौबे (सभी ललितपुर) कामरेड चन्दनसिंह (जखौरा), रामदास दुबे (बांसी), मणिराम कंचन (तालबेहट)[4] आदि थे।

---

1. आधुनिक भारत – विपिन चन्द्र, पृष्ठ – 216
2. झांसी गजेटियर 1965 ई0, ई0 बी0 जोशी, पृष्ठ – 72
3. झांसी गजेटियर 1965 ई0, ई0 बी0 जोशी, पृष्ठ – 72
4. (1) व्यक्तिगत साक्षत्कार – पं. बृजनन्दन किलेदार

3. गोलमेज सम्मेलन तथा गाँधी - इरविन समझौता का प्रभाव

सरकार का विचार था कि कॉंग्रेस के अग्रणी श्रेणी के समस्त नेताओं को बन्दी बनाने से आन्दोलन स्वतः कमजोर पड़ जायेगा। गांधी जी को 5 मई 1930 ई0 को गिरफ्तार कर लिया गया था। इसके विरोध में समस्त भारत में हड़ताल हुई। ऐसी स्थिति में वायसराय इरविन की समस्याएं दिन प्रतिदन बढ़ती जा रही थी। इसी समय साइमन कमीशन की रिपोर्ट प्रकाशित हुई, जिसका सभी भारतीय दलों ने घोर विरोध किया। स्वयं इरविन ने भी रिपोर्ट को पसन्द नहीं किया क्योंकि उसमें अधिराज्य (डोमीनियन स्टेटस) देने का उल्लेख किया गया था।

अतः इरविन के प्रत्यनों से 12 नवम्बर 1930ई0 को लन्दन में प्रथम गोलमेज सम्मेलन का आयोजन किया गया,[1] जिसका उद्‌देश्य भारतीय समस्या का समाधान खोजना था। इस सम्मेलन की अध्यक्षता प्रधानमंत्री मैकडानैण्ड ने की तथा इसमें 89 प्रतिनिधियों ने भाग लिया, जिसमें से 57 प्रतिनिधि ब्रिटिश भारत के, 16 भारतीय रियासतों के, व 16 इग्लैण्ड की संसद के प्रतिनिधि थे। कॉंग्रेस ने इस प्रथम गोलमेज सम्मेलन में भाग नहीं लिया। और उसकी कार्यवाहियां बेकार गई।[2] अब सरकार ने कॉंग्रेस से किसी सहमति पर पहुँचने के लिए बातचीत शुरू की जाए तब इरबिन के प्रत्यनों से 26 जनवरी 1931 ई0 को कॉंग्रेस के सभी नेता रिहा कर दिए गए। गांधी जी व इरविन के मध्य समझौता कराने के लिए श्री तेजबहादुर सप्रू व श्री जयकर ने मध्यस्थ का कार्य किया। गांधी जी व इरविन के मध्य पत्र - व्यवहार हुआ। तत्पश्चात 17 फरवरी 1931 से 4 मार्च तक समय - समय पर दोनों में वार्ता होती रही व अन्त में 4 मार्च की रात को दोनों में समझौता हो गया जिस पर 5 मार्च को हस्ताक्षर किए गए।[3] इसके द्वारा सरकार ने स्वीकार किया कि वह सभी अध्यादेशों व मुकदमों को वापस ले लेगी तथा अहिंसक आन्दोलन करने वाले सभी कैदियों को रिहा कर देगी तथा उपयोग के लिए नमक बनाने का अधिकार और बिदेशी बस्त्रों तथा शराब की दुकानों पर धरना देने का अधिकार भी मान लिया। महात्मा गांधी जी ने भी समझौते के अन्तर्गत अनेक बातें स्वीकार की थी जैसे - सविनय अवज्ञा आन्दोलन को स्थगित करना, पुलिस की क्रूरता की जांच की मांग को त्यागना, सभी बहिष्कारों का त्याग तथा यह कि कांग्रेस द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में भाग लेगी।

---

1. आधुनिक भारत का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, मित्तल, पृष्ठ - 441
2. आधुनिक भारत का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, मित्तल, पृष्ठ - 441
3. आधुनिक भारत का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, मित्तल, पृष्ठ - 442

इस समझौते की काफी आलोचना की गयी क्योंकि एक बार फिर आन्दोलन को ऐसे समय पर रोक दिया गया था जबकि वह शिखर पर था। पं. नेहरू व सुभाष बोस इसके घोर विरोधी थे।[1] परन्तु गांधी जी ने इस समझौते को उचित ठहराया तथा कहा कि इसकी प्रमुख बात यह है कि इसमें पहली बार अंग्रेज सरकार ने भारतीय नेताओं के साथ समानता का व्यवहार किया।

जन साधारण ने भी इसका विरोध किया क्योंकि 1928ई0 में साण्डर्स की हत्या के आरोप में शहीद भगतसिंह, सुखदेव व राजगुरु के मृत्यु दण्ड को इस समझौते से न रोका जा सका था। फिर भी 29 मार्च 1931 ई0 को करांची के कॉँग्रेस अधिवेशन में इस समझौते को कॉँग्रेस की सहमति प्रदान की गयी।[2] और गांधी जी में अपनी आस्था व्यक्त की।

---

1. आधुनिक भारत का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, मित्तल, पृष्ठ – 443
2. आधुनिक भारत का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, मित्तल, पृष्ठ – 443

4. पं. नन्दकिशोर किलेदार एवं पं. बृजनन्दन किलेदार का प्रेरक नेतृत्व

दिसम्बर 1929ई0 में कॉंग्रेस के लाहौर अधिवेशन में झांसी जिले से भी डेलीगेशन पहुँचे थे झांसी से इस डेलीगेशन में रघुनाथ विनायक घुलेकर, कुंज बिहारीलाल शिवानी, एवं लाइली प्रसाद आदि सदस्य थे। ललितपुर क्षेत्र से पं. नन्दकिशोर किलेदार एवं बृजनन्दन किलेदार पिता-पुत्र ने भाग लिया था।[1] वहाँ से लौटकर इस डेलीगेशन ने झांसी जिले में सत्याग्रह एवं सरकार को असहयोग आदि कार्यक्रमों की योजना बनाई। झांसी जिसके ललितपुर क्षेत्र में पं. नन्दकिशोर किलेदार एवं पं. बृजनन्दन किलेदार के नेतृत्व में एक जुलूस निकाला गया तथा विदेशी बस्त्रों की दुकानों एंव शराब के ठेकों पर धरने दिये गये और तिरंगा झण्डा फहराया गया।[2]

फलतः पं. नन्दकिशोर किलेदार व पं. बृजनन्दन किलेदार को भारतीय दण्ड संहिता (ताजीरात हिन्द) के सेक्सन 107 के अन्तर्गत बन्दी बना लिया गया और 1 बर्ष के कठोर कारावास की सजा दी गयी।[3] इधर गांधी जी द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में भाग लेकर वापिस आ गये थे। द्वितीय गोलमेज सम्मेलन 7 सितम्बर 1931ई0 को प्रारम्भ हुआ परन्तु गांधी जी 12 सितम्बर 1931 ई0 को लन्दन पहुँचे।[4] गांधीजी की जोरदार वकालत के बावजूद सरकार ने डोमिनियन स्टेट्स तत्काल देकर उनके आधार पर स्वतंत्रता की बुनियादी मांग को मानने से इनकार कर दिया। गांधी जी दिसम्बर 1931 ई0 में भारत वापस आ गये। भारत आगमन पर गांधी जी का भव्य स्वागत किया गया, यद्यपि गांधीजी खाली हाथ लौटे थे। अतः गांधीजी ने 3 जनवरी 1932ई0 को पुनः सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारम्भ करने की घोषणा की।[5]

तब तक पं. नन्दकिशोर किलेदार व पं. बृजनन्दन किलेदार जेल से बाहर आ चुके थे। 1932ई0 में पुनः पिता-पुत्र ने आन्दोलन शुरू कर दिया तब आप दोनों को बन्दी बना लिया गया और 6 माह के कैद की सजा दी।[6]

---

1. (1) सामाजिक दयारा, लेख – डॉ. कृष्णानन्द हुण्डैत, पृष्ठ – 4
   (2) व्यक्तिगत साक्षात्कार – पं. ब्रजनन्दन किलेदार
2. व्यक्तिगत साक्षात्कार – पं. ब्रजनन्दन किलेदार
3. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल 'विरही', पृष्ठ – 10 एवं 14
4. आधुनिक भारत का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, मित्तल, पृष्ठ – 444
5. आधुनिक भारत का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, मित्तल, पृष्ठ – 445
6. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल 'विरही', पृष्ठ – 10 एवं 14

जब पिता – पुत्र 1932ई0 में झांसी जेल में बन्द थे उस समय झांसी में कलेक्टर मि0 डालिंग थे।[1] कलेक्टर कूटनीतिज्ञता में पारंगत था उनकी नीतियां भी बड़े –बड़े जमींदारो, ताल्लुकेदारों से सम्बन्ध रखकर उनके जरिये देहातों को अपने नियंत्रण में रखना इसके अलावा एक और नीति उसने अपना रखी थी कि जेल में आने वालों में से आधे लोगों को यूँ ही वापिस कर देना। होता यह था कि वह बहुत से लोगों को बिना कोई चार्ज लगाये जेल से बाहर कर देता था। लेकिन आम जनता पर इसका उल्टा असर पड़ता था। आम जनता समझती थी कि ये लोग माफी मांग कर जेल से बाहर आये हैं। और आम जनता इन कारणों से आन्दोलनों के प्रति उदासीन हो जाती थी। इसी तरह एक बार 1932ई0 में पं. नन्दकिशोर किलेदार के साथ घट्ना घटी। कलेक्टर को मालूम चला कि किलेदार पिता–पुत्र फिर जेल में आ गये हैं। तो उसने अपनी व्यूह रचना रची। बैरक नं. 6 में बन्द पिता – पुत्र को एक वार्डन ने दौड़ कर सूचना दी कि कलेक्टर साहब उनसे मिलने आ रहे हैं।[2] सूचना के 5 मिनिट बाद कलेक्टर बेरक में आ गया। पं. नन्दकिशोर किलेदार कलेक्टर से बात करते पास आ गये और पं. बृजनन्दन किलेदार वही पास में उनके वार्तालाप को सुनने लगे, कलेक्टर ने कहा –

"मुझे आपको यहाँ देखकर काफी अफसोस हो रहा है, वास्तव में तुम्हें तो यहाँ होना ही नहीं चाहिए था।"[3]

कलेक्टर चाहता था कि पं. किलेदार थोड़े से कमजोर पड़े तो इन्हें जेल से बाहर कर दिया जाए और फिर दुष्प्रचार कर आन्दोलन को लड़खड़ाने पर वाध्य कर दिया जाए। लेकिन किलेदार जी ने पलट्कर तीखा जबाब दिया –

"आपको इस बात का अफसोस नहीं होना चाहिए कि मैं यहाँ हूँ अफसोस तो आपको इस बात का होना चाहिए कि आप अपने देश आयरलैण्ड में मौजूद क्यों नहीं हैं। जहाँ आपके भाई बन्धु डी. वोल्डा के नेतृत्व में साम्राज्यवाद के विरूद्ध संघर्ष कर रहे हैं।"[4]

---

1. (1) व्यक्तिगत साक्षात्कार – पं. ब्रजनन्दन किलेदार
   (2) साप्ताहिक मध्यदेश, पृष्ठ – 4
2. (1) व्यक्तिगत साक्षात्कार – पं. ब्रजनन्दन किलेदार
   (2) साप्ताहिक मध्यदेश, पृष्ठ – 4
3. (1) व्यक्तिगत साक्षात्कार – पं. ब्रजनन्दन किलेदार
   (2) साप्ताहिक मध्यदेश, पृष्ठ – 4
4. (1) व्यक्तिगत साक्षात्कार – पं. ब्रजनन्दन किलेदार
   (2) साप्ताहिक मध्यदेश, पृष्ठ – 4

कलेक्टर इस बात से इतना निरूत्तर और हतोत्साहित हो गया कि वह दो मिनिट तो किंकर्त्तव्य विमूढ़ सा खड़ा रहा फिर उल्टे पाँव वापिस लौट गया, और पं. नन्दकिशोर किलेदार पुनः गीता पढ़ने लगे। उन्हें गीता पर अपार श्रद्धा थी वे कहा करते थे। कि -

"गीता मुझे संघर्ष करने और कर्तव्य पर बिना किसी मोह के चलने की सद्प्रेरणा देती है।"

पं. किलेदार के साथ सविनय अवज्ञा आंदोलन में पं. ब्रजनन्दन शर्मा, मथुराप्रसाद जी वैद्य, बृन्दावन इमलिया, बाबूलाल निगम (सभी ललितपुर) आदि ने भी अपनी भागीदारी दी थी।[1]

स्वतंत्रत भारत की सरकार ने आपको केन्द्रीय पेंसन देकर सम्मानित किया।[2]

---

1. व्यक्तिगत साक्षात्कार - पं. ब्रजनन्दन किलेदार
2. झांसी दर्शन - मोतीलाल, पृष्ठ - 85

5. पं. श्री बृजनन्दन शर्मा जी का परिचय एवं जेल यात्रा[1]

पं. श्री बृजनन्दन शर्मा जी का जन्म 01 दिसम्बर 1911 ई0 में पं. नारायणदास तिवारी जी के घर ललितपुर नगर के सुभाषपुरा मुहल्ला में हुआ था।[2] महात्मा गांधी जी के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर मात्र 14 वर्ष की अवस्था में पढ़ाई - लिखाई छोड़कर स्वतंत्रता आन्दोलन में कूद पड़े।[3] उन्होंने नगर के तत्सम यीन युवकों में राष्ट्रप्रेम की भावना भरकर आजादी के आन्दोलन में कूदने की प्रेरणा दी। फलस्वरूप झांसी जिले के सब डिवीजन ललितपुर में आन्दोलन की तीव्र ज्वालायें धधक उठीं। श्री शर्मा जी ने घर की सुध बुध त्यागकर उन्होंने अपना सारा जीवन आजादी के आन्दोलन को समर्पित कर दिया। वहा कांग्रेस कार्यालय में डेरा जमाकर आजादी के आन्दोलन का विगुल फूंकते रहे। कुछ थोड़ा बहुत मिल जाने पर पेट की आग शान्त करते हुये और पानी से पेट भरते हुये (अनेक अवसरों पर) आन्दोलन को गतिमय करते रहे। श्री शर्मा जी को आजादी की इतनी चाह थी कि उन्हें अपनी माँ के दिवंगत होने की सूचना मिली लेकिन आन्दोलन में मशगूल होने के कारण अपनी माँ की अंत्येष्टि में भाग नहीं ले सके।[4] उनके क्रांतिकारी साथियों ने उनसे अंत्येष्टि में शामिल होने की अनुनय की लेकिन उन्होंने अपने साथियों से यह कह कर कि इस समय भारत माता को उनकी अधिक आवश्यकता है चुप कर दिया। ऐसे अनेक उदाहरण भरे पड़े हैं। जिनके द्वारा पता चलता है कि श्री शर्मा जी के जीवन काल में अनेक विसंगतियां आयी लेकिन वह आजादी की राह से विचलित नहीं हुए।

गांधी जी द्वारा 6 अप्रैल 1930 को नमक कानून भंग करने के साथ ही सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारम्भ हो गया।[5] कुलपहाड़ (हमीरपुर) में प्रसिद्ध नेता जी भगवानदास अरजरिया (वालेन्दु) की अध्यक्षता में सत्याग्रहियों ने बुन्देलखण्ड के सभी जिला मुख्यालयों, तहसील मुख्यालयों

---

1. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ - 72
2. (1) ललितपुर स्वर्ण जयंती - पृष्ठ - 16
   (2) व्यक्तिगत साक्षात्कार - पं. ब्रजनन्दन शर्मा
3. (1) ललितपुर स्वर्ण जयंती - पृष्ठ - 16
   (2) व्यक्तिगत साक्षात्कार - पं. ब्रजनन्दन शर्मा
4. (1) ललितपुर स्वर्ण जयंती - पृष्ठ - 16
   (2) व्यक्तिगत साक्षात्कार - पं. ब्रजनन्दन शर्मा
5. आधुनिक भारत का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, मित्तल, पृष्ठ - 439

तथा कस्बों और गांवों में 13 अप्रैल 1930ई0 वैशाखी के दिन सविनय अवज्ञा आन्दोलन शुरू करने का निर्णय लिया।[1]

ललितपुर सब डिवीजन में पं. नन्दकिशोर किलेदार ने पहले से ही जनमानस को अवज्ञा आन्दोलन के लिए प्रशिक्षित कर लिया था। इस आन्दोलन में पं. बृजनन्दन शर्मा एक नव युवक थे और आपके तेवर बहुत तीव्र थे जिससे स्थानीय डिप्टी पुलिस सुपरिटेन्डेन्ट श्री लिन्डिनबूम की नजरों में आप चढ़ गये। श्री लिन्डिनबूम के द्वरा आपको बुरी तरह पीटा गया और सिर के बाल तक खींचे गये।[2] जो क्रूर दास्तान आप स्वयं भी सुनाते हैं एवं जनसमूह के द्वारा भी अभी भी सुनायी जाती है। 1930ई0 में आपको गिरफ्तार करने के साथ. पिता के सामान की कुर्को की गई, जेल में यातनाएं दी गयी। आपको 3 माह की सजा प्रदान की गई थी।[3]

3 माह की सजा काट कर बाहर आने पर आप पुनः सक्रिय हो गये तो अंग्रेज सरकार ने आपको 1931ई0 में गिरफ्तार करके 6 माह की कैद की सजा सुनाई।[4] इससे पूर्व अक्टूबर 1930 ई0 को पं. जवाहर लाल नेहरू जी का झांसी आगमन हुआ तथा सिविल अस्पताल के पास अनका भाषण हुआ था।[5] वहाँ आप ललितपुर क्षेत्र के अनके सत्याग्राहियों के साथ पहुँचे थे और सबसे पहले नेहरू जी को देखा था।

जैसे ही आप 1931 में 6 माह की सजा काट कर बाहर आये तब तक गांधी जी द्वारा आन्दोलन स्थगित किया जा चुका था। परन्तु गांधी जी ने द्वितीय गोलमेज सम्मेलन की वार्ता से कोई परिणाम ने निकलने के कारण 3 जनवरी 1932 ई0 को पुनः सविनय अवज्ञा

---

1. अनासक्त मनस्वी, पृष्ठ - 196
2. (1) रजत नीराजना - पृष्ठ - 12
   (2) व्यक्तिगत साक्षात्कार - श्री शर्मा जी
3. (1) रजत नीराजना - पृष्ठ - 12
   (2) व्यक्तिगत साक्षात्कार - श्री शर्मा जी
   (3) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक - झांसी डिवीजन - सं. - एस. पी. भट्टाचार्य
   (4) 13 अगस्त 1997, दैनिक जागरण, झांसी, पृष्ठ - 4
4. (1) रजत नीराजना - पृष्ठ - 12
   (2) व्यक्तिगत साक्षात्कार - श्री शर्मा जी
5. झांसी गजेटियर, 1965, ई0 वी0 जोशी, पृष्ठ - 72-73

आन्दोलन प्रारम्भ करने की घोषणा की तब आप पुनः सक्रिय हो गये। सन् 1932 ई0 में शराब की दुकानों पर पिकेटिंग करते हुये आपको गिरफ्तार कर लिया गया।[1] इस समय आपके नेतृत्व में विद्यार्थी अध्ययन हेतु विद्यालय न जाकर शराब की दुकानों पर धरने देते थे। शराब के ग्राहकों को रोकने के लिए पृथ्वी पर लेट जाते और कहते कि यदि शराब पीना है तो हम लोगों की छाती पर पैर रखकर निकल जाओ।[2] यही नहीं आन्दोलन काल में नित्य बाल स्वयं सेवक राष्ट्रीय गीत गाते हुये निकलते तथा ब्रिटिश सरकार के विरूद्ध नारे लगाते थे।[3] सन् 1932ई0 में श्री शर्मा जी दो बार 6-6 माह की सजा प्रदान की गयी। तथा 50 रूपया अर्थदण्ड लगाया गया।[4] व्यक्तिगत सत्याग्रह के दौरान 1941 ई0 में भी आपको दो बार 6-6 माह की सजा दी गयी तथा 100 रूपया अर्थदण्ड लगाया गया।[5] सन् 1942 के भारत छोड़ों आन्दोलन में भी आपको 1 वर्ष का कारावास तथा 100 रूपया अर्थदण्ड लगाया गया।[6] इस समय आपने खद्दर भण्डार तथा पुस्तकालय की स्थापना कर राष्ट्रीय भावनाओं का खूब प्रचार किया।

सन् 1930ई. से 1942 ई0 तक श्री शर्माजी आजादी के प्रत्येक आन्दोलनों में गिरफ्तार किये गये। इस दौरान उन्हें ललितपुर, झांसी, लखनऊ, कैम्प जेल, इलाहाबाद, आगरा आदि जेलों में यातनायें दी गयी। यहाँ उनका सम्पर्क स्व. श्री लालबहादुर शास्त्री, बाबू सम्पूर्णानन्द, सुन्दरलाल जी कर्मवीर, कृष्णदत्त पालीवाल, सेठ अचल सिंह, रामचन्द पालीवाल, आत्मारा, गोविन्द खेर, रघुनाथ विनायक धुलेकर आदि से हुआ।

---

1. (1) रजत नीराजना - पृष्ठ - 12
   (2) ललितपुर स्वर्ण जंयती - पृष्ठ - 16
   (3) व्यक्तिगत साक्षात्कार - श्री शर्मा जी
   (4) 13 अगस्त 1997, दैनिक जागरण, झांसी, पृष्ठ - 4
2. सामाजिक [illegible], पृष्ठ - 10, लेख - डॉ. कृष्णानन्दन हुण्डैत
3. रजत नीराजना - पृष्ठ - 12
4. (1) रजत नीराजना - पृष्ठ - 12
   (2) व्यक्तिगत साक्षात्कार - श्री शर्मा जी
5. (1) रजत नीराजना - पृष्ठ - 12
   (2) व्यक्तिगत साक्षात्कार - श्री शर्मा जी
6. (1) रजत नीराजना - पृष्ठ - 12
   (2) व्यक्तिगत साक्षात्कार - श्री शर्मा जी
   (3) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक-झांसी डिवीजन, सं. - एस. पी. भट्टाचार्य
7. (1) रजत नीराजना - पृष्ठ - 12
   (2) व्यक्तिगत साक्षात्कार - श्री शर्मा जी

क्रांतिकारी, गाँधीवादी, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी
पं. श्री बृजनन्दन जी शर्मा

6. श्री बाबूलाल निगम'का अवज्ञा आन्दोलन

श्री बाबूलाल निगम का जन्म ललितपुर में 9 अगस्त 1901 ई० को श्री चुन्नीलाल कायस्थ के घर हुआ।[1] राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के आह्वान पर 1930ई. में नमक कानून तोड़ने के लिए सक्रिय हुये। तथा कानून की अवज्ञा करना अपना धर्म बना लिया। जब तक देश को आजादी नहीं मिल जाती तब तक आराम से न बैठने की कसम ली।

सन् 1930ई० के नमक कानून भंग करने के कारण आप गिरफ्तार कर लिये गये थे। और 1 वर्ष की जेल तथा 500 रूपये अर्थदण्ड दिया गया था।[3] जैसे ही आप जेल से बाहर आये तो सन् 1931ई० में लगानबन्दी आन्दोलन में आपने कछ्वाहों का नेतृत्व किया।[4] तथा इस आन्दोलन को दिशा प्रदान की। अंग्रेज सरकार ने आपको गिरफ्तार करके 6 माह की कैद के साथ आगरा जेल भेज दिया।[5] आप क्रांतिकारी नवीन दृष्टि के थे इसलिए चन्द्रशेखर आजाद व शम्भूनाथ जैसे क्रांतिकारीयों को आपने खूब सहयोग प्रदान किया।[6] काकोरी काण्ड के पश्चात चन्द्रशेखर आजाद ने अपना बहुत समय साधू वेश धारी रूप में झांसी. ललितपुर तथा ओरछा के ढीमरपुर गांव में व्यतीत किया[7] तथा क्रांतिकारी गतिविधियों का संचालन किया।

श्री बाबूलाल निगम ने ललितपुर डाक बंगले में अंग्रेज सार्जेन्ट की तिरंगे झण्डे को अपमानित करने के कारण खूब पिटाई की थी।[8] परन्तु बाद में श्री निगम को पकड़ लिया गया और उन्हें कठोर यातनाएँ दी गयी।

सन् 1940 ई० में व्यक्तिगत सत्याग्रह में भी आप सक्रिय हुये तब आपको गिरफ्तार करके 6 माह की सजा दी गयी।[9]

---

1. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ – 71
   (2) ललितपुर स्वर्ण जंयती – पृष्ठ – 16
2. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 17
3. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 17
4. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 17
5. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 17
6. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 17
7. भगवान दास माहौर, सेठ भगवानदास, पृष्ठ – 11
8. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 17
9. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 17

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

स्व. श्री बाबूलाल निगम

7. श्री भैरोंप्रसाद राय की जेल यात्रा

श्री भैरोंप्रसाद राय का जन्म कार्तिक बदी 5 सम्वत 1953 वि. को ललितपुर जिले के ब्लाक बार में हुआ था।[1] आपके पिता का नाम श्री मूलचन्द राय था।[2] आप कर्मठ गांधीवादी कार्यकर्ता माने जाते थे। जिस समय गांधीजी के आह्वान पर ललितपुर नगर में पं. नन्दकिशोर किलेदार, पं. बृजनन्दन किलेदार, पं. बृजनन्दन शर्मा, श्री बाबूलाल निगम श्री वृन्दावन इमलिया आदि जैसे संत्याग्रहियों ने यहाँ अवज्ञा आन्दोलन शुरू किया उसी समय ग्रामीण अंचल बार में आपने जन समूह को साथ लेकर नमक सत्याग्रह प्रारम्भ किया।[3] उस समय आपको गिरफ्तार कर जल भेज दिया तथा 1930 ई0 में ही आप जेल से बाहर आये तब आप 1931 ई0 में बल्देबगढ़ में आन्दोलन के सन्दर्भ में कैद किये गये।[4] इसके पश्चात 1941ई. में व्यक्तिगत सत्याग्रह में भी आप को 1 वर्ष की सजा दी गयी।[5]

1942ई0 के राष्ट्रव्यापी आन्दोलन में आप फिर अपने निवास स्थान बार में सक्रिय हुये तो अंग्रेज सरकार ने 11 माह के लिए नजरबन्द कर आगरा जेल भेज दिया।[6] इस प्रकार आप अपने सम्पूर्ण जीवन में आजादी के लिए लड़ते रहे।

---

1. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, एस. पी. भट्टाचार्य, पृष्ठ – 74
   (2) रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 41
2. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, एस. पी. भट्टाचार्य, पृष्ठ – 74
3. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, एस. पी. भट्टाचार्य, पृष्ठ – 74
   (2) रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 41
4. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, एस. पी. भट्टाचार्य, पृष्ठ – 74
5. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, एस. पी. भट्टाचार्य, पृष्ठ – 74
6. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, एस. पी. भट्टाचार्य, पृष्ठ – 74

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

स्व. श्री भैरों प्रसाद राय

8. श्री कन्हैयालाल कड़ोरे का योगदान

श्री कन्हैयालाल कड़ोरे का जन्म 1900ई0 में ललितपुर जिले की तहसील तालबेहट में हुआ था।[1] आपके पिता का नाम श्री तुलसीराम था।[2] 1930ई0 में सविनय अवज्ञा आन्दोलन में आप राष्ट्र भावना से प्रेरित होकर सम्मिलित हुये तथा वर्तमान तहसील तालबेहट (उस समय तहसील नही थी।) में विदेशी माल का बहिष्कार किया तब आपको गिरफ्तार कर 9 माह की सजा दी गयी तथा ललितपुर जेल में रखा गया।[3] इस प्रकार ग्रामीण अंचल से श्री कड़ोरे जी ने देश की आजादी के लिए योगदान दिया।

---

1. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, एस. पी. भट्टाचार्य, पृष्ठ - 53
   (2) रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 43
2. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ट - 43
3. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, एस. पी. भट्टाचार्य, पृष्ठ - 53
   (2) रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 43

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

स्व. श्री कन्हैयालाल कडोरे

9. श्री कल्लूराम यादव[1] के कार्य

श्री कल्लूराम यादव का जन्म 1900ई0 में श्री जानकीप्रसाद जी के यहाँ ललितुपर नगर के रामनगर वंशीपुरा मुहल्ला में हुआ था।[2] आप पं. नन्दकिशोर किलेदार को अपना गुरु मानते थे और श्री किलेदार जी के दिशा निर्देशन में आप आजादी के कठिन से कठिन कार्मों को अंजाम देते थे। आप सूचनाओं को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाने का काम बड़ी चतुराई से निभाते थे। आप ने सन् 1930ई0 के सविनय अवज्ञा आन्दोलन में हड़ताल, जुलूस आदि में अपनी सहभागिता दर्शायी। उस समय आप को बंदी बनाकर 1 वर्ष की सजा दी गयी। आपने ललितपुर क्षेत्र से अपना योगदान देकर देश को आजाद कराने में योगदान दिया।

---

1. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, एस. पी. भट्टाचार्य, पृष्ठ – 53
2. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 36
3. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, एस. पी. भट्टाचार्य, पृष्ठ – 53
   (2) रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 36

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

स्व. श्री कल्लूराम यादव

10. कामरेड चंदन सिंह[1] की सक्रिय भागीदारी

वयोबृद्ध स्वतंत्रता सेनानी कामरेड चंदन सिंह का जन्म 2 दिसम्बर 1912ई0 को ललितपुर जिले के ब्लाक जखौरा में हुआ था।[2] आपके पिता का नाम श्री रामप्रसाद लोधी था।[3] अपनी तरूणावस्था में गांधी जी के आह्वान से प्रभावित होकर कामरेड चंदनसिंह आजादी के आन्दोलन में कूद पड़े थे। आपने क्रांतिकारी कैम्प का संचालन पं. नन्दकिशोर किलेदार व पं. बृजनन्दन शर्मा के साथ किया तथा चन्द्रशेखर आजाद जैसे क्रांतिकारी इन कैम्पों का समय - समय पर निरीक्षण एवं दिशा निर्देशन करते थे।[4] सन् 1930ई. में नमक सत्याग्रह आन्दोलन में आपने पं. नन्दकिशोर किलेदार पं. बृजनन्दन किलेदार के साथ भागीदारी निभायी उस समय आप बन्दी बना लिये गये तथा एक वर्ष के कठोर कारावास की सजा सुनाई गयी।[5] आपने आन्दोलन को ग्रामीण क्षेत्रों में खूब प्रचारित किया जिससे ललितपुर क्षेत्र में सविनय अवज्ञा आन्दोलन सफल हो सके। जेल से आने के बाद गांधी जी द्वारा पुनः 3 फरवरी 1932ई0 को सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारम्भ किये जाने पर आप पुनः जुलूस एवं विदेशी माल की बहिष्कार तथा शराब की दुकानों पर धरना आदि को क्रियान्वित किया, तब गिरफ्तार कर लिये गये तथा 9 माह के कठोर कारावास की सजा पाई[6] दो बार सजा पाने के बाद भी कामरेड चंदनसिंह जी ने अपने कर्तव्यों की इति श्री नहीं समझी और 1942ई. के भारत छोड़ो आन्दोलन में भी सक्रिय भागीदारी के कारण गिरफ्तार किये गये तथा 3 माह की सजा मिली। देश आजाद होने पर आप कांग्रेस नेताओं से मतभेद होने के कारण साम्यवादी दल में प्रविष्ट हुये। 1974 ई0 में ललितपुर विधानसभा से विधायक निर्वाचित हुये।

---

1. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, एस. पी. भट्टाचार्य, पृष्ठ - 60
2. (1) ललितपुर स्वर्ण जंयती - पृष्ठ - 16
   (2) व्यक्तिगत साक्षात्कार - कामरेड चन्दन सिंह
3. (1) ललितपुर स्वर्ण जंयती - पृष्ठ - 16
   (2) व्यक्तिगत साक्षात्कार - कामरेड
   (3) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, एस. पी. भट्टाचार्य, पृष्ठ - 60
4. व्यक्तिगत साक्षात्कार - कामरेड चन्दन सिंह, बृजनन्दन किलेदार
5. (1) ललितपुर स्वर्ण जंयती - पृष्ठ - 16
   (2) रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 70
   (3) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, एस. पी. भट्टाचार्य, पृष्ठ - 60
6. (1) ललितपुर स्वर्ण जंयती - पृष्ठ - 16
   (2) रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 70
   (3) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, एस. पी. भट्टाचार्य, पृष्ठ - 60

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

कामरेड श्री चन्दन सिंह (पूर्व विधायक)

ललितपुर विधान सभा क्षेत्र

सविनय अवज्ञा आन्दोलन में अन्य सेनानियों का योगदान

(1) श्री वृन्दावन इमलिया

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी श्री वृन्दावन इमलिया जी का जन्म 1912ई0 में ललितपुर नगर में श्री परमानन्द जैन जी के घर हुआ था।[1] देश को आजाद कराने की चाह ने आपको गांधी जी के सविनय अवज्ञा आन्दोलन में सम्मिलित होने के लिए प्रेरित किया। सम्पूर्ण देश की भाँति ललितपुर क्षेत्र में भी नमक कानून भंग किया गया उसमें श्री वृन्दावन इमलिया जी भी सम्मिलित थे। आपको गिरफ्तार करने के बाद पं. नन्दकिशोर किलेदार के साथ 1 वर्ष की सजा दी गयी।[2] आप केवल ललितपुर क्षेत्र में ही सक्रिय नहीं थे भारत के केन्द्रीय स्थल देहली में भी सतत् संघर्षरत रहे। वहाँ आपको 1932ई0 में गिरफ्तार कर 6 सप्ताह की सजा दी गयी। इसके पश्चात आपने 1932ई0 में ही पुनः ललितपुर क्षेत्र में सक्रियता दिखाई तथा पुनः अवज्ञा आन्दोलन शुरू किया तो बन्दी बना लिये गये तथा 6 माह के लिए झांसी जेल भेज दिये गये।[4] जुलूस और हड़तालों से अपना जीवन चरित्र रचने के कारण आपको देहली उन्नाव झांसी तथा ललितपुर आदि की जेलों में रहना पड़ा।[5] 1942ई0 के आन्दोलन में भी आप ने अपना योगदान दिया और देश आजाद कराया।[6]

---

1. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, एस. पी. भट्टाचार्य, पृष्ठ – 72
   (2) रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 16
2. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 16
3. (1) रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 16
   (2) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, एस. पी. भट्टाचार्य, पृष्ठ – 72
4. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 16
5. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 16
6. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 16
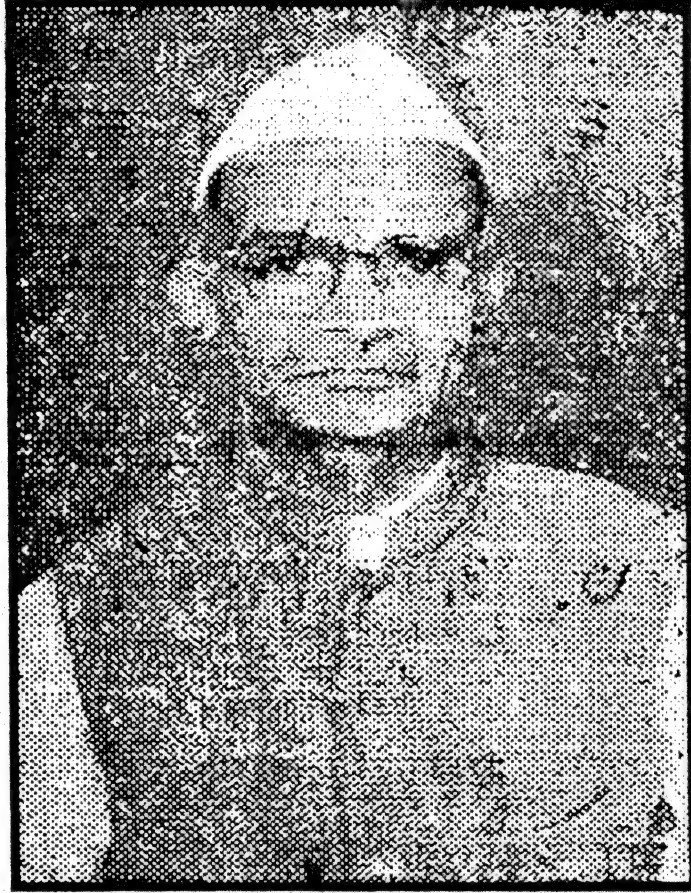
स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

स्व. श्री बृन्दावन इमलिया

(2) श्री मथुराप्रसाद जी वैद्य

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी श्री मथुराप्रसाद वैद्य का जन्म संवत 1951 वि0 में महरौनी में हुआ था आपके पिता का नाम श्री दौलतराम जी था।[1] आपने बम्बई से प्रकाशित वेंकटेश्वर समाचार का सम्पादन किया।[2] बेंकटेश्वर का प्रकाशन 1896 में हुआ जिसके प्रथम सम्पादक बाबूरामदास वर्मा हुए।[3] एवं हिन्दी का बम्बई में प्रचार करते हुये राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के आव्हान पर लोकमान्य तिलक, ऐनीबीसेंट, लाजपत राय जैसे महान नेताओं का सत्संग करते हुए, 1930ई0 के सविनय अवज्ञा आन्दोलन की ओर उन्मुख हुये।[4] पं. नन्दकिशोर किलेदार जी के प्रभाव में राष्ट्रीय जन आन्दोलन में पूर्णरूपेण अवतरित हुये। तथा सन् 1930 ई0 में ही शराब बन्दी के लिए निकेटिंग करते हुये गिरफ्तार कर लिये गये। तथा ललितपुर एवं उरई की जेलों में रखा गया।[5] जेल में ही राष्ट्रीय झण्डा एवं स्वतंत्रता दिवस निकालने पर खड़ी हथकड़ी की कठोरतम सजा को भोगने के भागीदार हुए।[6] सन् 1942ई0 के आन्दोलन में भी आप 10 माह के लिए नजरबंद किये गये।[7]

---

1. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 15
2. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 15
3. समाचारा पत्रों का इतिहास – अम्बिका प्रसाद बाजपेजी, पृष्ठ – 229-230
3. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 15
4. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 15
5. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 15
6. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 15
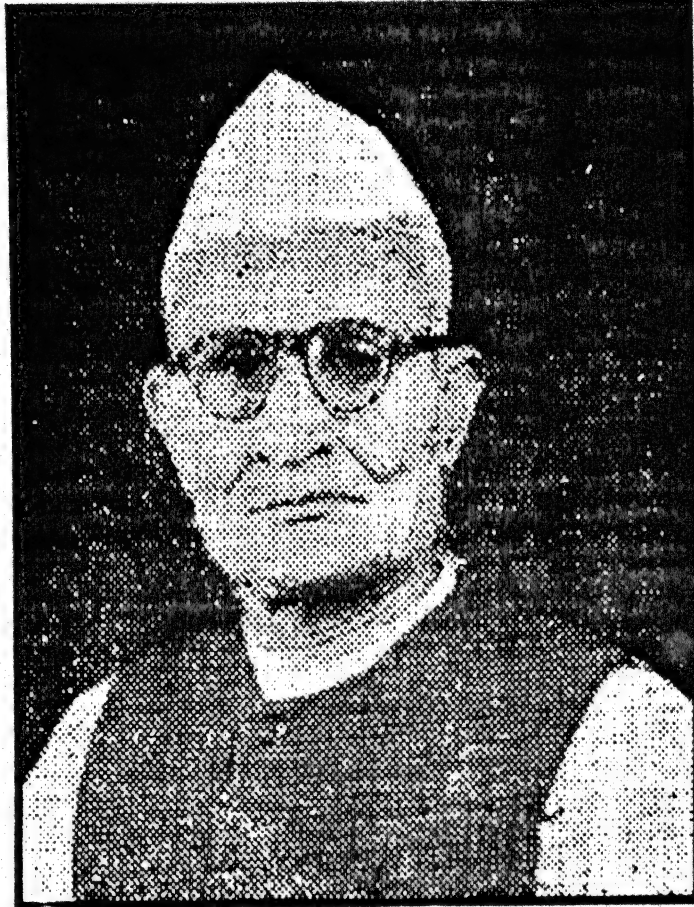
स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

स्व. श्री मथुराप्रसाद जी वैद्य

(3) श्री खंजोले काछी[1]

श्री खंजोले काछी का जन्म ललितपुर नगर में श्री लम्पू काछी जी के घर हुआ।[2] पं. नन्दकिशोर किलेदार के नेतृत्व में 1930ई. में निकाले गये मुख्य बाजार (सावरकर चौक) ललितपुर के जुलूस में आप सम्मिलित हुये थे। और बन्दी बनाये गये तथा जेल भेज दिये गये। आपने राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेने के लिए अपने कुशवाहा समाज को संगठित एवं प्ररित किया।[4] आपका मुख्य विरोध जमींदारी एवं पुलिस जुल्म के खिलाफ रहा है। तथा आप भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस द्वारा चलाये गये प्रत्येक आन्दोलन में अपनी भागीदारी देते रहे तथा देश की आजादी के लिए आपका योगदान सराहनीय है।

---

1. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 15
2. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 15
3. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 15

(4) श्री बैजनाथ स्वर्णकार[1]

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी श्री बैजनाथ स्वर्णकार का जन्म भी ललितपुर नगर में श्री तुलसीराम स्वर्णकार जी के घर हुआ।[2] आप महात्मा गांधी जी द्वारा चलाये गये 1930ई0 के सविनय अवज्ञा आन्दोलन में अपने नगर ललितपुर के जुलूस में सम्मिलित हुये तथा सन् 1930 ई0 में उसी समय आपको गिरफ्तार कर 9 माह की सजा सुनायी गयी।[3] इस प्रकार ललितपुर क्षेत्र से अंग्रेजों के खिलाफ आवाज उठाने वालों की अग्रिम पंक्ति में खड़े होकर अमर हो गये।

---

1. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, एस. पी. भट्टाचार्य, पृष्ठ – 72
   (2) ललितपुर स्वर्ण जंयती, दिवंगत स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की सूची, पृष्ठ – 93
2. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 94
3. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, एस. पी. भट्टाचार्य, पृष्ठ – 72
   (2) रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 93

(5) श्री रामदास दुबे[1]

श्री रामदास दुबे का जन्म ललितपुर जिले के कस्बा बांसी में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री हरदास दुबे जी था।[2] महात्मा गांधी जी द्वारा प्रारम्भ किये गये आन्दोलनों में आपने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया और अनेकों बार जेल गये। आपने अपना कार्यक्षेत्र ग्रामीण अंचल बाँसी को ही बनाया, जिस समय ललितपुर में पं. नन्दकिशोर किलेदार नेतृत्व कर रहे थे उसी समय श्री दुबे जी बांसी क्षेत्र से नेतृत्व करते हुये ललितपुर की ओर आये। इस समय विरोध जिला, नगर से कस्बा व गांवों तक पहुँच गया था। गांवों के विरोध की सूचना गांव का चौकीदार, पुलिस तक पहुँचाता था फिर पुलिस सक्रिय होकर दमन चक्र चलाती थी। भारतीय दण्ड संहिता की धारा 107 के अन्तर्गत श्री रामदास दुबे जी को 1930 ई0 के आन्दोलन में गिरफ्तार कर 9 माह की सजा दी गयी।[4] आप 1932ई0 के पुनः शुरू हुये अवज्ञा आन्दोलन में फिर सक्रिय हुये तथा 7 सितम्बर 1932 को बांसी में पकड़े गये एवं 6 माह की सजा पायी उसी वर्ष विद्रोही भाषण देने के कारण पुनः 6 माह की सजा पायी।[5] आप गांव के किसानों को कर अदा न करने के लिए प्रेरित करते थे। 1940ई0 में भी आप गिरफ्तार किये गये तथा 1 वर्ष जेल में रहे।[6] 1943ई0 में भी 1 वर्ष की सजा पायी[7] आजादी के लिए आपका योगदान इस क्षेत्र से अमिट है।

---

1. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, एस. पी. भट्टाचार्य, पृष्ठ - 81
   (2) ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका,दिवंगत स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की सूची,पृष्ठ-93
2. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, एस. पी. भट्टाचार्य, पृष्ठ - 81
   (2) रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 84
3. व्यक्तिगत साक्षात्कार - पं. बृजनन्दन किलेदार
4. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, एस. पी. भट्टाचार्य, पृष्ठ - 81
   (2) रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 84
5. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, एस. पी. भट्टाचार्य, पृष्ठ - 81
   (2) रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 84
6. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 84
7. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, एस. पी. भट्टाचार्य, पृष्ठ - 81
   (2) रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 84

(6) श्री चुन्नीलाल चौरसिया[1]

श्री चुन्नीलाल चौरसिया जी का जन्म ललितपुर जिले के ग्राम - पाली में 20 अक्टूबर 1914ई0 को हुआ था।[2] आपके पिता का नाम श्री पोतेराम चौरसिया था। आपने सविनय अवज्ञा आन्दोलन के विरोध का कार्यक्षेत्र अपना गांव पाली ही बनाया और वहॉं की जनता को जागृत किया तथा 1930ई0 में आप गिरफ्तार हुये और 2 माह की जेल की सजा दी गयी।[3] आपने ग्राम पाली में जन-आन्दोलन का नेतृत्व किया। आपने ग्राम खमरा कलॉं में जन जागरण के लिए अथक परिश्रम किया। बलात ईसाई बनाये जा रहे हिन्दुओं की रक्षा की।[4] तथा जमींदारी आतंकवाद से सदैव संघर्ष किया। व्यक्तिगत सत्याग्रह में भी आपने योगदान दिया और 1941ई0 में गिरफ्तार किये गये तथा 9 माह की सजा पायी।[5] इस प्रकार श्री चौरसिया जी 1930ई0 से 1947ई0 तक राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रत्येक आन्दोलन में अपना योगदान देते रहे। और स्वतंत्र भारत में आपको केन्द्रीय पेंशन देकर सम्मानित किया।

---

1. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, एस. पी. भट्टाचार्य, पृष्ठ - 60
   (2) ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका,दिवंगत स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की सूची,पृष्ठ-93
2. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 87
3. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, एस. पी. भट्टाचार्य, पृष्ठ - 60
   (2) रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 87
4. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, एस. पी. भट्टाचार्य, पृष्ठ - 60
   (2) रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 87
5. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, एस. पी. भट्टाचार्य, पृष्ठ - 60
   (2) रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 87
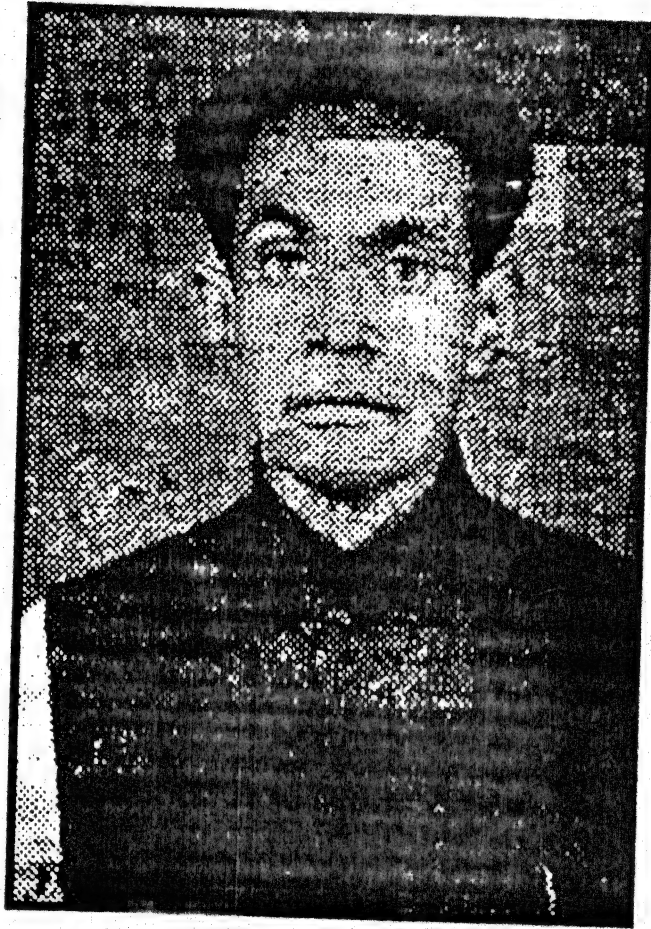
स्वतंत्रता संग्राम सेनानी
स्व. श्री चुन्नीलाल चौरसिया

(7) श्री प्यारेलाल यादव[1]

श्री प्यारेलाल यादव का जन्म जिला ललितपुर के ग्राम झारकौन में हुआ था।[2] आप राष्ट्रीय आन्दोलन में 1930ई0 से सक्रिय हुये तथा 1930ई0 तथा 1932ई0 में आप बन्दी बनाये गये तथा 6-6 माह की सजा पायी।[3] जनपद ललितपुर के कल्याणपुरा क्षेत्र के ग्रामों में आपने जनता को आजादी के आन्दोलन में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। आप ललितपुर में पं. नन्दकिशोर किलेदार जैसे नेताओं से समय-समय पर मिलकर काँग्रेस के कार्यक्रमों की जानकारी हासिल करते रहते थे तथा इन कार्यक्रमों में तत्परता से शामिल होते थे।

---

1. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, एस. पी. भट्टाचार्य, पृष्ठ - 69
2. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 89
3. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, एस. पी. भट्टाचार्य, पृष्ठ - 69
   (2) रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 89

(8) श्री ठाकुर विशेश्वर सिंह[1]

श्री ठाकुर विशेश्वर सिंह का जन्म ललितपुर जिले की वर्तमान तहसील तालबेहट में हुआ था।[2] आपने गांधी जी के आव्हान पर राष्ट्रीय आन्दोलन में 1930 ई0 में भाग लिया और तालबेहट में ही गिरफ्तार किये गये तथा जेल भेज दिये गये।[3] पुनः 1932ई0 में आपने अपना योगदान दिया और जेल भेजा गया।[4] इस प्रकार आपने तालबेहट क्षेत्र में स्वतंत्रता आन्दोलन को गति प्रदान की।

---

1. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, एस. पी. भट्टाचार्य, पृष्ठ - 86
   (2) ललितपुर स्वर्ण जंयती, दिवंगत स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की सूची, पृष्ठ - 93
2. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 89
3. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, एस. पी. भट्टाचार्य, पृष्ठ - 86
4. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 89

(9) डॉ. बसन्त लाल मिश्रा[1]

डॉ. बसन्त लाल मिश्रा जी का जन्म तहसील तालबेहट में 1898ई0 को हुआ था।[2] अंग्रेजी शासन की क्रूरता से आक्रोशित होकर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के मार्ग का अनुसरण करते हुये आप 1930ई0 में स्वतंत्रता समर में कूद पड़े। आप शिक्षित होने के कारण साधारण जनता को वारी-वारी से विदेशी शासन की क्रूरता को बताते थे तथा कुछ ही समय में आप एक बहुत बड़े जनसमूह का नेतृत्व करने लगे। 1930ई0 में आपको नमक सत्याग्रह के विरोध में गिरफ्तार किया गया तथा 6 माह की सजा दी गयी।[3] जेल से बाहर आने पर आप पुनः 1932ई0 में सक्रिय होने पर बन्दी बनाये गये तथा 6 माह की सजा पाई।[4] तालबेहट के पास क्रांति का गढ़ खनियाधाना आपके कार्य संचालन का प्रमुख केन्द्र रहा। सन 1931ई0 में खनियाधाना स्टेट सत्याग्रह में सक्रिय भाग लेने के कारण 1 वर्ष के लिये जिला झांसी छोड़ने का हुक्म मिला था।[5] राष्ट्रीय आन्दोलन में आप जबलपुर जेल में 9 माह बन्द रहे।[6] स्वतंत्रत भारत में आपको केन्द्रीय पेन्सन देकर सम्मानित किया गया।[7] 1857ई0 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से ही राजा मर्दनसिंह का गढ़ तालबेहट हमेशा ही विद्रोही तेवर से अंग्रेजों को आतंकित किये रहा। क्योंकि यहाँ का जनमानस 1857ई0 से ही प्रशिक्षित हो चुका था।

---

1. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, एस. पी. भट्टाचार्य, पृष्ठ - 70
   (2) ललितपुर स्वर्ण जंयती, दिवंगत स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की सूची, पृष्ठ - 93
2. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, एस. पी. भट्टाचार्य, पृष्ठ - 70
   (2) रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 90
3. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 90
4. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 90
5. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, एस. पी. भट्टाचार्य, पृष्ठ - 70
6. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, एस. पी. भट्टाचार्य, पृष्ठ - 70
7. झांसी दर्शन - मोतीलाल, पृष्ठ - 55

(10) श्री गोविन्ददास "विनीत"[1]

श्री गोविन्ददास व्यास "विनीत" जी का जन्म तालबेहट में हुआ था। आप अपने समय के प्रसिद्ध साहित्यकार रहे एवं राष्ट्रीय भावनाओं से ओत प्रोत रचनाओं द्वारा जनता को जाग्रत किया। अनेक कृतियों के द्वारा आपने राष्ट्र भाषा हिन्दी की भी सेवा की।[2] राष्ट्रीय नेताओं के आव्हान पर आप सविनय अवज्ञा आन्दोलन में सम्मिलित हुये तथा जेल जाकर 6 माह ललितपुर जेल में कारावास बिताया।[3] आप अपनी रचनाओं से जनता में जोश उत्पन्न कर देते थे तथा रचनाओं को जनता के बीच जाकर सुनाया करते थे इस प्रकार आप आजादी के लिए अपना जीवन का सर्वस्य त्याग करने को तत्पर रहते थे।

---

1. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, एस. पी. भट्टाचार्य, पृष्ठ – 59
2. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 97
3. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, एस. पी. भट्टाचार्य, पृष्ठ – 59

(11) पं. श्री नारायण दास तिवारी[1]

पं. श्री नारायणदास तिवारी जी का जन्म ललितपुर जनपद के ब्लाक वार में हुआ था।[2] आपके पिता श्री रघुनाथ तिवारी जी थे। आपने राष्ट्रीय आन्दोलन का क्षेत्र ग्रामीण अंचल बार को ही चुना। सन् 1930ई0 में सविनय अवज्ञा आन्दोलन आपने श्री भैरोप्रसाद राय के साथ छेड़ा था। जिसमें आप बन्दी बनाये गये तथा 6 माह की सजा पाई।[3] 1932ई0 में भी आप जब पुनः सक्रिय हुये तो अंग्रेजों ने गिरफ्तार कर 6 माह के कठोर कारावास की सजा सुनाई।[4] 1941 ई0 में व्यक्तिगत सत्याग्रह के अन्तर्गत आपको 18 माह के कारावास की सजा दी गयी। आपकी संगठन शक्ति अभूत पूर्व थी। आपकी वाणी में ओज इतना कि एक बार जिसने भी भाषण सुना उसने आहुति देने की ठान ली। आप स्थानीय तहसील एवं जिला मुख्यालय के आन्दोलनों में हमेशा अपना योगदान देते रहे।

---

1. ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका, दिवंगत स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की सूची, पृष्ठ – 93
2. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम , पृष्ठ – 92
3. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 92
4. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 92

(12) श्री शिवचरणलाल वर्मा[1]

श्री शिवचरणलाल वर्मा का जन्म श्री रामलाल स्वर्णकार जी के घर सन् 1911ई० में हुआ था। श्री वर्मा जी युवावस्था में ही अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने को अति आतुर हो गये तथा जब पुनः सविनय अवज्ञा आन्दोलन 1932ई0 में प्रारम्भ हुआ तो आप नमक सत्याग्रह, विदेशी माल का बहिष्कार तथा शराब की दुकानों पर पिकेटिंग में सम्मिलित हुये तथा गिरफ्तार होकर 1932ई0 में 3 माह की सजा तथा 25रुपया अर्थदण्ड की सजा प्राप्त की।[2] जुलूस और संघर्ष के संदर्भ में दो बार आपके घर कुर्की की गई। श्री वर्मा जी अहिंसक आन्दोलनकारी रहे परन्तु बीच में वह आजादी के दीवाने क्रांतिकारियों के सम्पर्क में आये और प्रसिद्ध क्रांतिकारी श्री विजय कृष्ण शर्मा को सहयोग देते रहे।[3] इस प्रकार आजादी के लिए आपके योगदान को यह क्षेत्र ललितपुर आज भी याद किये हुये है।

---

1. ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका - 1998, आजादी के आन्दोलन के पुरोधा, पृष्ठ-[illegible] जिनकी छत्रछाया आज भी जनपद पर बनी हुयी है - संजय तिवारी
2. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 19
3. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 19

(13) श्री सिंघई गोविन्ददास जैन[1]

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी श्री सिंघई गोविन्ददास जैन जी का जन्म 15 मई 1913ई० में ललितपुर में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री पन्नालाल जैन था।[2] आप गांधवादी विचारधारा से प्रेरित होकर 1932ई0 में जब पुनः सविनय अवज्ञा आन्दोलन शुरु हुआ में सम्मिलित हुये। तथा जुलूस आदि में भाग लेने के कारण बन्दी बनाये गये तथा 1 वर्ष के कठोर कारावास की सजा प्राप्त की।[3] आप आजादी की लड़ाई में ललितपुर क्षेत्र के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को अपना यथाशक्ति सहयोग प्रदान करते रहे। जब तक आजादी नहीं मिली तव तक हार नहीं मानी और संघर्ष जारी रखा।

---

1. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, एस. पी. भट्टाचार्य, पृष्ठ - 59
   (2) ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका 1998, पृष्ठ - 93
2. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 26
3. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 26

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी
श्री शिवचरणलाल वर्मा
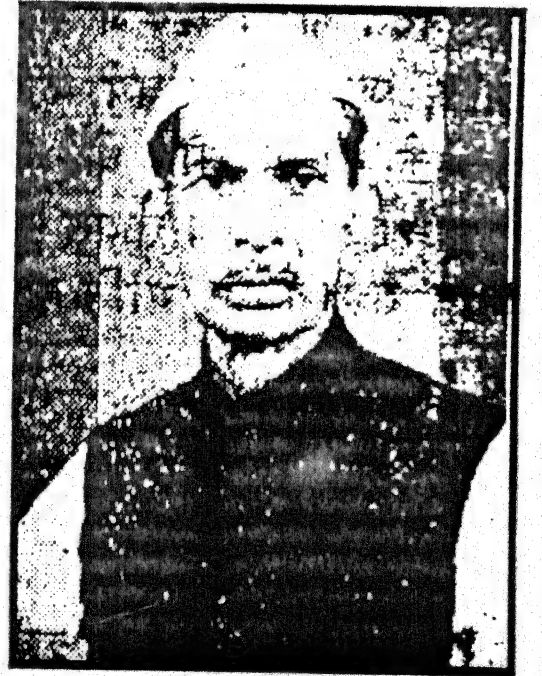
स्वतंत्रता संग्राम सेनानी
स्व. श्री सिंघई गोविन्ददास जैन

(14) श्री मणिराम कंचन[1]

श्री मणिराम कंचन का जन्म ललितपुर जिले की तालबेहट तहसील में 13 जनवरी 1903ई0 को हुआ था।[2] आपके पिता श्री पन्नालाल खत्री थे। आप राष्ट्रीय विचारधारा से प्रभावित होकर 1932ई0 में स्वतंत्रता आन्दोलन में सक्रिय रूप से सम्मिलित हुये। आपने ललितपुर क्षेत्र में तालबेहट से ही आन्दोलन शुरू किया वैसे भी तालबेहट बहुत जागरूक क्षेत्र था क्योंकि यहाँ कि जनता 1857ई0 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में राजा मर्दनसिंह के साथ आन्दोलन कर चुकी थी। आपने यहाँ जुलूस तथा शराब की दुकानों में पिकेटिंग की तथा विदेशी माल का बहिष्कार किया जिस कारण अंग्रेजों की क्रूर दास्ता के आप शिकार बने तथा 1932ई0 में 3 माह की सजा पाई।[3] आपका कार्यक्षेत्र तालबेहट ललितपुर एंव झांसी जिला (उस समय ललितपुर क्षेत्र का जिला झांसी ही था।) रहा।[4]

आप 1940 ई0 में भी सक्रिय हुये तब भारत प्रतिरक्षा कानून की 38वीं धारा के अन्तर्गत 55 दिन के लिए पुनः जेल भेज दिये गये।[5] जेल से आने पर आप शान्त नहीं बैठे और पुनः 1941ई0 में अपनी गतिविधियों को जारी रखा तो अंग्रेज सरकार ने 1941 में 15 माह के कारावास की सजा सुनाई[6] 1942ई0 में आप 55 दिन नजरबन्द रहे।[7] इस प्रकार आजादी की लड़ाई में आपका योगदान अविस्मरर्णीय है।

आजादी के पश्चात आप कॉंग्रेस के नेताओं से अपेक्षित सम्मान न मिला तो जनसंघ में सम्मिलित हो गये और 1957, 1962, 1967 में झांसी-ललितपुर लोकसभा क्षेत्र से सांसद का चुनाव लड़ा परन्तु हार गये।[8]

---

1. (1) ललितपुर स्वर्ण जंयती स्मारिक,
   ललितपुर जनपद के बंदनीय दिवंगत स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की सूची, पृष्ठ-93
   (2) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ - 76
2. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 42
3. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 42
4. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 42
5. (1) रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 42
   (2) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ - 76
6. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 42
7. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 42
8. ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका, पृष्ठ - 16
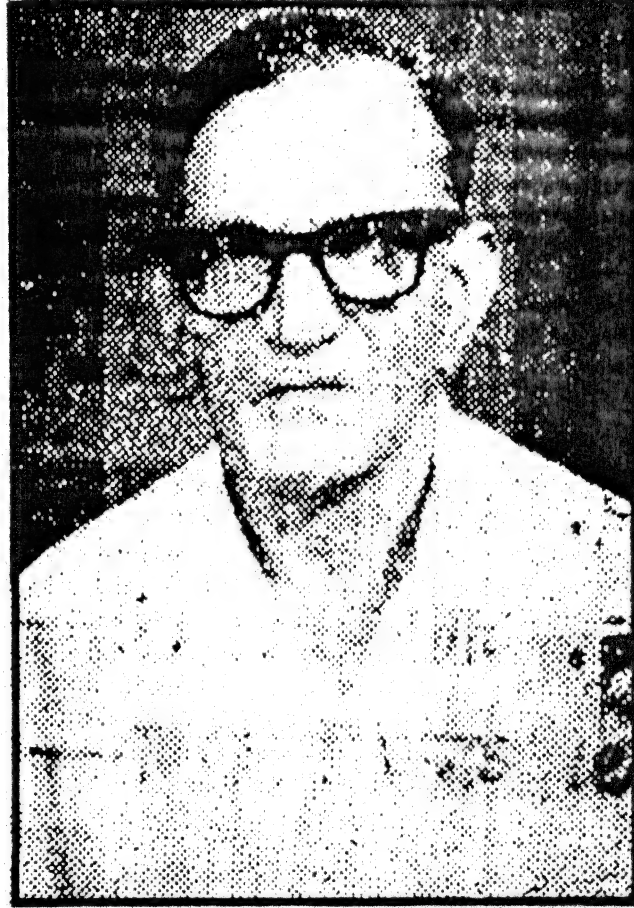
स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

स्व. श्री मणिराम कंचन

और तीनों बार दूसरे स्थान पर रहे[1] परन्तु फिर आप पुनः कॉंग्रेस में आ गये तब अखिल भारतीय कांग्रेस कमेठी के सदस्य तथा जिला कॉंग्रेस के मंत्री रहे। तथा आप एक कर्मठ प्रतिभावन पत्रकार भी रहे तथा दैनिक प्रकाश, दैनिक प्रभात, साप्ताहिक जन संग्राम आदि पत्र निकाले।[2] श्री कंचन जी कुशल राजनीतिज्ञ के साथ सफल पत्रकार भी थे।आपने 1938ई0 में सर्वप्रथम जन संग्राम साप्ताहिक पत्र प्रारम्भ किया महाकवि अकबर ने अपनी चुटीली रीति से स्वतंत्रता आन्दोलन के लिए कहा था -

खीचों न कमानों को, न तलवार निकालो।
जब तोप मुकाबिल हो, तो अखबार निकालो।।[3]

शायद यही बाद कंचन जी के मन में रही है। आप प्रारम्भ से ही प्रगतिशील विचारों एवं समाजवाद के समर्थक थे झांसी जिले के मजदूर संगठ्नों के लिए आपका महत्वपूर्ण योग रहा है। मानव मार्तण्ड साप्ताहिक पत्र रविवार 30 मार्च 1975ई0 के अंक में लिखा गया था कि कॉंग्रेस की समाजवादी विचारधारा को जाग्रत करने में श्री मणिराम कंचन जी का विशेष स्थान रहा है।[4]

---

1. ललितपुर स्वर्ण जंयती स्मारिक, पृष्ठ - 94
2. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 42
3. हिन्दी पत्रकारिता - डॉ. सियारामशरण शर्मा, पृष्ठ - 139
4. हिन्दी पत्रकारिता - डॉ. सियारामशरण शर्मा, पृष्ठ - 116

(15) श्री काशीनाथ शास्त्री[1]

श्री काशीनाथ शास्त्री उर्फ काशीराम तिवारी का जन्म ललितपुर जनपद के ग्राम दैलवारा में हुआ आपके पिता का नाम श्री अयोध्या प्रसाद जी था।[2] आपने 1932 ई० में सविनय अवज्ञा आन्दोलन में सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में बन्दी बनाये गये थे। तथा 6 माह की सजा पाई थी। आपका गांव दैलवारा 1857 ई0 के स्वतंत्रता संग्राम में जरमंत सिंह के रूप में भागीदारी निभा चुका था।[4] श्री शास्त्री जी ने ललितपुर क्षेत्र के दैलवारा ग्रामीण अंचल के अलावा आपने आन्दोलन के माध्यम से अन्य क्षेत्रों में भी राजनैतिक एवं सामाजिक कार्य किये। कांग्रेस रिलीफ सोसायटी की ओर से नोआ खाली में बिहार के भूकम्प से प्रताड़ित जनता की सेवा, चम्पारन - मोतीहार क्षेत्र में, सहायता कार्य किया। इसके अतिरिक्त काशी में भारत सेवा मण्डल में व्यायाम शिक्षा प्रसार और नवयुवकों के हेतु ललितपुर में भारत सेवा मण्डल की स्थापना की। आपने 1941ई0 से शाहगंज जिला जौनपुर में व्यायाम शिक्षा का शिक्षण कार्य किया।[5] आपका योगदान हमेशा याद रखा जायेगा।

---

1. ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका, पृष्ठ - 98
   ललितपुर जनपद के बंदनीय दिवंगत स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की सूची, पृष्ठ - 93
2. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 54
3. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 54
4. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 54
5. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 54
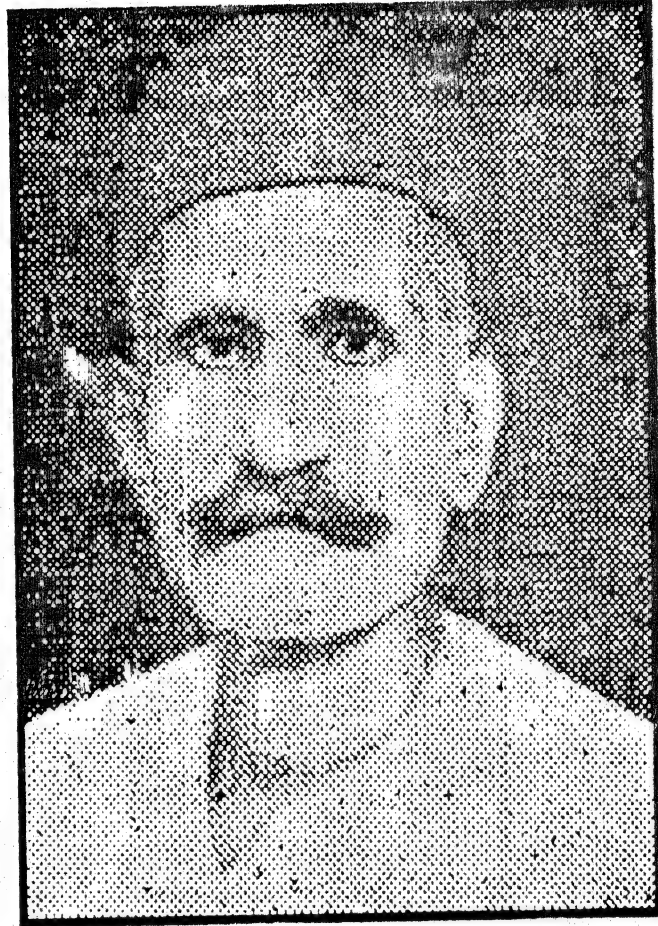
स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

स्व. श्री काशीनाथ शास्त्री

(16) श्री श्यामलाल गुप्ता[1]

श्री श्यामलाल गुप्ता जी का जन्म जनपद ललितपुर के बाँसी कस्वा में सन् 1912 ई0 में हुआ था।[2] आपके पिता का नाम श्री मूलचन्द गुप्ता था। आजादी के आन्दोलन के समय में जनपद ललितपुर का प्रत्येक गाँव राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत था। कस्वा बाँसी से श्री श्यामलाल गुप्ता जी सन् 1932 ई0 के सविनय अवज्ञा आन्दोलन में जुलूस आदि के संदर्भ में बन्दी बनाये गये तथा 6 माह का कारावास और 50 रूपया अर्थदण्ड की सजा से दण्डित किये गये।[3] आप अपने कर्तव्य पथ से विचलित नहीं हुये एवं जब तक आजादी प्राप्त नहीं हुयी तब तक आप ग्रामीणों में जन जागरण करते हुये राष्ट्रीय आन्दोलनों में अपनी भागीदारी देते रहे।

---

1. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ - 87
   (2) ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका - 1998, आजादी के आन्दोलन के पुरोधा जिनकी छत्रछाया आज भी जनपद पर बनी हुयी है - संजय तिवारी, पृष्ठ-19
2. ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका - 1998, आजादी के आन्दोलन के पुरोधा, पृष्ठ-19
3. (1) रजत नीराजना, डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 65
   (2) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ - 87
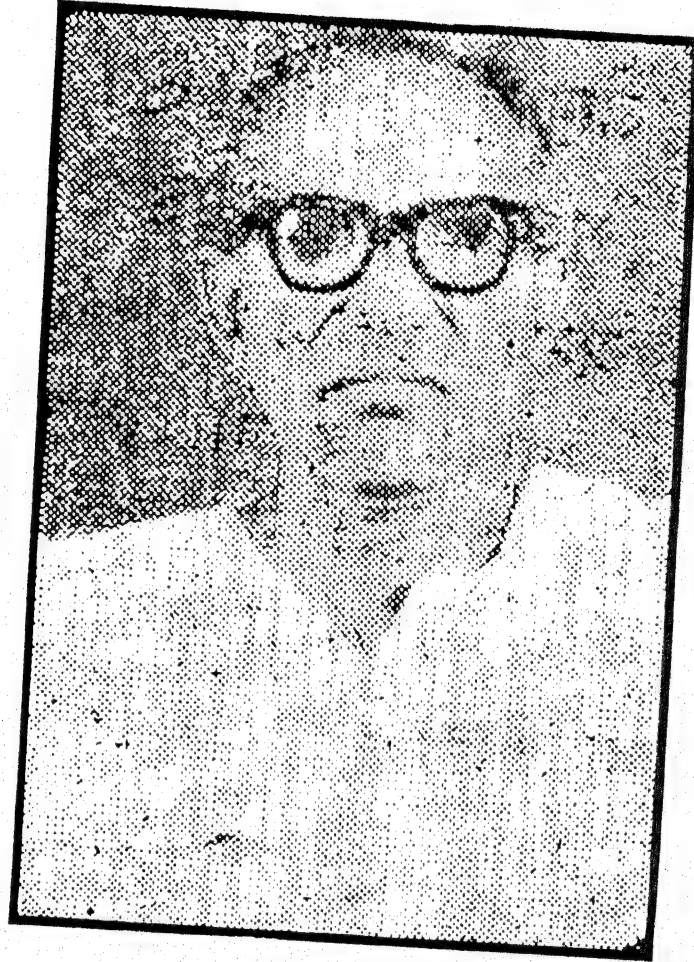
स्वतंत्रता संग्राम सेनानी
श्री श्यामलाल गुप्ता

(17) श्री शीतल प्रसाद[1]

श्री शीतल प्रसाद का जन्म करोंदा गाँव में हुआ।[2] गांधी जी के आव्हन पर आप सन् 1932 ई0 में पुनः प्रारम्भ हुये सविनय अवज्ञा आन्दोलन में सम्मिलित हुये और अंग्रेजी साम्राज्य से लोहा लिया। आपका क्षेत्र ग्रामीण रहा है इसलिए आप अपने नेतृत्व में जनता को एकत्र कर विरोध के लिए आन्दोलनों के समय में ललितपुर नगर एवं जिला मुख्यालय झांसी तक जाया करते। आपको 1932ई0 में ही गिरफ्तार कर 6 माह की सजा से दण्डित किया गया।[3]

---

1. रजत नीराजना, डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 103
2. रजत नीराजना, डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 103
3. रजत नीराजना, डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 103

(18) श्री हल्के काछी[1]

श्री हल्के काछी उर्फ हल्केराम कुशवाहा का जन्म जनपद ललितपुर के ग्राम बन्ट में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री उमराव कुशवाहा था।[2] आजादी के महायज्ञ में अपनी आहुति देने के लिए आप सन् 1932ई0 में सक्रिय रूप से भागीदारी निभाते हुये अंग्रेजों के संघर्षरत रहने पर उनकी जालिमा हरकतों के खिलाफ आवाज उठाने पर बन्दी बना लिये गये थे तथा 3 माह की सजा सुनाई गयी।[3] जेल से आने पर आप जनपद के नेताओं के साथ फिर सक्रिय हुये तो 1933ई0 में फिर कैद कर लिये गये तथा 6 माह का कठोर कारावास प्राप्त किया।[4] आपका कार्यक्षेत्र ग्रामीण रहा है। तथा गाँव के नागरिक को हमेशा जागरूक करते रहे।

---

1. ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका–1998, पृष्ठ – 93
   ललितपुर जनपद के बंदनीय दिवंगत स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की सूची, पृष्ठ – 93
2. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 95
3. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 95
4. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 95

(19) डॉ० हरीराम चौबे[1]

डॉ. हरीराम चौबे जी का जन्म श्रावण वदी 13, 1966 वि. स. को ललितपुर नगर में हुआ था।[2] आपके पिता पं. श्री धनश्यामदास चौबे जी थे। आप युवावस्था की दहलीज पर पैर रखते ही अंग्रेजों से संघर्ष में भिड़ गये। आपका कार्य क्षेत्र मध्य भारत- उज्जैन आदि रहा है।[3] 1930-31 ई0 से ही भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस में सम्मिलित हुये और सविनय अवज्ञा आन्दोलन के दूसरे दौर 1933 ई0 में अंग्रेजों द्वारा गिरफ्तार कर लिये गये तथा जेल भेजे गये।[4] जन आन्दोलनों में भाग लेते हुये आप 1939 ई0 तथा 1941 ई0 में भी जेल गये।[5] 1942 के आन्दोलन में भी आपका योगदान अविस्मरणीय रहा है।

---

1. ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका-1998, पृष्ठ - 93
   ललितपुर जनपद के बंदनीय दिवंगत स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की सूची, पृष्ठ - 93
2. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 18
3. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 18
4. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 18
5. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 18

(20) श्री प्रागी उर्फ पूरनचन्द नामदेव[1]

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी श्री प्रागी उर्फ पूरनचन्द नामदेव जी का जन्म सन् 1912ई0 में पिपरई बंट (धौर्रा) ग्राम में हुआ[2] आपके पिता श्री विहारीलाल नामदेव थे।[3] राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन में आप ग्राम पिपरई - बण्ट (धौर्रा) ललितपुर क्षेत्र के सविनय अवज्ञा आन्दोलन के प्रमुख कार्यकर्ता रहे।[4] सन् 1933ई0 में आपको अंग्रेजों ने गिरफ्तार कर 9 माह की सजा दी थी।[5] इस प्रकार आजादी के आन्दोलन में आप अपना नाम भी अमर कर गये।

---

1. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक (झांसी डिवीजन), एस. पी.. भट्टाचार्य, पृष्ठ - 68
   (2) ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका, 1998
   ललितपुर जनपद के बंदनीय दिवंगत स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की सूची, पृष्ठ - 93
2. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 62
3. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 62
4. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 62
5. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक (झांसी डिवीजन), एस. पी.. भट्टाचार्य, पृष्ठ - 68

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी
डॉ हरीराम चौबे

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी
स्व. श्री प्रागीलाल उर्फ पूरनचन्द

(21) श्री दलू उर्फ खुमान सरु[1]

ललितपुर क्षेत्र के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी श्री दलू उर्फ खुमान सरु जी का जन्म जनपद ललितपुर के ग्राम बण्ट में सन् 1911 ई0 को हुआ था।[2] आपके पिता श्री सरु थे। ग्राम बण्ट के अन्य व्यक्ति भी आजादी के आन्दोलन से जुड़े रहे तथा बड़े ही साहसिक कार्य किये। आप सन् 1933 ई0 में बुन्देलखण्ड कान्फ्रेन्स झांसी में (जो कि आपका उस समय जनपद था) सत्याग्राहियों के साथ सत्यागृह करते हुए गिरफ्तार किये गये थे।[3] तथा 9 माह की सजा[4] और 50 रुपया अर्थदण्ड प्राप्त कर झांसी जेल में रहे।[5] तथा अंग्रेजी पुलिस की क्रूर यातनाएं सहन की। देश की आजादी में अपना योगदान देने के कारण यह क्षेत्र आप पर गर्व करता है।

---

1. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक (झांसी डिवीजन), एस. पी. भट्टाचार्य, पृष्ठ - 63
   (2) ललितपुर स्वर्ण जंयती स्मारिक, 1998
   ललितपुर जनपद के बंदनीय दिवंगत स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की सूची, पृष्ठ - 93
2. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 67
3. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 67
4. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक (झांसी डिवीजन), एस. पी. भट्टाचार्य, पृष्ठ - 63
5. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 67

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

श्री दलू उर्फ खुमान सरू

(22) पं. श्री दौलतराम[1]

पं. दौलतराम जी का जन्म ललितपुर में हुआ था। आपकी प्रतिभा का अन्दाजा इस से लगाया जा सकता है कि बम्बई से प्रकाशित होने वाले समाचार पत्र ''श्री वेंकटेश्वर'' का आपने सम्पादन किया। सम्पादन का कार्य आपने 1914 ई0 से 1918 तक किया।[2] गांधी जी के आह्वान पर आपने 1930 ई0 के सविनय अवज्ञा आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया जिस कारण ब्रिटिश सरकार ने आपको गिरफ्तार करके 1 वर्ष कैद की सजा दी।[3]

---

1. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक (झांसी डिवीजन), एस. के. भट्टाचार्य, पृष्ठ – 65
2. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक (झांसी डिवीजन), एस. के. भट्टाचार्य, पृष्ठ – 65
3. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक (झांसी डिवीजन), एस. के. भट्टाचार्य, पृष्ठ – 65

(23) श्री वल्देव प्रसाद चीपा[1]

आपका जन्म जनपद ललितपुर की वर्तमान तहसील तालबेहट में हुआ था। आपके पिताजी का नाम श्री मताले चीपा था।[2] आपने कॉंग्रेस द्वारा शुरू किये गये सभी आन्दोलनों में हिस्सा लिया। 1930ई0 के सविनय अवज्ञा आन्दोलन में आपने सक्रिय रूप से भाग लिया तब आपको 9 माह की सजा दी गयी।[3]

---

1. ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिक – 1998, पृष्ठ – 93
2. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक (झांसी डिवीजन), एस. पी. भट्टाचार्य, पृष्ठ – 70
3. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक (झांसी डिवीजन), एस. पी. भट्टाचार्य, पृष्ठ – 70

(24) श्री भिल्लू करेरे[1]

आपका जन्म जनपद ललितपुर की तालबेहट तहसील में हुआ था। आपने कॉंग्रेस से जुड़कर 1930ई0 के कांग्रेस द्वारा शुद्ध किये गये सविनय अवज्ञा आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया तथा अपने क्षेत्र तालबेहट में पिकेटिंग की जिस कारण ब्रिटिश सरकार ने आपको 9 माह कैद की सजा दी।[2]

---

1. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक (झांसी डिवीजन), एस. के. भट्टाचार्य, पृष्ठ - 74
2. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक (झांसी डिवीजन), एस. के. भट्टाचार्य, पृष्ठ - 74

(25) श्री मूलचन्द्र[1]

आपका जन्म ललितपुर में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री परमानन्द था।[2] आप कॉंग्रेस की गांधीवादी नीतियों में आस्था रखते थे। सन् 1932 के फौजदारी कानून संशोधन अधिनियम की धारा 17 के अंतर्गत 7 माह कैद की सजा पायी।[3] इस प्रकार आजादी के दीवानों की कतार में आप अपना नाम भी अमर कर गये।

---

1. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक (झांसी डिवीजन), एस. पी. भट्टाचार्य, पृष्ठ - 77
2. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक (झांसी डिवीजन), एस. पी. भट्टाचार्य, पृष्ठ - 77
3. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक (झांसी डिवीजन), एस. पी. भट्टाचार्य, पृष्ठ - 77

ललितपुर क्षेत्र से सविनय अवज्ञा आन्दोलन में बन्दी बनाये गये सत्याग्रहियों की सूची[1]

क्रम संख्या	नाम	स्थान
1.	स्व. श्री नन्दकिशोर किलेदार	महावीरपुरा, ललितपुर
2.	श्री बृजनन्दन किलेदार	महावीरपुरा, ललितपुर
3.	श्री बृजनन्दन शर्मा	सुभाषपुरा, ललितपुर
4.	स्व. श्री मथुराप्रसाद जी वैद्य	ललितपुर
5.	स्व. श्री बृन्दावन इमलिया	ललितपुर
6.	स्व. श्री बाबूलाल निगम	ललितपुर
7.	स्व. श्री हरीराम चौबे	ललितपुर
8.	स्व. श्री गोविन्द दास जी सिंघई	ललितपुर
9.	स्व. श्री कल्लूराम यादव	बंशीपुरा, ललितपुर
10.	स्व. श्री बैजनाथ स्वर्णकार	ललितपुर
11.	स्व. श्री खंजोले कुशवाहा	ललितपुर
12.	स्व. श्री मणिराम कंचन	तहसील-तालबेहट, ललितपुर
13.	स्व. श्री कन्हैयालाल कड़ोरे	तहसील-तालबेहट, ललितपुर
14.	स्व. श्री ठाकुर विश्वेश्कर सिंह	तहसील-तालबेहट, ललितपुर
15.	स्व. डॉ. बसन्तलाल मिश्रा	तहसील-तालबेहट, ललितपुर
16.	स्व. श्री गोविन्ददास 'विनीत'	तहसील-तालबेहट, ललितपुर
17.	श्री कामरेड चन्दन सिंह	ब्लाक-जखौरा, ललितपुर
18.	स्व. श्री रामदास दुबे	बांसी- ललितपुर
19.	स्व. श्री श्यामलाल गुप्ता	बांसी- ललितपुर
20.	श्री शिवचरणलाल वर्मा	कांठ, ललितपुर
21.	स्व. श्री भैरोंप्रसाद राय	ब्लाक-बार, ललितपुर
22.	स्व. श्री नारायणदास तिवारी	ब्लाक-बार, ललितपुर
23.	स्व. श्री काशीनाथ शास्त्री	ग्राम-दैलवारा, ललितपुर
24.	स्व. श्री चुन्नीलाल चौरसिया	पाली - ललितपुर
25.	स्व. श्री शीतल प्रसाद	ग्राम- करोंदा, ललितपुर
26.	स्व. श्री प्रागी उर्फ पूरनचन्द नामदेव	ग्राम-पिपरई (धौर्रा) ललितपुर
27.	स्व. श्री दलू उर्फ खुमान रारू	ग्राम-बण्ट, ललितपुर
28.	स्व. श्री हल्के काछी	ग्राम-बण्ट, ललितपुर
29.	स्व. श्री प्यारेलाल यादव	ग्राम - झारकौन, ललितपुर

1. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल

ललितपुर क्षेत्र से सविनय अवज्ञा आन्दोलन में बन्दी बनाये गये सत्याग्रहियों की सूची[1]

कम संख्या	नाम	स्थान
1.	श्री कन्हैयालाल	तालबेहट, ललितपुर
2.	श्री कल्लूराम	ललितपुर
3.	श्री गोविन्द व्यास	तालबेहट, ललितपुर
4.	श्री चन्दनसिंह	जखौरा, ललितपुर
5.	श्री चुन्नीलाल चौरसिया S/o पोतेराम	ललितपुर
6.	श्री टल्लू उर्फ खुमान S/o टिजू	ललितपुर
7.	श्री पं. दौलतराम	ललितपुर
8.	श्री पूरनचन्द उर्फ प्रागीलाल	पिपरई बंट (धौर्रा) ललितपुर
9.	श्री प्यारेलाल	ललितपुर
10.	श्री बल्देव प्रसाद चीपा S/o मताले चीपा	तालबेहट
11.	श्री डा. बसन्त लाल	तालबेहट
12.	श्री बाबूलाल निगम S/o चुन्नीलाल	ललितपुर
13.	श्री बैजनाथ S/o तुलसीराम	ललितपुर
14.	श्री ब्रजनन्दन S/o श्री नारायण शर्मा	ललितपुर
15.	श्री बृजनन्दन S/o नन्दकिशोर किलेदार	ललितपुर
16.	श्री बृन्दावन इमलिया S/o परमानन्द	ललितपुर
17.	श्री भिल्लू करेरे	तालबेहट, ललितपुर
18.	श्री भैरो प्रसाद जैसवाल	बार, ललितपुर
19.	श्री मूलचन्द S/o परमानन्द	ललितपुर
20.	श्री रामदास दुबे S/o हरदास दुबे	बाँसी, ललितपुर
21.	श्री रामलाल भार्गव S/o जगन्नाथ प्रसाद	तालबेहट, ललितपुर
22.	श्री विश्वेश्वरसिंह ठाकुर	तालबेहट, ललितपुर
23.	श्री श्यामलाल गुप्ता S/o मूलचन्द बरसैरया	बांसी, ललितपुर

1. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक (झांसी डिवीजन), एस. पी. भट्टाचार्य

(12) व्यक्तिगत सत्याग्रह एवं सेनानियों का योगदान

मार्च 1940ई0 में रामगढ़ में मौलाना अबुल कलाम आजाद की अध्यक्षता में कॉंग्रेस का अधिवेशन हुआ जिसमें गांधी जी के नेतृत्व में व्यक्तिगत सत्याग्रह करने का निर्णय लिया गया। अगस्त प्रस्ताव (8 अगस्त 1940 ई0) से निराश गांधी जी ने आन्दोलन की अनुमति दे दी। वायसराय लार्ड लिनलिथगो ने 8 अगस्त 1940 ई0 को एक प्रस्ताव प्रस्तुत किया जिसमें डोमेनियन स्टेटस युद्ध पश्चात संविधान बनाने के लिए एक निकाय का गठन वायसराय की कार्यकारिणी का तुरन्त विस्तार तथा एक युद्ध सलाहकार समिति के गठन का प्रस्ताव किया गया। परन्तु कांग्रेसियों को इस प्रस्ताव से निराशा हाथ लगी।

व्यक्तिगत सत्याग्रह में निर्णय यह लिया गया कि प्रत्येक इलाकें मेंकुछ चुने हुए व्यक्ति "व्यक्तिगत सत्याग्रह" करेंगे। सत्याग्रही की यह माँग होगी कि युद्ध में हिस्सा लेने के विरूद्ध प्रचार के लिए अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता होनी चाहिए। सत्यागृही अपने सत्याग्रह के स्थान और समय के बारे में पहले ही जिला मजिस्ट्रेट को सूचित कर देगा।

प्रथम सत्याग्रही के रूप में विनोबाभावे ने 17 अक्टूबर 1940 ई0 को सत्याग्रह किया। 31 अक्टूबर 1940 ई0 को दूसरे सत्याग्रही पं. जवाहरलाल नेहरू बने। इस आन्दोलन से जुड़े नेता गांवों में जाकर लोगों को 'दिल्ली चलो' का नारा देते थे। कालान्तर में इस आन्दोलन का 'दिल्ली चलो आन्दोलन' का नाम दे दिया गया था। यह आन्दोलन अंग्रेजों को किसी विशेष कठिनाई में ले जाने के लिए नहीं किया गया था, बल्कि इसका उद्देश्य कांग्रेस के अस्तित्व का अहसास कराने तथा युद्ध के प्रति विरोध प्रकट करना था। वायसराय के नाम एक पत्र में गांधी जी ने इस आन्दोलन के उद्देश्यों की व्याख्या इस प्रकार की –

"कांग्रेस नाजीवाद की विजय की उतनी ही विरोधी है जितना कि कोई अंग्रेज हो सकता है, लेकिन उसकी आपत्ति को युद्ध में उसकी भागीदारी की सीमा तक नहीं खींचा जा सकता और चूंकि आपने तथा भारत सचिव महोदय ने घोषणा की है कि पूरा भारत स्वेच्छा से युद्ध प्रयास में सहायता कर रहा है, इसलिए यह स्पष्ट करना आवश्यक हो जाता है कि भारत की जनता का विशाल बहुमत इसमें कोई दिलचस्पी नहीं रखता। वह नाजीवाद तथा भारत

पर शासन कर करी दोहरी निरंकुशता में कोई अन्तर नहीं करता।"[1]

15 मई 1941ई0 तक 25000 से अधिक सत्याग्रही गिरफ्तार किये जा चुके थे।[2]

व्यक्तिगत सत्याग्रह प्रत्येक जिला व शहर में शुरू करने का निर्णय कॉंग्रेस ने लिया था। जिला झांसी कांग्रेस कमेटी ने भी व्यक्तिगत सत्याग्रह करनेका निर्णय लिया जिसके अन्तर्गत ललितपुर क्षेत्र से श्री बृजनन्दन शर्मा[3] श्री बाबूलाल निगम (ललितपुर शहर), श्री मणिराम कंचन (तालबेहट), श्री रामदास दुबे (बॉंसी), श्री नारायण दास तिवारी (बार) श्री हरीराम चौबे (ललितपुर) आदि ने निर्धारित निर्णय के आधार पर जिला मजिस्ट्रेट को सूचित किया और व्यक्तिगत सत्याग्रह किया। मजिस्ट्रेट द्वारा इन सभी को गिरफ्तार कर जेल में बन्द कर दिया। महात्मा गांधी जीके आव्हान पर सम्पूर्ण भारत की तरह झांसी जिला सहित ललितपुर सब डिवीजन में नगर व गांव के व्यक्तियों ने सत्याग्रह में सम्मिलित होकर ब्रिटिश सरकार को बतला दिया कि हम सब कॉंग्रेस के साथ हैं और आजादी चाहते हैं।

---

1. आधुनिक भारत – विपिनचन्द्र, पृष्ठ – 228
2. आधुनिक भारत – विपिनचन्द्र, पृष्ठ – 228
3. व्यक्तिगत साक्षात्कार – पं. बृजनन्दन शर्मा

ललितपुर क्षेत्र से व्यक्तिगत सत्याग्रह में कुछ अन्य सेनानियों ने भी योगदान दिया था जो निम्न प्रकार हैं

(1) श्री रमानाथ खैरा[1]

श्री रमानाथ खैरा का जन्म भादों सुदी 4, वि. सं. 1967 को ग्राम पाली (ललितपुर) में श्री जगन्नाथ प्रसाद खैरा जी के घर पर हुआ।[2] आप आजादी के आन्दोलन में नमक सत्याग्रह से सक्रिय हुये और व्यक्तिगत सत्याग्रह में आपका उत्साह चरमोत्कर्ष पर था सन् 1941ई0 में आपको भारत प्रतिरक्षा कानून की धारा 38 के अन्तर्गत 28 फरवरी को बन्दी बनाकर 6 माह का कारावास तथा 100 रूपये अर्थदण्ड दिया गया।[3] आप जेल में भी अन्य साथियों को संघर्ष के हेतु प्रोत्साहित करने पर फतेहगढ़ जेल में भेज दिये गये। कानूनी शिक्षा प्राप्त होने के कारण आप अंग्रेजों से कभी डरे नहीं और नवयुवकों को आन्दोलन के प्रति उत्साहित करते रहते थे। देश स्वतंत्र हो जाने के पश्चात आप 1952ई0 में महरौनी (ललितपुर) क्षेत्र से 19,039 वोट पाकर उ0 प्र0 विधानसभा में सदस्य निर्वाचित हुये।[4] और प्रथम एम. एल. ए0 होने का गौरव पाया तथा 1957 ई0 के चुनाव में भी आप विजयी रहे। स्वतंत्रता आन्दोलन में ललितपुर क्षेत्र से आपका योगदान अविस्मरणीय है।

---

1. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक (झांसी डिवीजन), एस. पी. भट्टाचार्य, पृष्ठ - 82
   (2) ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका - 1998
   ललितपुर जनपद के बंदनीय दिवंगत स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की सूची, पृष्ठ - 93
2. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 37
3. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक (झांसी डिवीजन), एस. पी. भट्टाचार्य, पृष्ठ - 82
   (2) रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 37
4. ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका - 1998, पृष्ठ - 94

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

स्व. श्री रमानाथ खैरा

(2) श्री अहमद खॉं पहलवान[1]

आपका जन्म 1909 ई0 में ललितपुर नगर में हुआ था आपके पिता का नाम श्री अकबर खॉं था।[2] जैसा की आपके नाम से विदित होता है कि आप अखाड़े के खिलाड़ी रहे हैं। पहलवान होने के साथ आप राजनैतिक, सामाजिक कार्यकर्ता भी रहे हैं। स्वाधीनता की भावना ने आपको स्वतंत्रता संग्राम के क्षेत्र में कूदने को विवश किया। आपने व्यक्तिगत आन्दोलन में ललितपुर नगर में अंग्रेजों के खिलाफ आवाज उठाई और गिरफ्तार होकर 6 माह का कारावास तथा 15 रूपये का अर्थदण्ड प्राप्त किया।[3] और देश प्रेम का परिचय दिया। देश आजाद होने पर केन्द्र सरकार ने आपको केन्द्रीय पेंसन की स्वीकृत की थी।[4]

---

1. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग - 1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, सम्पादक 1963 ई0 में प्रकाशित सूचना विभाग उत्तर प्रदेश, पृष्ठ - 51-52
   (2) ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिक - 1998
   ललितपुर जनपद के बंदनीय दिवंगत स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की सूची, पृष्ठ - 93
2. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग - 1 (झांसी डिवीजन), एस. पी. भट्टाचार्य सम्पादक - 1963 ई0 में प्रकाशित सूचना विभाग उत्तर प्रदेश, पृष्ठ - 51-52
   (2) रजन नीराजना - - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 39
3. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक (झांसी डिवीजन), एस. पी. भट्टाचार्य, पृष्ठ - 82
   (2) रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 39
4. झांसी दर्शन, मोतीलाल अशान्त, पृष्ठ - 53
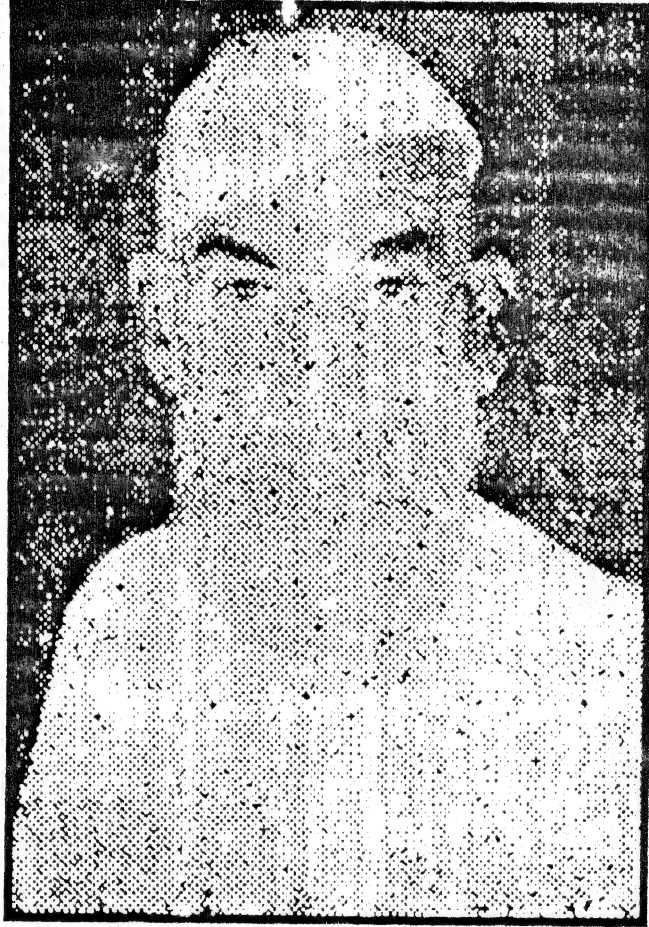
स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

स्व. श्री अहमद खॉ पहलवान

(3) श्री गोविन्द दास जैन[1]

श्री गोविन्द दास जैन का जन्म 1911ई0 में पाली (ललितपुर) में हुआ।[2] आपके पिता का नाम श्री फूलचन्द जैन था।[3] प्रसिद्ध स्वतंत्रता संग्राम सेनानी श्री रघुनाथ विनायक धुलेकर (झांसी) से प्रेरणा पाकर आपने क्रांति स्थल पाली को ही अपनी कर्मभूमि बनाया। 1930ई0 में विदेशी वस्तों का बहिष्कार किया एवं जल बिहार के दिन पाली की गली-गली में घूमकर अपने साथियों सहित पिकेटिंग की।[4] तथा अंग्रेज सरकार के स्थानीय चाटुकारों के आतंक के प्रति जनता में संघर्ष की ज्वाला फूंकी। 1936ई0 में आप व्यक्तिगत आन्दोलन में सक्रिय भूमिका अदा की और 6 माह की सजा पाई।[5] इस प्रकार व्यक्तिगत आन्दोलन में जेल जाकर आपने आजादी की लड़ाई में योगदान किया।

---

1. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग - 1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, सम्पादक - 1963 ई0 में प्रकाशित सूचना विभाग उत्तर प्रदेश, पृष्ठ - 59
2. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक (झांसी डिवीजन), एस. पी. भट्टाचार्य, पृष्ठ - 59
   (2) रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 25
3. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक (झांसी डिवीजन), एस. पी. भट्टाचार्य, पृष्ठ - 59
   (2) ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिक, पृष्ठ - 26
4. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक (झांसी डिवीजन), एस. पी. भट्टाचार्य, पृष्ठ - 59
5. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक (झांसी डिवीजन), एस. पी. भट्टाचार्य, पृष्ठ - 59
   (2) ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिक, पृष्ठ - 27
6. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक (झांसी डिवीजन), एस. पी. भट्टाचार्य, पृष्ठ - 59
   (2) व्यक्तिगत साक्षात्कार - स्वतंत्रता संग्राम सेनानी श्री गोविन्दास जैन
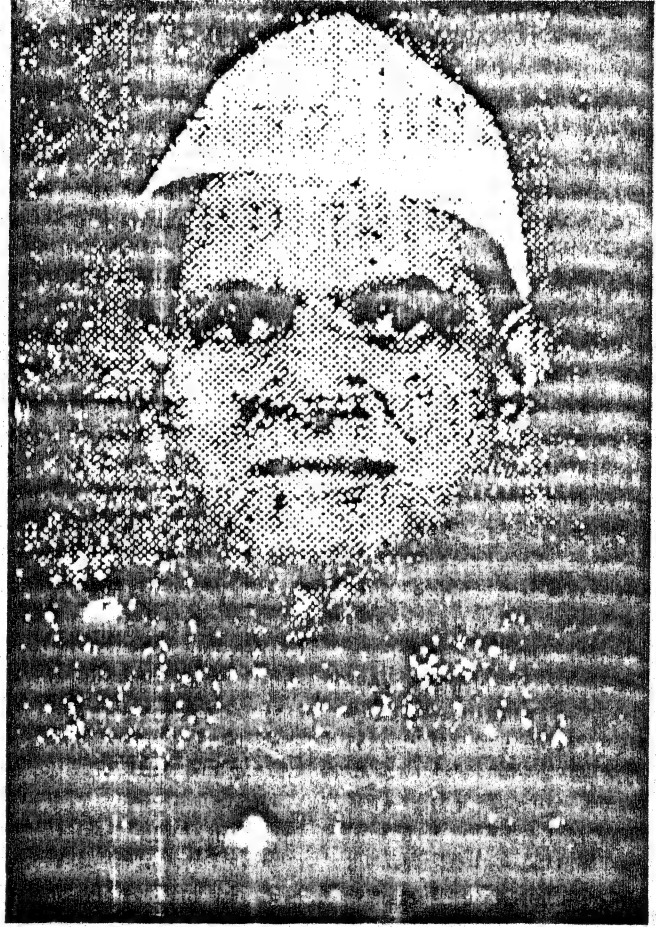
स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

श्री गोविन्द दास जैन

(4) श्रीमती केशरबाई जैन[1]

श्रीमती केशरबाई जैन का जन्म अक्टूबर 1916 ई0 में हुआ था।[2] आपके पिता का नाम श्री मोतीलाल जैन था।[3] स्वतंत्रता आन्दोलन के महान एवं दुस्सह कार्य में जहाँ किशोरों – नौजवानों ने अपना योगदान किया वहाँ नगर ललितपुर की यह नारी, नारी जाति के लिए गौरव है। 1936ई0 से गांधी जी की प्ररेणा से रण क्षेत्र में कूद पड़ी।[4] ऐसी उम्र में ऐसे समय में जब नारी केवल श्रृंगार एवं घर की चार दीवारी तक ही सीमित रहती थी। केशरबाई ने लोक – लाज के बंधन तोड़कर, नारी–जाति को जागृत करने में जुट गई, नवयौवना को अलख जगाते देख नव जवानों को आजादी की लड़ाई लड़ने की प्रेरणा मिली। व्यक्तिगत आन्दोलन में आपको बन्दी बनाकर 1 माह के कारावास की सजा दी गई[5] इस प्रकार ललितपुर क्षेत्र से आजादी के योगदान में आप अपना नाम अमर कर गई।

---

1. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग – 1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, सम्पादक – 1963 ई0 में प्रकाशित सूचना विभाग उत्तर प्रदेश, पृष्ठ – 56
   (2) ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिक, पृष्ठ – 93
2. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग – 1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, पृष्ठ–56
   (2) रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 39
3. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग – 1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, पृष्ठ–56
   (2) रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 39
4. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग – 1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, पृष्ठ–56
   (2) रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 39
5. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग – 1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, पृष्ठ–56
   (2) रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 39

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

स्व. श्रीमति केशरबाई जैन

(5) श्री बृजनन्दन परस्तोर[1]

श्री बृजनन्दन परस्तोर जी का जन्म सं. 1972 वि. में तालवेहट तहसील में हुआ।[2] आपके पिता श्री रामचरन परस्तोर थे।[3] स्वतंत्रता आन्दोलन में सम्पूर्ण देश के साथ तालबेहट भी पीछे नहीं रहा। प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के लिए भी तालबेहट ने योद्धा (राजा मर्दनसिंह सहित अर्पित किये और अन्तिम लड़ाई तक अनेक वीरों ने अपना योगदान दिया। श्री परस्तोर जी ने 1940 ई0 में व्यक्तिगत सत्याग्रह जब शुरू किया तो अंग्रेजों ने आपकों बन्दी बनाकर जेल में बन्द कर दिया।[4] 1 बर्ष 3 माह का दण्ड भोगकर आप जेल से बाहर आये और लगातार अंग्रेजों से संघर्ष करते रहे। तालबेहट नगरी आज आपको निडर- निर्भीक योद्धा की श्रेणी में रखते हुये आपके त्याग की प्रशंसा करती है।

---

1. ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका - 1998, पृष्ठ - 93
2. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 43
3. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 43
4. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 43
5. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 43

(6) श्री जमुनाप्रसाद चौबे[1]

आपका जन्म 15 अक्टूबर 1916 ई0 को खाँदी – तालबेहट मे हुआ था।[2] आपके पिता श्री पजनलाल चौबे जी थे।[3] तालबेहट – ललितपुर क्षेत्र में 1914 ई0 के आस-पास आप प्रसिद्ध आन्दोलनकारी रहे। व्यक्तिगत सत्याग्रह में अपनी भागीदारी देने के कारण आप को अंग्रेजी सरकार ने भारत प्रतिरक्षा कानून की 38वीं धारा के अन्तर्गत गिरफ्तार करके 6 माह की सजा सुनाई तथा 25 रूपया अर्थदण्ड दिया। अर्थदण्ड न देने के कारण 3 माह और सजा प्राप्त की।[4]

---

1. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग – 1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, पृष्ठ–61
2. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 44
3. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 44
4. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग – 1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, पृष्ठ–61

(7) श्री मथुराप्रसाद लिटौरिया[1]

आपका जन्म 12 अगस्त 1912ई0 को ललितपुर जनपद की तालबेहट तहसील में हुआ था। आपके पिता श्री रामचरन लाल लिटौरिया थे।[2] आपका जन्म जमींदार परिवार में होते हुये भी आपने जमींदारी प्रथा के विरूद्ध संघर्ष छेड़ा और किसानों का नेतृत्व किया। तालबेहट का 'लकड़ी काटो' जन आन्दोलन आपके नेतृत्व में ही हुआ था। देशभक्ति आपके रोम-रोम में रमी थी। व्यक्तिगत सत्याग्रह में आपने अपनी भागीदारी दी और उस समय गिरफ्तार होकर 6 माह की जेल तथा 100 रूपये अर्थदण्ड स्वीकार किया।[4]

---

1. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग – 1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, पृष्ठ–75
2. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 45
3. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 45
4. (1) रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 45
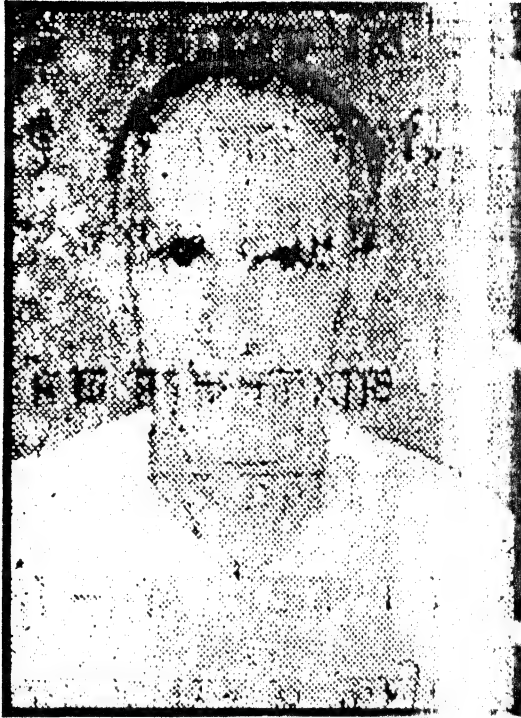
स्वतंत्रता संग्राम सेनानी
स्व. श्री जमुनाप्रसाद चौ

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी
स्व. श्री मथुराप्रसाद लिटौरिया

(8) श्री तेजसिंह[1]

श्री तेजसिंह का जन्म ग्राम गूगर (तालबेहट) में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री प्यारेलाल लोधी था।[2] व्यक्तिगत सत्याग्रह में इस क्षेत्र से अपनी भागीदारी देने के कारण आपको 38 डी. आई. आर के अर्न्तगत 17.4.41 को बन्दी बनाया गया और 1 वर्ष का कारावास तथा 100 रूपये अर्थदण्ड दिया गया।[3]

श्री तेजसिंह ने गाँव - गाँव में आजादी का जयघोष किया। कारावास के पश्चात आप डरे नहीं और तीव्र जोश से जनता को जागरूक बनाया।

---

1. ललितपुर स्वर्ण जंयती स्मारिक, पृष्ठ - 93
2. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 55
3. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 55

(9) श्री भावसिंह[1]

आपका जन्म ग्राम सुनौरी (तालबेहट) जनपद ललितपुर में हुआ था। श्री तिजूप्यारे आपके पिता थे।[2] कॉंग्रेस द्वारा शुरू किये गये व्यक्तिगत सत्याग्रह से ग्राम में जन्में श्री भावसिंह भी अछूते नहीं रहे। आपने इस सत्याग्रह में अपनी भागीदारी देते हुये 22.4.41 को अपनी गिरफ्तारी दी।[3] अंग्रेज सरकार ने आपको 1 माह की सजा तथा 50 रूपये अर्थदण्ड जुर्माना की सजा सुनाई जुर्माना न देने पर 2 माह की सजा और हुई।[4]

---

1. ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका - 1998, पृष्ठ - 93
2. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 71
3. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 71
4. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 71

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

स्व. श्री तेजसिंह

(10) श्री रामजी लाल भार्गव[1]

श्री रामजी लाल भार्गव जी का जन्म 1918ई0 तालबेहट (ललितपुर) में हुआ था। श्री जगन्नाथ भार्गव जी आपके पिता थे।[2] तालबेहट क्षेत्र के स्थानीय नेताओं के साथ आपने भी व्यक्तिगत सत्याग्रह में भाग लिया था और 1941 ई0 को आपको 6 माह का कारावास हुआ।[3] कॉंग्रेस द्वारा शुरू किये गये प्रत्येक आन्दोलन में आप हमेशा अग्रणी रहे।

---

1. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग – 1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य,पृष्ठ–81
   (2) ललितपुर स्वर्ण जंयती स्मारिक, पृष्ठ – 93
2. (1) रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 72
   (2) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग – 1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, पृष्ठ–81
3. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग – 1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, पृष्ठ – 81

(11) पं. श्री रामरतन गोस्वामी[1]

आपका जन्म 1912 ई0 में तालबेहट (ललितपुर) में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री पं. रामनाथ गोस्वामी था।[2] श्री गोस्वामी गांधीवादी विचार-धारा से ओत-प्रोत थे। आपने स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय योगदान दिया है। फलतः ब्रिटिश सरकार ने आजादी के दीवाने इस योद्धा को सन् 1941 ई0 में 6 माह की सजा तथा 50 रूपये का अर्थदण्ड दिया।[3] श्री गोस्वामी जी आजादी प्राप्त न होने तक संघर्ष करते रहे। और अपना योगदान देश की आजादी को देकर तालबेहट क्षेत्र का नाम स्वर्ण अक्षर में अंकित कर गये। स्वतंत्र भारत ने आपको केन्द्रीय पेंसन से सम्मानित किया।[4]

---

1. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग–1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, पृष्ठ–82
   (2) ललितपुर स्वर्ण जंयती स्मारिक, पृष्ठ – 93
2. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 72
3. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग–1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, पृष्ठ–82
   (2) रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 72
4. झांसी दर्शन, मोतीलाल अशान्त, पृष्ठ – 55

(12) श्री दुलीचन्द जैन[1]

श्री दुलीचन्द जैन का जन्म तालबेहट (ललितपुर) में हुआ था। आपके पिता श्री मल्थूराम जैन थे। आपने तालबेहट क्षेत्र के नेताओं के साथ व्यक्तिगत सत्याग्रह में भाग लेकर देश आजाद कराने में अपना योगदान दिया। 1941 ई0 में 6 माह की सजा प्राप्त की।[2] तथा जैन समाज को देश की आजादी के आन्दोलन में आहुति देने की प्रेरणा दी।

---

1. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग-1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, पृष्ठ-64
   (2) ललितपुर स्वर्ण जंयती स्मारिक, पृष्ठ - 93
2. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग-1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, पृष्ठ-64
   (2) रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 88

(13) श्री गोपालदास जैन[1]

श्री गोपालदास जैन का जन्म सन् 1912 ई0 में ग्राम सादूमर जनपद ललितपुर में हुआ था।[2] आपके पिता का नाम श्री सवाई जैन था।[3] आप पेशे से व्यापारी थे परन्तु स्वतंत्रता संग्राम में आप 1941 में व्यक्तिगत आन्दोलन करके डी. आई. आर. के अन्तर्गत 9 माह की सजा भोगी।[4] भारत छोड़ो आन्दोलन के समय 1942ई0 में करो या मरो का नारा देकर नेताओं ने स्वतंत्रता प्रेमियों का आव्हान किया था तब आपने पुनः 1942 ई0 में 1 वर्ष की जेल यात्रा की।[5] इस प्रकार आपने ग्रामीण क्षेत्र का जहाँ प्रतिनिधित्व किया वही ग्रामीण जनता के प्रेरणा स्तम्भ भी बने।

---

1. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग-1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, पृष्ठ-58
2. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 46
3. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 46
4. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 46
5. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 46

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

श्री गोपालदास जैन

(14) श्री कुन्जीलाल स्वर्णकार[1]

श्री कुन्जीलाल स्वर्णकार जी का जन्म 1910ई0 में ग्राम- सादूमर जनपद-ललितपुर में हुआ। आपके पिता श्री भगवानदास स्वर्णकार थे।[2] आपने आजादी के वास्ते 1941 ई0 में व्यक्तिगत आन्दोलन में सम्मिलित होकर डी.आई.आर. के अन्तर्गत 6 माह की सजा प्राप्त की।[3] जेल से बाहर आने पर 1942ई0 में भारत छोड़ो आन्दोलन में पुनः सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में बन्दी बना लिये गये तथा 1 वर्ष की सजा काटनी पड़ी।[4] आपका कार्यक्षेत्र ग्रामीण आंचल था तथा जनता को ब्रिटिश सरकार की कार्यशैली से परिचित कराना प्रमुख कार्य था। और जनता में क्रांति की लहर प्रवाहित करते रहे।

---

1. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग-1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, पृष्ठ-55
   (2) ललितपुर स्वर्ण जंयती स्मारिक, पृष्ठ - 93
2. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 46
3. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 46
4. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 47
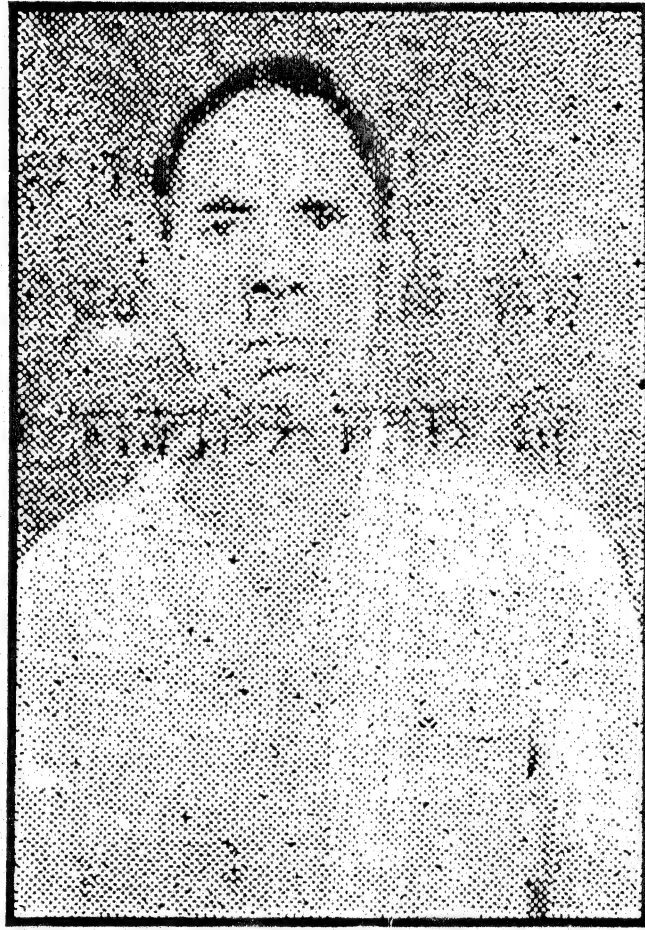
स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

स्व. श्री कुन्जीलाल स्वर्णकार

(15) श्री गुलाबचन्द टेलर मास्टर[1]

आपका जन्म 1912 ई0 में ग्राम सादूमल जनपद-ललितपुर में हुआ आपके पिता का नाम श्री भंसाई था।[2] आप गांधीवादी विचारधारा में आस्था रखते थे। आपने गांधी जी द्वारा चलाये गये आन्दोलनों में बड़ चढ़ कर हिस्सा लिया। 1941ई0 में व्यक्तिगत आन्दोलन में भाग लेने के कारण ब्रिटिश सरकार ने आपको 4 माह की सजा सुनाई।[4] जेल से बाहर आने के पश्चात भी आप शान्त नहीं बैठे और गांधीवादी विचारधारा का प्रचार जनता में करते रहे। वर्तमान में भी आप गांधीवादी विचार धारा से ओत प्रोत हैं। आप बताते है कि मैं ने स्थानीय नेताओं के साथ आजादी के लिये संघर्ष किया और ब्रिटिश शासन की कठोर यातनाएं सहन की।[3]

---

1. ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका - 1998, सं. - संतोष शर्मा, पृष्ठ - 93
2. व्यक्तिगत साक्षात्कार - श्री गुलाबचन्द टेलर मास्टर
3. (1) व्यक्तिगत साक्षात्कार - श्री गुलाबचन्द टेलर मास्टर
   (2) रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 48
   (3) ललितपुर स्वर्ण जंयती स्मारिक - 1998, सं. - संतोष शर्मा, पृष्ठ - 20
4. व्यक्तिगत साक्षात्कार - श्री गुलाबचन्द टेलर मास्टर

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

श्री गुलाबचन्द टेलर मास्टर

(16) पं. श्री बल्देवप्रसाद चौबे[1]

आपका जन्म ग्राम सादूमल जनपद ललितपुर में सन् 1917 ई. को हुआ, श्री अयोध्याप्रसाद चौबे जी आपके पिता थे।[2] स्वतंत्रता आन्दोलन में आप गांधी जी से प्रभावित होकर इसमें सम्मिलित हुए।[3] सन् 1941 ई0 में व्यक्तिगत सत्याग्रह में सम्मिलित होकर आपने अंग्रेजों के खिलाफ आवाज बुलन्द की। तब आपको बन्दी बना लिया गया और 6 माह की कठोर कारावास की सजा दी गयी।[4] इस प्रकार आजादी के लिए ललितपुर क्षेत्र के ग्राम सादूमल से अपना नाम अमर कर दिया। आज भी आप गांधीवादी विचार धारा का प्रचार-प्रसार करते रहते हैं।

---

1. ललितपुर स्वर्ण जंयती स्मारिक, पृष्ठ - 20
2. व्यक्तिगत साक्षात्कार - श्री बल्देवप्रसाद चौबे
3. व्यक्तिगत साक्षात्कार - श्री बल्देवप्रसाद चौबे
4. (1) ललितपुर स्वर्ण जंयती स्मारिक, पृष्ठ - 20
   (2) व्यक्तिगत साक्षात्कार - श्री बल्देवप्रसाद चौबे
   (3) रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 48

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

श्री बल्देव प्रसाद चौवे

(17) श्री दयाराम पाण्डेय[1]

ग्राम सादूमल में सन् 1920 ई0 में जन्में[2] श्री दयाराम पाण्डेय जी का आजादी के आन्दोलन में सक्रिय योगदान रहा है। आपके पिता का नाम श्री मुन्नालाल पाण्डेय है। ग्राम सादूमल आन्दोलनकारियों की गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र रहा।

श्री पाण्डेय तरुणावस्था में ही गांधीजी के आव्हान पर सन् 1941 ई0 में व्यक्तिगत सत्याग्रह करते हुए गिरफ्तार कर लिये गये और तीन माह के कारावास की सजा प्राप्त की।[3] आज भी आप एक साहसी आन्दोलनकारी माने जाते है।

---

1. ललितपुर स्वर्ण जंयती स्मारिक – 1998, सं. – संतोष शर्मा, पृष्ठ – 20
2. व्यक्तिगत साक्षात्कार – श्री दयाराम पाण्डेय
3. (1) ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका – 1998, सं. – संतोष शर्मा, पृष्ठ – 20
   (2) व्यक्तिगत साक्षात्कार – श्री दयाराम पाण्डेय
   (3) रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 49

(18) श्री जगन्नाथ लोदी[1]

आपका जन्म 1908 ई0 में सतबसा (सादूमल) में हुआ था।[2] आपके पिता का नाम श्री चित्तर सिंह था। आपने ग्रामीण क्षेत्र में जनता को जाग्रत किया तथा 1941 ई0 में व्यक्तिगत सत्याग्रह में आपको बन्दी बनाया गया तथा 6 माह का कठोर कारावास दिया गया।[3] इस प्रकार आजादी में आपका भी योगदान है।

---

1. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग – 1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, सम्पादक – 1963 ई0 में प्रकाशित सूचना विभाग उत्तर प्रदेश, पृष्ठ – 60
   (2) ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका – 1998, पृष्ठ – 93
2. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 73
3. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 73

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

श्री दयाराम पाण्डेय

(19) श्री कुन्दनलाल मलैया[1]

आपका जन्म ग्राम सादूमल जनपद – ललितपुर में हुआ था।[2] आपके पिता श्री मोहनलाल जी मलैया थे।[3] आप गांधीवादी विचार धारा से प्रभावित थे। गांधीजी के आव्हान पर 1941ई0 में व्यक्तिगत सत्याग्रह में सम्मिलित हुये और 6 माह का कारावास तथा 100 रूपये अर्थदण्ड प्राप्त किया।[4] जेल से बाहर आने पर 1942 मे आप पुनः सक्रिय हुये तथा 1 वर्ष का कारावास और 100 रूपये अर्थदण्ड फिर भोगा।[5] आप उन कर्मठ कार्यकर्ता में से हैं जिन्होंने देश को आजाद कराने में अपना तन मन धन होम दिया।

---

1. ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका – 1998, सं. – संतोष शर्मा, पृष्ठ – 93
2. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 85
3. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 85
4. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 85
5. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 85

(20) श्री कपूरचन्द जैन[1]

आपका जन्म जनवरी 1921 ई0 में ग्राम सैदपुर जनपद – ललितपुर में हुआ।[2] आपके पिता श्री पल्टूराम थे।[3] आपने श्री विजय कृष्ण शर्मा के साथ गोपनीय क्रांतिकारी आन्दोलन में भाग लिया।[4] और गांधी जी द्वारा शुरु किये गये व्यक्तिगत सत्यागृह में आप सक्रिय रूप से सम्मिलित हुये, तब ब्रिटिश सरकार ने आपको बन्दी बनाकर 6 माह की सजा तथा 25 रूपये का जुर्माना की सजा दी।[5] आप झांसी तथा बाराबंकी जेल में रहे।[6] देश आजाद होने के बाद भी आप देश प्रेम के खातिर 1948–49 ई0 तक प्रान्तीय रक्षा दल में रहे।[7]

---

1. ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका – 1998, सं. – संतोष शर्मा, पृष्ठ – 93
2. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 49
3. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 49
4. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 49
5. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 49
6. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 49
7. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 49

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

स्व. श्री कपूरचन्द जैन

(21) श्री बहोरे गडरिया[1]

ग्राम सैदपुर में श्री भगुन्ते के घर आपका जन्म हुआ।[2] ग्रामीण आंचल सैदपुर में आजादी के दीवानों की कमी नहीं थी। 4 अप्रैल 1941 ई0 को व्यक्तिगत सत्याग्रह के अंतर्गत आपको गिरफ्तार किया गया तथा 6 माह की सजा सुनाई।[3] आपका नाम सैदपुर के नामी क्रांतिकारियों में रखा जाता है।

आजादी के लिए आपने जेल जाकर ब्रिटिश सरकार को यह एहसास कराया की देश की गरीब जनता आपके शासन से घृणा करती है।

---

1. ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका - 1998, सं. - संतोष शर्मा, पृष्ठ - 93
2. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 50
3. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 50

(22) श्री शिवराजसिंह[1]

श्री शिवराज सिंह का जन्म ग्राम जलंधर (सैदपुर) जनपद- ललितपुर में 15 अगस्त 1906 को हुआ।[2] आपके पिता का नाम श्री किशोर सिंह था।[3] अपका कार्यक्षेत्र भी ग्रामीण अंचल था 1941 ई0 में आपने गौना थाना नाराहट में सत्याग्रह किया।[4] तो ब्रिटिश सिपाहियों ने आपको गिरफ्तार करके 6 माह की सजा तथा 100 रूपये का अर्थदण्ड की सजा दी।[5] आप 1 मार्च 1941 से 1 सितम्बर 1941 तक जेल में रहे। आप गांधी वादी विचारध ारा में आस्था रखते थे।

---

1. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग-1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, पृष्ठ-87
   (2) ललितपुर स्वर्ण जंयती स्मारिक - 1998, सं. - संतोष शर्मा, पृष्ठ - 93
2. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग-1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, पृष्ठ - 87
4. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 49
5. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग-1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, पृष्ठ-87
   (2) रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 50
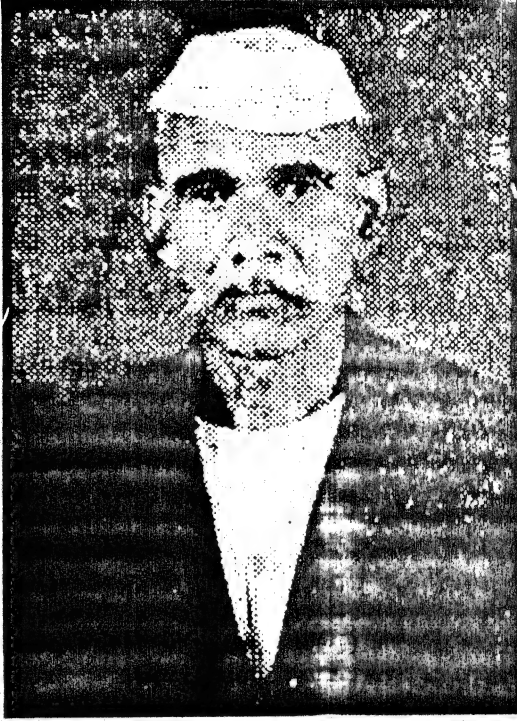
स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

स्व. श्री वहोरे गड़रिया
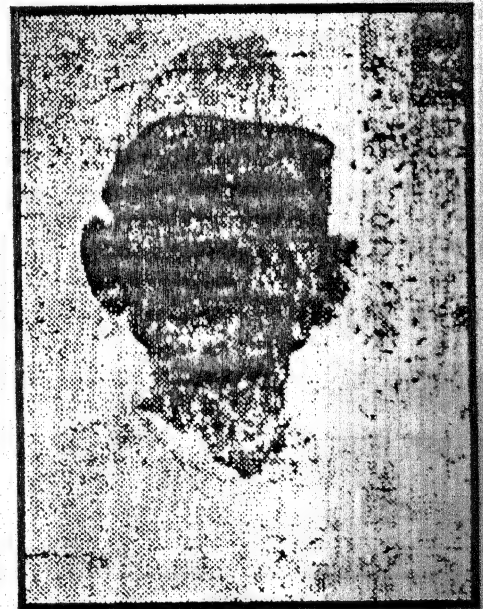
स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

स्व. श्री शिवराज सिंह

(23) श्री चतरे हरिजन[1]

श्री चतरे हरिजन (चमार) का जन्म 1917 ई0 में ग्राम सैदपुर जनपद- ललितपुर में हुआ।[2] आपके पिता का नाम श्री करन्जू था।[3]

क्षेत्रीय नेताओं के साथ आप 1941ई0 में व्यक्तिगत सत्याग्रह में सम्मिलित हुये तथा जेल यात्रा की और 4 माह तक जेल में रहे।[4] आप एक गरीब परिवार से सम्बंधित थे परन्तु भावों के बहुत धनी थे सम्पूर्ण देश की भाँति आप भी स्वतंत्रता संग्राम में उतरे और अंग्रेजों को दिखा दिया की भारत में रहने वाला प्रत्येक अमीर-गरीब नागरिक देश प्रेमी है।

1. ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका - 1998, सं. - संतोष शर्मा, पृष्ठ - 93
2. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 51
3. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 51
5. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 51

(24) श्री प्यारेलाल फूलमाली[1]

आपका जन्म ग्राम - सैदपुर जनपद- ललितपुर में सन् 1913 ई0 में हुआ। आपके पिता श्री हजारीलाल थे। आप युवावस्था से ही राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत थे। आप ने स्वतंत्रता संग्राम के नेताओं को सहयोग प्रदान किया तथा स्वयं भी आन्दोलन में सम्मिलित हुये। 1941 ई0 को आपको बन्दी बनाया गया तथा 1 वर्ष 6 माह की कठोर सजा तथा 25 रूपये अर्थदण्ड दिया गया।[2] स्वतंत्र भारत में आपको केन्द्रीय पेंसन देकर सम्मानित किया गया।[3]

1. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग-1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, पृष्ठ-68 सम्पादक - 1963 ई0 में प्रकाशित सूचना विभाग उत्तर प्रदेश, पृष्ठ - 68
   (2) ललितपुर स्वर्ण जंयती स्मारिक - 1998, सं. - संतोष शर्मा, पृष्ठ - 93
2. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग-1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, पृष्ठ-68
   (2) रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 73
3. झांसी दर्शन - मोतीलाल अशान्त, पृष्ठ - 54

(25) श्री चिन्तामणि बाढई[1]

श्री चिन्तामणि बढ़ई का जन्म 2 मई 1921 ई0 को ग्राम सैदपुर तहसील महरौनी में हुआ।[2] आपके पिता श्री उमराव बढ़ई थे।[3] आपका भी राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिय योगदान रहा है। आप अपने क्षेत्रीय नेताओं के साथ 1941 ई0 को व्यक्तिगत सत्याग्रह मेंसम्मिलित होने के कारण बन्दी बनाये गये, 4 अप्रैल 1941 से 14 अगस्त 1941 तक के कठोर कारावास तथा 50 रूपये अर्थदण्ड की सजा पाई।[4] आपकी विचारधारा गांधीवादी है आज भी आप ग्राम सैदपुर में इन विचारों का प्रसार करते रहते हैं।

---

1. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग-1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, पृष्ठ-60
   (2) ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका - 1998, सं. - संतोष शर्मा, पृष्ठ - 19
2. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग-1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, पृष्ठ-60
   (2) व्यक्तिगत साक्षात्कार - श्री चिन्तामणि बढ़ई
3. व्यक्तिगत साक्षात्कार - श्री चिन्तामणि बढ़ई
4. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग-1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, पृष्ठ-60
   (2) ललितपुर स्वर्ण जंयती स्मारिक - 1998, सं. - संतोष शर्मा, पृष्ठ - 19
   (3) व्यक्तिगत साक्षात्कार - श्री चिन्तामणि बढ़ई

(26) श्री शंकर सिंह लोधी[1]

महरौनी तहसील के ग्राम सैदपुर में 1901 ई0 में जन्मे[2] श्री शंकरसिंह लोधी भी आजादी की लड़ाई में कूद पड़े। आपके पिता का नाम श्री कारे लोधी था।[3] आप गांधी जी व कॉंग्रेस पार्टी में गहरी आस्था रखते थे। गॉंव सैदपुर आजादी की लड़ाई में अग्रणी था तथा अंग्रेजी सरकार के प्रति विद्रोह का गढ़ था।[4] आप 1941 ई0 में व्यक्तिगत सत्यागृह के अन्तर्गत बन्दी बनाये गये तथा 5 माह का कारावास एवं 50 रूपये अर्थदण्ड स्वीकार किया।[5] आप राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत थे तथा ग्रामीण अंचल में देश सेवा के लिए जनता को जागृत करते थे।

---

1. ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका - 1998, सं. - संतोष शर्मा, पृष्ठ - 93
2. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 74
3. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 74
4. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 74
5. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 74

(27) श्री लालसिंह लोधी[1]

आपका जन्म ग्राम – सैदपुर तहसील महरौनी (ललितपुर) में 27 अगस्त 1906 ई0 में हुआ था।[2] आपके पिता का नाम श्री महीपसिंह था।[3]

आप 1941 ई0 में व्यक्तिगत सत्याग्रह में सम्मिलित हुये तथा शासन विरोधी गतिविधियों को संचालित किया इसलिए ग्राम सैदपुर से ही आपको गिरफ्तार कर लिया गया तथा 2 माह की सजा[4] और 50 रूपये का आर्थिक दण्ड आप पर लगाया[5] गया। ग्राम सैदपुर ने स्वतंत्रता के इस महायज्ञ में अनेकों वीरों को सम्मिलित किया।

---

1. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग–1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, पृष्ठ–86
   (2) ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका – 1998, सं. – संतोष शर्मा, पृष्ठ – 93
2. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग–1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, पृष्ठ–86
3. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग–1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, पृष्ठ–86
4. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग–1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, पृष्ठ–86
5. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 75

(28) श्री जगीसिंह[1]

श्री जगीसिंह का जन्म ग्राम सैदपुर तहसील महरौनी, जनपद–ललितपुर में श्री थानसिंह के घर हुआ।[2] आप हमेशा क्षेत्रीय नेताओं का सहयोग करते रहे और 1941 ई0 में व्यक्तिगत सत्याग्रह में दो बार जेल गये[3] तथा एक–एक माह की सजा काटी।[4] इस प्रकार आपने भी आजादी के लिए योगदान दिया है जो चिर स्थायी रहेगा।

---

1. ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका – 1998, सं. – संतोष शर्मा, पृष्ठ – 93
2. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 99
3. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 99
4. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 99

(29) श्री भैयालाल परबार[1]

श्री भैयालाल परबार का जन्म साहूकार परिवार में ग्राम सैदपुर तहसील – महरौनी, जनपद– ललितपुर में हुआ ।[2] आपके पिता का नाम श्री मन्थूलाल परबार था।[3] आपने भी 1941ई0 में ग्राम सैदपुर से व्यक्तिगत सत्याग्रह में योगदान दिया तथा 1 माह की सजा एवं 100 रूपये का अर्थदण्ड भोगा।[4] इस प्रकार आपका स्वतंत्रता संग्राम में दिया गया योगदान अविस्मरणीय है।

---

1. ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका – 1998, सं. – संतोष शर्मा, पृष्ठ – 93
2. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 99
3. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 99
4. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 99

(30) श्री कुन्दनलाल वर्मा[1]

आपका जन्म 1919ई0 में ग्राम मड़ावरा जनपद–ललितपुर में हुआ था।[2] आपके पिता का नाम सुखलाल वर्मा था।[3] आपने व्यक्तिगत आन्दोलन में भाग लिया तथा 1941 ई0 में 6 माह के कठोर कारावास तथा 100 रूपये का अर्थदण्ड प्राप्त किया।[4] आपका कार्यक्षेत्र ग्रामीण अंचल था। जहाँ आप जनता को अंग्रेजी शासन की नीतियों को बताकर उनकी क्रूर दासतानें सुनाते थे और जनसमूह को शिक्षित करते थे स्वतंत्रता के यज्ञ में भाग लेने के लिए।

---

1. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग–1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, पृष्ठ–55
   (2) ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका – 1998, सं. – संतोष शर्मा, पृष्ठ – 93
2. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 51
3. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 51
4. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग–1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, पृष्ठ–86

(31) प्रो० खुशाल चन्द जैन[1]

आपका जन्म सन् 1913 ई0 में ग्राम-गोरा (मड़ावरा) जनपद- ललितपुर में हुआ।[2] आपके पिता श्री गोरावाला जी थे।[3] आपने अपने पूर्वज चिन्तामणिशाह तथा उमराव शाह की तरह अंग्रेजों की दमनकारी नीतियों का विरोध किया और अंग्रेजी शासन का अन्त करने के लिए 1930ई0 में ही युवावस्था में वानर सेना के रूप में कार्य प्रारम्भ किया।[4]

आपने 1934ई0 में एक साथ एम. ए. (काशी विश्वविद्यालय) तथा आचार्य (संस्कृत विश्वविद्यालय) की परीक्षायें उत्तीर्ण की। गांधी जी द्वारा व्यक्तिगत सत्याग्रह जब शुरू किया गया तो उसमें आपकी महती भूमिका अदा थी। तीसरे व्यक्तिगत सत्याग्रह के समय आप उत्तर प्रदेश कांग्रेस संगठन मंत्री थे। 2.5 माह तक हैलट शाही से जूझते हुए 25 फरवरी 1942 ई0 को नजरबंद कर लिए गये।[5] फरवरी 1942ई में जेल से बाहर आने के बाद भारत छोड़ो आन्दोलन में सक्रिय भाग लेने के कारण पुनः 3 सितम्बर 1942 ई0 को जेल भेज दिये गये।[6] 31.12.44 तक सजा भोगने के उपरान्त जेल से बाहर आये। आप स्वतंत्र भारत में साहित्य जगत में अपना विशिष्ट स्थान रखते थे।

---

1. (1) ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका - 1998, सं. - संतोष शर्मा, पृष्ठ - 93
   (2) रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 77
2. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 77
3. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 77
4. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 77
5. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 77
6. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 77

(32) श्री खेमचन्द चौरसिया[1]

श्री खेमचन्द चौरसिया जी का जन्म सन् 1917 ई0 में ग्राम - पाली, जनपद-ललितपुर में हुआ।[2] आपके पिता श्री भगुन्तेलाल चौरसिया जी थे।[3] आप गांधी के द्वारा शुरू किये गये व्यक्तिगत सत्याग्रह में सम्मिलित हुए और गिरफ्तार होकर 4 माह जेल में रहे।[4]

भारत छोड़ो आन्दोलन में भी आप 1942 ई0 में 3 माह जेल में रहे।[5] आप पाली के किसान सत्याग्रह व लकड़ी काटो आन्दोलन में भी सक्रिय कार्यकर्ता रहे हैं।[6] आप स्वभाव के कोमल, विचारों के परिपक्व, देश सेवा की भावना से ओत-प्रोत थे।

---

1. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग-1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, पृष्ठ-57
   (2) ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका - 1998, सं. - संतोष शर्मा, पृष्ठ - 93
2. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 51
3. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 51
4. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 51
5. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 51
6. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 51

(33) श्री मन्टूलाल चौरसिया[1]

श्री मन्टूलाल चौरसिया जी का जन्म 1919 ई0 में ग्राम-पाली, जनपद-ललितपुर में हुआ।[2] श्री खुमान चौरसिया आपके पिता जी थे।[3] क्रांतिकारी स्थल पाली की गरिमा को बनाये रखे हुये आपने भी आजादी की लड़ाई में स्थानीय नेताओं को सहयोग दिया एवं 1941 ई0 में व्यक्तिगत सत्याग्रह में गिरफ्तार होकर 6 माह जेल में रहे, तथा 40 रूपये का अर्थदण्ड को स्वीकार किया।[4]

---

1. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग-1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, पृष्ठ-76
   (2) ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका - 1998, सं. - संतोष शर्मा, पृष्ठ - 93
2. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 60
3. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 60
4. (1) रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 60
   (2) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग-1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, पृष्ठ-76

(34) श्री हरदास बाबू[1]

आपका जन्म 1896 ई0 में ग्राम – पाली जनपद – ललितपुर में हुआ था। आप मंण्डी वामोरा में तार बाबू के पद पर कार्यरत थे।[2] परन्तु आपको अंग्रेजी सरकार की सेवा करना आत्म – सम्मान के विपरीत लगा। इसलिए आप राष्ट्रीय आन्दोलन में सम्मिलित हुये और एकमात्र आय के साधन का परित्याग कर दिया। नौकरी त्यागकर आप पाली में आ गए एवं 1940 ई0 में व्यक्तिगत सत्याग्रह के अंतर्गत 4 माह का कठोर कारावास भोगा।[3] जेल से बाहर आने पर 1942 ई0 में पुनः सक्रिय हुये तब आप गिरफ्तार कर लिये गये तथा नजर बन्द कर दिये गये, 4 माह की सजा काट पाई कि जेल में ही अपने दो युवा पुत्रों का दुःखत हृदय विदारक समाचार मिला कि वह स्वर्णवासी हो गये।[4]

सरकार ने उन्हें छोड़ दिया[5] पुत्रों के वियोग में आप विचलित नहीं हुये मातृभूमि से अंग्रेजों को भगाने के लिए सक्रियता पूर्वक शासन विरोधी कार्यवाहियों में अपना सहयोग देते रहे फलतः पुनः सन् 1945 ई0 में डी. आई. आर. के अन्तर्गत 45 रूपये अर्थदण्ड भुगतना पड़ा।[6] श्री हरिदास बाबू जी की त्याग तपस्या को स्वतंत्र भारत की पीढ़ी सदैव सम्मान के साथ सराहती रहेगी।

---

1. ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका – 1998, सं. – संतोष शर्मा, पृष्ठ – 93
2. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 59
3. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 60
4. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 60
5. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 60
6. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 60

(35) श्री गोरेलाल चौरसिया[1]

आपका जन्म 1914 ई0 में ग्राम पाली जनपद – ललितपुर में हुआ था।[2] आपके पिता श्री टूड़े चौरसिया थे।[3] आपने यथा शक्ति क्षेत्रीय नेताओं की प्रत्येक आन्दोलन में मदद की। देश सेवा करने में आपको आनन्द की अनुभूति होती थी। आप 1941 ई0 में व्यक्तिगत सत्याग्रह के अन्तर्गत भारत रक्षा कानून के अन्तर्गत बन्दी बनाये गये तथा 6 माह का कठोर कारावास सहन किया।[4]

1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भी आपने भाग लिया तथा 9 माह की जेल की सजा काटी।[5]

---

1. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग–1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, पृष्ठ–76
   (2) ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका – 1998, सं. – संतोष शर्मा, पृष्ठ – 93
2. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 60
3. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 60
4. (1) रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 60
   (2) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग–1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, पृष्ठ–76

(36) श्री हरप्रसाद शर्मा[1]

श्री हरप्रसाद शर्मा जी का जन्म 5 अप्रैल 1916 ई0 को ग्राम पिपरई (धौर्रा) जनपद-ललितपुर में हुआ था।[2] आपके पिता श्री गजराज शर्मा थे। आपने युवावस्था में ही देश सेवा का वृत ले लिया और आपने महान क्रांतिकारी शम्भूनाथ आजाद एवं विजय कृष्ण के साथ उनका सहयोग किया।[3] आपने पूर्व नोटिस कलैक्टर को दिया और व्यक्तिगत आन्दोलन शुरू किया तब आपको 1941 ई0 में बन्दी बना लिया गया तथा 4 माह की सजा एवं 50 रूपये अर्थदण्ड दिया गया।[4] जेल से बाहर आकर आपने क्रांतिकारी गतिविधियों को पुनः शुरू किया तथा ललितपुर सब डिवीजन में उनका संचालन किया। आपने नारायण पुल को दायनामेन्ट लगाकर उड़ाया था।[5] भारत छोड़ो आन्दोलन में ब्रिटिश शासन ने पुनः गिरफ्तार करके फौजदारी कानून संशोधन (अधिनियम) की 17वीं धारा के अन्तर्गत 23 सितम्बर 1942 को 6 माह की सजा तथा 500 रूपया का अर्थदण्ड दिया।[6] जीवन व मौत से संघर्ष करते हुए आपने अंग्रेजी सरकार को उखाड़ फेकने का जो कार्य किया उसे कभी भुलाया नहीं जा सकता। आपने धौर्रा क्षेत्र से नेतृत्व प्रदान कर राष्ट्रीय आन्दोलन को गतिशील बनाये रखा।

---

1. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग-1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, पृष्ठ-91
   (2) ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका - 1998, सं. - संतोष शर्मा, पृष्ठ - 93
2. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 61
3. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 61
4. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 62
5. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 62
6. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग-1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, पृष्ठ-91

(37) श्री हरप्रसाद लोधी[1]

आपका जन्म 1917 ई0 में ग्राम बरौदा विजलोन (जाखलौन-धौरी) जनपद ललितपुर में हुआ।[2] आपके पिता का नाम श्री धरमदास लोधी था।[3] आप श्री हरप्रसाद शर्मा जी की प्रेरणा से देश सेवा की ओर उन्मुख हुये। आप 1941 ई0 में व्यक्तिगत सत्याग्रह के अन्तर्गत दो बार जेल गये और तीन-तीन माह की सजा भोगी।[4] इसके पश्चात आप 1942 ई0 में भारत छोड़ो आन्दोलन में भी सक्रिय हुये तब आपको ब्रिटिश सरकार ने 1 वर्ष का कारावास तथा 100 रूपये का अर्थदण्ड लगाया।[5] इस प्रकार ब्रिटिश सरकार के दमनात्मक तरीके आप को अपने पथ से विचलित नहीं कर पाये और आप देश सेवा के लिए हमेशा उन्मुक्त रहे।

1. ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका - 1998, सं. - संतोष शर्मा, पृष्ठ - 93
2. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 63
3. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 63
4. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 63
5. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 64

(38) श्री जगन्नाथ यादव[1]

आपका जन्म ग्राम - सिंदवाहा, जनपद-ललितपुर में श्री वल्देवप्रसाद यादव जी के घर हुआ।[2] आपने भी सिन्दवाहा ग्रामीण क्षेत्र से व्यक्तिगत सत्याग्रह में अपनी भागीदारी दी थी। आपको 13 मार्च 1941 ई0 में 6 माह की सजा तथा 50 रू0 अर्थदण्ड दिया गया।[3] परन्तु अर्थदण्ड न देने के कारण 3 माह की सजा और दी गयी।[4] इस प्रकार आजादी की लड़ाई में आपका भी योगदान है।

1. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग-1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, पृष्ठ-60
   (2) ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका - 1998, सं. - संतोष शर्मा, पृष्ठ - 93
2. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 64
3. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 64
4. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 64

(39) श्री राजधर स्वर्णकार[1]

आपका जन्म ग्राम – सिन्दवाहा (महरौनी) जनपद–ललितपुर में हुआ।[2] आपके पिता का नाम श्री देवी स्वर्णकार था।[3] देश सेवा हेतु आप क्षेत्रीय नेताओं के साथ व्यक्तिगत सत्याग्रह में सम्मिलित हुए तथा 1941 ई0 में बन्दी बनाये गये तथा 9 माह की जेल की सजा काटी।[4] इस प्रकार आजादी के लिए आपने भी योगदान दिया है। और देश स्वतंत्र होने पर भारत सरकार ने आपको केन्द्रीय पेंशन देकर सम्मानित किया।[5]

---

1. ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका – 1998, सं. – संतोष शर्मा, पृष्ठ – 93
2. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 79
3. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 79
4. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 79
5. झांसी दर्शन – मोतीलाल अशान्त, पृष्ठ – 55

(40) श्री ठाकुर संतोष सिंह[1]

ठाकुर संतोष सिंह का जन्म 7 दिसम्बर 1920 ई0 को ग्राम – गोना (नाराहट) जनपद– ललितपुर में हुआ था।[2] आपके पिता श्री पृथ्वीसिंह थे।[3]

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में आपका कार्यक्षेत्र अपना ही निवास स्थान गोना रहा है। जहाँ पर आप जनता को ब्रिटिश करतूतों से अवगत कराते थे। आप 1941 ई0 में व्यक्तिगत सत्याग्रह में सम्मिलित हुये और गिरफ्तार होकर 6 माह जेल की सजा काटी।[4] सन् 1942 ई0 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भी 1 वर्ष की कैद की सजा पायी।[5] इस प्रकार आजादी के लिए आपने भी योगदान दिया है।

---

1. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग–1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, पृष्ठ–88
   (2) ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका – 1998, सं. – संतोष शर्मा, पृष्ठ – 93
2. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 65
3. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 65
4. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 65
5. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग–1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, पृष्ठ–88

(41) श्री फूलचन्द जैन[1]

श्री फूलचन्द जैन (सिंघई) जी का जन्म वैसाख सुदी 4 सं. 1957 में ग्राम सिलावन, जनपद- ललितपुर में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री दरयाव लाल सिंघई था। आजादी की लड़ाई में आपका कार्यक्षेत्र उ0 प्र0, म0 प्र0 तथा महाराष्ट्र रहा। आप बीना (म0 प्र0) सागर में सन् 1928 से 1932 ई0 तक कांग्रेस के सक्रिय सदस्य तथा महाराष्ट्र शोलापुर में सन् 1934 से 1938 ई0 तक प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के सक्रिय सदस्य रहे। अमरावती में सन् 1940-41 ई0 में उपमंत्री नगर कांग्रेस कमेटी के रहे।[2] एवं राजनीति सक्रियता को मूर्तरूप दिया। आप 1941 ई0 में व्यक्तिगत सत्याग्रह में ग्राम - लड़वारी (बार) जनपद- ललितपुर में जन जागरण करते हुये ओजस्वी भाषण देने के कारण ललितपुर कचहरी के अहाते में 1 माह की सजा तथा 100 रूपये का अर्थदण्ड सुनाया गया।[3] आपने सिद्धान्त शास्त्री तक शिक्षा ग्रहण की थी तथा 1930 ई0 से ही गांधीवादी विचारधारा से जुड़कर खदी पहनना शुरू किया था। आपका योगदान अविस्मरणीय है।

1. ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका - 1998, सं. - संतोष शर्मा, पृष्ठ - 93
2. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 66
3. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 67

(42) श्री दमरू सिंह[1]

श्री दमरू सिंह जी का जन्म ग्राम - नैनवारा, जनपद-ललितपुर में श्री मांगूसिंह जी के घर हुआ था।[2] आप गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित थे। आजादी की लड़ाई में आप 1941 ई0 में व्यक्तिगत सत्याग्रह में सम्मिलित हुये तथा ब्रिटिश सरकार द्वारा गिरफ्तार कर 6 माह का कारावास एवं 30 रूपये का अर्थदण्ड दिया गया।[3] आपने ललितपुर सब डिवीजन में चल रहे आन्दोलन में यहाँ के नेताओं को सहयोग भी प्रदान किया।

1. ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका - 1998, सं. - संतोष शर्मा, पृष्ठ - 93
2. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 100
3. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 100

(43) श्री खलक सिंह[1]

आपका जन्म 2 जून 1872 ई0 को ग्राम सतवासा, जनपद-ललितपुर में श्री पर्वतसिंह जी के घर हुआ था। आपने इस क्षेत्र की जनता को जाग्रत करने के लिए एवं अंग्रेजी हुकूमत के प्रति नफरत की भावना पैदा करने के लिए गाँव - गाँव में भ्रमण किया तथा ललितपुर क्षेत्र में स्वंतत्रता का अलख जगाया।[2] आपको ब्रिटिश सरकार ने 1941 ई0 के व्यक्तिगत सत्याग्रह में वन्दी बनाकर 6 माह की सजा दी थी।[3] इस प्रकार ललितपुर क्षेत्र में आपका भी योगदान अविस्मरणीय है।

---

1. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग-1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, पृष्ठ-56
   (2) ललितपुर स्वर्ण जंयती स्मारिक - 1998, सं. - संतोष शर्मा, पृष्ठ - 93
2. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 65
3. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग-1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, पृष्ठ-56
   (2) रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 101

(44) श्री रामदयाल गेंडा[1]

श्री रामदयाल गेंड़ा जी का जन्म सावन सुदी 5 सं. 1935 को ग्राम वरोदा डाँग (वार) जनपद-ललितपुर में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री जगन था। आपने स्वतंत्रता संग्राम में अपनी भागीदारी देते हुये 1941 ई0 में व्यक्तिगत सत्याग्रह में गिरफ्तार होकर 3 माह की सजा तथा 100 रूपये का अर्थदण्ड का जुर्माना स्वीकार किया।[2]

राष्ट्रीय स्तर के नेताओं के आव्हान पर आप पुनः व्यक्तिगत सत्यागृह में सन् 1941-42 में दफा 106 के अन्तर्गत 1 वर्ष की सजा काटी।[3] इस प्रकार आप अंग्रेजों को देश से वाहर निकालने के लिए संघर्षरत रहे।

---

1. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग-1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, पृष्ठ-81
   (2) ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका - 1998, सं. - संतोष शर्मा, पृष्ठ - 93
2. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 79
3. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 79

(45) श्री दुरजन[1]

आपका जन्म ग्राम – भावनी (बार) जिला – ललितपुर में श्री हीरालाल वैश्य के घर हुआ था।[2] आपने ग्रामीण अंचल से ललितपुर सब डिवीजन व झांसी जिले का प्रतिनिधित्व करते हुये आजादी की लड़ाई में योगदान दिया।

1941 ई0 में व्यक्तिगत सत्याग्रह में आप जेल गये। 1 माह जेल की सजा तथा 50 रूपये का अर्थदण्ड स्वीकार किया।[3] आपने अपने निवास स्थान के आस-पास जन जागरण भी किया।

---

1. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 91
2. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 91
3. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 91

(46) श्री कामता प्रसाद यादव[1]

श्री कामताप्रसाद यादव जी का जन्म ग्राम गेंदोरा (बार) जनपद- ललितपुर में हुआ था।[2] आपके पिता का नाम श्री बदली यादव था।[3] आपने स्वतंत्रता संग्राम में 1941 ई0 में व्यक्तिगत सत्यग्रह के अन्तर्गत 1 माह की सजा काटकर तथा 50 रूपये का अर्थदण्ड देकर योगदान दिया।[4] आपने क्षेत्रीय नेताओं को भी हर संभव सहयोग दिया।

---

1. ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका – 1998, सं. – संतोष शर्मा, पृष्ठ – 93
2. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 98
3. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 98
4. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 98

(47) श्री मथुराप्रसाद[1]

आप का जन्म ग्राम गेंदोरा (बार) जनपद – ललितपुर में श्री बाबूराम ब्राह्मण जी के यहाँ हुआ।[2] आप गांधीवादी विचारधारा में आस्था रखते थे। तथा कांग्रेस के कर्मठ कार्यकर्ता थे। आपने 1941 ई0 में 1 माह का कारावास तथा 50 रूपये अर्थदण्ड देकर आजादी के लिए योगदान दिया।[3] एवं 1942 ई0 के आन्दोलन में आपको 1 वर्ष की कैद की सजा दी गयी।[4]

---

1. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग–1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, पृष्ठ–75
   (2) ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका – 1998, सं. – संतोष शर्मा, पृष्ठ – 93
2. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 103
3. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 103
4. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग–1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, पृष्ठ–75

(48) श्री गोकुलचन्द जैन[1]

श्री गोकुलचन्द जी जैन का जन्म श्री दमरू जी जैन के यहाँ ग्राम लड़वारी (बार) जनपद– ललितपुर में हुआ था।[2] आप देश प्रेम की भावना से ओत – प्रोत थे। स्वतंत्रता सेनानी श्री जैन 1941 ई0 में जेल गये तथा 4 माह का कारावास[3] तथा 100 रूपये का अर्थदण्ड देना स्वीकार कर राष्ट्रीय आन्दोलन में सहयोग दिया।

---

1. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग–1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, पृष्ठ–58
   (2) ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका – 1998, सं. – संतोष शर्मा, पृष्ठ – 93
2. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 100
3. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग–1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, पृष्ठ–58

(49) श्री मौजीलाल[1]

श्री मौजी लाल का जन्म ब्लाक व थाना बार, जनपद-ललितपुर में हुआ था।[2] आपके पिता का नाम श्री ठकरे सहरिया (रावत) था।[3] आपका जन्म एक निर्धन परिवार अनुसूचित जनजाति में हुआ।[4] परन्तु आप क्षेत्रीय नेताओं के सहयोग में रहे और देश सेवा की भावना जाग्रत हुयी। इस प्रकार 1941 ई0 में आपको ब्रिटिश सरकार ने 3 माह 15 दिन के कारावास की सजा दी।[5] ब्रिटिश सरकार इस समय समझ गयी थी कि भारत को अब बहुत दिनों तक गुलाम नहीं रखा जा सकता है। क्योंकि भूखा-प्यासा गरीब भी आजादी की लड़ाई में सामिल हो गया है।

---

1. ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका - 1998, सं. - संतोष शर्मा, पृष्ठ - 93
2. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 92
3. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 92
4. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 92
5. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 92

(50) श्री प्यारेलाल यादव[1]

स्वतंत्रता सेनानी श्री प्यारेलाल यादव का जन्म ग्राम - बार, जनपद-ललितपुर में हुआ था।[2] आपके पिता का नाम श्री अजुद्दी था।[3] आप आजादी के संग्राम में 4 अप्रैल 1941 ई0 को व्यक्तिगत सत्याग्रह के अन्तर्गत गिरफ्तार हुये तथा 1 माह जेल में रहे।[4] आप हमेशा क्षेत्रीय नेताओं को सहयोग करते रहे। तथा कांग्रेस के कर्मठ कार्यकर्ता रहे।

---

1. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग-1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, पृष्ठ-68
   (2) ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका - 1998, सं. - संतोष शर्मा, पृष्ठ - 93
2. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 98
3. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 98
4. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 98

(51) श्री परमानन्द वैश्य[1]

आपका जन्म भी ग्राम बार - जनपद- ललितपुर में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री भूरेलाल वैश्य था। आपने क्षेत्रीय नेताओं के साथ रहकर आजादी के लिए योगदान दिया तथा 1941 ई0 में गिरफ्तार कर लिये गये और 6 माह जेल में रहे[2] तथा 50 रूपये का अर्थदण्ड भी दिया।[3]

---

1. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग-1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, पृष्ठ-67
   (2) ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका - 1998, सं. - संतोष शर्मा, पृष्ठ - 93
2. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग-1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, पृष्ठ-67
3. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 102

(52) श्री कन्हई[1]

आपका जन्म ललितपुर जनपद की महरौनी तहसील के सतवास ग्राम में 15 अप्रैल 1901 ई0 को हुआ था। आपके पिता का नाम श्री शंकर था।[2]

श्री कन्हई जी ने आजादी की लड़ाई में भाग लेते हुये सर्वप्रथम सन् 1941ई0 के व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन में भाग लिया जिस कारण 6 माह कठिन कैद की सजा तथा 50 रूपये अर्थदण्ड की सजा आप को दी गयी थी।[3] देश के आजाद होने से पहले ही आप 10 अप्रैल 1946 ई0 को स्वर्गवासी हो गये।

---

1. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग-1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, पृष्ठ-53
2. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग-1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, पृष्ठ-53
3. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग-1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, पृष्ठ-53

(53) स्वतंत्रता सेनानी अमर शहीद नारायणदास खरे[1]

अमर शहीद नारायण दास खरे का जन्म ललितपुर जिले के दैलवारा ग्राम में 14 फरवरी 1918 में हुआ।[2] यह बचपन से ही क्रांतिकारी विचारधारा के व्यक्ति थे। आपने अनेक सत्याग्रहों में खुलकर हिस्सा लिया तथा अनेक स्थानों पर जागीरदारों की मनमानी के खिलाफ संघर्ष किया था। आपके पिता का स्वर्गवास चूंकि बचपन में ही हो गया था इसलिए आप टीकमगढ़ अपने काका के पास शिक्षण कार्य हेतु आये पर यहाँ पर झंडा सत्याग्रह में भाग लेने के कारण ओरछा राज्य से निकाल दिया गया जिससे इन्हें अपनी शिक्षा अधूरी छोड़नी पड़ी। आप 1938 ई0 में टोड़ी फतेहपुर राज्य में आन्दोलन हेतु पहुँचे जहाँ पर पकड़े जाने के बाद जेल की यातनायें सहना पड़ी जेल से छूटने के बाद इन्होंने 1939 ई. में हैदराबाद में हुए सत्याग्रह में भी भाग लिया। यहाँ पर भी आप पकड़े गये एवं 6 माह की सजा भुगतना पड़ी।[3] आप पुनः अपने जिला – झांसी (उस समय का) आये और अंग्रेजी प्रशासन के खिलाफ व्यक्तिगत सत्यागृह किया जहाँ आपके सक्रिय रूप से भाग लेने एवं आन्दोलन को गति देने के कारण अंग्रेजी प्रशासन ने आपको 1940 ई0 में 1 वर्ष की कैद की सजा दी।[4] आप इलाहाबाद, चिनार, झांसी आदि जेलों में बन्द रहे तथा छूटते ही इन्होंने 1942 ई0 में हरिजन सेवक संघ की स्थापना की तथा उसके मंत्री भी रहें।[5] यह अपनी बात ग्रामीण जनता की ही भाषा में ही हमेशा किया करते थे इसी कारण से आप जनता में धुलमिल गये थे तथा एक जनप्रिय क्रांतिकारी बन चुके थे। अनवरत लम्बे संघर्षो के बाद 15 अगस्त 1947 ई0 को देश ने आजादी की सांस ली। सभी जगह राष्ट्रगान के साथ यूनियन जैक उतार कर तिरंगा फहराया गया। रियासती इलाकों में वहाँ के राजाओं ने इस पावन दिवस पर तिरंगे के साथ अपने – अपने राज्यों के भी झण्डे फहराये। रियासतों में जनता के समझ अभी भी एक समस्या थी की किस तरह से रियासत के झण्डे उतार कर केवल तिरंगा फहराया जाए। इस ओर सशक्त कदम टीकमगढ़ में उठाया गया। "ओरछा सेवा संघ" ने पूर्ण उत्तरदायी शासन की माँग की

1. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग – 1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, सम्पादक – 1963 ई0 में प्रकाशित सूचना विभाग उत्तर प्रदेश, पृष्ठ – 66
2. बुन्देली माटी के सपूत – हीरासिंह ठाकुर, पृष्ठ – 161
3. बुन्देली माटी के सपूत – हीरासिंह ठाकुर, पृष्ठ – 161
4. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ – 66
5. बुन्देली माटी के सपूत – हीरासिंह ठाकुर, पृष्ठ – 162

एवं आन्दोलन करने की धमकी भी दी। इसके जबाब में वहाँ के महाराजा ने उत्तर दिया कि 1948 ई0 में विधान निर्मात्री परिषद के चुनाव के बाद ही उत्तरदायी शासन लागू किया जाना संभव है।[1] कांग्रेस द्वारा चालाये जा रहे इस अभियान को विफल करने में बुन्देलखण्ड की प्रायः सभी रियासतें सक्रिय थी। सभी रियासतें एवं जागीरें बन्दूकें कारतूस आदि इकट्ठा करने में लगी हुयी थी। जब यह सामग्री मोटर गाड़ियों से जा रही थी तभी वह पकड़ी गयी एवं टीकमगढ़ के राजा के भतीजे ज्ञानेन्द्र सिंह उसमें गिरफ्तार भी हुए। इस तरह यह षड़यंत्र विफल हुआ।[2] इस विफलता से कुढ़कर एवं झुंझलाकर राजपूत सेवा संघ प्रतिक्रियावादी पार्टी आदि के सदस्य उत्तरदायी शासन की माँग कर रहे ओरछा सेवा संघ के सदस्यों को धमकी देने लगे। इसके पश्चात मजबूरन ओरछा सेवा संघ की अग्रिम कार्यवाही हेतु एक आपात बैठक 9 एवं 10 नवम्बर 1947 ई0 को ग्राम बम्होरी कलाँ में बुलानी पड़ी। इस बैठक की अध्यक्षता क्रांतिकारी नेता पं. परमानन्द ने की।[3] इसमें यह तय किया गया कि दिसम्बर के महिने में तीव्र आन्दोलन शुरू किया जाय। इसके अगुवा बनाये गये लालाराम बाजपेयी एवं एक सक्रिय एवं निर्भीक नवयुवक नारायणदास खरे को बड़ागांव इलाके का संपूर्ण कार्य सौपा गया।[4]

आन्दोलन शुरू किया गया इसमें शरीक होने के लिए अनेकानेक कर्मचारियों के साथ नगर पालिकाओं के तथा धारासभा के सदस्यों ने सहर्ष त्यागपत्र दे दिये। आन्दोलनकारियों के इस आन्दोलन की सूचना महाराजा को बम्बई में दी गयी। ओरछा सेवा संघ के सदस्यों को महाराजा ने वार्तालाप हेतु 8 दिसम्बर को बम्बई बुलाया। चर्चा हेतु गोपीकृष्ण विजयवर्गीय के नेतृत्व में एक प्रतिनिधि मण्डल बम्बई पहुँचा।[5] महाराजा ने आशवस्त किया कि 17 दिसम्बर तक उत्तरदायी शासन की घोषणा कर दी जायेगी, और ऐसा ही हुआ। परन्तु दुर्भाग्य कि आजादी के इस खुसी के जश्न में कर्मठ एवं निष्ठावान कार्यकर्ता नारायणदास खरे जिन्हें बड़ागांव इलाके में सक्रिय आन्दोलन हेतु पदस्थ किया गया था उनका कत्ल कर दिया गया।[6]

---

1. बुन्देली माटी के सपूत – हीरासिंह ठाकुर, पृष्ठ – 160
2. बुन्देली माटी के सपूत – हीरासिंह ठाकुर, पृष्ठ – 160
3. बुन्देली माटी के सपूत – हीरासिंह ठाकुर, पृष्ठ – 160
4. बुन्देली माटी के सपूत – हीरासिंह ठाकुर, पृष्ठ – 161
5. बुन्देली माटी के सपूत – हीरासिंह ठाकुर, पृष्ठ – 161
6. बुन्देली माटी के सपूत – हीरासिंह ठाकुर, पृष्ठ – 161

इस आशंका से कि यह खबर फैलते ही उत्तेजना फैलगी तथा क्रांति की यह छोटी सी चिनगारी कहीं विस्फोटक रूप में परिवर्तित न हो जाए इसीलिये वास्तव में भय के कारण ओरछा महाराजा ने 10 जनवरी 1948 ई0 को उत्तरदायी शासन की घोषणा मजबूरन करनी पड़ी।[1]

इस तरह अमर शहीद नारायणदास खरे की शहादत निरर्थक नहीं गयी।

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

स्व. श्री नारायणदास खरे

1. बुन्देली माटी के सपूत - हीरासिंह ठाकुर, पृष्ठ - 162

(54) श्री गोपीचन्द जैन[1]

आपका जन्म महरौनी तहसील में श्री सरहूमल जी के घर हुआ था। ललितपुर क्षेत्र से आप 1941 ई0 में व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन में सम्मिलित हुये थे तब अंग्रेजी शासन ने आपको अपने दमनचक्र में लपेटकर 1 वर्ष के कैद की सजा दी।[2] जेल से बाहर आने पर पुनः 1942 ई0 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भी सम्मिलित हुये और 1 वर्ष जेल की सजा काटी।[3]

---

1. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग-1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, पृष्ठ-59
2. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग-1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, पृष्ठ-59
3. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग-1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, पृष्ठ-59

(55) श्री मरदन चौधरी[1]

आपका जन्म श्री गम्भीर चौधरी के घर ग्राम ककऊआ में हुआ था। आप अपने क्षेत्र के प्रसिद्ध हरिजन आन्दोलनकारी थे। 1941ई0 के व्यक्तिगत आन्दोलन में भाग लेने के कारण 6 माह का कारावास मिला एवं 1942 ई0 के भारत छोड़ों आन्दोलन में 1 वर्ष की कैद की सजा पायी।[2]

---

1. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग - 1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, सम्पादक - 1963 ई0 में प्रकाशित सूचना विभाग उत्तर प्रदेश, पृष्ठ - 76
   (2) ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका - 1998
   ललितपुर जनपद के बंदनीय दिवंगत स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की सूची, पृष्ठ - 93
   (3) रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 25
2. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक (झांसी डिवीजन), एस. पी. भट्टाचार्य, पृष्ठ - 76
   (2) रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 25

(56) पं. श्री ठाकुरदास शर्मा[1]

पं. ठाकुर दास शर्मा जी का जन्म सन् 1921 ई0 में ललितपुर में हुआ था। आपने आजादी की लड़ाई में योगदान देते हुये सन् 1941 ई0 में व्यक्तिगत सत्याग्रह में सम्मिलित हुये थे। तब अंग्रेजी शासन ने आपको गिरफ्तार कर 1 वर्ष के कैद की सजा दी।[2]

(57) श्री ताराचन्द[3]

आपका जन्म ललितपुर में श्री रामचन्द्र जी के घर हुआ था। आपने स्वतंत्रता आन्दोलन में 1941 ई0 में अपना योगदान दिया जिस कारण आपको 1 वर्ष की कठिन कैद और 100 रुपये का अर्थदण्ड जुर्माने की सजा दी गयी।[4]

---

1. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग - 1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, पृष्ठ - 63
2. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग - 1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, पृष्ठ - 63
3. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग - 1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, पृष्ठ - 63
4. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग - 1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, पृष्ठ - 63

(58) श्री त्यागी बाबा[1]

श्री त्यागी बाबा जी का जन्म ललितपुर जनपद के ग्राम चिगलौआ में हुआ था। आपने 1941 ई0 के व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन में भाग लिया था जिस कारण अंग्रेजी शासन ने आपको 6 माह के कैद की सजा दी थी।[2] आजादी की लड़ाई के लिए ललितपुर क्षेत्र से आप सम्मिलित होकर यह दिखाना चाहते थे कि सम्पूर्ण भारत की प्रजा इस कुशासन के विरुद्ध है।

(59) श्री प्यारेलाल[3]

29 मार्च 1914 ई0 को आपका जन्म ललितपुर जनपद की महरौनी तहसील में हुआ था। आपके पिता श्री हजारीलाल थे। आपने सन् 1941 ई0 के व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया।[4] और कांग्रेस की नीतियों का अनुशरण किया इस सिलसिले में आपको 1 वर्ष 6 माह कैद की सजा और 50 रूपये का अर्थदण्ड दिया गया।[5]

---

1. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग - 1 (झांसी डिवीजन), एस.के.भट्टाचार्य, पृष्ठ - 63
2. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग - 1 (झांसी डिवीजन), एस.के.भट्टाचार्य, पृष्ठ - 63
3. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग - 1 (झांसी डिवीजन), एस.के.भट्टाचार्य, पृष्ठ - 68
4. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग - 1 (झांसी डिवीजन), एस.के.भट्टाचार्य, पृष्ठ - 68
5. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग - 1 (झांसी डिवीजन), एस.के.भट्टाचार्य, पृष्ठ - 68

(60) श्री बच्चू[1]

आपका जन्म ललितपुर में श्री रामलाल जी के घर हुआ था।[2] 1941 ई0 के व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन में भाग लेने के कारण भारत प्रतिरक्षा कानून की 38वीं धारा के अन्तर्गत 25 जुलाई 1941 ई0 को आपको गिरफ्तार कर 6 माह कैद की सजा दी गयी।

इस प्रकार आजादी के लिए आपका योगदान भी स्मरणीय है।

(61) श्री बहादुर सिंह[4]

आपका जन्म ललितपुर जनपद के ग्राम सैदपुर में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री किशोरसिंह था। आपने आजादी के लिए अपना योगदान देते हुये सन् 1941ई0 में व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन में भारत प्रतिरक्षा कानून की धारा 129 के अन्तर्गत 44 दिन कैद की सजा काटी।

---

1. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग – 1 (झांसी डिवीजन), एस.के.भट्टाचार्य, पृष्ठ – 70
2. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग – 1 (झांसी डिवीजन), एस.के.भट्टाचार्य, पृष्ठ – 70
3. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग – 1 (झांसी डिवीजन), एस.के.भट्टाचार्य, पृष्ठ – 70
4. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग – 1 (झांसी डिवीजन), एस.के.भट्टाचार्य, पृष्ठ – 70

(62) श्री बाबूलाल[1]

आपका जन्म भी प्यारेलाल जी के घर ग्राम- जाखलौन जनपद - ललितपुर में हुआ। आजादी के लिए आपने 1941 ई0 के व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन में भाग लिया जिस कारण आपको भारत प्रतिरक्षा कानून की धारा 38वीं के अन्तर्गत 17 मार्च 1941 ई0 को गिरफ्तार कर 1 वर्ष कठिन कैद तथा 100 रूपये जुर्माने की सजा दी गयी।[2]

(63) श्री बैजनाथ[3]

श्री बैजनाथ जी का जन्म ललितपुर में हुआ था। आजादी की लड़ाई में आपने अपना योगदान सन् 1941 ई0 के व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लेकर दिया। जिस कारण आप भारत प्रतिरक्षा कानून की 38 वीं धारा के अन्तर्गत 28 फरवरी 1941ई0 को 6 माह की कैद तथा 100 रूपये जुर्माने की सजा दी गयी।

---

1. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग - 1 (झांसी डिवीजन), एस.के.भट्टाचार्य, पृष्ठ - 71
2. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग - 1 (झांसी डिवीजन), एस.के.भट्टाचार्य, पृष्ठ - 71
3. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग - 1 (झांसी डिवीजन), एस.के.भट्टाचार्य, पृष्ठ - 72

(64) श्री रामपालसिंह[1]

आपका जन्म ललितपुर जनपद की वर्तमान तहसील तालबेहट में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री प्रेमनाथ था। सन् 1941 ई0 के व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन के सिलसिले में अंग्रेज सरकार ने आपको 6 माह की कैद और 50 रूपये जुर्माना की सजा दी।[2] आपका योगदान स्मरणीय है।

(65) श्री सूरतसिंह[3]

आपका जन्म 2 अप्रैल 1920 ई0 को ग्राम सतवास (महरौन) जनपद - ललितपुर में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री जुझार सिंह था। आपने आजादी की लड़ाई में सन् 1941 ई0 में सक्रिय रूप से भाग लिया जिस कारण आपको 6 माह कैद एवं 50 रूपये जुर्माने की सजा दी गयी।

---

1. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग - 1 (झांसी डिवीजन), एस.के.भट्टाचार्य, पृष्ठ - 82
2. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग - 1 (झांसी डिवीजन), एस.के.भट्टाचार्य, पृष्ठ - 82
3. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग - 1 (झांसी डिवीजन), एस.के.भट्टाचार्य, पृष्ठ - 90

ललितपुर क्षेत्र से व्यक्तिगत सत्याग्रह में बन्दी बनाये गये सत्याग्रहियों की सूची[1]

कम संख्या	नाम	स्थान
1.	स्व. श्री बाबूलाल निगम	ललितपुर
2.	श्री बृजनन्दन शर्मा	ललितपुर
3.	स्व. श्री हरिराम चौबे	ललितपुर
4.	स्व. श्री रमानाथ खैरा	ललितपुर
5.	स्व. श्री अहमद खॉं पहलवान	ललितपुर
6.	स्व. श्रीमती केशर बाई जैन	ललितपुर
7.	स्व. श्री मणिराम कंचन	तालबेहट, ललितपुर
8.	स्व. श्री बृजनन्दन पस्तोर	तालबेहट, ललितपुर
9.	स्व. श्री जमुनाप्रसाद चौबे	तालबेहट, ललितपुर
10.	स्व. श्री मथुराप्रसाद लिटौरिया	तालबेहट, ललितपुर
11.	स्व. श्री तेजसिंह	तालबेहट, ललितपुर
12.	स्व. श्री भावसिंह	सुनारी (तालबेहट) ललितपुर
13.	स्व. श्री रामजीलाल भार्गव	तालबेहट, ललितपुर
14.	स्व. श्री रामरतन गोस्वामी	तालबेहट, ललितपुर
15.	स्व. श्री दुलीचन्द जैन	तालबेहट, ललितपुर
16.	श्री गोपाल दास जैन	साढूमल, ललितपुर
17.	स्व. श्री कुंजीलाल स्वर्णकार	साढूमल, ललितपुर
18.	श्री गुलाबचन्द टेलर मास्टर	साढूमल, ललितपुर
19.	श्री बल्देल प्रसाद चौबे	साढूमल, ललितपुर
20.	श्री दयाराम पाण्डेय	साढूमल, ललितपुर
21.	स्व. श्री कुन्दल लाल मलैया	साढूमल, ललितपुर
22.	स्व. श्री जगन्नाथ लोदी	सतबसा (साढूमल) ललितपुर
23.	स्व. श्री कपूरचन्द जैन	सैदपुर, ललितपुर
24.	स्व. श्री बहोरे गड़रिया	सैदपुर, ललितपुर
25.	स्व. श्री शिवराज सिंह	जलंधर (सैदपुर) ललितपुर
26.	स्व. श्री चतरे हरिजन	सैदपुर, ललितपुर
27.	स्व. श्री प्यारेलाल फूलमाली	सैदपुर, ललितपुर
28.	श्री चिन्तामणि बढ़ई	सैदपुर, ललितपुर
29.	स्व. श्री शंकर सिंह लोधी	सैदपुर, ललितपुर
30.	स्व. श्री लाल सिंह लोधी	सैदपुर, ललितपुर

1. रजन नीरांजना - डॉ. परशुराम शुक्ल 'विरही'

31.	स्व. श्री जगीसिंह	सैदपुर (महरौनी) ललितपुर
32.	स्व. श्री भैयालाल परवार	सैदपुर (महरौनी) ललितपुर
33.	श्री गोविन्द दास जैन	पाली, ललितपुर
34.	स्व. श्री खेमचन्द चौरसिया	पाली, ललितपुर
35.	स्व. श्री मन्टूलाल चौरसिया	पाली, ललितपुर
36.	स्व. श्री हरदास बाबू	पाली, ललितपुर
37.	स्व. श्री गोरेलाल चौरसिया	पाली, ललितपुर
38.	स्व. श्री कुन्दनलाल वर्मा	मड़ावरा, ललितपुर
39.	स्व. प्रो. खुसाल चन्द	गोरा (मड़ावरा) ललितपुर
40.	स्व. श्री जगन्नाथ यादव	सिंदवाहा, ललितपुर
41.	स्व. श्री राजधर स्वर्णकार	सिंदवाहा, ललितपुर
42.	स्व. श्री हरप्रसाद लोधी	बरौदा विजलौन (जाखलौन)
43.	श्री हरप्रसाद शर्मा	पिपरई(धौर्रा-जाखलौन)ललितपुर
44.	स्व. श्री रामदास दुबे	बाँसी, ललितपुर
45.	स्व. श्री ठाकुर संतोष सिंह	गोना-नाराहट, ललितपुर
46.	स्व. श्री खलक सिंह	सतवासा, ललितपुर
47.	स्व. श्री दमरू सिंह	नैनवारा, ललितपुर
48.	स्व. श्री फूलचन्द जैन	सिलावन, ललितपुर
49.	स्व. श्री रामदयाल गेंड़ा	बरौदा डाँग (बार) ललितपुर
50.	स्व. श्री दुरजन	भावनी (बार), ललितपुर
51.	स्व. श्री कामताप्रसाद	गेंदोरा (बार), ललितपुर
52.	स्व. श्री मथुरा प्रसाद	गेंदोरा (बार), ललितपुर
53.	स्व. श्री गोकुल चन्द्र जैन	लड़वारी (बार), ललितपुर
54.	स्व. श्री मौजीलाल	बार, ललितपुर
55.	स्व. श्री पं० नारायणदास तिवारी	बार, ललितपुर
56.	स्व. श्री प्यारेलाल यादव	बार, ललितपुर
57.	स्व. श्री परमानन्द	बार, ललितपुर
58.	स्व. श्री मदनलाल जी हरिजन	ककरूआ (ललितपुर)

ललितपुर क्षेत्र से व्यक्तिगत सत्याग्रह में बन्दी बनाये गये सत्याग्रहियों की सूची[1]

क्रम	नाम	पिता का नाम	स्थान
1.	श्री अयोध्या प्रसाद	थोने सिवारे	बानपुर, ललितपुर
2.	श्री अहमद खान पहलवान	श्री अकबर	ललितपुर
3.	श्री कन्हई	श्री शंकर	सतवास, महरौनी
4.	श्री कुंजीलाल	श्री भगवानदास	मड़ावरा, ललितपुर
5.	श्री कुन्दनलाल	श्री सुखलाल	मड़ावरा, ललितपुर
6.	श्रीमती केशरबाई	पत्नी श्री मोतीलाल	ललितपुर
7.	श्री खलक सिंह	श्री पर्वतसिंह	महरौनी, ललितपुर
8.	श्री खेमचन्द चौरसिया	श्री भगुने	पाली, ललितपुर
9.	श्री गोकुल	श्री दामोदर	लड़वारी, ललितपुर
10.	श्री गोपीचन्द जैन	श्री सरहूमल	महरौनी, ललितपुर
11.	श्री गोविन्ददास जैन	श्री फूलचन्द	पाली, ललितपुर
12.	श्री गोपालदास	श्री समाई	मड़ावरा, ललितपुर
13.	श्री चिन्तामन	श्री उमराव	महरौनी, ललितपुर
14.	श्री चुन्नीलाल चौरसिया	श्री पोतेराम	ललितपुर
15.	श्री जमुना प्रसाद	श्री राजन	तालवेहट, ललितपुर
16.	श्री जगन्नाथ	श्री चित्रसिंह	सतवास, ललितपुर
17.	श्री जगन्नाथ प्रसाद	श्री बल्देव	मड़ावरा, ललितपुर
18.	श्री ठाकुरदास शर्मा		ललितपुर
19.	श्री ताराचन्द	श्री रामचन्द	ललितपुर
20.	श्री त्यागीबाबा		चिगलौआ, ललितपुर
21.	श्री दुल्लीचन्द मिथिया	श्री मलथूराम	तालबेहट, ललितपुर
22.	श्री नारायणदास खरे		दैलवारा, ललितपुर
23.	श्री परमानन्द	श्री घूरे लाल	बार, ललितपुर
24.	श्री प्यारेलाल	श्री हजारीलाल	महरौनी, ललितपुर
25.	श्री प्यारेलाल फूलमाली	श्री हजारी लाल	सैदपुर, ललितपुर
26.	श्री प्यारेलाल	श्री अजुद्दी	बार, ललितपुर
27.	श्री बच्चू	श्री रामलाल	ललितपुर
28.	श्री बहादुर सिंह	श्री किशोरसिंह	सैदपुर, ललितपुर
29.	श्री बाबूलाल	श्री प्यारेलाल	जाखलौन, ललितपुर
30.	श्री बैजनाथ		ललितपुर
31.	श्री ब्रजनन्दन	श्री नारायण	ललितपुर

1. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग-1 (झांसी डिवीजन), सं. - एस. पी. भट्टाचार्य

32.	श्री मथुराप्रसार लिटौरिया		तालबेहट
33.	श्री मन्नूलाल चौरसिया		पाली, ललितपुर
34.	श्री मणिराम कंचन		तालबेहट, ललितपुर
35.	श्री मरदान चौधरी	श्री गम्भीर	ककरुआ, ललितपुर
36.	श्री रामजी शर्मा	श्री जगन्नाथ शर्मा	तालबेहट, ललितपुर
37.	श्री रामनाथ	श्री जगन्नाथ प्रसाद	ललितपुर
38.	श्री रामपाल सिंह	श्री प्रेमनाथ	तालबेहट, ललितपुर
39.	श्री रामरतन गोस्वामी		तालबेहट, ललितपुर
40.	श्री लालसिंह	श्री हमीपत सिंह	महरौनी, ललितपुर
41.	श्री शिवराज सिंह	श्री किशोर सिंह	महरौनी, ललितपुर
42.	श्री सूरत सिंह	श्री जुझार सिंह	सतवास (महरौनी)

-------------------------o O o-------------------------

अध्याय - अष्टम्

करो या मरो आन्दोलन में ललितपुर क्षेत्र के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की भूमिका

(1) करो या मरो के नारे से उत्पन्न जन चेतना।

(2) भारत छोडो आन्दोलन में ललितपुर क्षेत्र के लोगों की भागीदारी

(3) श्री नन्दकिशोर किलेदार, श्री बृजनन्दन किलेदार श्री बृजनन्दन शर्मा, श्री मथुराप्रसाद की जेल यात्राएं।

(4) श्री हुकुमचन्द्र बुखारिया "तन्मय", श्री मदनलाल किलेदार श्री उत्तमचन्द कठरया, श्री बृन्दावन इमलिया, श्री हरीराम चौंबे, श्री सुदामा प्रसाद गोस्वामी आदि का प्रेरक नेतृत्व।

(5) अन्य स्वतंत्रता सेनानियों का परिचय एवं योगदान।

(6) ब्रिटिश - दमनात्मक तरीकों से आक्रोश।

अध्याय – अष्टम्

करो या मरो आन्दोलन में ललितपुर क्षेत्र के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की भूमिका

भारत में अंग्रेजों के दमनचक्र के मुकाबले में स्वयं कुछ न कर पाने से जनता का क्रोध दिन व दिन बढ़ता जा रहा था। 1940–41 ई0 से अनाज और अन्य अनेक वस्तुओं के यातायात, बिक्री और मूल्य पर नियंत्रण कर, सरकार उन्हें युद्ध क्षेत्रों में भेजने के लिए खरीदने लगी। इधर जनता को अन्न एवं बस्त्र मिलने में कठिनाई का सामना करना पड़ा। कांग्रेस ने 1931 ई0 के अधिवेशन में यह घोषणा की थी कि अंग्रेजों ने भारत पर मनमाने ढंग से जो कर्जा लाद दिया है, स्वतंत्र होने पर भारत उसकी निष्पक्ष जाँच करवायेगा और उचित अंश को ही स्वीकार करेगा। किन्तु अंग्रेजी सरकार अब जाँच का मौका दिये बिना ही भारत के सिर थोपे उस कर्ज को स्वयं वसूल कर उसी के मूल्य से भारत से अन्य और युद्ध – साम्रगी खरीद रही थी। जब वह कर्ज पूरा वसूला जा चुका तब भारत से कर्ज के रूप में रसद – सामान आदि खींचती रही। इस जबरन चुकाये गये और जबरन लिये गये कर्ज के मूल्य का माल जनता से खरीदने के लिए विशाल संख्या में कागजी नोट छापे गये, जिनकी बाढ़ से वस्तुओं के दाम बढ्ते गये। भारत में चलने वाले कागजी नोटों (पत्र मुद्रा) के पीछे भारत का जो स्वर्ण – भण्डार था वह पहले से ही लन्दन में रक्खा गया था और अब युद्ध सामग्री की खरीद में खर्चा किया गया।[1] 1941 ई0 में विश्व की राजनीति में दो महत्वपूर्ण परिवर्तन आए पश्चिमी यूरोप तथा अधिकांश पूर्वी यूरोप में पोलैण्ड, बेल्जियम, हालैण्ड, नार्वे और फ्रांस पर अधिकार कर चुकने के बाद नाजी जर्मनी ने 22 जून 1941 ई0 को सोवियत संघ पर हमला बोल दिया।

7 दिसम्बर को जापान ने पर्लहार्बर में एक अमरीकी समुद्री बेड़े पर आकस्मिक हमला किया तथा जर्मनी और इट्ली की ओर से युद्ध मेंशामिल हो गया। उसने तेजी से फिलीपीन, हिन्द चीन, इंडोनेशिया, मलाया और वर्मा पर अधिकार कर लिया। मार्च 1942 ई0 में रंगून पर उसका अधिकार हो गया। इससे युद्ध भारत की सीमाओं तक आ पहुँचा।[2] हाल में रिहा हुये कांग्रेसी नेताओं ने जापानी आक्रमण की निंदा की और कहा था कि अगर ब्रिटेन फौरन

---

1. इतिहास प्रवेश – जयचन्द्र विद्यालंकार – पृष्ठ – 773 – 774
2. आधुनिक भारत – बिपिन चन्द्र, पृष्ठ – 228 – 229

प्रभावी शक्ति भारतीयों को सौंप दे और युद्ध के बाद पूर्णस्वाधीनता का वचन दे तो वे भारत की रक्षा तथा राष्ट्रों के हितों के लिए सहयोग करने को तैयार हैं इस समय ब्रिटिश सरकार को युद्ध प्रयासों में भारतीयों के सक्रिय सहयोग की आवश्यकता थी।

इधर द्वितीय विश्व युद्ध में जब मित्र राष्ट्रों की स्थिति कमजोर होने लगी तो उनने ब्रिटिश प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल पर दबाब डालकर युद्ध में भारतीय जनता के सहयोग को प्राप्त करने की सलाह दी। तत्पश्चात् कैबिनेट मंत्री स्टैफोर्ड क्रिप्स के नेतृत्व में एक सद्भावना मिशन 23 मार्च 1942 ई0 को दिल्ली पहुँचा।[1] सर स्टेफर्ड क्रिप्स श्रमिक दल के वामपंथी सदस्य थे। उन्होंने कांग्रेस मुस्लिम लीग, हिन्दू महासभा, हरिजनों, राजाओं व उदारवादी नेताओं से विचार विमर्श किया। तथा 30 मार्च 1942 ई0 को कुछ प्रस्तावों की घोषणा की, उनकी पेशकश यह थी कि "भारत के लोग जापान के विरूद्ध युद्ध में सरकार का पूर्ण सहयोग करे युद्ध के बाद भारत को ब्रिटिश साम्राज्य में उपराज्य (डोमोनियन स्टेट) का पद दिया जायेगा और अभी केन्द्र में सर्वदल सरकार बना दी जायेगी।" परन्तु भारत की जनता अंग्रेजी साम्राज्य को बचाने के लिए जापानियों से लड़ने को तैयार न हुयी।[2]

अतः क्रिप्स मिशन असफल रहा। गांधी जी ने क्रिप्स की पेशकश को दिवालिया बैंक की हुण्डी कह कर नाकार दिया और मिशन में शामिल होने से इन्कार कर दिया। सरकार जापान को पराजय देने के लिए जी जान से तैयारी कर रही थी। दुश्मन (जापानियों) के हाथों कुछ न मिलने के लिए समुद्र – तटों पर सब कुछ नष्ट किया जा रहा था। समुद्र तटों, विशेषकर बंगाल और उड़ीसा के लोगों की घबराहट अधिक बढ़ गई थी। हजारों लोग अपने घरों और खेतों से निकाल दिये गये थे, वे जीविका हीन होकर रह गये थे। उन्हें पुलिस और फौज दोनों ही परेशान करती थी। युद्ध फण्ड में जबरन चन्दे लिये जा रहे थे। चोर बाजारी से गरीब और अधिक गरीब हो रहे थे एवं अमीर और अधिक अमीर। उद्योग, व्यवसाय कारपोरेशन द्वारा अंग्रेज, भारतीय व्यापार से भारी लाभ कमा रहे थे। उपभोक्ता सामग्री को लड़ाई के काम लाने के लिए और जनता से बचाने के लिए सरकार मुद्रा स्फीति की नीति बरत रही थी। वह खाद्य व अन्य सामग्री ऊँचे दामों पर खरीदती और उसके लिये नोट छापती। निम्न और मध्यम वर्ग, जिनकी

1. आधुनिक भारत का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, डा. ए. के. मित्तल, पृष्ठ – 468
2. इतिहास प्रवेश – जयचन्द्र विद्यालंकार, पृष्ठ – 774

आय बढ़ती हुई कीमतों के अनुपात में नहीं बढ़ी थी। अपने आभूषण आदि वेच कर गुजारा कर रहे थे।[1] इन सब घटनाओं को देखकर गांधी जी ने कहा कि – '''भारत एक शव के समान है जो मित्र राष्ट्रों के कन्धों पर भारी बोझ की तरह लदा हुआ है।'' भारत की समस्या का केवल एक ही हल था और वह यह कि अंग्रेजी राज का अन्त हो।[2]

इसीलिये इसी आधार पर गाँधी जी ने 1942 ई0 के भारत छोड़ों आन्दोलन का संगठ्न किया। और अंग्रेजों को भारत छोड़ने के लिये कहा। 7 जुलाई से 14 जुलाई 1942 ई0 तक चलने वाले कॉंग्रेस कार्यसमिति की वर्धा बैठक में महात्मा गाँधी, जवाहरलाल नेहरू, मौलाना अबुल कलाम आजाद, सरोजनी नायडू, बल्लभभाई पटेल, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, सीतारामैय्या, गोविन्द बल्लभ पन्त, प्रफूल्ल चन्द्र घोष, सैय्यद महमूद आसफ अली, जे. पी. कृपलानी आदि ने हिस्सा लिया। गाँधी जी से "भारत छोड़ो आन्दोलन" का महत्व और आशय के सम्बन्ध में परामर्श किया गया और उसी अनुसार एक प्रस्ताव स्वीकार किया गया। यह प्रस्ताव इंग्लैण्ड से भारत के साथ न्याय करने की अपील के रूप में था। जिसमें कहा गया था "यदि यह अपील अस्वीकार हुयी तो कांग्रेस 1920 ई0 से संचित अपनी समस्त अहिंसक शक्ति के प्रयोग के लिए मजबूर हो जायेगी इतना व्यापक संघर्ष अनिवार्यतः गाँधी जी के नेतृत्व में ही होगा।"[3] यह स्पष्ट था कि सार्वजनिक आन्दोलन होने वाला था। गाँधी जी ने कहा भी था कि यह मेरे जीवन का सबसे बड़ा संघर्ष होगा। उन्होने इंग्लैण्ड में कहा था – "भारत को ईश्वर के भरोसे छोड़कर चले जाओ, अगर यह तुम्हारे लिये बहुत बड़ी बात है तो उसे अराजकता में छोड़ दो पर चले जाओ" लेकिन उन्होंने भारत वासियों को सलाह दी कि "वे अंग्रेजों से छुटकारा पाने के लिये जापान से कोई आशा न लगायें।"[4]

7 एवं 8 अगस्त 1942 ई0 को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक बम्बई के ऐतिहासिक ग्वालिया टैंक मैदान में हुई। भारत छोड़ देने की ब्रिटिश सरकार से अपनी माँग और अपील दोहराते हुए कॉंग्रेस महासमिति ने अपने प्रस्तावों में कहा – लेकिन महासमिति की धारणा है कि अब मानवता तथा स्वयं अपने हितों में काम करने से रोकने वाली साम्राज्यवादी और प्रभुत्वमत्त सरकार के विरूद्ध अपनी संकल्प शक्ति का प्रयोग करने से राष्ट्रों को रोकना

1. भारतीय राजनीति – रामगोपाल, पृष्ठ – 430
2. भारतीय राजनीति – रामगोपाल, पृष्ठ – 430
3. भारतीय राजनीति – रामगोपाल, पृष्ठ – 430
4. भारतीय राजनीति – रामगोपाल, पृष्ठ – 430

महासमिति के लिए उचित नहीं होगा। इसलिए महासमिति निश्चय करती है कि स्वाधीनता और स्वतंत्रता प्राप्त करने के अपने कभी न छिन सकने वाले अधिकारों का प्रयोग करने के लिए अधिक व्यापक सार्वजनिक अहिंसात्मक आन्दोलन की अनुमति दी जाए ताकि पिछले वाईस वर्षों के शान्तिमय संघर्ष में संचित अपनी सारी अहिंसात्मक शक्ति का प्रयोग कर सकें।[1] महासमिति ने अधिकार दे दिया कि नेताओं की गिरफ्तारी के बाद हर भारतवासी स्वयं पथ-प्रदर्शन करेगा।

'भारत छोड़ो' प्रस्ताव स्वीकार हो जाने के बाद गाँधी जी ने 140 मिनट तक महासमिति के समक्ष भाषण दिया। वे पहले हिन्दुस्तानी में बोले फिर अंग्रेजी में। यह सम्भवतः उनके जीवन का सबसे लम्बा भाषण था।

उन्होंने कहा था – मैं फोरन आजादी चाहता हूँ, आज रात को ही कल सवेरे से पहले आजादी चाहता हूँ, अगर यह प्राप्त हो सके। अब आजादी साम्प्रदायिक एकता की प्रतीक्षा नहीं कर सकती। यदि वह एकता अभी प्राप्त हुई तो उसके लिये अब कितनी भी कुर्बानी करनी पड़ेगी, पहले उससे कम में काम चल जाता। पर कांग्रेस को आजादी हासिल करनी है या उसे हासिल करने की कोशिश में मिट जाना हैं और यह न भूलो कि जिस आजादी को पाने के लिए कांग्रेस जूझ रही है, वह सिर्फ कांग्रेसजनों के लिए ही न होगी, वरन् भारत की चालीस करोड़ जनता के लिए होगी। काँग्रेसजनों को सदैव जनता का तुच्छ सेवक बने रहना है।[2] फिर उन्होंने अपने जीवन के सबसे महान संघर्ष के लिए जनता को प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा – "इसी क्षण तुम में से हर स्त्री – पुरूष को अपने को स्वाधीन मानना चाहिये और इस तरह काम करना चाहिये मानो तुम आजाद हो और साम्राज्यवाद के चंगुल में जकड़े हुए नही हो। यह कोई कल्पना की बात नहीं है जो मैं तुससे सच मान लेने के लिए कह रहा हूँ, यह स्वतंत्रता का सत्व है। गुलामी की जंजीर उसी वक्त टूट जाती है जिस क्षण गुलाम अपने आपको स्वतंत्र मान ले। उन्होंने आगे कहा यह एक छोटा सा मंत्र है जो मैं तुम्हें देता हूँ, तुम इसे अपने हृदय पर लिख लो, ताकि तुम्हारी हर साँस में यह प्रकाशित हो यह मंत्र है– "हम करेंगे या मरेंगे"[3]

---

1. भारतीय राजनीति – रामगोपाल, पृष्ठ – 431
2. काँग्रेस का इतिहास – भाग – 3, डॉ. बी. पट्टाभि सीता रामैय्या, पृष्ठ – 119 – 120
3. काँग्रेस का इतिहास – भाग – 3, डॉ. बी. पट्टाभि सीता रामैय्या, पृष्ठ – 119 – 120

1. करो या मरो के नारे से उत्पन्न जन चेतना

गांधी जी द्वारा दिये गये मंत्र करो या मरो का आशय यह था कि या तो हम भारत को आजाद करायेंगे अथवा कोशिश में अपनी जान दे देगे। मगर हम अपनी पराधीनता को जारी रहते देखने के लिऐ जीवित नहीं रहेंगे।

गांधी जी भारत छोड़ों – आन्दोलन को अहिंसात्मक जन – आन्दोलन बनाना चाहते थे। एक ऐसा जन आन्दोलन जिसमें आवश्यक होने पर सब साधनों (हिंसात्मक या अहिंसात्मक) का प्रयोग किया जा सके परन्तु फिर भी हिंसा से बचने का प्रयत्न किया जाए। इधर 9 अगस्त 1942 ई0 को कांग्रेस समिति के सदस्य एवं गांधी जी गिरफ्तार कर लिये गये।[1]

पूर्व निश्चित योजना के अनुसार प्रान्तों में काँग्रेस समितियाँ अवैध घोषित कर दी गयी और 9 अगस्त की शाम तक देश भर के प्रमुख काँग्रेसजन भारत रक्षा नियमों के अधीन पकड़ लिये गये। इससे जनता स्तब्ध रह गई देशभर में एक अभूतपूर्व तनाव और सनसनी का वातावरण हो गया और ऐसा लगने लगा कि जनता विद्रोह कर देगी और सरकारी व्यवस्था को नष्ट कर देगी और हुआ भी यही।

समाचार पत्रों के माध्यम से जनता में गांधीजी का दिया नारा करो या मरो (Do Or Die) फैल चुका था जैसे ही गिरफ्तारियों की खबर देश भर में फैली हर जगह विरोध में स्वतः स्फूर्त आन्दोलन उठ खड़ा हुआ जिसमें जनता का अभी तक दबा हुआ गुस्सा झलक रहा था। आन्दोलन शुरू होने के कुछ सप्ताह पूर्व सरदार बल्लभभाई पटेल ने गुजरात के काँग्रेसजनों से कहा था –

"यदि इस संघर्ष में कोई रेल लाइन उखाड़ी जाती है, या किसी अंग्रेज की हत्या होती है, तो संघर्ष रोका नहीं जायेगा.... चौरी चौरा जैसी हिंसक घटनाओं के कारण भी यह आन्दोलन नहीं रूकेगा।"[2]

नेता विहीन और संगठन विहीन जनता ने जिस ढंग से भी ठीक समझा अपनी

---

1. आधुनिक भारत – बिपिनचन्द, पृष्ठ – 229
2. आधुनिक भारत का इतिहास – रामलखन शुक्ला, पृष्ठ – 590

प्रतिक्रिया व्यक्त की। पूरे देश में कारखानों में , स्कूलों और कॉलेजों में हड़तालें और काम बन्दी हुयी। बार - बार की गोलीवारी और दमन से क्रुद्ध होकर जनता ने अनेक जगहों पर हिंसक कार्यवाहियां भी की। उसने पुलिस थानों, डाकखानों रेलवे स्टेशनों आदि ब्रिटिश शासन के तमाम प्रतीकों पर हमले किए। उन्होंने टेलीफोन के तार उखाड़ दिए, तार के खंभे गिरा दिए, रेल लाइनें उखाड़ दी और सरकारी इमारतों में आग लगा दी। इस सम्बन्ध में मद्रास और बंगाल सबसे अधिक प्रभावित हुए। अनेक जगहों पर अनेक शहरों कस्बों और गाँवों में विद्रोहियों का अस्थायी कब्जा भी हो गया था। संयुक्त प्रान्त, बिहार, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, आंध्र, तमिलनाडु और महाराष्ट्र के अनेक भागों में ब्रिटिश शासन लुप्त हो गया। पूर्वी उ0 प्र0 के बलिया जिले, बंगाल के मिदनापुर जिले में तामलुक और बम्बई के सताराजिले जैसे कुछ क्षेत्रों में क्रांतिकारियों ने समानांतर सरकार भी बना ली।[1] आम तौर पर छात्र मजदूर और किसान ही इस विद्रोह के आधार थे और करो या मरो का नारा जन जन की आवाज बन गया। 22 अगस्त 1942 ई0 के बाद सरकारी दमन चक्र आरम्भ हुआ। यह दमन चक्र इतना भयानक था कि मानवता भी काँप गई लगभग एक सौ पचास कांग्रेसियों के घरों को लूटकर जला दिया। लाठी गोली एवं संगीनों से लोगों को घायल किया गया था या मार दिया गया। इस प्रकार 70,000 से अधिक व्यक्तियों को पाँच महीने के अन्दर बंदी बना लिया गया। सरकार के इस पाशविक अत्याचार के होते हुए भी जितने समय तक द्वितीय महायुद्ध चला, यह आन्दोलन चलता रहा।[2]

करो या मरो के नारे से अथवा भारत छोड़ो नारा से जनता के साथ - साथ नौ सेना भी प्रभावित हुई थी।[3] सरकार का दमन चक्र इतना तीव्र था कि उन्होंने गांधीजी की पत्नी कस्तूरवा जी को भी गिरफ्तार कर लिया और सन् 1944 ई. में नजरबन्दी की अवस्था में जेल के अंदर ही उनकी मृत्यु हो गयी।[4]

---

1. आधुनिक भारत - बिपिनचन्द, पृष्ठ - 230
2. भारतीय राजनीति - रामगोपाल, पृष्ठ - 433
3. भारतीय इतिहास कोष, सच्चिदानन्द भट्टाचार्य, पृष्ठ 123
   उ0 प्र0 हिन्दी संस्थान हिन्दी समिति प्रयाग,
   राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन हिन्दी भवन, महात्मा गांधी मार्ग , लखनऊ
4. भारतीय इतिहास कोष, सच्चिदानन्द भट्टाचार्य, पृष्ठ 123

2. भारत छोडो आन्दोलन में ललितपुर क्षेत्र के लोगों की भागीदारी

अभी तक कांग्रेस द्वारा ब्रिटिश साम्राज्य के विरूद्ध जितने भी आन्दोलन चलाये गये उनमें से भारत छोड़ो आन्दोलन सबसे विराट एवं विकराल था। यद्यपि यह आन्दोलन विफल रहा परन्तु इस आन्दोलन से ब्रिटिश सरकार की गद्दी हिलने लगी थी एवं आन्दोलन के पश्चात स्वाधीनता का मार्ग नजर आने लगा था। समस्त बुन्देलखण्ड सहित ललितपुर क्षेत्र में यह आन्दोलन पूरे जोश एवं उत्साह और वेग से चला। प्रदर्शन हुए, सरकारी इमारतों पर राष्ट्रीय ध्वज फहराये गये तथा रेलगाडियां रोकी गयी और टेलीफोन के तार एवं खम्भे उखाड़े गये। इस आन्दोलन में सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड में 1500 सत्याग्रही गिरफ्तार किये गये एवं 4 व्यक्ति शहीद हुए।[1] जिसमें अकेले ललितपुर क्षेत्र से लगभग 70 सत्याग्रही बन्दी बनाये गये थे, एवं शहीद होने वालों में बाबूलाल माली थे। बाबूलाल माली शहीद को न्यायधीशों ने 1942 ई० के आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लेने पर 1 वर्ष का कठोर कारावास की सजा एवं 5 वेंत की पिटाई की सजा दी और पाँच वेंत की पिटाई से ही आपके प्राण निकल गये।

ललितपुर क्षेत्र उस समय झाँसी जिले का हिस्सा था और यहाँ के नेता झाँसी के सभी नेताओं के साथ जुड़े हुये थे जो कार्यक्रम (विरोध) झांसी में होता था वह ललितपुर क्षेत्र में भी होता था। चूँकि झाँसी सहित ललितपुर क्षेत्र में भारत छोड़ो आन्दोलन 10 अगस्त 1942 ई० से प्रारम्भ हो गया था। नगर में 10 अगस्त को प्रातः यह समाचार बिजली की तरह फैल गया कि 9 अगस्त को गांधी जी को गिरफ्तार करके अज्ञात स्थान को ले जाया गया है।

उस समय के जनपद मुख्यालय झाँसी में कृष्णचन्द्र पंगोरिया के नेतृत्व में एक जुलूस तिरंगा झण्डा लिए हुए गंधीगर के टपरे पर मुख्य बाजार से आरम्भ होकर सर्राफा बाजार तक जा पहुँचा जुलूस को पुलिस ने चारों ओर से घेर लिया और जुलूस को तितर - बितर करने के लिए हवा में लाठियाँ घुमायी, परन्तु प्रदर्शनकारी महात्मा गांधी जिन्दाबाद, अंग्रेजो भारत छोड़ो के नारे लगाते जमे रहे। बाद में बानपरु (जनपद ललितपुर) के अजुध्याप्रसाद सहित श्री कन्हैयालाल (मोठ झाँसी) श्री कमलाप्रसाद (मगरपुर झाँसी) आदि को बन्दी बनाया गया।[2]

1. झांसी गजेटियर 1965, ई. वी. जोशी, पृष्ठ - 72
2. स्वतंन्त्रता संग्राम के सैनिक, एस. पी. भट्टाचार्य, पृष्ठ - 53-55

23 अगस्त 1942 ई0 को तालबेहट (ललितपुर क्षेत्र)के सुदामा प्रसाद गोस्वामी ने बिसाती बाजार, पसरट वाली गली के पास स्थित रघुनाथ जी के मन्दिर पर तिरंगा झण्डा लगा दिया और "महात्मा गांधी जिन्दाबाद" अंग्रेजों भारत छोड़ो के नारे लगाते हुए गिरफ्तार कर लिये गये सरकार ने उन पर 200/ रू0 जुर्माना किया और तीन माह की सजा दी। बाद में जुर्माना न भरने पर उनकी कपड़े की दुकान कुर्क करा ली गयी।[1] इस घटना के बाद पुलिस लाबी पूरी तरह सक्रिय हो गयी और चुन-चुन कर कॉंग्रेसियों को गिरफ्तार करना आरम्भ कर दिया।

भारत छोड़ो आन्दोलन में ललितपुर क्षेत्र से तालबेहट, बानपुर, महरौनी, पाली, जखौरा, बॉंसी, सैदपुर, साढूमल, मड़ावरा, धौर्रा, बार, कैलगुवां आदि स्थानों पर प्रदर्शन व गिरफ्तारियाँ हुयी। भारत छोड़ो आन्दोलन में ब्रिटिश सरकार की सम्पूर्ण भारत की जेले भर गयी थी। इसलिए पुलिस कम से कम लोगों को गिरफ्तार करने के लिए जुलूस प्रदर्शन पर पहले तितर-बितर करने के लिए चारों ओर घेर कर लाठी चार्ज करती थी, एवं नेतृत्व कर रहे लोगों को गिरफ्तार कर लेती थी। ऐसे लोगों की संख्या अनगिनत है जो जुलूसों आदि में स्थानीय नेताओं का सहयोग करते थे। परन्तु ब्रिटिश शासन ने उनको गिरफ्तार भी किया और कुछ समय पश्चात् कहीं दूर स्थान पर छोड़ दिया परन्तु आज उनका कोई जेल रिकार्ड न होने के कारण उनको स्वतंत्रता संग्राम सैनिक का दर्जा प्राप्त न हो सका। परन्तु वह लोग जो आज जीवित है बड़े गर्व से कहते हैं कि मैंने भी आजादी की लड़ाई लड़ी है। आज मुझे स्वतंत्रता संग्राम सैनिक का दर्जा प्राप्त नहीं है तो क्या हुआ मैं स्वतंत्र भारत का नागरिक तो हूँ ऐसे ही एक ललितपुर जनपद के ग्राम सिमिरिया के श्री कपूरसिंह पुत्र श्री हिम्मत सिंह जी हैं।[2] जो 1942 ई0 के आन्दोलन में गिरफ्तार कर दिल्ली जेल में 3 दिन तक रहे परन्तु वहाँ अंग्रेजों द्वारा कोई रिकार्ड न रखे जाने के बाद स्वतंत्रता सैनिक का दर्जा प्राप्त न कर सके। ललितपुर क्षेत्र की साधारण जनता ने भी भारत छोड़ो आन्दोलन में स्थानीय नेताओं को भरपूर सहयोग दिया। चूँकि जिला मुख्यालय झाँसी में 15 अगस्त 1942 ई0 को झाँसी नगर के श्री कृष्ण चन्द्र शर्मा जी ने मानिक चौक पोस्ट ऑफिस के पास आपत्तिजनक भाषण दिया और उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। इस घटना के बाद सम्पूर्ण जिले में कांग्रेसियों को गिरफ्तार करना आरम्भ कर दिया तथा धारा 144 को लागू कर दिया।

---

1. दैनिक भास्कर 27 दि0 1990ई0 का अंक के पृष्ठ - 4 से
2. व्यक्तिगत साक्षात्कार, श्री कपूरसिंह, ग्राम - सिमिरिया (महरौनी) ललितपुर

जैसे ही स्थानीय नेता गिरफ्तार हुये तो जनता ने बढ़ चढ़ कर 1942 ई0 के आन्दोलन में हिस्सा लेना शुरु कर दिया।

श्री हुकुमचन्द बड़घड़िया (जैन) ने धारा 144 तोड़कर "अंग्रेजो भारत छोड़ो" के नारे लगाये तो आपको गिरफ्तार कर 1 वर्ष की सजा व 100 रुपये अर्थ दण्ड लगाया गया।[1]

श्री घन्नालाल गुढ़ा को ओजस्वी भाषण एवं हड़ताल करवाने के कारण D I R के अर्न्तगत 1 वर्ष का कारावास तथा 100 रूपये जुर्माना की सजा दी गयी।[2]

धारा 144 का उल्लघंन करने के जुर्म में श्री शिखरचन्द सिंघई, एवं श्री बाबूलाल घी वालों को भी गिरफ्तार किया गया तथा 1 वर्ष की सजा और 100 रूपये अर्थ दण्ड लगाया गया।[3]

---

1. राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की 125 वीं जयन्ती के अवसर पर जनपद के स्वतंत्रता सेनानियों का सम्मान 15 अगस्त 1995, प्रकाशक – नेहरू युवा केन्द्र ललितपुर, पृष्ठ–4
2. रजत नीराजना, पृष्ठ – 35
3. राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की 125 वीं जयन्ती के अवसर पर जनपद के स्वतंत्रता सेनानियों का सम्मान 15 अगस्त 1995, प्रकाशक – नेहरू युवा केन्द्र ललितपुर, पृष्ठ–15

3. श्री नन्दकिशोर किलेदार, श्री बृजनन्दन किलेदार, श्री बृजनन्दन शर्मा एवं श्री मथुराप्रसाद की जेल यात्राएं

ब्रिटिश सरकार कांग्रेस द्वारा चलाए जाने वाले जन आन्दोलन को कुचलने की कई सप्ताह पहले से ही तैयारी कर रही थी। अतः पहले बार करने का लाभ उसे ही मिला। आन्दोलन शुरू होने से लगभग एक मास पूर्व राज्य सचिव एमरी ने कहा था –

"जिसका युद्ध न्यायसंगत होता है उसका शस्त्र बल भले ही दुगुना होता हो किन्तु जो पहले वार करता है उसका शस्त्र बल तिगुना होता है।"[1]

सरकार अपने दो दशकों के अनुभव के आधार पर कांग्रेस के सामान्य आन्दोलनों से निपटने में पूर्णतः सक्षम थी। वस्तुतः गांधी और जिला स्तर के नेताओं सहित सभी कांग्रेसी नेताओं की अचानक गिरफ्तारी के फलस्वरूप कांग्रेस संगठन नेतृत्वहीन हो गया।[2] जनपद ललितपुर में भारत छोड़ो आन्दोलन 10 अगस्त 1942 ई0 से ही आरम्भ हो गया था। समस्त जिले में 10 अगस्त को प्रातः यह समाचार समाचार पत्रों के माध्यम से फैला की गांधीजी को गिरफ्तार कर लिया गया। पं. नन्दकिशोर जी के घर उस समय समाचार पत्र आया करते थे।[3] उन्होंने अपने सहयोगियों को आन्दोलन के लिए संगठित भी कर लिया। परन्तु पं. नन्दकिशोर किलेदार एवं उनके पुत्र पं. बृजनन्दन किलेदार उस समय के प्रमुख कांग्रेसी नेता थे आप कांग्रेस के अधिवेशनों में कईबार भाग ले चुके थे एवं 1920 ई0 के असहयोग आन्दोलन तथा 1930 ई0 के सविनय अवज्ञा आन्दोलन में जेल जा चुके थे। इसलिए ब्रिटिश सरकार की ऑंख पर पहले से ही चढ़े थे। सरकार ने बिना कोई देरी किये दोनों पिता – पुत्र को 1 वर्ष के लिए नजरबन्द कर लिया।[4] जैस ही यह ख़बर स्थानीय जनता को मिली उसने गांधीजी की बात

---

1. आधुनिक भारत का इतिहास – डॉ. रामलखन शुक्ला, पृष्ठ – 586
2. आधुनिक भारत का इतिहास – डॉ. रामलखन शुक्ला, पृष्ठ – 586
3. (1) 28 जुलाई 1997 का अमर उजाला अंक, पृष्ठ – 12
   (2) व्यक्तिगत साक्षात्कार, पं. बृजनन्दन किलेदार
4. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ – 65 एवं 72
   (2) 8 अक्टूबर 1997 दैनिक भास्कर झांसी अंक, पृष्ठ – 3
   (3) व्यक्तिगत साक्षात्कार, पं. बृजनन्दन किलेदार
   (4) 14 अगस्त 1997 दैनिक जागरण, पृष्ठ – 4

को स्मरण रखते हुये जोर शोर एवं स्फूर्ति के साथ जुलूस व हड़तालें की तथा धारा 144 को भंग किया एवं आन्दोलन को जारी रखा।

पं. श्री बृजनन्दन शर्मा जी भी 1930 ई. से आजादी के लिए कई बार जेल जा चुके थे। इसलिए आप भी ब्रिटिश सरकार की लिस्ट में थे। आपके घर पर छापा मारा गया परन्तु आप हाथ न लगे, क्योंकि आप अंग्रेजों की करतूत को पहले ही भाँप गये थे इसलिए घर पहले ही छोड़कर भूमिगत हो गये और आन्दोलन को गति प्रदान की आपने 1942 ई0 के आन्दोलन में नेतृत्व करते हुये एक जुलूस निकाला।[1] और पुरानी कोतवाली (ललितपुर नगर) पर आकर महात्मा गांधी जिन्दाबाद, अंग्रेजो भारत छोड़ो के नारे लगाये। आपको गिरफ्तार कर एक वर्ष के सख्त कैद का फैसला सुनाया गया जिस पर आपको अपार प्रसन्नता हुई।[2] आपने राष्ट्रीय भावनाओं के प्रसार के लिए पहले से ही जनपद में खद्दर भण्डार एवं पुस्तकालय की स्थापना की थी।[3]

श्री मथुराप्रसाद जी वैद्य जी राष्ट्रीय स्तर के नेताओं के सत्संग में रहे थे एवं 1930 ई0 में आप जेल जा चुके थे। आप 1942 ई. के आन्दोलन में सक्रिय हुये। आप कांग्रेस कमेटी ललितपुर के अध्यक्ष थे इसलिए आपको ब्रिटिश सरकार ने झाँसी जेल में 10 माह के लिए नजरबन्द कर लिया था।[4] स्वतंत्र भारत में आपको केन्द्रीय पेंशन दी गयी।[5]

---

1. (1) ललितपुर स्वर्ण जयंन्ती स्मारिका – 1998, पृष्ठ – 11
   (2) व्यक्तिगत साक्षात्कार, पं. बृजनन्दन शर्मा
2. (1) राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की 125 वीं जयन्ती के अवसर पर जनपद के स्वतंत्रता सेनानियों का सम्मान15अगस्त 1995, प्रकाशक–नेहरू युवा केन्द्र ललितपुर, पृष्ठ–7
   (2) व्यक्तिगत साक्षात्कार, पं. बृजनन्दन शर्मा
3. (1) राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की 125, वीं जयन्ती के अवसर पर जनपद के स्वतंत्रता सेनानियों का सम्मान15अगस्त 1995, प्रकाशक–नेहरू युवा केन्द्र ललितपुर, पृष्ठ–7
   (2) व्यक्तिगत साक्षात्कार, पं. बृजनन्दन शर्मा
4. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 15
5. झांसी दर्शन – मोतीलाल अशान्त, पृष्ठ – 53

4. श्री हुकुमचन्द बुखारिया ''तन्मय'' श्री मदनलाल किलेदार श्री बृन्दावन इमलिया, श्री हरीराम चौबे श्री सुदामाप्रसाद गोस्वामी, श्री उत्तमचंद कठरया आदि का प्रेरक नेतृत्व

श्री हुकुमचन्द बुखारिया ''तन्मय''[1] : श्री हुकुमचन्द बुखारिया ''तन्मय'' जी का जन्म 24 जनवरी 1921 ई0 को श्री फूलचन्द्र जैन जी के घर जनपद ललितपुर में हुआ था।[2] आप 20 वर्ष की अवस्था से ही राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम में सम्मिलित हुये थे और द्वितीय महायुद्ध के आसपास ही राष्ट्रव्यापी आन्दोलन में सम्पूर्ण आन्तरिकता से सक्रिय हुये। सन् 1940-41 ई0 में व्यक्तिगत सत्याग्रह के अन्तर्गत 6 माह की सजा प्राप्त की। इन्दौर से व्यक्तिगत सत्याग्रह करते हुए ललितपुर आये श्री मिश्रीलाल गंगवाल की अगवानी किशोर 'तन्मय' बुखारिया जी ने ही की थी और उन्हे अपने घर ठहराया था। इस समय तक आप पूर्ण रूप से राष्ट्रीयता में रंग चुके थे। आपने अपनी कविताओं के द्वारा स्वाधीनता आन्दोलन को गरमा दिया था। आप 1942 ई0 के भारत छोड़ो आन्दोलन भारत प्रतिरक्षा कानून की 38 वीं धारा के अन्तर्गत 30 अगस्त 1942 को गिरफ्तार कर लिये गये थे और 1 वर्ष का कारावास तथा 100 रूपये अर्थ दण्ड की सजा प्राप्त की थी।[3] जेल में आपका सम्पर्क स्व. चन्द्रभानु गुप्त जी से हुआ था। जो स्वाधीन भारत में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बने थे।

जेल के अन्दर आपकी संवेदना विद्रोह कर बैठी, जिजीविषा के अभिनव आयाम प्रस्फुटित हुये, फलतः आहुति, आग, मेरे बापू और पाकिस्तान जैसी कृतियों में आपके ही नहीं राष्ट्र के हृदय की वेदना सम्प्रेषित हुई। आपने आहुति काव्य में सिंगापुर में सुभाष जयन्ती की झाँकी प्रस्तुत की एवं आग काव्य में लाल किला, जलियान बाग, कवि से आदि अनेकों क्रांतिकारी कविताओं का संकलन कर नव युवकों के सामने प्रस्तुत की।

---

1. ललितपुर स्वर्ण जयंन्ती स्मारिका - 1998, पृष्ठ - 93
2. (1) चुनौती काव्य रचना - हुकुमचन्द बुखारिया, पृष्ठ - 1
   (2) तीर्थंकर विचार मासिक - संपादक - डॉ. नेमीचन्द, पृष्ठ - 17
   शीर्षक कवि श्री तन्मय बुखारिया, डॉ जयल जयकुमार 'जलज'
   (6 जनवरी 1998 में हीरा भैया प्रकाशन, इन्दौर से प्रकासित)
3. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ - 92

श्री बुखारिया जी ने अपनी अद्भुत काव्य शक्ति से पाकिस्तान काव्य में पाकिस्तान योजना का सतर्क विरोध किया है एवं हिन्दू मुस्लिम एकता बनाये रखने पर बल दिया तथा मिस्टर जिन्ना को करारी फटकार लगायी हिन्दू मुस्लिम एकता पर कुछ पंक्तियां दृष्टव्य हैं

हैं हिन्दू, मुस्लिम – दोनो ही
अव तो गोरों के चिर – गुलाब
दोनों पर ताजी रात हिन्द
दोनों के मुँह पर है लगाम
साम्राज्यवाद की चक्की में
दोनों ही पिसते साथ – साथ
गोरों के चरणों पर झुकता दोनों का माथा साथ – साथ
दोनों भारत के बेटे हैं,
भारत माता के युगल नयन
स्वातंत्रय समर में अमर बनें,
दोनों को उसका आवाह्न !

हो पुनः प्रवाहित दोनों की
रग – रग में रक्त पुरानों का
अकबर का, शाह बहादुर का
मेवाड़ वंश के रानों का!

दोनों ही शिर पर कफन बाँध,
अपने को जहर पिला डालें
जय अमर शहीदों की – कहकर
अंग्रेजी राज्य हिला डालें।[1]

मिस्टर जिन्ना की पुत्री एक पारसी से व्याही थी और कभी पाकिस्तान का स्वप्न

---

1. पाकिस्तान काव्य – 'तन्मय' बुखारिया पृष्ठ – 9–10
प्रभात प्रकाशन दरीबा, साहित्य मण्डल दिल्ली द्वारा प्रकाशित (1945–46ई0) में

यदि पूरा हो गया तो उस समय क्या मिस्टर जिन्ना के लिए यह लज्जा की बात न होगी कि वे तो पाकिस्तान में रहा करेगें और उनकी आत्मजा, उनके ही शब्दों में काफिर हिन्दुओं के हिन्दुस्तान में –

जब नेतागिरी बचाने का
मिस्टर को कुछ चारा न मिला
इस्लाम – दुहाई देकर तब
इक और नया नारा निकाला

जिन सूबों में हिन्दु – बहुमत
उनमें न रहेगा, मुसलमान
काफिर न सकेंगे जिससे कर
मेरे अजीज को परेशान

x x x

हिन्दु आबादी का हिस्सा
बस हिन्दुस्तान कहाएगा
बाकी जितने में मुसलमान
वह पाकिस्तान कहाएगा।

x x x

पर फिक्र यही जिन्ना कैसे
खुद कर लेगें अपना निबाह
जब उनकी लड़की पढ़ बैठी
है एक पारसी से निकाह।

सूरत न सकेगें कहीं दिखा,
मिस्टर जिन्ना को याद रहे
काफिर की जेर हुकूमत जब
उनकी लड़की दामाद रहे।[1]

---

1. पाकिस्तान काव्य – 'तन्मय' बुखारिया पृष्ठ – 27-28
प्रभात प्रकाशन दरीबा, साहित्य मण्डल दिल्ली द्वारा प्रकाशित (1945-46ई0) में

यहाँ इस उदाहरण के द्वारा कवि ने अत्यन्त गम्भीरता पूर्वक यह समझाने की चेष्टा की है कि हिन्दु और मुसलमान उनके प्रचारानुसार दो भिन्न तो नहीं है बल्कि उनमें अनेकों पारस्परिक रक्त सम्बन्ध भी है ऐसे रक्त सम्बन्ध जिनकी उपेक्षा किसी प्रकार भी व्यवहार्य और सरल न होगी।

आगे कवि तन्मय बुखारिया जी अंग्रेजों का शोषण,आन्दोलन कर उग्र एवं हिन्दू मुस्लिम फूट के वास्तविक कारण बताते हुये उनको एक होने की सलाह देते हैं -

भारत का रक्त पान करके
ज्यों ' ज्यों मोय अँगरेज हुआ
त्यों - त्यों ही उसके जुल्म बड़े,
शोषण भी उसका तेज हुआ।

अंगरेज भूल जब राज धर्म
शोषण की ओर समग्र हुआ
स्वातन्त्रता आन्दोलन भी बस
तब से जन्मा, अति उग्र हुआ।

इतना कि हुकूमत काँप उठी
शासन के खम्भे डोल उठे
भारत माता की जय ध्वनि जब
हिन्दु मुस्लिम मिल बोल उठे।

जब नहीं दमन से दवा सके,
अंगरेज बढ़ा ज्यादह बबाल
तो भेद नीति से काम लिया
कर दिया खड़ा कौमी सवाल।

कानूनन कुछ अधिकार दिए
पद दिये और कुछ बदला रूख

रोटी का टुकड़ा फेंक दिया
दो भूखे कुत्तों के सम्मुख।[1]

इस प्रकार तन्मय बुखारिया जी ने अपनी कविता के माध्यम से अकेले ललितपुर क्षेत्र की जनता को ही नहीं सम्पूर्ण राष्ट्र की जनता को जाग्रत किया। आप उस समय कवि सम्मेलनों में प्रतिष्ठित कवि के रूप में जाते थे और अपनी कविता के माध्यम से राष्ट्र भावना को जनता में प्रेषित करते थे। जनता भी अपको बहुत आदर से लेती थी।

अभी हाल ही में 1997 ई0 में प्रकाशित चुनौति काव्य की भूमिका में प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने लिखा कि "मैं श्री तन्मय बुखारिया को लगभग आधी सदी से जानता हूँ। जब मैं कर में कलम पकड़ने की कला, सीखने में लगा था और तुक से तुक भिड़ाकर काव्य कानन में कुलांचे भरने के लिए कमर कस रहा था, तब तन्मय जी कवि - सम्मेलनों में अपनी धाक जमाने और कुछ जमे - जमाये कवियों को पछाडने का कठोर कार्य सफलतापूर्वक निबाहने में लगे थे।"[2] तन्मय जी ने अमर शहीद वीर लाल पद्मघर जो रीवा निवासी एवं प्रयाग विश्वविद्यालय के छात्र थे जो 1942ई0 के आन्दोलन में प्रयाग में ही शहीद हो गये थे, उन पर बुखारिया जी ने वीर लाल पद्मघर काव्य लिखा। अतः 'तन्मय' बुखारिया जी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से आजादी की लड़ाई में जनता को जागृत बनाया।

---

1. पाकिस्तान काव्य - 'तन्मय' बुखारिया पृष्ठ - 69-71
   प्रभात प्रकाशन दरीबा, साहित्य मण्डल दिल्ली द्वारा प्रकाशित (1945-46ई0) में
2. चुनौती - तन्मय बुखारिया, पृष्ठ - 1, 1997 में प्रकाशित
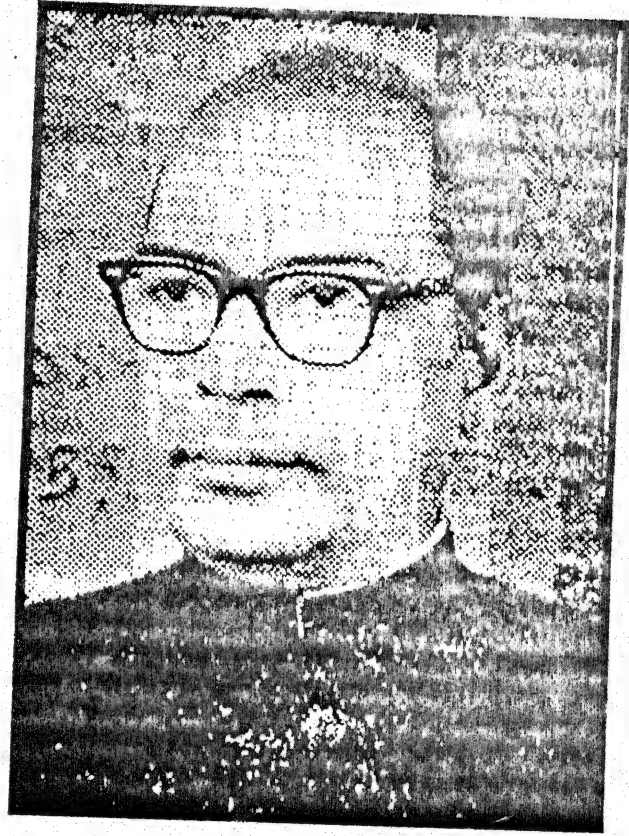
स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

स्व०. श्री हुकुमचन्द बुखारिया 'तन्मय'

पं. श्री मदनलाल किलेदार[1]

श्री मदनलाल किलेदार जी का जन्म ललितपुर नगर में श्री छोटेलाल किलेदार जी के घर हुआ था।[2] आपको देश प्रेम की प्रेरणा अपने ही परिवार के प्रसिद्ध कॉंग्रेसी नेता एवं ललितपुर सब डिवीजन में स्वतंत्रता का अलख जगाने वाले पं. श्री नन्दकिशोर किलेदार एवं पं. श्री बृजनन्दन किलेदार जी से प्राप्त हुई। बाल्यकाल से ही आपने सत्याग्रहियों को सहयोग प्रदान करना आरम्भ कर दिया। किशोरावस्था में पहुँते ही आपने अंग्रेज सरकार का तख्ता उलट्ने और उसकी शासन प्रणाली में व्यवधान डालने में आपने सक्रिय कदम उठाया और तोड फोड की कार्यवाही अपने आरम्भ की साथ ही आप अपना निशाना अंग्रेज अफसरों को बनाया करते थे।[3] तथा अंग्रेज अफसरों की जमकर पिटाई कर उन्हें भयभीत करना चाहते थे। जिस समय 1942ई0 का आन्दोलन शुरू हुआ तब सम्पूर्ण देश में मुख्य नेता गाँधीजी सहित गिरफ्तार कर लिये गये तब राष्ट्रीय स्तर पर गिरफ्तारी से बचे कांग्रेसी नेता जयप्रकाश नारायण, राममनोहर लोहिया तथा अरूणा आसफ अली ने आन्दोलन को संचालित करने का सराहनीय प्रयत्न किया तथा एक पुस्तिका प्रकाशित की जिसमें अहिंसा पर जोर देते हुए भारत छोड़ो आन्दोलन से सम्बन्धित 12 सूत्री कार्यक्रम था।[4] इसी प्रकार ललितपुर सब डिवीजन में पं. श्री नन्दकिशोर किलेदार व पं. श्री बृजनन्दन किलेदार जी को नजरबन्द कर लिया गया। तब श्री मदनलाल किलेदार जी ने भारत छोड़ो आन्दोलन को जारी रखने का निश्चय किया और जनता को एकत्रित कर अंग्रेजों के खिलाफ नारे लगाते हुये एक जुलूस निकाला जुलूस को पुलिस ने लाठी चार्ज से तितर - वितर कर दिया।[5] तब आपने सरकारी कार्यालयों में आग लगाना आरम्भ कर दी। आपको बन्दी बनाकर न्यायालय में उपस्थित किया गया तब न्यायाधीश ने उम्र को देखते हुए आपको छोड़ने का आदेश दिया।[6] तब आपने न्यायालय में ही कह दिया कि अगर मुझे छोड़ा जाता है तब मैं वापिस जाकर पुनः सरकारी कार्यालयों में आग लगाने का कार्य प्रारम्भ कर दूँगा। मजिस्ट्रेट यह बात सुनकर आग बबूला हो गया और उसने 1 वर्ष की सजा तथा 100 रूपये अर्थ दण्ड की आज्ञा दी। स्वतंत्रता के पश्चात आपको केन्द्रीय पेन्शन देकर सम्मानित किया गया।

---

1. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ - 92
   (2) व्यक्तिगत साक्षात्कार - पं. बृजनन्दन किलेदार एवं पं. दीपक किलेदार
2. आधुनिक भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास - डॉ. ए. के. मित्तल, पृष्ठ - 471
3. व्यक्तिगत साक्षात्कार - पं. बृजनन्दन शर्मा
4. आधुनिक भारत का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, डॉ ए. के. मित्तल, पृष्ठ - 471
5. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 21
6. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 21

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

स्व०. श्री मदनलाल किलेदार

श्री बृन्दावन इमलिया[1]

आप 1942 ई0 के भारत छोड़ो आन्दोलन के समय तक एक निष्ठावान सिपाही बन चुके थे क्योंकि आपने 1930 ई0 से आजादी के लिए संघर्ष करना शुरू किया और कई बार दिल्ली उन्नाव तथा ललितपुर जेलों की यात्रा की।[2] भारत छोड़ो आन्दोलन शुरू होने के समय आपको अंग्रेजों के दमनात्मक तरीकों की जानकारी थी इसलिए आप भूमिगत हो गये 1942 ई0 के आन्दोलन में सरकार ने आपको गिरफ्तार नहीं कर पाया वैसे सरकार की नीति थी कि जो एक बार आजादी के लिए जेल हो आया है वह पुनः उसमें बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेगा इसलिए उसे पहले ही जेल में बन्द कर दिया जाए।

इमलिया जी ने ललितपुर सब डिवीजन में आन्दोलन को जारी रखने के लिए जेल से बाहर रहना उचित समझा। आप जनता को बाजार बन्द रखने, सार्वजनिक सभाएं करने तथा लगान न देने के लिए प्रेरित करते रहे।

डॉ हरीराम चौबे[3]

डॉ0 हरीराम चौबे जी ललितपुर के प्रसिद्ध जमींदार परिवार से थे। आप 1930 ई0 में कांग्रेस में सम्मिलित हुये तथा अपना कार्यक्षेत्र मध्यभारत उज्जैन को बनाया था।[4] आपने 1942 ई0 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भी अपना प्रेरक नेतृत्व देश की आजादी के लिए दिया। आपने करो या मरो के नारे को जनता के बीच ले जाकर आजादी के लिए सहयोग देने का आवह्न किया इस तरह आपके नेतृत्व से जनता ने हड़तालो व जुलूस तथा कर न देने के लिए अपना सहयोग दिया।

---

1. ललितपुर स्वर्ण जयंन्ती स्मारिका - 1998, पृष्ठ - 93
2. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक-झाँसी डिवीजन, सं. - एस. पी. भट्टाचार्य, पृष्ठ - 72
3. ललितपुर स्वर्ण जयंन्ती स्मारिका - 1998, पृष्ठ - 93
4. रजत नीराजना, पृष्ठ - 68

श्री सुदामाप्रसाद गोस्वामी[1]

आप 1917 ई0 में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के नायक राजा मर्दनसिंह की नगरी तालबेहट में जन्मे। आपके पिता श्री रामेश्वर प्रसाद गोस्वामी थे। आप अन्तः मन से गांधी विचार धारा के अनुयायी थे एवं शीघ्र आपने 1940 ई0 के आसपास जिला कांग्रेस कमेटी झांसी (जो उस समय जिला था) में अपनी अलग पहचान बना रखी थी। 1942ई0 के भारत छोड़ो आन्दोलन में आपने 23 अगस्त 1942 ई0 को झाँसी में बिसाती बाजार, पसरट वाली गली के पास स्थित रघुनाथ जी के मन्दिर पर तिरंगा झण्डा अपने साथियों के साथ लगा दिया। और 'महात्मा गांधी जिन्दाबाद' अंग्रेजो भारत छोड़ो के नारे लगाते हुये गिरफ्तार कर लिए गये। सरकार ने गोस्वामी जी पर 200 रूपये जुर्माना किया और तीन माह की सजा दी। बाद में जुर्माना न भरने पर उनकी कपड़े की दुकान (तालबेहट में) कुर्क करा ली गयी।[2] जेल से आने के बाद भी आप संघर्ष करते रहे आपने अपने निवास स्थान तालबेहट में जनता को जागरूक बनाया एवं अंग्रेजी शासन की नीतियों से अवगत कराया तथा कांग्रेस की सभी कार्यक्रमों को क्रियान्वित किया। आप अनेक संस्थाओं के संस्थापक रहे। वर्तमान में तालबेहट में श्री मर्दनसिंह इण्टर कालेज आपके द्वारा ही स्थापित किया गया था।[3] आजादी के पश्चात 1977 ई0 में आप ललितपुर विधानसभा क्षेत्र के विधानसभा के सदस्य निर्वाचित हुये थे।[4]

---

1. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ – 90
   (2) ललितपुर स्वर्ण जयंन्ती स्मारिका – 1998, पृष्ठ – 93
2. दैनिक भास्कर 27 दिसम्बर 1990 का अंक, पृष्ठ – 4
3. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 68
4. ललितपुर स्वर्ण जयंन्ती स्मारिका – 1998, पृष्ठ – 94

श्री उत्तमचन्द्र कठरया[1]

आप ने ग्राम उत्तमधाना (ललितपुर) में श्री मुरलीधर जैन जी के घर जन्म लिया।[2] राष्ट्रीय जन आन्दोलन में सम्मिलित होने की प्रेरणा अपने अग्रज श्री नन्दकिशोर कठरया से प्राप्त हुई। श्री रामेश्वर प्रसाद शर्मा जी के नेतृत्व में आपने अपने ग्राम उत्तमधाना (ललितपुर - परिसर) में जन जागृति का श्री गणेश किया, चर्खा, स्वदेशी वस्तुओं के प्रचार और विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार में योगदान दिया।[3] सन् 1942 ई0 के भारत छोड़ो आन्दोलन में आप सम्मिलित हुये और हाथ में तिरंगा झण्डा लेकर अपने साथियों के साथ नेतृत्व करते हुये रक्षा-बंधन के अवसर पर सत्याग्रह करते हुये गिरफ्तार किये गये।[4] 1 वर्ष का कठोर कारावास एवं 100 रूपये के अर्थ दण्ड की सजा आप को दी गयी।[5] इस प्रकार आपने 1942 ई0 के आन्दोलन में अपना सहयोग देकर जनता को प्रेरणा प्रदान की तथा आजादी के सपूतों में भी अपना नाम अमर कर दिया।

---

1. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक (झांसी डिवीजन), पृष्ठ - 53
   (2) ललितपुर स्वर्ण जयंन्ती स्मारिका - 1998, पृष्ठ - 93
2. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 22
3. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 22
4. रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 22
5. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक (झांसी डिवीजन), पृष्ठ - 53
   (2) रजत नीराजना - डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 22

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

स्व०. श्री उत्तमचन्द कठरिया

5. अन्य स्वतंत्रता सेनानियों का परिचय एवं योगदान

1. स्वतंत्रता सेनानी श्री परमेष्ठीदास जैन[1]

आपका जन्म श्री मौजीलाल जैन के घर 1907 ई0 में जनपद ललितपुर में हुआ था। आप 1942ई0 में भारत छोड़ो आन्दोलन में सम्मिलित हुए थे अंग्रेजी शासन ने आपको अपने दमन चक्र में लपेटकर 4 माह की सजा दी। पं0 परमेष्ठीदास जी जैन की प्रारम्भिक शिक्षा ललितपुर में हुयी, इसके पश्चात साढूमल, मोरेना, जबलपुर और इन्दौर के विद्यालयों में अध्ययन करके 'जैन सिद्धान्त शास्त्री' एवं 'न्याय तीर्थ' की उपाधियाँ प्राप्त की।

सन् 1929 में आप सूरत (गुजरात) चले गये वहाँ 'जैन मित्र' पत्र का सम्पादन किया एवं 1944 ई0 में प्रसिद्ध कथाकार और निबंधकार श्री जैनेन्द्र कुमार जी के साथ 'लोक जीवन' मासिक पत्र का सम्पादन किया।[2] गुजरात में हिन्दी के प्रचार के लिए आपने सन् 1932 में, सूरत में, हिन्दी-प्रचारक मण्डल की स्थाना की थी, जिसके अंतर्गत सूरत में 20 हिन्दी स्कूल चलते है। आप राष्ट्र-भाषा-प्रचार समिति, वर्धा की स्थापना के समय से ही उसके सदस्य रहे आपने संस्कृत और गुजराती से लगभग 25 ग्रन्थों का अनुवाद हिन्दी में किया। लगभग 15 पुस्तकों की रचाना भी आपने की। हिन्दी भाषा का प्रचार-कार्य महात्मा गाँधी जी के रचनात्मक कार्यों में से एक महत्वपूर्ण कार्य था। इस कार्य में आप पूरी तन्मयता से लगे रहे। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की मीटिंग 8 अगस्त 1942 को बम्बई में हुई जिसमें प्रसिद्ध 'भारत छोड़ो' प्रस्तार स्वीकार किया गया।[3] सन् 1942 के इस स्वाधीनता आन्दोलन में पं0 परमेष्टीदास जैन जी ने अपने लेखों और भाषणों से अनेक व्यक्तियों को सत्याग्रह आन्दोलन करने की प्रेरणा दी। आप स्वयं इस आन्दोलन में सक्रिय भाग लेते हुए बन्दी बनाये गये और पहले सूरत जेल में राखे गये, बाद में अहमदावाद जेल में स्थानान्तरित कर दिया गया जेल में रहकर भी आपने हिन्दी-प्रचार-कार्य नहीं छोड़ा और स्वर्गीय जी0 बी0 मावलंकर के सहयोग से

---

1. (i) ललितपुर स्वर्ण जयन्ती स्मारिका 1998 पृ0 93
   (ii) रजत नीराजना पृष्ठ 30
2. रजत नीराजना पृष्ठ 30
3. आधुनिक भारत-विपिन चन्द्र प्रकाशन N.C.E.R.T. अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली पृष्ठ 229

सहस्राधिक जेल साथियों को राष्ट्र-भाषा प्रचार समिति, वर्धा की परीक्षाओं में सम्मिलित करवाया। सन् 1948 में आप ललितपुर लौट आये। ललितपुर में आपने जैनेन्द्र प्रेस का संचालन किया यही से सुविख्यात जैन साप्ताहिक पत्र 'बीर' का सम्पादन कार्य भी आपके द्वारा किया गया. इस पत्र का सम्पादन आपके द्वारा 1932 ई0 में शुरू किया गया। गये और पहले सूरत जेल में राखे गये, बाद में अहमदाबाद जैन में स्थानान्तरित कर दिया गया जेल में रहकर भी आपने हिन्दी-प्रचार-कार्य नहीं छोड़ा और स्वर्गीय जी बी0 मावलंकर के सहयोग से सहस्राधिक जेल साथियों को राष्ट्र-भाषा प्रचार समिति, वर्धा की परीक्षाओं में सम्मिलित करवाया। सन् 1948 में आप ललितपुर लौट आये। ललितपुर में आपने जैनेन्द्र प्रेस का संचालन किया यही से सुविख्यात जैन साप्ताहिक पत्र 'बीर' का सम्पादन कार्य भी आपके द्वारा किया गया, इस पत्र का सम्पादन आपके द्वारा 1932 ई0 में शुरू किया गया।

2. स्वतंत्रता सेनानी श्रीमती कमला देवी जैन[1]

आप स्वतंत्रता सेनानी पं0 श्री परमेष्ठीदास जैन की धर्मपत्नी है आपको देश प्रेम की भावना अपने पति से प्राप्त हुयी आपने ललितपुर क्षेत्र की नारियों का गौरव बढ़ाया। आपकी वर्तमान आयु 85 वर्ष हैं। आप 1942 ई0 के भारत छोड़ो आन्दोलन में 5 माह की जेल यात्रा की। आप भारतीय नारी की पुरा परम्परा की स्मृति दिलाती हैं आप अपने कुल का नाम रोशन करते हुए तात्कालिक नारी वर्ग को अभिनव दिशा देते हुए सन् 1942 ई0 के राष्ट्र व्यापी जन आन्दोलन में सक्रिय भाग लेते हुए भारत प्रतिरक्षा कानून की दफा 56 के अंतर्गत आप जेल में 5 माह रही।[2] इस समय आपने दफा 144 को भंग करके जुलूसों का नेतृत्व किया था। सभाबन्दी कानून भंग करके सभा में भाषण देने के कारण आपको सावरमती जेल में रहना पड़ा। देश स्वतंत्र हो जाने पर 1948 ई0 में आप अपने पति के साथ वापिस ललितपुर आ गयी।

---

1. (i) ललितपुर स्वर्ण जयन्ती स्मारिका 1998 पृष्ट-18
   (ii) रजत नीराजना पृष्ठ-32
2. रतन नीराजना पृष्ट-32

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

स्व०. श्री परमेष्ठी दास जैन

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

श्रीमति कमलादेवी जैन

3. स्वतंत्रता सेनानी श्री सुखलाल इमलिया[1]

आपका जन्म ललितपुर जनपद में 1919ई0 में श्री परमानंद जी के घर हुआ था। अपने अग्रज श्री बृन्दावन इमलिया, जो स्वतंत्रता संग्राम के प्रणेता थे, प्रभावित होकर परिवार के भरण-पोषण की परवाह न करते हुए भारत माता को स्वतंत्र कराने हेतु स्वयं भी सेनानियों की कतार में खड़े हो गये। जिससे परिवार गहन अर्थाभाव से पीड़ित रहा लेकिन देश-प्रेम ने परिवार को प्रमुखता नहीं दी। आजादी की लड़ाई लड़ने वाले योद्धाओं में बहुत ही कम ऐसे परिवार है जिन्होंने परिवार को गौण और देश को प्रमुखता प्रदान की। आजादी के प्रेणाताओं ने जो भी कार्य सौपा उसे आपने निर्भीकता पूर्वक पूरा किया। सन् 1942 के स्वाधीनता आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लेने के कारण आपको 1 वर्ष की सजा एवं 100.00 रूपये अर्थदण्ड दिया गया।[2] आज नगर दोनों भाईयों के देश प्रेम पर गौरव का अनुभव करता हैं

1. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक - एस0पी0 भट्टाचार्य पृष्ठ-89
2 (i) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक - एस0पी0 भट्टाचार्य पृष्ठ-89
  (ii) रजत नीराजना पृष्ट-34

4. स्वतंत्रता सेनानी श्री जानकी प्रसाद पाट्कार[1]

आपका जन्म ललितपुर जनपद में 1920ई0[2] में श्री पल्टू उर्फ नारायणदास के यहाँ हुआ था। श्री जानकी प्रसाद पाट्कार जी किशोरावस्था से ही ललितपुर परिसर के राष्ट्रीय आन्दोलन की लहर से प्रभावित होते हुए सन् 1930 के पश्चात जलूस आदि में भाग लेते रहे और अंग्रेजों के खिलाफ जनता को भड़काते रहे। सन् 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लेकर देश को आजाद कराने की मन में प्रेरणा लेकर 1 वर्ष का कठोर कारावास प्राप्त किया एवं 100/- रूपया अर्थ दण्ड भी लगाया गया।[3] परन्तु जुर्माना न देने के कारण दो मास और जेल में रहना पड़ा।

1. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक (झाँसी डिवीजन) एस0पी0 भट्टाचार्य पृष्ठ-62
2. रजत नीराजना - डा0 परशुरान शुक्ल 'विरही' पृष्ठ-33
3. (i) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक (झाँसी डिवीजन) एस0पी0 भट्टाचार्य पृष्ठ-62
   (ii) ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका पृष्ट-93
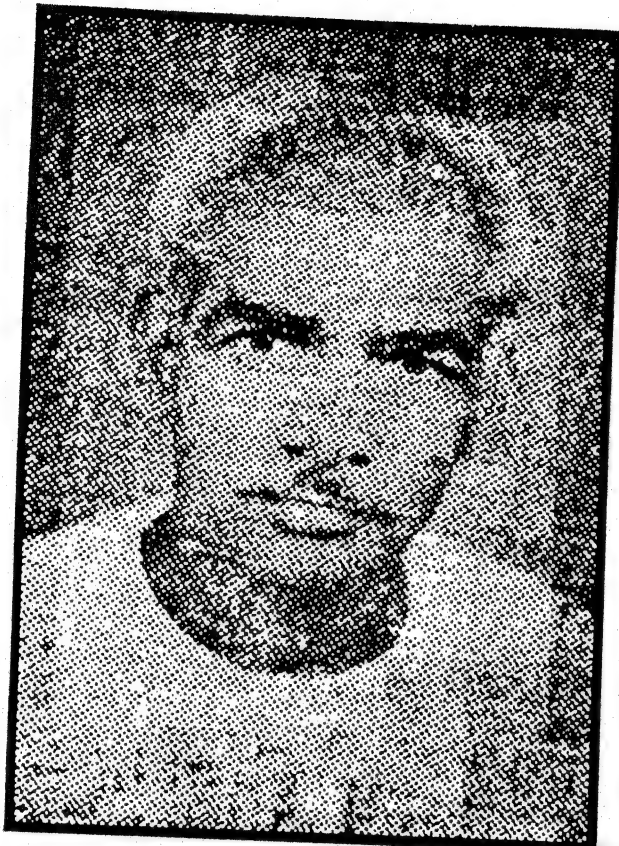
स्वतंत्रता संग्राम सेनानी
स्व०. श्री सुखलाल इमलिया
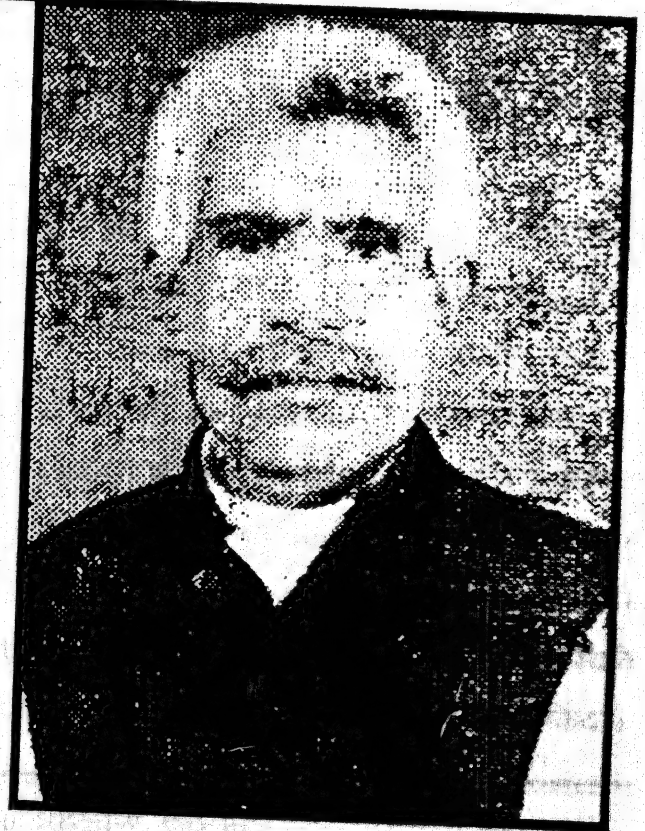
स्वतंत्रता संग्राम सेनानी
स्व०. श्री जानकीप्रसाद पाटकार

5. स्वतंत्रता सेनानी श्री घनश्यामदास नाई[1]

आपका जन्म ललितपुर जनपद में 1922 ई0 में श्री पल्टूराम के यहाँ हुआ था। श्री घनश्यामदास नाई ने सन् 1942 के स्वाधीनता आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया ओर डी0आई0आर0-38 के अंतर्गत जेल यात्रा की। यह निर्भय नौजवान जनता के बीच ही नहीं कारागार के अन्दर भी अंग्रेज अफसरों से भिड़ गया था। अंग्रेज अफसर के गाली देने पर इस सेनानी ने उस अफसर के मुँह पर थूक दिया। इस आत्म सम्मानी सेनानी को 1 वर्ष के कठोर कारावास से भी कठोर 5 बेंतों की मार खानी पड़ी।[2] वह बेंत जिन्हें खाकर आदमी से यह आशा नहीं कि जाती कि उसका अंतिम संस्कार न किया जाए।

1. ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका पृष्ठ-93
2. रजत नीराजना पृष्ठ-29

6. स्वतंत्रता सेनानी श्री रामचन्द्र जैन[1]

आपका जन्म ललितपुर जनपद में श्री प्रभुदास के यहाँ हुआ था । क्रांतिकारियों को सहयोग प्रदान करते करते गांधी जी द्वारा दिये गये नारे करो या मरो की भावना से वशीभूत होकर परिवार की आर्थिक स्थिति को ध्यान में न रखते हुए यह आजादी का दीवाना देशप्रेमी सन् 1942 के राष्ट्र व्यापी आन्दोलन के रणक्षेत्र में कूँद पड़ा जिसे 1 वर्ष का कठोर कारावास एवं 100/- रूपये अर्थ दण्ड। भारत प्रतिरक्षा कानून की 38 वीं धारा के अंतर्गत 17 अगस्त 1942 ई0 को दिया गया।[2] गांधीजी के आव्हन पर सरकार को आर्थिक दण्ड न देकर 2 माह का कठोर कारावास और स्वीकार किया। इस दीवाने का विचार था कि देश रहेगा तो परिवार रहेगा, परिवार का अस्तित्व आजादी पर आधारित है। देश का अस्तित्व परिवार की आर्थिक स्थिति पर नहीं।[3] आजादी के पश्चात् केन्द्रीय पेंनसन देकर सरकार ने आपको सम्मानित किया।

1. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, एस0पी0 भट्टाचार्य पृष्ठ-80
2. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, एस0पी0 भट्टाचार्य पृष्ठ-80
3. व्यक्तिगत साक्षात्कार - रामचन्द्र जैन।

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

स्व०. श्री घनश्यामदास नाई
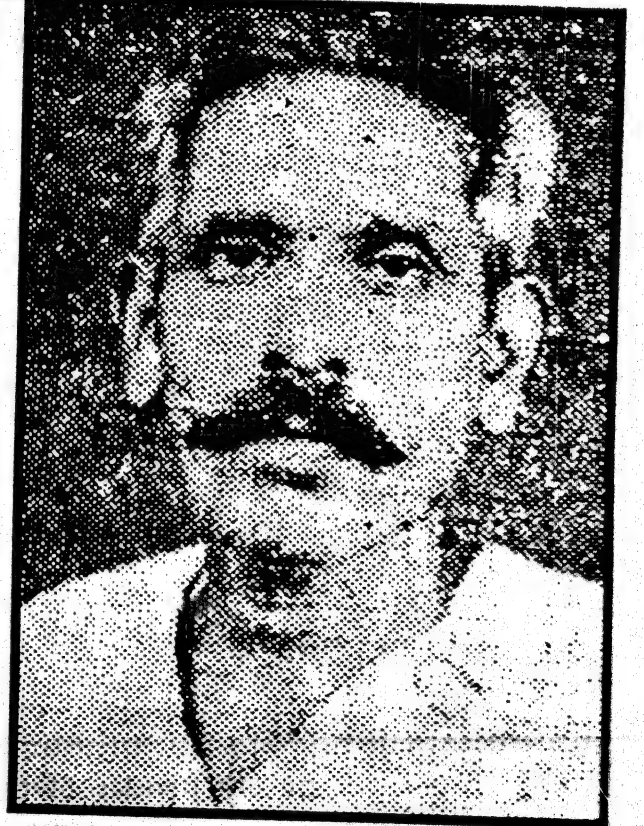
स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

श्री रामचन्द जैन

7. स्वतंत्रता सेनानी श्री हुकुम चन्द्र बड़घरिया[1]

आपका जन्म ललितपुर जनपद में भादों सुदी 1978 वि0 में श्री परमानन्द के यहाँ हुआ था हुकुम चन्द्र वड़घरिया का मन देश को आजाद कराने के लिए युवावस्था से ही उद्देलित हो उठा। जिस प्रकार सीमा पर लड़ रहे सैनिकों के लिए यह आवश्यक होता है कि उनको खाद्य सामग्री एवं आवश्यक वस्तुये उपलब्ध होती रहे तभी वह अपने साहस को प्रदर्शित कर पाते है। स्वतंत्रता संग्राम के योद्धाओं को अपनी गतिविधि बनाये रखने के लिए खाद्यान्न को एक जगह से दूसरे जगह भिजवाना बहुत दुरूह कार्य होता था अधिकांश प्रमुख नेता जनता के बीच में भ्रमण नहीं कर पाते थे। क्रांतिकारी गतिविधि होने के कारण एकान्तवास करना पड़ता था ऐसे समय उनका जनता से सम्पर्क टूट जाता था। जन-सम्पर्क एवं आवश्यक वस्तुओं की उपलब्धि बालंटियर कराते रहते थे। अंग्रेजी प्रशासन की यातनाओं के भय से सहज ही कोई अपनी बालंटियरी सेवायें देने को तत्पर नहीं होता था, लेकिन राष्ट्र प्रेम की भावना लिये श्री बड़घरिया ने अनेकों बार जान खतरे में डालकर सेनानियों को सक्रिय सहयोग प्रदान किया और जरूरी रसद एवं सामग्री पहुँचाने का कार्य बखूबी निभाया। सन् 1942 में भारत छोड़ों स्वाधीनता आन्दोलन के समय धारा 144 का उल्लंधन करते हुए उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। 1 वर्ष की सजा और 100/- रूपये अर्थदण्ड की सजा मिलीं।[2] गांधी जी द्वारा अर्थदण्ड के बहिष्कार का आव्हान करने पर उन्होंने भरना स्वीकार नहीं किया बल्कि उसके एवज में हंसते-हंसते दो माह के कठोर कारावास की सजा कबूल कर ली।

---

1. (i) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक एम0पी0 भट्टाचार्य पृष्ठ-92
   (ii) ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका पृष्ठ-93
2. (i) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक एम0पी0 भट्टाचार्य पृष्ठ-92
   (ii) रजत नीराजना पृष्ठ-27
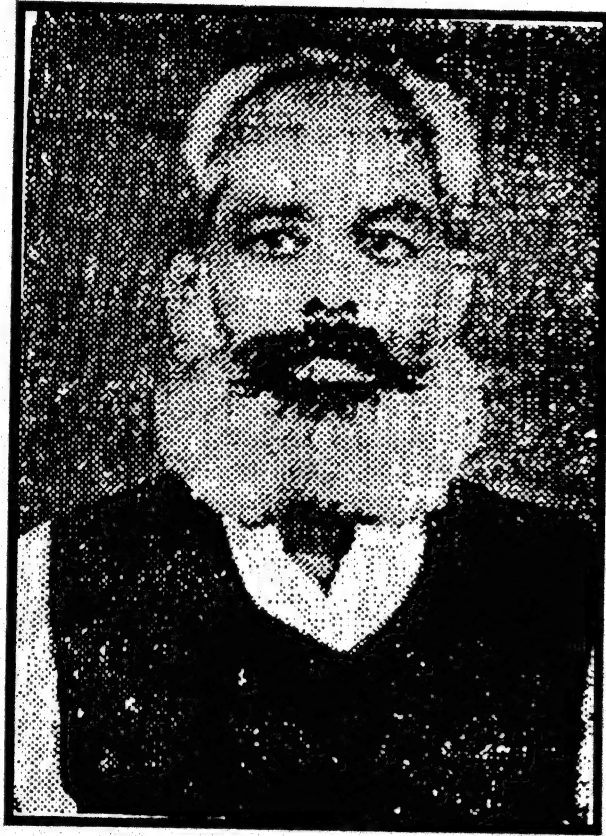
स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

श्री हुकुमचन्द जैन बडघरिया

8. स्वतंत्रता सेनानी श्री हरपाल सिंह[1]

आपका जन्म ललितपुर जनपद में 21.12.1916 ई0 में श्री पिरू ईसाई के यहॉ हुआ था। श्री हरपाल सिंह युवावस्था पाते ही 08.06.1941 को सिपाही की हैसियत से ब्रिटिश आर्मी में भर्ती हो गये। कुछ दिनों ट्रेनिंग लेने के उपरांत सिंगापुर चले गये, वहॉ जापान सरकार से लड़ाई लड़ी, किन्तु ब्रिटिश सरकार की हार के कारण बन्दी बना लिए गए। सिंगापुर में ही नेता जी सुभाषचन्द्र बोस ने आजाद हिंद फौज की स्थापना की।[2] और समस्त भारतीयों को आह्वान किया। स्वाधीनता की भावना से ओत-प्रोत होकर देश की आजादी के लिए प्राणोत्सर्ग करने को मन मचल उठा और 15.02.1942 को I.N.A. में भर्ती हो गये। हिन्द फील्ड फोर्स ग्रुप में होकर अनेक मोर्चों पर अंग्रेज पलटन से लड़ाई लड़ी, कोहिमा में लड़ाई के दौरान अंग्रेज सार्जेन्ट ने संगीन से पेट छेद डाला किन्तु यह रण बांकुरा 3 के घाव होने पर भी शरणागत नहीं हुआ। सार्जेन्ट फिर बार करता इससे पहिले उसको मौत के घाट उतार दिया। जियावाडी में ब्रिटिश आर्मी ने टैंकों को घेरे में लेकर कैद कर लिया। 1944 ई0 के आखिर में पींगू को जेल में सख्त यातनाएं दी गयी इसके पश्चात रंगून जेल में फिर कलकत्ता केग नं0-4 में कैदी रहे।[3] भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने एक I.N.A. रक्षा समिति गठित की जिसमें सर तेज बहादुर सप्रू, भूलाभाई देसाई तथा पं0 जवाहर लाल नेहरू जैसे लोगों ने I.N.A. (इण्डियन नेशनल आर्मी) के अफसरों की ओर से वकालत की।[4] जिससे यह स्वाधीनता का पुजारी 14 माह तक सख्त यातनाएं भोगने के बाद अंग्रेजों के जुल्मों से छुटकारा पाकर 08.01.1946 को जेल से बाहर आया।[5] छूटने के उपरांत दमोह में आजाद हिन्द दल की गरिमा को बनाये रखा। 01.10.1947 को नगर सेना मध्य-प्रदेश में आफीसर के पद पर भर्ती हो गये। कार्य कुशलता और सैनिक योग्यता के कारण कम्पनी कमाण्डर के पद को सुशोभित किया। वहीं से रिटायर्ड होकर अपने जन्म स्थान ललितपुर में विश्राम करने लगे। इस प्रकार इस रणवांकुरे ने मनोवैज्ञानिक रूप से I.N.A. के सैनिक के रूप में एक साहस का उदाहरण प्रस्तुत किया जिससे भारत का स्वतंत्रता प्राप्ति का संकल्प और भी दृढ़ हो गया।

---

1. रजत नीराजना - डॉ परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 24
2. आधुनिक भारत, विपिन चन्द्र प्रकाशक N.C.E.R.T., नई दिल्ली पृष्ठ-232
3. रजत नीराजना, पृष्ठ-24
4. आधुनिक भारत का इतिहास एक नवीन मूल्यांकन-वी0एल0 ग्रोवर एवं यशपाल, पृष्ठ-455 प्रकाशक एस0 चन्द एण्ड कम्पनी (प्रा0) लि0 रामनगर, नई दिल्ली 110055
5. रजत नीराजना - डॉ परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 24

INA के बहादुर के सैनिक एवं स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

स्व०. श्री हरपालसिंह ईसाई

9. स्वतंत्रता सेनानी श्री धन्ना लाल गुढ़ा[1]

आपका जन्म ललितपुर जनपद में 25.09.1914 ई0 में श्री मूलचंद गुढ़ा के यहाँ हुआ था। श्री धन्ना लाल गुढ़ा जी ने अंग्रेजी सरकार के प्रति विरोध प्रगट करवाने के लिए आपने अलख जगाया। अपने ओजस्वी भाषणों से जनता ने आजादी की भावना को फैलाया। हड़तालें, करवाने में आप अगुवा रहे। 1942 ई0 में राष्ट्र व्यापी आन्दोलन में आप अधिक सक्रिय हो गये जिससे अंग्रेज सरकार ने आपको डी0आई0आर0-38 के अंतर्गत गिरफ्तार करके 1 वर्ष का कठोर करावास एवं 100/- रूपये का अर्थदण्ड दिया।[2] स्वतंत्र भारत में आपको केन्द्रीय सरकार की ओर से केन्द्रीय पेंसन प्राप्त हुयी।[3]

---

1. (i) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, एस0पी0 भट्टाचार्य पृष्ठ-65
   (ii) ललितपुर स्वर्ण जयंती, स्मारिका पृष्ठ-93
2. (i) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, एस0पी0 भट्टाचार्य पृष्ठ-65
   (ii) रजत नीराजना - परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 35
3. झाँसी दर्शन, मोतीलाल अशांत पृष्ठ- 53

10. स्वतंत्रता सेनानी श्री प्यारे लाल कुशवाहा[1]

आपका जन्म ललितपुर जनपद में 18.11.1919 ई0 में श्री सालिकराम के यहाँ हुआ था वर्तमान समय में आपकी आयु 80 वर्ष हैं। श्री प्यारेलाल कुशवाहा का नाम भी ललितपुर क्षेत्र के सेनानियों में प्रमुख है। आपको राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेने की प्रेरणा श्री वृन्दावन इमलया जी से मिली।[2] आप बताते है कि इमलया जी ने ही हमारे अन्दर देश प्रेम के दीपक को जलाया। आप इमलया जी के अन्नय भक्त थे, उनके कहने पर कहीं भी मर मिटने को तैयार रहते थे। सन् 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में आप गिरफ्तार कर लिये गये और झाँसी जेल में रखे गये। विभिन्न जलूसों-हड़तालों में आप हमेशा अगुवा रहते थे और जन समूह को स्वतंत्रता समर में सम्मिलित होने के लिए प्रेरणा देते रहते थे। 1 वर्ष के कठोर कारावास[3] एवं 50/- रूपये के अर्थदण्ड से अंग्रेजी पुरस्कार से आप नवाजे गये थे।[4]

---

1. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक (झाँसी डिवीजन), एस0के0 भट्टाचार्य पृष्ठ-68
2. व्यक्तिगत साक्षात्कार - प्यारेलाल कुशवाहा
3. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक (झाँसी डिवीजन), एस0के0 भट्टाचार्य पृष्ठ-[illegible]
4. रजत नीराजना, पृष्ठ-36
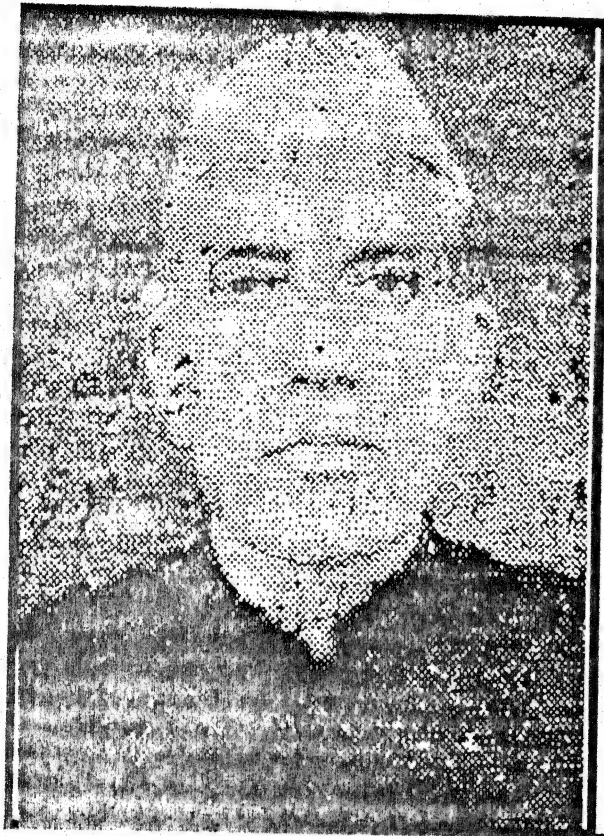
स्वतंत्रता संग्राम सेनानी
स्व०. श्री धन्नालाल गुढा

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी
श्री प्यारेलाल कुशवाहा

11. स्वतंत्रता सेनानी श्री शिखर चन्द्र सिंघई[1]

आपका जन्म 06.03.1921 ई0में ललितपुर जनपद में श्री कुन्दन लाल जैन के यहाँ हुआ था। वर्तमान समय में आपकी आयु 78 वर्ष हैं। श्री शिखर चन्द सिंघई सन् 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में गाँधी जी द्वारा दिया गया नारा "करो या मरो" की भावना से वशीभूत होकर धारा 144 तोड़ने के कारण 29 अगस्त 1942 को गिरफ्तार होकर जेल गये। आपको 1 वर्ष का कारावास[2] एवं 100/- रूपये अर्थदण्ड दिया गया अर्थ दण्ड न देने पर 2 माह का कठोर कारावास और हुआ आपको झाँसी व फैजाबाद की जेलों में रखा गया था।[3]

---

1. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, एस0पी0 भट्टाचार्य पृष्ठ–87
2. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, एस0पी0 भट्टाचार्य पृष्ठ–87
3. रजत नीराजना, डा0 परशुराम विरही, पृष्ठ–37

12. स्वतंत्रता सेनानी श्री बाबूलाल जैन घी वाले[1]

आपका जन्म ललितपुर जनपद में 1912 ई0 में श्री धरमदास जैन के यहाँ हुआ था। श्री बाबूलाल जैन (घी बाले) जी भी गाँधी जी द्वारा शुरू किये गये 1942 ई0 के भारत छोड़ो आन्दोलन में अपना उन्नतशील व्यापार छोड़कर शामिल हो गये। बापू का प्रेरणा स्रोत नारा "करो या मरो" आपको प्रभावित कर गया ओर आपने ललितपुर में दफा 144 का उल्लंघन किया जिससे आपको 1 वर्ष का कठोर कारावास एवं 100/- रूपये का अर्थदण्ड दिया गया[2] आपने देश की स्वतंत्रता के पुजारियों की पंक्ति में अपना नाम भी शामिल कराया और देश को आजाद कराने में अपना सहयोग दिया।

---

1. (i) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक एस0पी0 भट्टाचार्य पृष्ठ–71
   (ii) ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका पृष्ठ–93
2. (i) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक एस0पी0 भट्टाचार्य पृष्ठ–71
   (ii) रजत नीराजना पृष्ठ–38
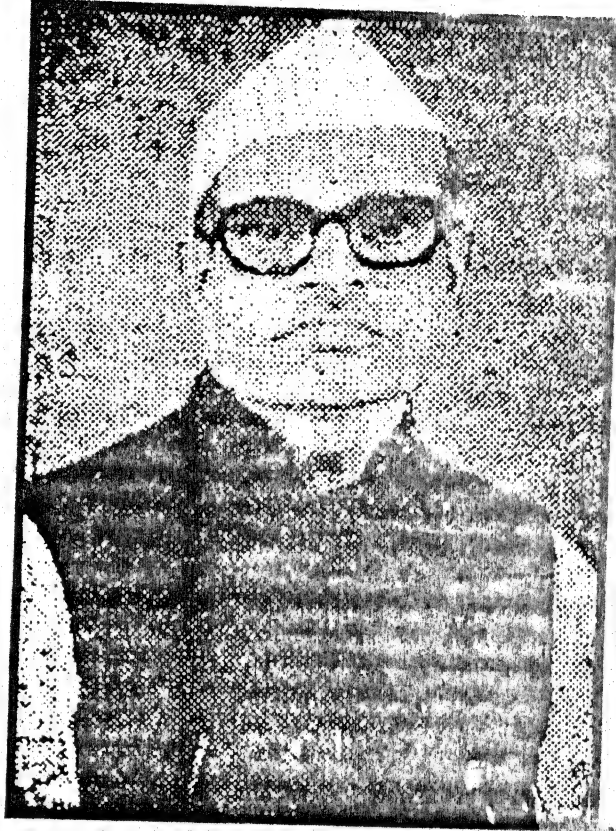
स्वतंत्रता संग्राम सेनानी
श्री शिखरचन्द सिंघई

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी
स्व. श्री बाबूलाल जैन घी वाले

13. स्वतंत्रता सेनानी श्री खूब चन्द्र[1] "पुष्प"

आपका जन्म आषाढ़ 1981 वि0सं0 सन् 1924 ई0 को ललितपुर जनपद के ग्राम व पो0 पिपरई में श्री खुशाल चन्द्र मोदी के यहाँ हुआ था। श्री खूबचंद "पुष्प जी" ने अपनी ओज पूर्ण वाणी से अंग्रेजों के खिलाफ जो विष उगला उससे ललितपुर की जनता में जाग्रति आयी। "पुष्प जी" की कविताओं से जन समुदाय में चेतना की लहर दौड़ गयी। "पुष्प जी" राष्ट्रीय कविताएं सुना-सुनाकर देश-प्रेम के प्रति लोगों की भावना को उभारते हुए ललितपुर में बन्दी बना लिये गये। आपको दफा-144 का उल्लंघन करने के कारण एवं विद्रोही कविता-पाठ के कारण 6 माह क़ी कठोर सजा तथा 500/- रूपये का जुर्माना का दण्ड दिया गया।[2] गाँधी जी के आह्वान पर दण्ड अदा न करने के कारण आपको 6 माह की और कठोर सजा भोगनी पड़ी।[3] इस प्रकार आपके योगदान से स्वतंत्रता के लिए ललितपुर आपका ऋणी है।

---

1. (i) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक (झाँसी डिवीजन), पृष्ठ-57
   (ii) रजत नीराजना पृष्ठ-40
2. (i) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक (झाँसी डिवीजन), पृष्ठ-57
   (ii) रजत नीराजना पृष्ठ-40
3. रजत नीराजना पृष्ठ-40

14. स्वतंत्रता सेनानी श्री गजराज सिंह[1]

आपका जन्म आषाढ़ 1912 ई0 में ललितपुर जनपद के ग्राम व पो0 बानपुर में श्री बख्तावर सिंह उर्फ बखतवली सिंह के यहाँ हुआ था। श्री गजराज सिंह ने परम्परागत शासकों की प्रवृत्तियों को छोड़कर गांधी जी की अहिंसा विचार धारा से प्रभावित हुए और सच्चे गाँधीवादी बन गये। गाँधी जी के आह्वान पर आप 1942 ई0 के स्वाधीनता आन्दोलन में अपने आपको न रोक सके और कूंद पडे। आपको भारत प्रतिरक्षा कानून की 38वी. धारा के अन्तर्गत 1 वर्ष के कठोर कारावास और 100/- रूपये के अर्थदण्ड से नवाजा गया जिसे आपने सहर्ष स्वीकार कर देश प्रेम को प्रदर्शित किया और स्वधीनता की कतार में ललितपुर से अपना नाम जोड दिया। स्वतंत्र भारत की केन्द्रीय सरकार ने आपको कन्द्रीय पेंसन स्वीकृत की थी।[2]

---

1. (i) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक (झाँसी डिवीजन) पृष्ठ-57
   (ii) रजत नीराजना पृष्ठ-47
2. झाँसी दर्शन-मोतीलाल अशांत पृष्ठ-53

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

श्री खूबचन्द पुष्प
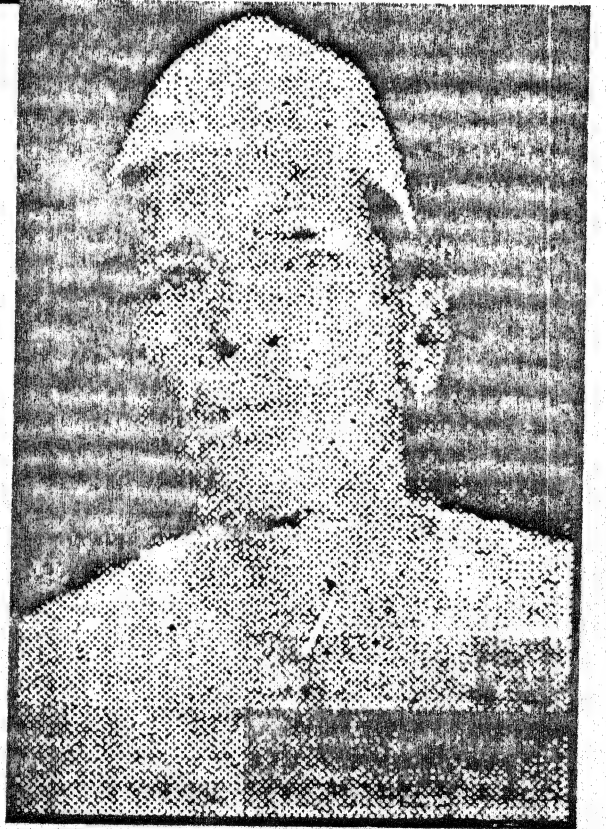
स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

श्री गजराज सिंह

15. स्वतंत्रता सेनानी श्री रतीराम हुण्डैत[1]

आपका जन्म ललितपुर जनपद में श्री जुगल किशोर हुण्डैत के यहाँ हुआ था। वर्तमान समय में आपकी आयु 70 वर्ष है। श्री रतीराम हुण्डैत ने अपने विद्यार्थी जीवन में ही 1942 ई0 के "भारत छोड़ो" आन्दोलन में पर्चे बाँटे जिससे राजकीय इण्टर कालेज ललितपुर के प्रधानाचार्य ने आपका नाम काट दिया जिससे आपका विद्रोही तेवर और तेज हो गया जिस समय देश स्वतंत्रता आन्दोलन की ज्वाला में धधक रहा था उसी समय इस नौजवान ने अपने अध्ययन काल में विद्यार्थियों का नेतृत्व किया। तत्कालीन शासन की संचार व्यवस्था व आवागमन के मार्गो का अवरोध किया।[2] तोड़-फोड़ का बारंट निकलने पर आप फरार हो गये और उरई में विद्यार्थियों के आन्दोलन का नेतृत्व करते हुए गिरफ्तार हुए और अंग्रेजों द्वारा हृदय विदारक क्रूर कठोर यातनाओं से पीड़ित किये गये। आपको 3 माह का कठोर कारावास की सजा दी गयी।[3] आपने देश की आजादी के वीर जवानों की पंक्ति में अपना नाम अमर किया।

---

1. रजत नीराजना पृष्ठ-52
2. रजत नीराजना पृष्ठ-52
3. रजत नीराजना पृष्ठ-52

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

श्री रतीराम हुण्डैत

16. स्वतंत्रता सेनानी श्री हरिकृष्ण देवलिया[1]

आपका जन्म ललितपुर जनपद में श्री देवीप्रसाद देवलिया के यहाँ हुआ था। वर्तमान समय में आपकी आयु लगभग 68 वर्ष हैं। श्री हरिकृष्ण देवलिया अपने विद्यार्थी जीवन काल में ही जंगे आजादी के मैदान में कूद पड़े। देश को आजाद कराने में जहाँ वकील, साहित्यकार एवं व्यापारी काश्तकार अपना योगदान दे रहे थे वही ललितपुर का विद्यार्थी वर्ग भी पीछे नहीं था। आप अपने विद्यार्थी जीवन से ही स्वतंत्रता की भावना मन में संजोये हुए थे। फलतः अध्ययन को गौण बनाकर मुख्य ध्येय आजादी ओर भारत माता के पैरों की बेड़ी तोड़ने में लग गये। आपने छात्र समुदाय को संगठित कर तत्कालीन अंग्रेजी प्रशासन की नाक में दम कर रखा था।[2] 1942 ई0 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भागीदारी जताते समय आप गिरफ्तार कर लिये गये तथा 3 माह के कठोर कारावास की सजा मिली।[3] नगर के विद्यार्थी वर्ग में अपने विशिष्ट कार्य के कारण सम्मान प्राप्त किया। आजादी मिलने के पश्चात आप मध्य रेलवे में सहायक स्टेशन मास्टर के पद पर नियुक्त हुए। वर्तमान में सेवानिवृत्ति के उपरांत आप स्वाध्याय एवं सामाजिक कार्यों के साथ-साथ नव युवकों के प्रेरणा-स्रोत बने हुए हैं।

---

1. ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका - 1998, पृष्ठ - 18
2. व्यक्तिगत साक्षात्कार- श्री हरिकृष्ण देवलिया
3. रजत नीराजना, डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ - 53

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

श्री हरीकृष्ण देवलिया

17. स्वतंत्रता सेनानी श्री रामलाल यादव[1]

आपका जन्म अषाढ़ 1902ई0 को ललितपुर जनपद के ग्राम व पो0 बानपुर में श्री अयोध्या प्रसाद के यहाँ हुआ था। सन् 1857 की क्रांति में क्रांतिकारी महाराजा मर्दन सिंह जूदेव का ऐतिहासिक राज्य बानपुर क्रांति का केन्द्र विन्दु रहा। जिसमें जन्में श्री रामलाल यादव का स्वतंत्रता की लड़ाई में महत्तवपूर्ण योगदान है। आप बानपुर में प्रसिद्ध क्रांतिकारी आन्दोलनकर्ता रहे। सन् 1942में आपने आजादी के लिए स्वाधीनता आन्दोलन में भाग लिया ओर आपको बन्दी बनाया गया। 1 वर्ष का कठोर कारावास तथा 100/- रूपये अर्थदण्ड आपको दिया गया।[2]

---

1. ललितपुर स्वर्ण जयन्ती स्मारिका 1998 पृष्ठ-93
2. रजत नीराजना पृष्ण-56

18. स्वतंत्रता सेनानी श्री गोरेलाल वर्मा[1] उर्फ गुनुआ

आपका जन्म 05.05.1918 ई0 को ललितपुर जनपद के ग्राम व पो0 बानपुर में श्री उद्येत वर्मा के यहाँ हुआ था। श्री गोरेलाल वर्मा के प्रेरणा स्रोत पण्डित जवाहर लाल नेहरू जी रहे। आप नेहरू जी के भाषणों से प्रेरणा पाकर स्थानीय नेताओं के साथ राजनीति में भाग लेने लगे। आप पण्डित रामेश्वर प्रसाद शर्मा के नेतृत्व में क्रांतिकारियों के लिए सन्देश-वाहक व खाद्य सामग्री भेजने का कार्य गुप्त रूप से बहुरूपिया के रूप में करते रहे।[2] सन् 1942 के जन आन्दोलन में आप 30 अगस्त 1942 को बन्दी बना लिये गये और 1 वर्ष का कठोर कारावास तथा 100/- रूपये का अर्थदण्ड हुआ।[3] जेल से छूटने के बाद आप पुनः गुप्त कार्य करते हुए पकड़ लिये गये और 2 माह की जेल तथा 35/- रूपये का अर्थ दण्ड हुआ। स्वास्थ्य गिरने के कारण अधिकारियों ने 21 दिन बाद उन्हें छोड दिया। अर्थदण्ड न अदा करने के कारण उनके मकान की कुर्की हुयी।[3] इस सेनानी के कार्यो ने देश को आजादी की ओर अग्रसर किया।

---

1. (i) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ-58
   (ii) ललितपुर स्वर्ण जयन्ती स्मारिका, पृष्ठ-23
2. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ-58
3. रजत नीराजना, पृष्ठ-57
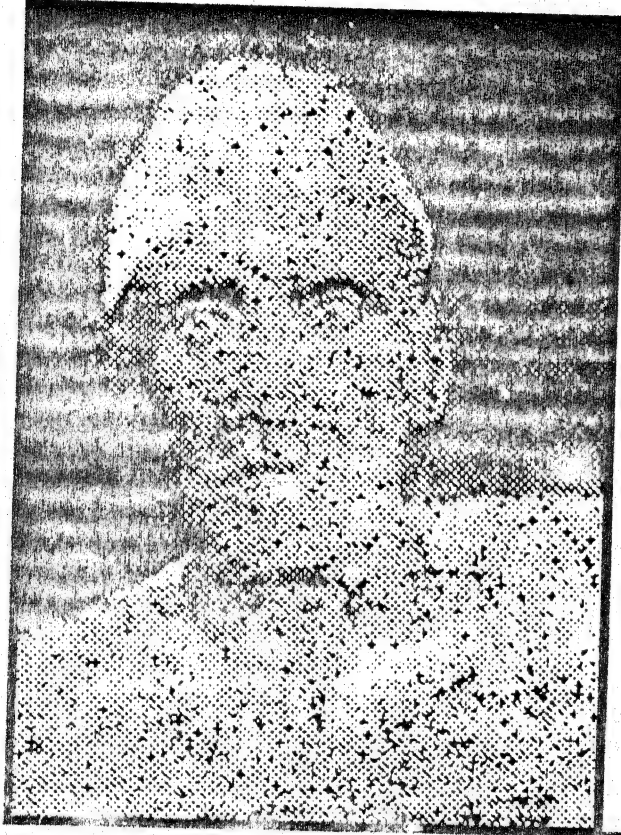
स्वतंतता संग्राम सेनानी

स्व. श्री रामलाल यादव

स्वतंतता संग्राम सेनानी

स्व. श्री गोरेलाल वर्मा

19. स्वतन्त्रता सेनानी श्री धनश्यामदास नायक[1]

आपका जन्म 15.05.1924 ई0 को ललितपुर जनपद के ग्राम लुहरी पो0 (मड़ावरा) में श्री लक्ष्मण प्रसाद नायक के यहाँ हुआ था। वर्तमान समय में आपकी आयु 75 वर्ष है। श्री धनश्याम दास नायक उन सेनानियों में से है जो 18 वर्ष की अल्पायु में देश-प्रेम की वशीभूत होकर स्वतंत्रता के महान यज्ञ में अपनी आहुति देने कूंद पड़े। सन् 1942 ई0 के राष्ट्र व्यापी आन्दोलन में आपको डी0आई0आर के अंतर्गत बन्दी बनाया गया और 29.12.1994 से 05.06.43 तक 6 माह बनारस की जेल में रखा गया।[2] ताकि परिवार जन या परिचितों से जेल समय में मुलाकात न कर सके। तरूण आयु में होने के कारण आप नौजवानों के लिए प्रेरक बन गए। वर्तमान में स्वतंत्रता संग्राम का सेनानी जूनियर हाई स्कूल सादूमर में अध्यापक हैं। जिस प्रकार भारत छोड़ो आन्दोलन में अन्नायी शासन के पहरेदारों से मारपीट की अन्नाय का मुकावला किया उसी भावना का संचार वर्तमान पीढ़ी में कर रहे हैं।

---

1. ललितपुर स्वर्ण जयन्ती स्मारिका, पृष्ठ-20
2. (i) व्यक्तिगत साक्षात्कार- श्री धनश्यामदास नायक
   (ii) रजत नीराजना पृष्ठ-58

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

श्री घनश्यामदास नायक

20. श्री अयोध्या प्रसाद[1]

आपका जन्म ललितपुर जनपद के ग्राम पाली में श्री फूलचन्द्र के यहाँ हुआ था। श्री अयोध्या प्रसाद[1] को शासन विरोधी गतिविधियों के कारण अंग्रेजी सरकार ने डी0आई0आर0 के अंतर्गत गिरफ्तार किया ओर सन् 1944 में 3 माह का कारावास दिया। सजा भुगतने के उपरांत भी श्री चौरसिया आजादी के आन्दोलन में सक्रिय रहे और तब तक चैन से नहीं वैठे जब तक देश से अंग्रेजों को मार नहीं भगाया।

---

1. (i) ललितपुर जनपद स्वर्ण जयन्ती स्मारिका, 1998
   संरक्षक–नितिन रमेश गोकण (I.A.S.) जिलाधिकारी, ललितपुर
   प्रधान सम्पादक संतोष कुमार शर्मा, पृष्ठ–20
   (ii) रजत नीराजना, सम्पादक डा0 परशुराम शुक्ल "बिरही"
   प्रकाशक–हरिहरनारायण चौबे, अध्यक्ष नगर पालिका, ललितपुर, पृष्ठ–61

21. स्वतंत्रता सेनानी श्री भैयालाल यादव[1]

आपका जन्म 1912 ई0 को ललितपुर जनपद के ग्राम कपासी पो0 धौर्रा में श्री सीताराम के यहाँ हुआ था। श्री भैया लाल यादव "फक्कड़" ने 1942 ई0 के "करो या मरो" आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया और धारा 144 का उल्लंघन किया जिस कारण आपको बन्दी बना लिया गया और 1 वर्ष का सख्त कारावास हुआ।[2] आप युवावस्था से ही राष्ट्रीय आन्दोलनों के प्रति प्रेरित हुए और 1942 ई0 में आपने देश सेवा के लिए अपना योगदान दिया।

---

1. (i) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ–74
   (ii) ललितपुर जनपद स्वर्ण जयंती स्मारिका, 1998
   प्रधान सम्पादक – संतोष शर्मा
   जनपद ललितपुर के बंदनीय दिवंगत स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की सूची शीर्षक पृष्ठ–93
   (iii) रजत नीराजना – सम्पादक डा0 परशुराम शुक्ल 'विरही' पृष्ठ–63
2. (i) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ–74
   (ii) रजत नीराजना

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी
श्री अयोध्या प्रसाद

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी
स्व. श्री भैयालाल यादव

22. स्वतंत्रता सेनानी श्री भगवानदास ज्योतिषी[1]

आपका जन्म 1917 ई0 को ललितपुर जनपद के ग्राम/पो0 कैलगुवॉं में श्री खुन्नी लाल के यहॉं हुआ था। वर्तमान समय में आपकी आयु 82 वर्ष है। कैलगुवॉं जिला मुख्यालय ललितपुर से 40 किमी0 की दूरी पर 24^0 51' उत्तरी अक्षांश एवं $78^0$46' पूर्वी देशांतर के मध्य यह गांव बानपुर कैलगवॉं मार्ग पर बानपुर से लगभग 16 किमी0 की दूरी पर स्थित है। 1811 ई0 में सिंधिया की सेनाओं द्वारा चन्देरी पर विजय कर लेने के उपरांत चन्देरी के राज्य मोद प्रहलाद को 31 गॉंव की जागीर दी गयी जिसमें कैलगवॉं भी सम्मिलित था।[2] श्री भगवानदास ज्योतिषी गांधी जी के आव्हान से प्रेरित होकर आजादी की लड़ाई के मैदान में कूद पड़े थे। उन्हें सन् 1942 में 'अंग्रेजो भारत छोड़ो" आन्दोलन में भागीदारी जताते समय गिरफ्तार कर लिया गया तथा 1 वर्ष का कठोर कारावास एवं 100/- रूपये का जुर्माना की सजा दी गयी[3] देश को स्वतंत्रता दिलाने के लिए आपने देशी रियासतों में जन आन्दोलन[4] अभियान चलाया तथा समय-समय पर होने वाले सत्याग्रह में भाग लिया, इस पर आपको राज्य टीकमगढ़ में गिरफ्तार किया गया एवं यातनाएं दी गयी। स्वतंत्र भारत में आपको केन्द्रीय पेंशन देकर सम्मानित किया गया है।

---

1. (i) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक एम0पी0 भट्टाचार्य पृष्ठ-73
   (ii) ललितपुर जनपद स्वर्ण जयंती स्मारिका 1998
   प्रधान सम्पादक - संतोष शर्मा पृष्ठ-19
   (iii) रजत नीराजना - सम्पादक डा0 परशुराम शुक्ल 'विरही' पृष्ठ-66
2. पुरातात्विक सर्वेक्षण रिपोर्ट - 1989-90, पृष्ठ - 7 - 8
3. (i) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, एम0पी0 भट्टाचार्य पृष्ठ-73
   (ii) ललितपुर जनपद स्वर्ण जयंती स्मारिका 1998
   प्रधान सम्पादक संतोष शर्मा पृष्ठ-19
   (iii) रजत नीराजना सम्पादक डा0 परशुराम शुक्ल "विरही" पृष्ठ-66
4. रजत नीराजना, पृष्ठ - 66

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी
श्री भगवानदास ज्योषिती

23. स्वतंत्रता सेनानी श्री अभिनन्दन कुमार टड़ैया[1]

आपका जन्म ललितपुर जनपद में श्री पन्ना लाल टडैया के यहाँ हुआ था। श्री अभिनंदन कुमार टड़ैया उर्फ अभय कुमार तराया ने कानून में स्नातक की उपाधि प्राप्त की थी और अपना व्यवसाय प्रसिद्ध वकील के रूप में स्थापित किया था। आपने सन् 1942 के राष्ट्रव्यापी जनआन्दोलन में भाग लिया। जिसकी बजह से भारत प्रति रक्षा कानून की 38 बी धारा के अंतर्गत अगस्त सन् 1942को बन्दी बनाये गये और 1 वर्ष का कारावास तथा 100/- रूपये अर्थदण्ड की सजा दी गयी।[2]

1. (i) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, एस0पी0 भट्टाचार्य पृष्ठ-51
   (ii) ललितपुर जनपद स्वर्ण जयंती स्मारिका - 1998
   प्रधान सम्पादक - संतोष शर्मा
   जनपद ललितपुर के बंदनीय दिवंगत स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की सूची शीर्षक पृष्ठ-93
   (iii) रजत नीराजना - सम्पादक डा0 परशुराम शुक्त "विरही"
2. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक एस0पी0 भट्टाचार्य पृष्ठ-51

24. स्वतंत्रता सेनानी श्री ताराचन्द कजिया वाले[1]

आपका जन्म ललितपुर जनपद में सन् 1920 ई0 में श्री रामचन्द्र के यहाँ हुआ था। श्री ताराचन्द "कजिया वाले" ने सन् 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में देश को आजाद कराने में अपना योगदान दिया। आपने धारा 144 को तोड़कर जुलूस निकाला जिस कारण आपको बन्दी बना लिया गया ओर 1 वर्ष का कठोर कारावास तथा 100/- रूपये अर्थदण्ड मिला तथा नैनी सैन्ट्रल जेल में रखा गया। आप राष्ट्रीय आन्दोलन में हर संभव प्रयत्न से देश-भक्ति में अनुरक्त रहे।

1. रजत नीराजना, सम्पादक - डा0 परशुराम शुक्ल "विरही" पृष्ठ- 71

25. स्वतंत्रता सेनानी श्री जयराम सेहारे[1]

आपका जन्म सन् 1920 ई0 में ललितपुर जनपद के ग्राम बानपुर में श्री कन्हैयालाल के यहाँ हुआ था। श्री जयराम सेहारे ने क्रांतिकारियों के अग्रज महाराजा मर्दन सिंह की भूमि बानपुर में क्रांति का विगुल बजा दिया था। आपका पौरूष 22 वर्ष की युवावस्था में मचल उठा अंग्रेज सरकार से संघर्ष करने के लिए आपको सन् 1942 ई0 के जन आन्दोलन में गिरफ्तार लिया गया तथा 1 वर्ष की सजा और 100/- रूपये अर्थदण्ड दिया गया।[2] आपने जो देश भक्ति का परिचय दिया वह अनुकरणीय है।

---

1. (i) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ–62
2. (i) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ–62
   (ii) रजत नीराजना, सम्पादक – डा0 परशुराम शुक्ल पृष्ठ–75
   (iii) ललितपुर जनपद स्वर्ण जयंती स्मारिका – 1998

26. स्वतंत्रता सेनानी श्री मंगल सिंह कठरिया[1]

आपका जन्म अगस्त 1900ई0 में ललितपुर जनपद के ग्राम व पोस्ट बानपुर में श्री निहाल सिंह के यहाँ हुआ था। श्री मंगल सिंह कठरिया जी का कार्यक्षेत्र केवल बानपुर ही नहीं अपितु महरौनी भी रहा है। सन् 1935 में राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रसिद्ध कार्यकर्ता थे। श्री रामेश्वर प्रसाद शर्मा के नेतृत्व में सन् 1936 से संगठन कार्य किया और इन्हीं दिवसों में आप मण्डल–कांग्रेस–कमेंटी के अध्यक्ष भी रहे।[2] स्वतंत्र भारत के सन् 1952 के लोक सभा चुनावों में आपने निर्वाचित सांसद श्री रघुनाथ विनयक धुलेकर जी के चुनाव के हेतु विशेष श्रम किया तथा उत्तरदायी शासन के हेतु टीमकगढ़ महाराज से संघर्ष किया। आप अनेक बार जिला कांग्रेस कमेंटी झाँसी के सदस्य बने। सन् 1942 के "भारत छोड़ो" आन्दोलन में भाग लेने के कारण आपको बन्दी बनाकर 1 वर्ष का कठोर करावास दिया गया।[3]

---

1. (i) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ–75
   (ii) ललितपुर जनपद स्वर्ण जयंती स्मारिका – 1998
   प्रधान सम्पादक – संतोष शर्मा पृष्ठ–93
   (iii) रजत नीराजना, सम्पादक – डा0 परशुराम शुक्ल विरही, पृष्ठ–76
2. रजत नीराजना सम्पादक डा0 परशुराम शुक्ल विरही, पृष्ठ–76
3. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ–75

27. स्वतंत्रता सेनानी श्री जालम यादव[1]

आपका जन्म अगस्त 1922 ई0 में ललितपुर जनपद के ग्राम कपासी पोस्ट धौर्रा में बल्देव के यहाँ हुआ था। श्री जालम यादव 20 वर्ष की आयु में ही अंग्रेज सरकार के विरोध में खड़े हो गये। युवावस्था में धमनियों में जो रक्त प्रवाह कर रहा था वह अंग्रेजों से लोहा लेने का उतावला था। आपको सन् 1942 में ललितपुर में जल बिहार के मेले में दफा 144 तोड़ने के कारण बन्दी बनाया गया और 1 वर्ष का कठोर करावास हुआ परन्तु आप विचलित नहीं हुये और देश की आजादी के लिये संघर्ष करते रहे।

---

1. (i) रजत नीराजना सम्पादक डा0 परशुराम शुक्ल विरही, पृष्ठ–78
   (ii) ललितपुर जनपद स्वर्ण जयंती स्मारिका 1998
   प्रधान सम्पादक संतोष शर्मा
   स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की सूची पृष्ठ–93

28. स्वतंत्रता सेनानी श्री राजधरलाल जैन[1]

आपका जन्म ललितपुर जनपद के ग्राम व पोस्ट जाखलौंन में श्री जनतराम के यहाँ हुआ था। श्री राजधरलाल जैन ने ग्रामीण क्षेत्र के कर्मठ कार्यकर्ता के रूप में सन् 1942 के राष्ट्रव्यापी आन्दोलन में भाग लिया और बन्दी बनाये गये तथा 11 माह का कारावास प्राप्त किया[2] और स्वतंत्रता आन्दोलन में ललितपुर क्षेत्र से जो योगदान दिया वह सदैव स्मरणीय रहेगा।

---

1. (i) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ–79
   (ii) ललितपुर जनपद स्वर्ण जयंती स्मारिका – 1998
   प्रधान सम्पादक – संतोष शर्मा
   दिवंगत स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की सूची, पृष्ठ–93
   (iii) रजत नीराजना – सम्पादक डा0 परशुराम शुक्ल विरही, पृष्ठ–76
2. (i) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ–79
   (ii) रजत नीराजना – सम्पादक डा0 परशुराम शुक्ल विरही, पृष्ठ–76
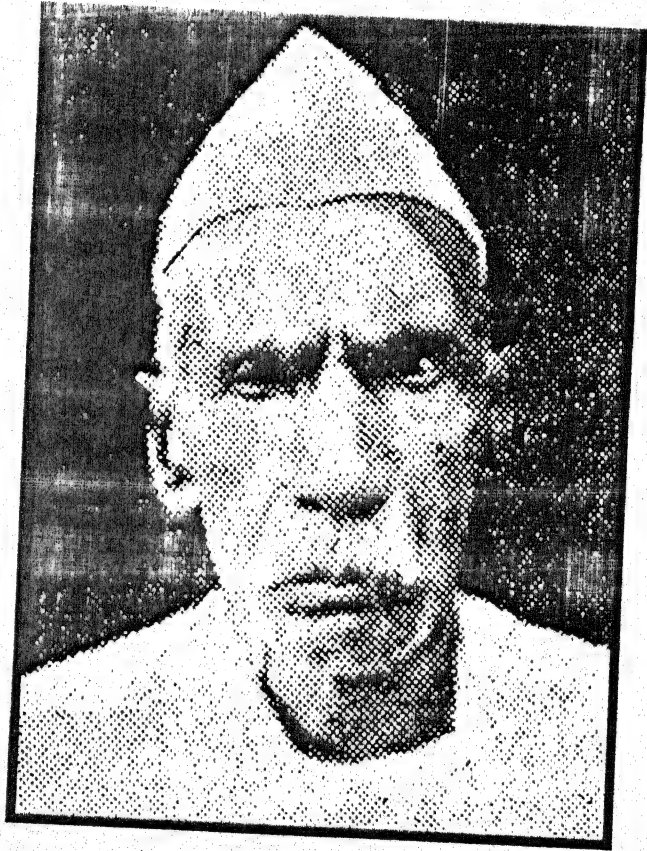
स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

स्व. श्री राजधरलाल जी जैन

29. स्वतंत्रता सेनानी श्री भूपतराम[1]

आपका जन्म सन् 1911 ई0 में ललितपुर जनपद के ग्राम व पोस्ट बानपुर में श्री जालम के यहाँ हुआ था। श्री भूपतराम गांधी जी के अनुयायी थे, आपने गांधी जी के नारे "करो या मरो" से प्रेरणा लेकर सन् 1942 के आन्दोलन में बानपुर क्षेत्र से हिस्सा लिया और भारत प्रतिरक्षा कानून की 38वीं धारा के अंतर्गत 30 अगस्त 1942 ई0 को बन्दी बनाये गये। आन्दोलन में सक्रिय भागीदारी होने के कारण अंग्रेजों ने 1 वर्ष का कारावास तथा 100/- रूपये अर्थदण्ड की सजा दी। आप सन् 1935 में राष्ट्रीय आन्दोलन में शामिल हुये थे और पुलिस की पिटाई से घायल हुये परन्तु आन्दोलन के मार्ग से डिगे नहीं आपने तिरंगा झण्डा उदयपुरा के डाकबंगले में फहराया व जार्ज पंचम का चित्र जलाया था।[3] आपका योगदान क्षेत्र के लोगों को प्रेरणा स्रोत बना।

---

1. (i) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ–74
   (ii) ललितपुर जनपद स्वर्ण जयंती स्मारिका – 1998
   प्रधान सम्पादक – संतोष शर्मा
   दिवंगत स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की सूची पृष्ठ–93
   (iii) रजत नीराजना, सम्पादक – डा0 परशुराम शुक्ल विरही, पृष्ठ–88
2. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक पृष्ठ–74
3. रजत नीराजना, सम्पादक – डा0 परशुराम शुक्ल विरही, पृष्ठ–88

30. स्वतंत्रता सेनानी श्री शिवप्रसाद जैन[1]

आपका जन्म ललितपुर जनपद के ग्राम व पोस्ट जाखलौन में श्री उदयजीत के यहाँ हुआ था।श्री शिवप्रसाद जैन स्वतंत्रता संग्राम के जाखलौन क्षेत्र के कर्मठ कार्यकर्ता थे। देश को आजाद कराने की लालसा में आप सन् 1942 के "भारत छोड़ो" आन्दोलन में कूद पड़े और बन्दी बना लिये गये। आपको अंग्रेजों ने 9 माह तक नजर बंद रखा।[2] देश की आजादी में आपका योगदान चिर स्मरणीय रहेगा।

---

1. (i) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, एस0 पी0 भट्टाचार्य, पृष्ठ-87
   (ii) ललितपुर जनपद स्वर्ण जयंती स्मारिका, 1998
   प्रधान सम्पादक – संतोष शर्मा
   दिवंगत स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की सूची पृष्ठ-93
   (iii) रजत नीराजना सम्पादक डा0 परशुराम शुक्ल बिरही, पृष्ठ-86
2. (i) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक एस0 पी0 भट्टाचार्य, पृष्ठ-87
   (ii) 14 अगस्त 1997 दैनिक जागरण झाँसी, पृष्ठ-4

31. श्री मोती लाल टड़ैया[1]

आपका जन्म ललितपुर जनपद में श्री गिरधारी लाल के यहाँ हुआ था। श्री मोतीलाल टड़ैया कांग्रेस के कर्मठ कार्यकर्ता के रूप में जाने जाते थे। साहूकार परिवार में जन्म लेने वाले आप अर्थ संयम की भावना से ग्रसित न हो सके देश सेवा आपके शरीर में कूट-कूट कर भरी हुयी थी। सन् 1942 के "भारत छोडो" आन्दोलन में आपने सक्रिय रूप से भाग लिया तो अंग्रेजों ने बन्दी बना लिया और 1 वर्ष का कठोर कारावास तथा 100/- रूपये का अर्थदण्ड की सजा दी।

---

1. (i) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ-78
   (ii) ललितपुर जनपद स्वर्ण जयंती स्मारिका 1998, प्रधान सम्पादक संतोष शर्मा
   दिवंगत स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की सूची पृष्ठ-93
   (iii) रजत नीराजना सम्पादक डा0 परशुराम शुक्ल विरही, पृष्ठ-87
2. (i) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक पृष्ठ-78
   (ii) रजत नीराजना सम्पादक डा0 परशुराम शुक्ल विरही, पृष्ठ-87

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

स्व. श्री शिवप्रसाद जैन

32. श्री तेज सिंह[1]

आपका जन्म ललितपुर जनपद के ग्राम व पोस्ट सैदपुर में श्री पहाड़ सिंह के यहाँ हुआ था। श्री तेजसिंह ने सन् 1942 के "भारत छोड़ो" आन्दोलन में भाग लिया और गिरफ्तार हुये। आपको 1 माह की सजा और 50/- रूपये अर्थदण्ड दिया गया इस प्रकार आपने ललितपुर क्षेत्र के क्षेत्रीय नेताओं में अपना नाम अमर कर लिया और देश की आजादी के लिए इस क्षेत्र में योगदान प्रदान किया।

---

1. रजत नीराजना सम्पादक डा0 परशुराम शुक्ल विरही, पृष्ठ-90

33. श्री अनन्दी[1]

आपका जन्म ललितपुर जनपद के ग्राम व पोस्ट बानपुर में श्री जनतराम के यहाँ हुआ था। श्री अनन्दी बानपुर क्षेत्र में क्षेत्रीय जनता के मार्ग दर्शक एवं किसान कार्यकर्ता के रूप में प्रतिष्ठित थे। आपने 1942 ई0 के भारत छोडो आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया तथा बन्दी बनाये गये अंग्रेजों ने आपको 1 वर्ष का कारावास तथा 100/- रूपये का आर्थिक दण्ड दिया।[2] जिसे आपने सहज स्वीकार करके आजादी के लिए अपना योगदान दिया।

---

1. (i) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक (झॉसी डिवीजन) पृष्ठ-52
   (ii) रजत नीराजना सम्पादक डा0 परशुराम शुक्ल विरही, पृष्ठ-91
2. (i) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक (झॉसी डिवीजन) पृष्ठ-52
   (ii) रजत नीराजना सम्पादक डा0 परशुराम शुक्ल विरही, पृष्ठ-91

34. श्री बाबूलाल फूलमाली[1] "शहीद"

आपका जन्म ललितपुर जनपद में श्री ग्या प्रसाद के यहाँ हुआ था। श्री बाबूलाल फूलमाली "शहीद" ने सन् 1942 के "भारत छोड़ो" आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया तथा आन्दोलन को गति प्रदान करने के लिए जनता को प्रेरित किया। अंग्रेजों ने आपको बन्दी बनाकर क्रूर से क्रूर सजा देने का निश्चय किया। आपको 1 वर्ष का कठोर करावास[2] 100/- रूपये जुर्माना एवं 5 बेंत की सजा सुनायी गयी। फाँसी से भी जघन्य कार्य बेंत मार कर आपके प्राण लिये गये[3] और आप शहीद कहलाये। आज भी नगर में आपका स्मारक बना हुआ है। जिस पर सभी ललितपुर वासी आजादी में आपके द्वारा दिये गये प्राणों की आहुति पर गर्व का अनुभव करते है।

---

1. (i) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ–71
   (ii) ललितपुर जनपद स्वर्ण जयंती स्मारिका 1998
   प्रधान सम्पादक संतोष शर्मा पृष्ठ–93
   (iii) रजत नीराजना सम्पादक डा0 परशुराम शुक्ल विरही, पृष्ठ–93
2. (i) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक पृष्ठ–71
   (ii) रजत नीराजना सम्पादक डा0 परशुराम शुक्ल विरही, पृष्ठ–93
3. रजत नीराजना सम्पादक डा0 परशुराम शुक्ल विरही, पृष्ठ–93

35. श्री किशोर सिंह[1]

आपका जन्म ललितपुर जनपद के ग्राम जखौरा हुआ था। श्री किशोर सिंह राष्ट्रीय विचारधारा के अनुयायी थे और भारत को स्वतंत्र कराने के प्रवल आकांक्षी थे, आपने जखौरा क्षेत्र के स्थानीय नेताओं के साथ सन् 1942 के "भारत छोड़ो" आन्दोलन में भी भाग लिया और गिरफ्तार होकर जेल गये इस प्रकार आजादी में आपने अपना योगदान दिया।

1. (i) ललितपुर जनपद स्वर्ण जयंती स्मारिका 1998
   प्रधान सम्पादक संतोष शर्मा पृष्ठ–93
   (ii) रजत नीराजना सम्पादक डा0 परशुराम शुक्ल विरही, पृष्ठ–93

36. श्री डालचन्द जैन[1] "शहीद"

आपका जन्म ललितपुर जनपद के कस्वा मड़ावरा में श्री ठाकुर दास जैन के यहाँ हुआ था। श्री डालचंद जैन "करो या मरो" की एक मात्र भावना के वशीभूत होकर सन् 1942 के राष्ट्र व्यापी आन्दोलन में कूद पड़े। आपने आन्दोलन के सेनानियों को मार्ग दर्शन दिया। अंग्रेज सरकार ने आपको भारत प्रतिरक्षा कानून की 38 वीं धारा के अंतर्गत 13 अगस्त 1942 ई0 को बन्दी बनाकर जेल में डाल दिया, आपको 1 वर्ष का कठोर कारावास दिया गया[2] परन्तु आपको अंग्रेजों का भय, आतंक विचलित न कर सका और अंग्रेजों से लोहा देश आजादी तक लेते रहे। आप समाजवादी विचारधारा के निष्ठावान कार्यकर्ता थे। आपके नेतृत्व ने देश को आजादी की ओर एक कदम अग्रसर किया।

1. (i) ललितपुर जनपद स्वर्ण जयंती स्मारिका 1998
   प्रधान सम्पादक संतोष शर्मा पृष्ठ–93
   (ii) रजत नीराजना सम्पादक डा0 परशुराम शुक्ल विरही, पृष्ठ–94
2. (i) स्वतंत्रता संग्राम पृष्ठ–63
   (ii) रजत नीराजना सम्पादक डा0 परशुराम शुक्ल विरही, पृष्ठ–94

37. स्वतंत्रता सेनानी श्री अजुध्या प्रसाद सेहारे[1]

आपका जन्म ललितपुर जनपद के ग्राम बानपुर में श्री परमानन्द के यहाँ हुआ था। श्री अजुध्या प्रसाद सेहारे बानपुर क्षेत्र के किसान कार्यकर्ता के रूप में प्रसिद्ध थे। जब देश की आजादी के लिए महात्मा गांधी जी द्वारा सन् 1942 में राष्ट्र व्यापी आन्दोलन छेड़ा उसमें आपने बानपुर क्षेत्र से अपनी भागीदारी दी और गिरफ्तार हुये तथा 1 वर्ष का कारावास और 100/- रूपये आर्थिक दण्ड प्राप्त किया।[2] देश की आजादी के लिए आपका योगदान आज भी स्मरणीय है।

---

1. (i) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक (झाँसी डिवीजन) एस0पी0 भट्टाचार्य सूचना विभाग उ0प्र0 से 1963 में प्रकाशित पृष्ठ-51
   (ii) रजत नीराजना सम्पादक डा0 परशुराम शुक्ल विरही, पृष्ठ-95

38. श्री मरदन यादव[1]

आपका जन्म ललितपुर जनपद के ग्राम बानपुर में श्री सुकू के यहाँ हुआ था। श्री मरदन यादव ने महाराजा मर्दन सिंह के गढ़ बानपुर में आजादी का अलख जगाते हुए किसान कार्यकर्ता के रूप में सन् 1942 के राष्ट्र व्यापी आन्दोलन में अपने साथियों के साथ कूद पड़े । आपको अंग्रेज सरकार ने भारत प्रतिरक्षा कानून की 38 वीं धारा के अंतर्गत 30 अगस्त 1942 को गिरफ्तार करके 1 वर्ष का कठोर कारावास एवं 100/- रूपये अर्थदण्ड दिया।[2] आजादी के लिए बानपुर क्षेत्र में आपका योगदान स्मरणीय है।

---

1. (i) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक पृष्ठ-76
   (ii) रजत नीराजना सम्पादक डा0 परशुराम शुक्ल विरही, पृष्ठ-96
2. (i) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक पृष्ठ-76
   (ii) रजत नीराजना सम्पादक डा0 परशुराम शुक्ल विरही, पृष्ठ-96

39. श्री ग्याप्रसाद[1]

आपका जन्म ललितपुर जनपद के ग्राम बानपुर में श्री जालम के यहाँ हुआ था। श्री ग्याप्रसाद भी बानपुर क्षेत्र (ललितपुर) के उन महान सेनानियों में से है जिन्होंने देश को आजाद कराने में यातनायें सही परन्तु अपने पथ से विचलित नहीं हुये। आपने सन् 1942 के "भारत छोड़ो" आन्दोलन में बानपुर क्षेत्र से योगदान दिया और बन्दी बनाये गये तथा 1 वर्ष की सजा और 100/- रूपये अर्थ दण्ड स्वीकार किया।

---

1. (i) ललितपुर जनपद स्वर्ण जयंती स्मारिका 1998
   प्रधान सम्पादक संतोष शर्मा पृष्ठ-93
   (ii) रजत नीराजना सम्पादक डा0 परशुराम शुक्ल विरही, पृष्ठ-96

40. श्री राजाराम पाण्डे[1]

आपका जन्म ललितपुर जनपद के ग्राम महरौनी में श्री वंशीधर के यहाँ हुआ था। श्री राजाराम पाण्डे अतिवादी नीति के समर्थक थे। आपकी निर्भीकिता को क्षेत्र के लोग आज भी याद रखे हुए है। 110 का मुकदमा आपने कैदी की हैसियत से लड़ा था, और स्वयं पैरोकारी की थी और छूटे थे। पुनः अंग्रेजों से मोर्चा लेने के लिए सन् 1942 के आन्दोलन में आपने सक्रिय रूप से भाग लिया और भारत प्रतिरक्षा कानून की 38वीं धारा के अंतर्गत 30 अगस्त 1942 ई0 को बन्दी बनाये गये। 1 वर्ष का कठोर कारावास तथा 100/- रूपये अर्थदण्ड दिया गया।[2] आपकी निडरता एवं सेवा को आज भी जनता याद किये हुए है। आपका आजादी के लिए दिया गया योगदान स्मरणीय रहेगा।

---

1. (i) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक एस0पी0 भट्टाचार्य पृष्ठ-80
   (ii) ललितपुर जनपद स्वर्ण जयंती स्मारिका 1998
   प्रधान सम्पादक संतोष शर्मा पृष्ठ-93
   (iii) रजत नीराजना सम्पादक डा0 परशुराम शुक्ल विरही, पृष्ठ-97
2. (i) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक एस0पी0 भट्टाचार्य पृष्ठ-80
   (ii) रजत नीराजना सम्पादक डा0 परशुराम शुक्ल विरही, पृष्ठ-97

41. स्वतंत्रता सेनानी श्री इहान चन्द्र[1]

श्री इहान चन्द्र जी का जन्म ललितपुर में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री केशवदास जी था। आपने स्वतंत्रता आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। आप भारत प्रतिरक्षा कानून की 38 वीं धारा के अंतर्गत 1942 के आन्दोलन में गिरफ्तार किये गये तथा 6 माह की कठिन कैद की सजा प्राप्त की।[2]

42. स्वतंत्रता सेनानी श्री खूबचन्द[3]

श्री खूबचंद जी का जन्म ललितपुर में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री आलम चन्द जी था। 1942 ई0 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लेने के कारण भारत प्रतिरक्षा कानून की धारा 38 के अंतर्गत 22 सितम्बर 1942 को गिरफ्तार कर 6 माह कठिन कैद तथा 500/- रूपये जुर्माने की सजा दी गयी।[4]

---

1. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, एस0पी0 भट्टाचार्य पृष्ठ-52
2. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ-52
3. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, एस0पी0 भट्टाचार्य पृष्ठ-57
4. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ-57

43. स्वतंत्रता सेनानी श्री गंगा[1]

आपका जन्म ललितपुर जनपद के क्रांतिकारी वीर राजा मर्दन सिंह के गढ़ वानपुर में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री हरप्रसाद था। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लेने के कारण भारत प्रतिरक्षा कानून की 38 वीं धारा के अंतर्गत 30 अगस्त 1942 ई0 को गिरफ्तार कर लिया गया तथा 1 वर्ष 3 माह कैद की सजा और 200/- रूपये जुर्माने की सजा दी गयी।[2]

44. स्वतंत्रता सेनानी श्री गनेश प्रसाद[3]

आपका जन्म ललितपुर जनपद में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री देवी प्रसाद था। आजादी की लड़ाई में भाग लेने के कारण सन् 1942 ई0 के भारत छोड़ो आन्दोलन के अन्तर्गत अंग्रेजी सरकार ने आपको गिरफ्तार कर लिया तथा 1 वर्ष कैद की सजा दी।[4] जिसे पाकर देश को आजाद कराने वालों की श्रेणी में आपका नाम जुड़ गया।

---

1. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ-58
2. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ-58
3. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ-58
4. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ-58

45. स्वतंत्रता सेनानी श्री गंगा[1]

बानपुर निवासी (ललितपुर) श्री गोपाल प्रसाद जी ने आजादी के आन्दोलन में 1942 ई0 में भाग लिया जिस कारण अंग्रेजी सरकार ने भारत प्रतिरक्षा कानून की 38वीं धारा के अंतर्गत 30 अगस्त 1942 ई0 को गिरफ्तार कर लिया गया तथा 1 वर्ष कैद और 100/- रूपये जुर्माने की सजा दी गयी।[2]

46. स्वतंत्रता सेनानी श्री घसीटे[3]

आपका जन्म ललितपुर जनपद के ग्राम वानपुर में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री कल्लू था। आप स्वतंत्रता आन्दोलन में सम्मिलित होने पर भारत प्रतिरक्षा कानून की 38वीं धारा के अंतर्गत 1942 ई0 को भारत छोड़ो आन्दोलन के समय को गिरफ्तार किये गये तथा 2 माह कैद की सजा प्राप्त की।[4]

1. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ-59
2. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ-59
3. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ-60
4. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ-60

47. स्वतंत्रता सेनानी श्री जयनारायण लिटौरिया[1]

आपका जन्म ललितपुर जनपद में काशीप्रसाद के घर हुआ था। आजादी की लड़ाई में आप भी पीछे नहीं रहे आपने 1942 ई0 के भारत छोड़ो आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया एवं कांग्रेस द्वारा चलाये गये कार्यक्रमों को ललितपुर क्षेत्र में क्रियान्वित किया। जिससे क्रुद्ध होकर अंग्रेजी सरकार ने आपको 9 माह कैद की सजा दी।[2]

48. स्वतंत्रता सेनानी श्री जानकी प्रसाद[3]

आपका जन्म ललितपुर जनपद के ग्राम गोना में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री सोनी था। आप 1942 ई0 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लेने के कारण भारत प्रतिरक्षा कानून की 38वीं धारा के अंतर्गत 30 अगस्त 1942 ई0 को गिरफ्तार किये गये तथा 1 वर्ष कैद और 100/- रूपये जुर्माने की सजा प्राप्त की।[4]

1. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ-61
2. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ-61
3. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ-61
4. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ-61

49. स्वतंत्रता सेनानी श्री जानकी प्रसाद[1]

आपका जन्म ललितपुर में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री पुत्तू था। आपने 1942 ई0 के भारत छोड़ो आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया था। ब्रिटिश सरकार ने आपको भारत प्रतिरक्षा कानून की 38वीं धारा के अंतर्गत 30 अगस्त 1942 ई0 को गिरफ्तार किये गये तथा 1 वर्ष कठिन कैद और 100/– रूपये जुर्माने की सजा दी गयी।[2]

50. स्वतंत्रता सेनानी श्री टेक चन्द[3]

आप ललितपुर निवासी थे। आपके पिता का नाम श्री प्रेमचन्द्र जी था। आजादी के इस दीवाने ने 1942 ई0 के आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया था। ब्रिटिश सरकार ने आपको प्रतिरक्षा कानून की 38वीं धारा के अंतर्गत 17 अगस्त 1942 ई0 को गिरफ्तार किये गये तथा 1 वर्ष कैद और 100/– रूपये जुर्माने की सजा दी गयी।[4]

---

1. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ–61एवं 62
2. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ–61 एवं 62
3. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ–62
4. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ–62

51. स्वतंत्रता सेनानी श्री ठाकुर चन्द जैन[1]

आपका जन्म ललितपुर में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री परमानन्द जैन था। आपने देश को आजाद कराने के लिए भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में सम्मिलित होकर कांग्रेस की नीतियों का ललितपुर में क्रियान्वयन किया। 1942ई0 के भारत छोड़ो आन्दोलन में ब्रिटिश सरकार ने आपको भारत प्रतिरक्षा कानून की 38वीं धारा के अंतर्गत 17 अगस्त 1942 ई0 को गिरफ्तार किये गये तथा 1 वर्ष कैद और 100/- रूपये जुर्माने की सजा प्राप्त की।[2]

52. स्वतंत्रता सेनानी श्री डमरू[3]

आपका जन्म ललितपुर जनपद के ग्राम बानपुर में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री गथायन था। आप 1942 ई0 में भारत छोड़ो आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लेने के कारण ब्रिटिश सरकार ने भारत प्रतिरक्षा कानून की 38वीं धारा के अंतर्गत 30 अगस्त 1942 ई0 को गिरफ्तार किये गये तथा 1 वर्ष 3 माह कैद और 200/- रूपये जुर्माने की सजा प्राप्त की।[4]

---

1. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ-62
2. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ-62
3. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ-63
4. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ-63

53. स्वतंत्रता सेनानी श्री घन्नालाल[1]

आपका जन्म ललितपुर जनपद में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री मूलचंद्र जी था। आपने देश को आजाद कराने के लिए 1942 ई0 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया जिस कारण ब्रिटिश सरकार ने आपको भारत प्रतिरक्षा कानून की 38वीं धारा के अंतर्गत 30 अगस्त 1942 ई0 को गिरफ्तार किये गये तथा 1 वर्ष कैद और 100/- रूपये जुर्माने की सजा प्राप्त की।

54. स्वतंत्रता सेनानी श्री नन्द किशोर[2]

नन्द किशोर जी का जन्म ललितपुर नगर में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री ढिल्लू सिंह जी था। 1942 ई0 के भारत छोड़ो आन्दोलन में आपने काँग्रेसी नेताओं का सहयोग किया तथा जुलूस आदि में भाग लिया जिस कारण ब्रिटिश सरकार ने आपको भारत प्रतिरक्षा कानून की 38वीं धारा के अंतर्गत 29 सितम्बर 1942 ई0 को गिरफ्तार किये गये तथा 1 वर्ष कैद और 200/- रूपये जुर्माने की सजा प्राप्त की।

---

1. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ-65
2. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ-65

55. स्वतंत्रता सेनानी श्री नवल चन्द[1]

आपका जन्म ललितपुर नगर में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री मूल चन्द जी था। आप ललितपुर जन समूह के साथ अंग्रेजों का विरोध करते हुए 1942 ई0 में गिरफ्तार हुए। अंग्रेज सरकार ने भारत छोड़ो आन्दोलन के सिलसिले में भारत प्रतिरक्षा कानून की 38वीं धारा के अंतर्गत 1 वर्ष कैद और 100/- रूपये जुर्माने की सजा प्राप्त की।[2]

56. स्वतंत्रता सेनानी श्री फुन्दा[3]

श्री फुन्दा जी का जन्म ललितपुर जनपद के ग्राम जाखलौन में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री गड़ांसा था। 1942 ई0 के भारत छोड़ो आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लेने के कारण ब्रिटिश सरकार ने भारत प्रतिरक्षा कानून की धारा 35(3) के अंतर्गत 23 सितम्बर 1942 ई0 को 2 वर्ष कठिन कैद की सजा सुनाई।[4] इस प्रकार जेल जाकर आप आजादी के दीवानों की कतार में खड़े हो गये।

---

1. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ-66
2. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ-66
3. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ-69
4. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ-69

57. स्वतंत्रता सेनानी श्री फूल चन्द[1]

श्री फूलचन्द जी का जन्म ललितपुर में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री बालचन्द था। आपने देश की आजादी के खातिर 1942 ई0 के भारत छोड़ो आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया तब अंग्रेज सरकार ने आपको भारत प्रतिरक्षा कानून की 38वीं धारा के अंतर्गत 6 माह कठिन कैद की सजा दी गयी।[2]

58. स्वतंत्रता सेनानी श्री बल्देव सिंह[3]

श्री बल्देव सिंह जी का जन्म ललितपुर जनपद के ग्राम बानपुर में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री सोवत सिंह था। क्रांतिकारी स्थान बानपुर में ही आपने अंग्रेजों का विरोध किया तथा कांग्रेस की नीतियों को अपनाया। 1942 ई0 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लेने के कारण अंग्रेज सरकार ने आपको भारत प्रतिरक्षा कानून की 38वीं धारा के अंतर्गत 30 अगस्त 1942 ई0 को गिरफ्तार किये गये तथा 1 वर्ष कैद और 100/- रूपये जुर्माने की सजा प्राप्त की।[4]

---

1. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ-69
2. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ-69
3. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ-70
4. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ-70

59. स्वतंत्रता सेनानी श्री बागचन्द[1]

आपका जन्म ललितपुर नगर में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री रामप्रसाद जी था। 1942ई0 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया जिस अंग्रेज सरकार ने कारण भारत प्रतिरक्षा कानून की 38वीं धारा के अंतर्गत 29 अगस्त 1942 ई0 को 1 वर्ष कैद और 100/- रूपये जुर्माने की सजा प्राप्त की।[2]

60. स्वतंत्रता सेनानी श्री बाबूलाल[3]

श्री बाबूलाल जी का जन्म ललितपुर में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री राजनदास था। आपने 1942ई0 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया तब अंग्रेज सरकार ने गिरफ्तार करके आपको भारत प्रतिरक्षा कानून की 38वीं धारा के अंतर्गत 17 अगस्त 1942 ई0 से 16 सितम्बर 1943 ई0 तक लगभग 1 वर्ष कैद और 100/- रूपये जुर्माने की सजा प्राप्त की।[4]

1. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ-70 एवं 71
2. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ- 70 एवं 71
3. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ-71
4. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ-71

61. स्वतंत्रता सेनानी श्री ब्रिजनन्दन[1]

आपका जन्म ललितपुर जनपद में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री नाथूदास था। आपने 1942 ई0 के भारत छोड़ो आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया जैसे ही आपकी गतिविधियों की जानकारी ब्रिटिश अधिकारियों को हुयी तो उन्होंने आपको गिरफ्तार करके भारत प्रतिरक्षा कानून की 38वीं धारा के अंतर्गत 13 अगस्त 1942 ई0 को 1 वर्ष कठिन कैद की सजा दी।[2]

62. स्वतंत्रता सेनानी श्री भग्गा[3]

आपका जन्म ललितपुर में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री सुन्ना था। आपने ललितपुर में निवास करते हुए यहाँ के कांग्रेसी नेताओं के भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया। आन्दोलन में भाग लेने के कारण आपको अंग्रेज सरकार ने 4 माह की कैद तथा 50/- रूपये जुर्माने की सजा दी।[4]

1. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ-73
2. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ-73
3. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ-73
4. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ-73

63. स्वतंत्रता सेनानी श्री भगवानदास[1]

स्वतंत्रता सेनानी श्री भगवानदास जी का जन्म जनपद ललितपुर के ग्राम बानपुर में हुआ था और यही आपका निवास स्थान एवं विरोध स्थल था। आपके पिता का नाम श्री कनई था। आपने 1942 ई0 के भारत छोड़ो आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। अंग्रेज सरकार ने आपको गिरफ्तार करके भारत प्रतिरक्षा कानून की 38वीं धारा के अंतर्गत 30 अगस्त 1942 ई0 को 1 वर्ष कठिन कैद और 100/- रूपये जुर्माने की सजा दी।[2]

64. स्वतंत्रता सेनानी श्री भगवानदास[3]

स्वतंत्रता सेनानी श्री भगवानदास का निवास स्थान जनपद ललितपुर का ग्राम बानपुर था। आपके पिता का नाम श्री कुन्जुलाल था। 1942 ई0 के आन्दोलन में भाग लेने के कारण ब्रिटिश अधिकारियों ने आपको गिरफ्तार करके भारत प्रतिरक्षा कानून की 38वीं धारा के अंतर्गत 30 अगस्त 1942 ई0 को 1 वर्ष कैद तथा 100/- रूपये जुर्माने की सजा दी।[4]

1. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक (झाँसी डिवीजन), पृष्ठ–73
2. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक (झाँसी डिवीजन), पृष्ठ–73
3. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ–73
4. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ–73

65. स्वतंत्रता सेनानी श्री मूलन[1]

स्वतंत्रता सेनानी श्री मूलन जी का जन्म ललितपुर में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री गम्भीर था। आपने देश को आजाद कराने के खातिर 1942 ई0 के भारत छोड़ो आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया था। अंग्रेज सरकार ने आपको गिरफ्तार कर भारत प्रतिरक्षा कानून की 38वीं धारा के अंतर्गत 30 अगस्त 1942 ई0 को 1 वर्ष कठिन कैद तथा 100/- रूपये जुर्माने की सजा दी।[2] जिसे आपने सहज स्वीकार किया।

66. स्वतंत्रता सेनानी श्री मोतीलाल[3]

स्वतंत्रता सेनानी श्री मोतीलाल जी का जन्म ललितपुर में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री किशोरी लाल था। आपने कांग्रेस की नीतियों का पालन करते हुए 1942 ई0 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया और ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा गिरफ्तार किये गये। अंग्रेज सरकार ने भारत प्रतिरक्षा कानून की 38वीं धारा के अंतर्गत 29 अगस्त 1942 ई0 को 1 वर्ष कठिन कैद तथा 100/- रूपये जुर्माने की सजा दी।[4]

1. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ-77
2. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ-77
3. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ-78
4. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ-78

67. स्वतंत्रता सेनानी श्री रधुवीर सिंह[1]

स्वतंत्रता सेनानी श्री रधुवीर सिंह जी का जन्म स्थल बानपुर था। आपके पिता का नाम श्री भगत सिंह था। आपने स्वतंत्रता आन्दोलन में सक्रिय रूप से 1942 ई0 में योगदान दिया जिस कारण अंग्रेज सरकार ने आपको 1 वर्ष कैद की सजा दी।[2] स्वतंत्र भारत ने केन्द्रीय पेंशन देकर आपको सम्मानित किया।[3]

66. स्वतंत्रता सेनानी श्री हरप्रसाद[4]

स्वतंत्रता सेनानी श्री हरप्रसाद जी का जन्म एवं निवास स्थल ललितपुर नगर था। आपके पिता का नाम श्री रामपाल था। स्वतंत्रता आन्दोलन में आपने सक्रिय रूप से भाग लिया। 1942 ई0 के भारत छोड़ो आन्दोलन के सिलसिले में आप गिरफ्तार किये गये। अंग्रेज सरकार ने आपको भारत प्रतिरक्षा कानून की 38वीं धारा के अंतर्गत 30 अगस्त 1942 ई0 को 1 वर्ष कठिन कैद तथा 100/- रूपये जुर्माने की सजा दी।[5]

---

1. (i) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ–79
   (ii) ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका, पृष्ठ–93
2. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक पृष्ठ–79
3. झाँसी दर्शन–मोतीलाल पृष्ठ–34
4. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ–91
5. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ–91

69. स्वतंत्रता सेनानी श्री ठाकुर देवी सिंह[1]

स्वतंत्रता सेनानी श्री ठाकुर देवी सिंह जी का जन्म 1910 ई0 में ग्राम – वानपुर जनपद– ललितपुर में हुआ था।[2] आपके पिता का नाम श्री सरदार सिंह था।[3] 1857 ई0 के स्वतंत्रता संग्राम में झांसी की रानी के साथ लड़ने वाले वानपुर नरेश मर्दनसिंह का यह गढ़ कभी भी विद्रोह में पीछे नहीं रहा हमेशा अंग्रेजी राज्य के विरूद्ध संघर्ष करता रहा। इसी प्रकार श्री देवीसिंह वंश परम्परा का गौरव बढ़ाते हुये राष्ट्रीय आन्दोलन में सम्मिलित हुये। आप पं. श्री नन्दकिशोर किलेदार एवं पं. श्री रामेश्वर प्रसाद शर्मा जी के नेतृत्व में राष्ट्रीय आन्दोलन में कार्यरत रहे।[4] और 1942 ई0 के भारत छोड़ो आन्दोलन के अन्तर्गत भारत रक्षा कानून की 38वीं धारा में 30 अगस्त 1942 को गिरफ्तार होकर देश सेवा हेतु 1 वर्ष जेल तथा 100 रूपये का अर्थदण्ड स्वीकार किया।[5] और बानपुर का गौरव बनाये रखा।

---

1. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग–1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, पृष्ठ–64
   (2) ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका – 1998, सं. – संतोष शर्मा, पृष्ठ – 93
2. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 55
3. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 55
4. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 56
5. (1) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भाग–1 (झांसी डिवीजन), एस.पी.भट्टाचार्य, पृष्ठ–64
   (2) रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 56

सन् 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में ललितपुर क्षेत्र से बन्दी बनाये गये लोगों की सूची निम्न प्रकार है।[1]

क्रमांक	नाम व्यक्ति	स्थान
1	श्री नन्द किशोर किलेदार	ललितपुर
2	श्री ब्रजनंदन शर्मा	ललितपुर
3	श्री ब्रजनंदन किलेदार	ललितपुर
4	श्री मथुरा प्रसाद बैद्य	ललितपुर
5	श्री बृन्दावन इमलिया	ललितपुर
6	श्री हरीराम चौबे	ललितपुर
7	श्री हुकुम चंद बुखारिया(तन्मय)	ललितपुर
8	श्री मदन लाल किलेदार	ललितपुर
9	श्री उत्तन चंद कठरया	ललितपुर
10	श्री शम्भूदयाल संज्ञा	उत्तमधाना, ललितपुर
11	श्री हरपाल ईसाई	ललितपुर
12	श्री मदन लाल जी	ललितपुर
13	श्री हुकुम चंद बड़घरिया	ककरूआ, ललितपुर
14	श्री रामचन्द्र जैन	ललितपुर
15	श्री घनश्याम नाई	ललितपुर
16	श्री परमेष्ठीदास जैन	ललितपुर
17	श्रीमती कमला देवी जैन	ललितपुर
18	श्री जानकी प्रसाद पाटकार	ललितपुर
19	श्री सुखलाल इमलिया	ललितपुर
20	श्री धन्ना लाल गुदा	ललितपुर
21	श्री प्यारेलाल कुशवाहा	ललितपुर
22	श्री शिखर चन्द सिंघई	ललितपुर
23	श्री बाबूलाल घी वाले	ललितपुर
24	श्री रतीराम हुण्डैत	ललितपुर

1. रजत नीराजना – डॉ. परशुराम शुक्ल, पृष्ठ – 55

25	श्री हरीकृष्ण देवलिया	ललितपुर
26	श्री अभिनंदन कुमार टडैया	ललितपुर
27	श्री ताराचंद कजिया वाले	ललितपुर
28	श्री मोतीलाल टडैया	ललितपुर
29	श्री बाबूलाल माली "शहीद"	ललितपुर
30	श्री डालचंद जैन	ललितपुर
31	श्री खूबचन्द पुष्प	पिपरई, ललितपुर
32	श्री हरप्रसाद शर्मा	पिपरई, ललितपुर
33	श्री भैयालाल यादव	धौर्रा, ललितपुर
34	श्री जालम यादव	कपासी (धौर्रा), ललितपुर
35	श्री मणिराम कंचन	तालबेहट, ललितपुर
36	श्री सुदामा प्रसाद गोस्वामी	तालबेहट, ललितपुर
37	श्री रामदास दुबे	बाँसी, ललितपुर
38	श्री भैरों प्रसाद राय	बार, ललितपुर
39	श्री गजराज सिंह	बानपुर, ललितपुर
40	श्री रामलाल यादव	बानपुर, ललितपुर
41	श्री गोरेलाल वर्मा	बानपुर, ललितपुर
42	श्री जयराम सेहारे	बानपुर, ललितपुर
43	श्री मंगल सिंह कठरिया	बानपुर, ललितपुर
44	श्री भूपत राम	बानपुर, ललितपुर
45	श्री अनन्दी	बानपुर, ललितपुर
46	श्री अजुध्या प्रसाद सेहारे	बानपुर, ललितपुर
47	श्री मरदन यादव	बानपुर, ललितपुर
48	श्री ग्या प्रसाद	बानपुर, ललितपुर
49	श्री भगवानदास ज्योतिषी	कैलगुवाँ, ललितपुर
50	श्री कामरेड चन्दन सिंह	जखौरा, ललितपुर
51	श्री शिवप्रसाद जैन	जाखलौन, ललितपुर

52	श्री राजधर	जाखलौन, ललितपुर
53	श्री हरप्रसाद लोधी	बरौदा बिजलौन(जाखलौन), ललितपुर
54	श्री धनश्यामदास	लुहरी(मड़ावरा), ललितपुर
55	श्री प्रो0 खुलाल चंद	गोरा (मड़ावरा), ललितपुर
56	श्री राजाराम पाण्डे	महरौनी, ललितपुर
57	श्री खेमचंद चौरसिया	पाली, ललितपुर
58	श्री हरदास बाबू	पाली, ललितपुर
59	श्री अयोध्या प्रसाद चौरसिया	पाली, ललितपुर
60	श्री कुन्दन लाल मलैया	सादूमर, ललितपुर
61	श्री गोपालदास जैन	सादूमर, ललितपुर
62	श्री कुन्जी लाल स्वर्णकार	सादुमर, ललितपुर
63	श्री तेज सिंह	सैदपुर, ललितपुर
64	श्री किशोर सिंह	जखौरा, ललितपुर

भारत छोडो आन्दोलन १९४२ ई० में ललितपुर क्षेत्र से बन्दी बनाये गये व्यक्तियों की सूची[1]

क्रमांक	नाम व्यक्ति	पिता का नाम	स्थान
1	श्री अभय कुमार तराया	श्री पन्ना लाल	ललितपुर
2	श्री अयोध्या प्रसाद	श्री परमाले	बानपुर, ललितपुर
3	श्री आनन्दी	श्री बिन्दे	बानपुर, ललितपुर
4	श्री इहान चन्द	श्री केशवदास	ललितपुर
5	श्री उत्तमचन्द	श्री मुरलीधर	ललितपुर
6	श्री खूव चन्द	श्री आलम चन्द	ललितपुर
7	श्री खूब चन्द जैन	श्री खुसाल चन्द जैन	पिपरई, ललितपुर
8	श्री गंगा	श्री हरप्रसाद	बानपुर, ललितपुर
9	श्री गजराज सिंह	श्री बख्तावर सिंह	बानपुर, ललितपुर
10	श्री गनेश प्रसाद	श्री देवी प्रसाद	ललितपुर
11	श्री गुनुआ	श्री उदित	बानपुर ललितपुर
12	श्री गोपाल प्रसाद		बानपुर, ललितपुर
13	श्री गोली चन्द जैन	श्री सरहूमल	महरौनी,ललितपुर
14	श्री गोरे लाल चौरसिया	श्री टुण्डे	पाली, ललितपुर
15	श्री घसीटे	श्री कल्लू	बानपुर, ललितपुर
16	श्री चन्दन सिंह	श्री राम प्रसाद	जखौरा, ललितपुर
17	श्री जयनारायण लिटौरिया	श्री काशी प्रसाद	ललितपुर
18	श्री जानकी प्रसाद	श्री श्री सोनी	गौना ललितपुर
19	श्री जानकी प्रसाद	श्री पुत्तू	ललितपुर
20	श्री जानकी प्रसाद पटकार	श्री नारायणदास उर्फ पट्टी	ललितपुर
21	श्री जैराम	श्री कन्हैया लाल	बानपुर, ललितपुर
22	श्री टेक चन्द	श्री प्रेम चन्द	ललितपुर

1. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक (झांसी डिवीजन), एस० पी० भट्टाचार्य, 1963 ई० में सूचना विभाग उ० प्र० लखनऊ से प्रकाशित।

23	श्री ठाकुर चन्द जैन	श्री परमानन्द जैन	ललितपुर
24	श्री डमरू	श्री गथायन	बानपुर, ललितपुर
25	श्री दाल चन्द	श्री ठाकुरदास	ललितपुर
26	श्री देवी सिंह	श्री सरदार सिंह	बानपुर, ललितपुर
27	श्री धन्ना लाल	श्री मूलचन्द	ललितपुर
28	श्री धन्न लाल गुरा	श्री मूल चन्द	गुढा, ललितपुर
29	श्री नन्द किशोर	श्री दिल्लू सिंह	ललितपुर
30	श्री नन्द किशोर किलेदार	श्री सरजू प्रसाद	ललितपुर
31	श्री नवल चन्द	श्री मूल चन्द	ललितपुर
32	श्री प्यारेलाल	श्री सालिगराम	बानपुर ललितपुर
33	श्री फुन्दा	श्री गइांसा	जाखलौन ललितपुर
34	श्री फूलचन्द	श्री बालचंद	ललितपुर
35	श्री बल्देव सिंह	श्री सोवत सिंह	बानपुर, ललितपुर
36	श्री बागचन्द	श्री रामप्रसाद	ललितपुर
37	श्री बाबूलाल	श्री राजनदास	ललितपुर
38	श्री बाबूलाल	श्री धर्मदास	ललितपुर
39	श्री बाबूलाल फूलमाली	श्री ग्या प्रसाद	ललितपुर
40	श्री ब्रजनन्दन	श्री नारायण	ललितपुर
41	श्री ब्रजनन्दन किलेदार	श्री नन्द किशोर किलेदार	ललितपुर
42	श्री ब्रिजनन्दन	श्री नाथूदास	ललितपुर
43	श्री भग्गा	श्री सुन्ना	ललितपुर
44	श्री भगवानदास	श्री कनई	वानपुर, ललितपुर
45	श्री भगवानदास	श्री कुन्नू लाल	वानपुर, ललितपुर
46	श्री भगवानदास	श्री खुम्मीलाल	कैलगुवॉं, ललितपुर
47	श्री भूपत	श्री जालम	वानपुर, ललितपुर
48	श्री भैंट्यालाल यादव	श्री सीताराम	ललितपुर
49	श्री भैरों प्रसाद जैसवाल	श्री मूलचन्द	बार, ललितपुर
50	श्री मंगल सिंह कालेरिया	श्री निहाल सिंह	बानपुर, ललितपुर

51	श्री मथुरा प्रसाद	श्री नन्दराम गेव्दोरा	बार, ललितपुर
52	श्री मदनलाल किलेदार	श्री छोटेलाल किलेदार	ललितपुर
53	श्री मदन सिंह	श्री सेकू	बानपुर, ललितपुर
54	श्री मरदान चौधरी	श्री गम्भीर	ककरूआ, ललितपुर
55	श्री मूलन	श्री गम्भीर	ललितपुर
56	श्री मोतीलाल	श्री किशोरी लाल	ललितपुर
57	श्री मोती लाल तटैया	श्री गिरधारी लाल	ललितपुर
58	श्री रघुवीर सिंह	श्री भगत सिंह	बानपुर ललितपुर
59	श्री राजधर	श्री जनतराम	जाखलौन, ललितपुर
60	श्री राजाराम	श्री बंसीधर	महरौनी ललितपुर
61	श्री रामचन्द	श्री प्रभुदास	ललितपुर
62	श्री रामदयाल	श्री जगन	बरौदाडॉग,ललितपुर
63	श्री रामदास दुबे	श्री हरदास दुबे	बॉसी, ललितपुर
64	श्री शम्भू दयाल संज्ञा	श्री शिवप्रसाद	ललितपुर
65	श्री शिखर चन्द सिंघई	श्री कुंदन लाल सिंघई	ललितपुर
66	श्री शिवप्रसाद जैन	श्री उदयजीत	जाखलौन, ललितपुर
67	श्री संतोष सिंह		ललितपुर
68	श्री सुखलाल	श्री पूरन चन्द	ललितपुर
69	श्री सुदामा प्रसाद गोस्वामी	श्री रामेश्वर प्रसाद गोस्वामी	तालबेहट ललितपुर
70	श्री हरदास	श्री गजराज	जाखलौन, ललितपुर
71	श्री हरप्रसाद	श्री रामपाल	ललितपुर
72	श्री हुकुम चन्द	श्री फूल चन्द	ललितपुर
73	श्री हुकुम चन्द बरघरिया	श्री परमानन्द	ललितपुर

---

1. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक (झाँसी डिवीजन) एस0पी0 भट्टाचार्य, उत्तर प्रदेश सूचना विभाग से 1963 में प्रकाशित।

(6) ब्रिटिश दमनात्मक तरीकों से आक्रोश :-

8 अगस्त 1942 ई0 को अखिल भारतीय क़ांग्रेस कमेटी की मीटिंग बम्बई में हुयी जिसमें प्रसिद्ध "भारत छोड़ो" प्रस्ताव स्वीकार किया गया।[1] अंग्रेजी सरकार ने तुरन्त कार्यवाही करने का निर्णय किया और 9 अगस्त की सुवह के प्रारम्भिक घण्टों में सभी कांग्रेसी नेता गिरफ्तार कर लिये गये तथा कांग्रेस एक गैर कानूनी संस्था करार कर दी गयी[2] अंग्रेजी सरकार ने सन् 1942 के आन्दोलन को कुचलने के लिए सब कुछ किया प्रेस का पूरी तरह गला घोंट दिया गया। प्रदर्शन कर रही भीड़ों पर मनीशगनों से गोलियाँ तथा हवा में बम भी बरसाए गए। कैदियों को यातनाएं दी गयी अनेक नगरों और कस्वों को सेना ने अपने नियंत्रण में ले लिया।विद्रोही गांवों को जुर्माना के रूप में भारी-भारी रकमें देनी पड़ी और गांव वालों पर सामूहिक रूप से कोड़े बरसाए गए। सरकारी हिसाब के अनुसार 1942 ई0 के अंतिम पाँच महीनों में साठ हजार से अधिक आदमी गिरफ्तार हुए। 18000 बिना मुकदमे चलाये हवालत में रखे गये तथा पुलिस या मिलिटरी की फायरिंग (गोली चलाने) से 940 मारे गये एवं 1630 घायल हुए।[3] आन्दोलन की तीव्रता के सम्बन्ध में उ0प्र0 के गवर्नर हैलेट ने वायसराय लिनलिथगो को लिखा कि "आधिकारियों की यह गलती थी कि उन्होंने यह मान लिया था कि आन्दोलन पुराने तरीके से ही चलेगा- अर्थात "शराब की दुकानों, सरकारी कार्यालयों आदि पर धरना देना और बहिष्कार करना.............. या भारत छोड़ो के नारे लगाना।[4]

आन्दोलन की तीव्रता का अन्दाजा अकेले उ0प्र0 में 9 अगस्त से 30 नवम्बर तक निम्न विवरण से लगाया जा सकता है।[5]

---

1. आधुनिक भारत-विपिन चन्द्र, पृष्ठ-229
   प्रकाशक-N.C.E.R.T. अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली।
2. भारत का बृहद इतिहास खण्ड-3, पृष्ठ-355
   लेखक रमेश चन्द्र मजुमदार, हेमचन्द्र चौधरी कालिकिंकर दन्त।
3. भारत का बृहद इतिहास खण्ड-3, पृष्ठ-356
   लेखक रमेश चन्द्र मजुमदार, हेमचन्द्र चौधरी कालिकिंकर दन्त।
4. आधुनिक भारत का इतिहास-डा0 आर0एस0 शुक्ल पृष्ठ-587
5. आधुनिक भारत का इतिहास-डा0 आर0एस0 शुक्ल पृष्ठ-589

विवरण	प्रान्त उ0प्र0
पुलिस ने गोली चलायी	70
हताहत व्यक्तियों की सं0(सांघातिक)	133
सांघातिक नहीं	227
हताहत पुलिस कर्मचारियों की सं0(सांघातिक)	24
सांघातिक नहीं	12
क्षतिग्रस्त/विनष्ट पुलिस स्टेशनों की सं0	21
गिरफ्तारियाँ	11000
विशेष अदालतों की सं0	283
सिद्ध दोष व्यक्तियों की सं0	8062

यह स्थिति अकेले उ0प्र0 की ही नहीं सम्पूर्ण भारत की थी। सरकार के दमनात्मक कार्यवाही से लोगों के क्रोध की ज्वाला भड़क उठी। पूरे भारत में जगह-जगह पर उपद्रव शुरू हो गया। गिरफ्तारी से बचे हुए कांग्रेसी नेता जैसे जय प्रकाश नारायण, राम मनोहर लोहिया तथा अरूणा आसफ अली ने भूमिगत रहते हुए आन्दोलन को निर्देश दिया। प्रत्यक्ष नेतृत्व के अभाव के बाद भी यह आन्दोलन अपने उत्कर्ष तक पहुँचा। इस आन्दोलन में छात्रों, दुकानदारों, मजदूरों तथा महिलाओं ने एक साथ सड़कों तथा गलियों में जुलूस निकाले। पुलिस के ज्यादतियों के खिलाफ लोगों ने सरकारी इमारतों, डाक खानों तथा थानों पर आक्रमण किया एवम् यातायात तथा संचार के साधनों को नष्ट किया।

कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं की गिरफ्तारी के बाद पहली बार राम मनोहर लोहिया, बी.एम. खकर, नादिमान अब्रवाद, प्रिंटर तथा ऊषा मेहता ने राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय समाचारों को लोगों तक पहुँचाने के उद्देश्य से कांग्रेस रेडियों स्टेशन स्थापित करने का प्रयास किया ये रेडियों स्टेशन बम्बई तथा नासिक में कार्यरत थे। गुप्त रूप से कार्य कर रहे इन रेडियों प्रसारण केन्द्रों को सरकार ने 12 नवम्बर 1942 ई0 को जब्त कर लिया। बुन्देलखण्ड में इस आन्दोलन में 1500 सत्याग्रही गिरफ्तार किये गये तथा 4 व्यक्ति शहीद हुए।[1] इसका तात्पर्य है कि इस क्षेत्र के लोगों का आक्रोश भी कम नहीं था अकेले जिला झाँसी में सूचना

1. झाँसी गजेटियर -ई0वी0 जोशी पृष्ठ-72

विभाग उत्तर प्रदेश की स्वतंत्रता संग्राम के सैनानियों की सूची के अनुसार लगभग 200 व्यक्ति बन्दी बनाये गये थें।[1] जिसमें ललितपुर क्षेत्र से 70 व्यक्ति थे। एवं शहीद होने वालों में बाबूलाल फूलमाली भी थे।

श्री मदनलाल किलेदार को अंग्रेज अफसरों को पीटने तथा सरकारी कार्यालयों में तोड़-फोड़ तथा आगजनी फैलाने के कारण गिरफ्तार किया गया तथा 1 वर्ष की सजा और 100/- रूपये जुर्माना लगाया गया।[2] तालबेहट क्षेत्र के श्री सुदामा प्रसाद गोस्वामी को जुलूस निकालने तथा नारे लगाने के कारण गिरफ्तार किया तथा कुर्की कर ली गयी।[3] ललितपुर के ही छात्र श्री रतीराम हुण्डैत जो पर्चे बाँटने तथा तोड़-फोड़ के बारंट में बन्दी बनाया गया तथा राजकीय विद्यालय से नाम काट दिया गया। तथा 3 माह की सजा दी गयी।[4]

इस प्रकार जनता का आक्रोश सब जगह देखने को मिला तालबेहट, ललितपुर नगर, महरौनी, मड़ावरा, पाली, बाँसी, बार, बानपुर, कैलगुवाँ, सैदपुर, सादूमर, जखौरा, जाखलौन, पिपरई, धौर्रा आदि सभी स्थानों से लोगों ने 1942 ई0 के आन्दोलन में भागीदारी दी तथा सरकार के दमनात्मक तरीकों के प्रति अपना आक्रोश प्रकट किया।

---

1. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, एस0पी0 भट्टाचार्य, सूचना विभाग
2. रजत नीराजना- डा0 परशुराम शुक्ल पृष्ठ-21
3. 27 दिसम्बर 1990 का दैनिक भास्कर, पृष्ट सं0-4
4. रजत नीराजना पृष्ठ-52

अध्याय - नवम्

उपसंहार

अध्याय - नवम्

उपसंहार

जनपद ललितपुर जो कि पुराने जनपद चन्देरी एवं नाराहट ताल्लुका का एक भाग एवं वानपुर व शाहगढ़ के राजाओं का पुराना कस्बा था। 1860ई0 में ब्रिटिश सरकार के प्रशासन का एक नया जिला बना था लेकिन दिसम्बर 1891ई0 में जनपद ललितपुर का विलीनीकरण झांसी जनपद में कर दिया गया था। 1 मार्च 1974 ई. को जनता कि मांग पर समुचित विकास हेतु झांसी जनपद से ललितपुर महरौनी तहसीलों को अलग कर नया जनपद ललितपुर बनाया गया। इस जनपद में पूर्व ऐतिहासिक काल से लेकर अंग्रेजी शासन काल तक के क्रमिक पाषाणकाल वैदिक काल से महाकाव्यकाल, चेदिकाल, नन्दकाल, मौर्य काल, शुंग काल, कुषाण काल, गुप्त काल, वर्द्धन काल, आयुध काल, गोंड काल, गुर्जर प्रतिहार काल, चन्देल काल, सल्तनत काल, मुगल काल, बुन्देला शासन काल और अंग्रेजी शासन काल के साक्ष्य प्राप्त होते हैं। वर्तमान काल का यह पिछड़ा और गरीब जनपद प्राचीन और मध्य कालों में सामाजिक दृष्टि से सभ्य, सरल, शान्त धार्मिक उदारता तथा निष्ठा से सम्पन्न और आर्थिक दृष्टि से पर्याप्त सम्पन्न था।

परन्तु जैसे ही अंग्रेजी शासकों ने ललितपुर क्षेत्र के राजे रजवाड़ों एवं जमींदारों पर भारी कर थोपा तो 1842ई0 में नाराहट (ललितपुर जनपद) के जमींदार मधुकर शाह एवं उनके अनुज गणेज जू ने विद्रोह का झण्डा बुलन्द कर दिया और ललितपुर क्षेत्र के अधिकतर जागीरदारों गिरार के दीवान पारीक्षत, शाहगढ़ के राजा बखतवली सिंह का छोटा भाई लक्ष्मणसिंह, मदनपुर के गौंड राजा डेलनशाह, चंद्रपुर के राजा जवाहर सिंह, हीरापुर के लोधी राजा हिरदेशाह आदि को साथ लेकर 1842 - 43 ई0 में विश्व के महान सेनापतियों लेफ्टिनेंट फार्गोसन, केप्टिन हेमिल्टन आदि जैसों से लोहा लिया और उन्हें बता दिया कि यह क्षेत्र चुप चाप आपकी क्रूर नीतियों को सहन नहीं करेगा। इसके साथ ही 1857 ई0 से 1947 ई0 तक का बुन्देलखण्ड के ललितपुर क्षेत्र का स्वतंत्रता आन्दोलन, इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। क्योंकि 1857ई0 के प्रथम स्वतंत्रता आन्दोलन में झांसी की रानी लक्ष्मीबाई के साथ ललितपुर क्षेत्र के वानपुर नरेश मर्दनसिंह, एवं शाहगढ़ के राजा बखतवली ने विद्रोह का झण्डा उठाया था। और कालपी के मैदान में मर्दनसिंह, तांत्याटोपे, नाना साहब, शाहगढ़ के राजा बखतवली, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई ने संयुक्त रूप से अंग्रेजों के साथ भीषण युद्ध लड़ा था। पं. झुनारे रावत

ने 1857 ई0 के स्वतंत्रता समर में अंग्रेजों से लोहा लिया था और फॉसी पर चढ़कर शहीद हुये थे। ललितपुर नगर के दुर्भाग्य से यह स्वराज्य सेना हार गयी और अन्त में 28 सितम्बर 1858ई0 को अंग्रेजों ने वानपुर के राजा मर्दनसिंह को गिरफ्तार कर लाहौर जेल भेज दिया। ग्वालियर के युद्ध में पराजित होने के पश्चात तांत्याटोपे नर्मदा पार कर नागपुर में विद्रोह को गति देना चाहते थे उस समय तांत्याटोपे, राव साहब एवं बॉदा के नबाब अली बहादुर द्वितीय अंग्रेजों को चकमा देते हुए जाखलौन देवगढ़ (ललितपुर) से बेतवा पार कर होशंगावाद के पास से नर्मदा पार कर नागपुर में प्रवेश किया। तात्या के ललितपुर आने पर यहाँ विद्रोह ने तीव्रता पकड़ी और वह 1869ई0 - 70 ई0 तक छुट-पुट रूप में चलता रहा। सन् 1857ई0 की क्रांति के नायक मुगल बादशाह वहादुरशाह जफर द्वितीय का पुत्र फिरोजशाह, तांत्याटोपे, शाहगढ़ के नबाब बख़्त वलीशाह, बानपुर के राजा मर्दनसिंह, बिठूर के नाना घोड़ोंपंत का भतीजा रावसाहब, बॉदा के नबाब अली बहादुर द्वितीय आदि सभी ललितपुर क्षेत्र के बालाबेहट, देवगढ़ और [illegible] पापरा के घने जंगलों में शरण पाकर क्रांतिकारी गतिविधियों का एक लम्बे समय तक संचालन करने में सफल हुये थे। कुछ समय के लिये स्वतंत्रता आन्दोलन कुछ थम सा गया परन्तु 20वीं शताब्दी के प्रारम्भ में ही 1905 के बंगाल विभाजन एवं महात्मा गांधी जी का भारतीय राजनीति में प्रवेश से पुनः स्वतंत्रता आन्दोलन लहरा उठा।

गांधी जी के नेतृत्व से भारतीय कांग्रेस में एक नई चेतना का प्रसार हुआ। गांधी जी ने अपने दर्शन के दो महत्वपूर्ण अंग-सत्य एवं अहिंसा को अपने आन्दोलनों का प्रमुख प्रयोग बनाया। इन दो शस्त्रों, सत्य और अहिंसा का प्रयोग गांधी जी दक्षिण अफ्रीका में सरकार के खिलाफ कर चुके थे। भारत में जब उन्होने सत्याग्रह के सिद्धान्त का प्रयोग राष्ट्रीय आन्दोलन में किया तो उन्होने भारतीय जनता से ब्रिटिश सरकार के अत्याचार के विरूद्ध अहिंसात्मक प्रतिरोध करने का आग्रह किया। इसके फलस्वरूप लाखों व्यक्ति इस संघर्ष में सम्मिलित हो गये गांधी जी के नेतृत्व में शक्तिशाली जन आन्दोलनों की शुरूआत हुयी। इन आन्दोलनों में कानून भंग किये, शान्तिपूर्ण प्रदर्शन किये, न्यायालयों का वायकाट किया, हड़तालें की, शिक्षा संस्थाओं का वायकाट किया, शराब और विदेशी वस्तुऐं बेचने वाली दुकानों पर घरना दिया गया, सरकार को कर (टिक्स) नहीं दिया गया और समस्त व्यापार ठप्प कर दिया। यह सभी कार्य अहिंसात्मक थे। इन कार्यो का गहरा प्रभाव समाज के सभी वर्गो पर पड़ा। इन आन्दोलनों के कारण वीरता तथा लोगों में आत्मविश्वास की भावना उत्पन्न हुयी। जब सरकार ने जनता का दमन किया तो लाखों व्यक्तियों ने सहर्ष इस अत्याचार को सहन किया और निर्भीक होकर अपने को गिरफ्तारियों

के लिये प्रस्तुत किया, और लाठी प्रहार, गोलियों की बौछार सहर्ष सही। गांधी जी ने अनुभव किया कि ग्रामीण जनता के कष्टों की मुक्ति चरखे द्वारा हो सकती है अतः कांग्रेस ने चरखें के प्रचार को अपने कार्यक्रम में प्रमुख स्थान दिया। अन्त में चरखे का महत्व इतना बढ़ गया कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने अपने झण्डे पर प्रमुख स्थान दिया।

राष्ट्रीय आन्दोलन में जन साधारण के भाग लेने का एक प्रमुख कारण महात्मा गांधी जी का नेतृत्व था। सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड सहित ललितपुर क्षेत्र में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा चलाये गये विभिन्न आन्दोलन जैसे असहयोग आन्दोलन, सविनय अवज्ञा आन्दोलन, व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन एवं 1942 ई0 का भारत छोड़ो आन्दोलन, चलाकर स्वाधीनता आन्दोलन को इस क्षेत्र में आगे बढ़ाया तथा ब्रिटिश सरकार के विरोधी कार्यकलाप एवं पूर्ण स्वराज्य की प्राप्ति के लिये इस क्षेत्र से अनेक क्रांतिकारी एवं कांग्रेस दल के अनेक सत्याग्राहियों ने गिरफ्तारियां दी एवं यातनाएं सही। इस क्षेत्र में अहिंसात्मक आन्दोलन का प्रारम्भ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने किया उस समय इस का प्रमुख क्षेत्र झांसी जनपद था (उस समय ललितपुर क्षेत्र झांसी जनपद का अंग था)। 1920ई0 में महात्मा गांधी जी झांसी नगर आये और सरस्वती पाठशाली इण्डस्ट्रियल इण्टर कॉलेज झांसी में ठहरे जो झांसी जनपद का भारतीय राष्ट्रीय कॉग्रेस का प्रथम कार्यालय था। जिसका उद्घाटन गॉधीजी ने स्वयं किया था।

ललितपुर क्षेत्र से पंडित नन्दकिशोर किलेदार भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के इलाहाबाद के राष्ट्रीय अधिवेशन में भाग ले चुके थे एवं कॉग्रेस की नीतियों को अपने जनपद झांसी सब डिवीजन ललितपुर में क्रियान्वित करते थे। आप राष्ट्रीय समाचार बेंक्टैश्वर, केसरी, कर्मयोगी तथा अभ्युदय समाचार पत्रों के माध्यम से प्राप्त करते थे।

असहयोग आन्दोलन में पं. नन्दकिशोर किलेदार के साथ श्री गुलई तिवारी एवं श्री हरचन्दी तेली ने ललितपुर नगर में स्वदेशी का प्रसार एवं विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया तथा जुलूस निकाला था जिसके अन्तर्गत श्री गुलई तिवारी जी को अपने साथियों के साथ गिरफ्तार किया गया तथा 6 माह के कारावास की सजा दी गयी। महरौनी तहसील में श्री चिन्तामणि ने इस आन्दोलन को गति प्रदान की तथा राष्ट्र ध्वज लेकर जुलूस का नेतृत्व किया। इस समय तक यहॉ की जनता प्रशिक्षित हो चुकी थी। आगे चलकर जब 1930 ई0 में सविनय अवज्ञा आन्दोलन शुरू हुआ उसमें इस क्षेत्र के सभी लोगों ने भागीदारी दी ललितपुर नगर के पं. श्री नन्दकिशोर किलेदार, श्री बृजनन्दन किलेदार, श्री बृजनन्दन शर्मा, श्री मथुराप्रसाद

वैद्य, श्री बृन्दावन इमलिया, श्री बाबूलाल निगम, श्री हरीराम चौबे, श्री गोविन्द दास जी सिंघई, श्री कल्लूराम यादव, श्री बैजनाथ स्वर्णकार, श्री खंजोले कुशवाहा तालबेहट के श्री मणिराम कंचन, श्री कन्हैयालाल कड़ोरे, श्री ठाकुर विशेखर सिंह, डॉ बसन्त लाल मिश्रा, श्री गोविन्द दास, जखौरा के कामरेड चन्दन सिंह, बाँसी के श्री रामदास दुबे, श्री श्यामलाल गुप्ता, बार के श्री भैरों प्रसाद राय, श्री नारायण दास तिवारी, कांठ (ललितपुर) श्री शिवचरण लाल वर्मा, दैलवारा के श्री काशीनाथ शास्त्री पाली के श्री चुन्नीलाल चौरसिया, करोंदा के श्री शीतलप्रसाद, पिपरई धौर्रा के श्री प्रागी नामदेव वन्ट के श्री दलू एवं श्री हल्के काछी झारकौन के श्री प्यारेलाल यादव आदि को गिरफ्तार किया गया तथा सजाऐं दी।

व्यक्तिगत सत्याग्रह के समय भी ललितपुर क्षेत्र ने बढ़चढ़ कर भाग लिया तथा अंग्रेजी शासन की नींव हिला दी। इस आन्दोलन में बन्दी बनाये जाने वाले सत्यागृही श्री बृनन्दन शर्मा, श्री हरीराम चौबे, श्री बाबूलाल निगम, श्री रमानाथ खैरा, श्री अहमद खॉ, पहलवान, श्रीमती केशर बाई जैन (सभी ललितपुर नगर), श्री मणिराम कंचन, श्री बृजनन्दन पस्तोर, श्री जमुना प्रसाद चोबे, श्री मथुरा प्रसाद लिटौरिया श्री तेजसिंह, श्री भावसिंह, श्री रामजीलाल भार्गव, श्री रामरतन गोस्वामी, श्री दुलीचन्द जैन (सभी तालबेहट तहसील) श्री गोपाल दास जैन, श्री कुन्जीलाल स्वर्णकार, श्री गुलाब चन्द टेलर मास्टर, श्री बल्देव प्रसाद चौबे, श्री दयाराम पाण्डेय, श्री कुन्दनलाल मलैया (सभी ग्राम साढूमल) श्री जगन्नाथ लोदी (सतवसा ग्राम) श्री कपूरचन्द जैन, श्री बहोरे गड़रिया, श्री चतरे हरिजन, श्री प्यारेलाल फूलमाली, श्री चिन्तामणि बढ़ई, श्री शंकर सिंह लोधी, श्री लालसिंह लोधी, श्री जगीसिंह, श्री भैयालाल (सभी सैदपुर), श्री शिवराज सिंह (ग्राम जलंधर सैदपुर) श्री गोविन्द दास जैन, श्री खेमचन्द चौरसिया, श्री मन्ठूलाल चौरसिया, श्री हरदास बाबू, श्री गोरेलाल चौरसिया (सभी ग्राम पाली) श्री कुन्दनलाल वर्मा, प्रो0 खुसालचन्द (सभी मड़ावरा) श्री जगन्नाथ यादव, श्री राजधर स्वर्णकार (सभी ग्राम सिंदवाहा), श्री हरप्रसाद लोधी (वरौदा विजलौन) श्री हरप्रसाद शर्मा (पिपरई धौर्रा) श्री रामदास दुबे (बांसी) श्री ठाकुर देवी सिंह (बानपुर) श्री ठाकुर संतोष सिंह (गौना नाराहट) श्री खलक सिंह (सतवासा) श्री दमरू सिंह (नैनवारा) श्री फूलचन्द जैन (सिलावन) श्री रामदयाल गेंड़ा (बरोदा डॉग बार) श्री दुरजन (भावनी) श्री कामताप्रसाद, श्री मथुराप्रसाद (सभी ग्राम गेंदोरा) श्री गोकुल चन्द जैन (लड़वारी) श्री मौजीलाल, श्री नारायण दास तिवारी, श्री प्यारेलाल यादव, श्री परमानन्द (सभी बार), श्री मदनलाल जी हरिजन (ककरूआ) थे।

महात्मा गांधी जी द्वारा जब 1942ई0 का भारत छोड़ो आन्दोलन शुरू किया गया तब ललितपुर क्षेत्र में इस आन्दोलन की कमान कर्मठ स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पं. ब्रजनन्दन शर्मा ने संभाली। इस समय तक आप ललितपुर में खद्दर भण्डार और एक पुस्तकालय की स्थापना कर चुके थे।

भारत छोड़ो आन्दोलन की सार्वजनिक घोषणा भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक में ग्वालिया टैंक मैदान बम्बई में 8 अगस्त 1942ई0 को की गयी थी। 9 अगस्त को गांधीजी सहित कार्यसमिति के अन्य सदस्य गिरफ्तार कर लिये गये यह समाचार ललितपुर क्षेत्र में 10 अगस्त 1942 ई0 को आग की तरह फैल गया।

23 अगस्त को तालबेहट के सुदामा प्रसाद गोस्वामी ने विसाती बाजार पसरट वाली गली (झांसी नगर) के पास स्थित रघुनाथ जी के मन्दिर पर तिरंगा झण्डा लगा दिया और 'महात्मा गांधी जिन्दाबाद' अंग्रेजों भारत छोड़ो के नारे लगाते हुए अपने साथियों सहित गिरफ्तार कर लिये गये। इस घटना के बाद पुलिस लावी पूरी तरह सक्रिय हो गयी और चुन – चुन कर कांग्रेसियों को गिरफ्तार करना आरम्भ कर दिया और उनका दमन चक्र भी आरम्भ हो गया। जनपद झांसी के सभी प्रमुख कांग्रेसी नेता – श्री रघुनाथ विनायक धुलेकर, श्री आत्माराम गोविन्द खेर, डॉ0 सुशीला नैय्यर, कुंजबिहारी लाल शिवानी, कृष्ण चन्द्र शर्मा आदि के साथ ललितपुर सब डिवीजन के प्रमुख क्रांतिकारी एवं कांग्रेसी नेता पं. नन्दकिशोर किलेदार एवं पं. बृजनन्दन किलेदार को अंग्रेज सरकार ने नजरबंद कर लिया। पं. नन्दकिशोर किलेदार का घर क्रांतिकारियों का शरण स्थल रहा। चन्द्रशेखर आजाद जी को किलेदार जी ने अपने ललितपुर निवास एवं जमींदारी का गांव सिवनी में अंग्रेजों की नजरों से बचा कर रखा था।

1942ई0 के आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभाने के कारण श्री बाबूलाल फूलमाली 'शहीद' को अंग्रेजों ने गिरफ्तार कर 1 वर्ष की जेल तथा 5 बैंतों की सजा दी। वेतों से मार खाकर भारतमाता की जय कहता हुआ यह सेनानी शहीद हो गया।

अपनी कविता के माध्यम से जनता को जागृत करने एवं 1942ई0 के आन्दोलन में नेतृत्व देने के कारण श्री हुकुमचन्द बुखारिया 'तन्मय' जी को 6 माह का कारावास दिया गया।

सन् 1942 के आन्दोलन में तो इस ललितपुर क्षेत्र के कोने – कोने से लोग, आहुति देने को आगे आये और बन्दी बनाये गये। जिसमें ललितपुर से श्री मथुरा प्रसाद वैद्य, श्री वृन्दावन इमलिया, श्री हरीराम चौबे, श्री मदनलाल किलेदार, श्री उत्तमचन्द कठरया, श्री शम्भूदयाल संज्ञा, श्री हरपाल ईसाई, श्री मदनलाल जी, श्री हुकुमचन्द्र बड़घरिया, श्री रामचन्द्र जैन, श्री घनश्याम नाई, श्री परमेष्ठी दास जैन, श्रीमती कमला देवी जैन, श्री जानकी प्रसाद पाट्कार, श्री सुखलाल इमलिया, श्री धन्नालाल गुद्दा, श्री प्यारेलाल कुशवाहा, श्री शिखरचन्द्र सिंघई, श्री बाबूलाल 'घी वाले' श्री रतीराम हुण्डैत, श्री हरीकृष्ण देवलिया, श्री अभिनन्दन कुमार टड़ैया, श्री ताराचन्द 'कजिया वाले' श्री मोतीलाल टड़ैया, श्री डालचन्द जैन, ग्राम पिपरई से श्री सूबचन्द्र 'पुष्प', श्री हरप्रसाद शर्मा, ग्राम धौर्रा से – श्री भैयालाल यादव, ग्राम कपासी (धौर्रा) से – श्री जालम यादव, तालबेहट से – मणिराम कंचन, बांसी से – रामदास दुबे, बार से – श्री भैंरोंप्रसाद राय, बानपुर से – श्री गजराज सिंह, श्री रामलाल यादव, श्री गोरेलाल वर्मा, श्री जयराम सेहारे, श्री मंगलसिंह कठरिया, श्री भूपतराम, श्री अनन्दी, श्री अजुध्या प्रसाद सेहारे, श्री मरदन यादव, श्री ग्या प्रसाद, कैलगुवां से भगवान दास ज्योतिषी, जखौरा से – कामरेड चन्दन सिंह, श्री किशोर सिंह, जालखौन से – श्री शिवप्रसाद जैन, श्री राजधर, बरोदा विजलौन से – श्री हरप्रसाद लोधी, लुहरी (मड़ावरा) से घनश्याम दास, गोरा (मड़ावरा) से – प्रो० खुशालचन्द जैन, महरौनी से – श्री राजाराम पाण्डे, पाली से – श्री खेमचन्द्र चौरसिया, श्री हरदास बाबू, श्री अयोध्या प्रसाद चौरसिया, सादूमल से – श्री कुन्दन लाल मलैया, श्री गोपाल दास जैन, श्री कुंजीलाल स्वर्णकार, सैदपुर से – श्री तेजसिंह आदि।

अंग्रेजों ने 1857 ई० के पश्चात इस क्षेत्र में ईसाई मिशनरियों को प्रवेश दिया परन्तु वह अपनी नीतियों में सफल नहीं हुए यहॉं उन्होंने लोगों को धर्म में परिवर्तित तो किया परन्तु वह उनकी अर्न्तआत्मा को नहीं बदल सके, और अंग्रेज अपनी नीति में सफल नहीं हुयें यहॉं तक कि 1943 ई० में यहॉं के निवासी श्री हरपाल ईसाई ने आई. एन. ए. आजाद हिन्द फौज में सम्मिलित होकर कोहिमा में लड़ाई दौरान अंग्रेजों से मोर्चा लिया। क्योंकि इस युवक में अपने देश के प्रति आजाद करने की चाह लगी हुयी थी। ईसाई होने पर भी इसको अंग्रेजों की नीतियां भी नहीं बदल सकीं। इस प्रकार ललितपुर क्षेत्र स्वाधीनता अथवा आजादी की प्रत्येक लड़ाई में अग्रणी रहा और महत्वपूर्ण भूमिका निभाई अतः निरन्तर संघर्ष एवं भारतीय

नेताओं व राष्ट्रवादियों के असीमित त्याग से हमारा देश भारत 15 अगस्त 1947 ई0 को स्वतंत्र हो गया। इस क्षेत्र के सेनानियों ने आजादी के आन्दोलनों में जो अपना योगदान दिया उसे अभी तक सम्पूर्ण रूप से उजागर नहीं किया गया इन सेनानियों के योगदान को कुछ संक्षिप्त रूप में प्राथमिक पाठशालों में लागू कर छोटे बच्चों को अवगत कराकर उनके अन्दर विश्वबन्धुत्व ओर एकता का प्रसार किया जा सकता है जो एक सराहनीय कदम हो सकता है सरकार द्वारा अभी तक सेनानियों को जो सुविधायें दी गयी वह अति अल्प है इस ओर भी और प्रयास की आवश्यकता है।

---------------------------o O o---------------------------

वर्तमान में ललितपुर जिला कोषगार कार्यालय से पेंशन प्राप्त कर रहे स्वतंत्रता संग्राम सैनानियों की सूची

क्रमांक	नाम व्यक्ति	पिता का नाम	स्थान
1	पं० श्री ब्रजनन्दन शर्मा	पं० श्री नारायणदास	सुभाषपुरा, ललितपुर
2	पं० श्री बृजनन्दन किलेदार	पं० श्री नन्दकिशोर किलेदार	महावीरपुरा,ललितपुर
3	पं० श्री शम्भूदयाल संज्ञा	पं० श्री शिवप्रसाद संज्ञा	सुभाषपुरा, ललितपुर
4	श्री हुकुम चंद बडधरिया	श्री परमानन्द जैन	ललितपुर
5	श्री रामचन्द्र जैन	श्री प्रभुदयाल जैन	बजरिया, ललितपुर
6	श्रीमती कमला देवी जैन	पत्नी श्री परमेष्ठीदास जैन	कचहरी रोड,ललितपुर
7	श्री प्यारेलाल कुशवाहा	श्री शालिगराम कुशवाहा	आजादपुरा, ललितपुर
8	श्री शिखर चन्द सिंघई	श्री कुन्दन लाल जैन	ललितपुर
9	श्री हरिकृष्ण देवलिया	श्री देवी प्रसाद देवलिया	ललितपुर
10	कामरेड श्री चन्दन सिंह	श्री रामप्रसाद लोधी	जखौरा ललितपुर
11	श्री श्यामलाल गुप्ता	श्री फूलचन्द गुप्ता	बाँसी, ललितपुर
12	श्री खूबचन्द पुष्प	श्री कुशल चन्द मोदी	पिपरई, ललितपुर
13	श्री हरदास शर्मा	श्री गजराज शर्मा	पिपरई, ललितपुर
14	श्री हरप्रसाद लोधी	श्री धर्मदास लोधी	बरौदा विजलौन,
15	श्री दयाराम पाण्डेय	श्री मुन्ना लाल	सादूमल, ललितपुर
16	श्री गुलाबचन्द टेलर मास्टर	श्री भंसाई	सादूमल, ललितपुर
17	श्री गोपाल दास जैन	श्री सवाई	सादूमल, ललितपुर
18	श्री बल्देव प्रसाद चौबे	श्री अयोध्या प्रसाद चौबे	सादूमल, ललितपुर
19	श्री घनश्यामदास नायक	श्री लक्ष्मण प्रसाद नायक	लुहरी, ललितपुर
20	श्री अयोध्या प्रसाद चौरसिया		पाली, ललितपुर
21	श्री गोविन्द दास जैन	श्री फूलचन्द जैन	पाली, ललितपुर
22	श्री भगवानदास जोशी	श्री खुन्नी लाल जोशी	कैलगुवाँ, ललितपुर
23	श्री चिन्तामणी बढ़ई	श्री उमराव	सैदपुर, ललितपुर
24	श्री गजराज सिंह	श्री बख्तावर सिंह	बानपुर, ललितपुर
25	श्री शिवचरण लाल वर्मा	श्री रामलाल	कांठ, ललितपुर

जिनका बलिदान अमर है[1]

जनपद ललितपुर के बंदनीय दिवंगत स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की सूची

ललितपुर शहर

१. स्व.श्री नन्द किशोर किलेदार
२. ,, मथुरा प्रसाद बैद्य
३. ,, अहमद खाँ पहलवान
४. ,, पं. परमेष्ठी दास जैन
५. ,, अभिनन्दन कुमार टड़ैया
६. ,, रमानाथ खैरा
७. ,, वृन्दावन लाल इनलिया
८. ,, धन्ना लाल गुढ़ा
९. ,, हरपाल ईसाई
१०. ,, उत्तम चन्द कठरया
११. ,, सुख लाल इमलिया
१२. ,, बाबू लाल जैन घी वाले
१३. श्रीमती केशर बाई जैन
१४. स्व.श्री मदन लाल किलेदार
१५. ,, जानकी प्रसाद पाटकार
१६. ,, घनश्याम दास नाई
१७. ,, बाबू लाल निगम
१८. ,, हुकुम चन्द बुखारिया
१९. ,, सिंघई गोविन्द दास जैन
२०. ,, काशीराम तिवारी शास्त्री
२१. ,, हरीराम चौबे
२२. ,, बाबूराम यादव
२३. ,, रामदास दुबे
२४. ,, मोती लाल टड़ैया
२५. ,, गणेश प्रसाद स्वर्णकार
२६. ,, बाबू लाल फूलमाली
२७. ,, गुलाबराय तिवारी
२८. ,, बैजनाथ स्वर्णकार
२९. ,, डालचन्द जैन
३०. ,, मूलचन्द जैन
३१. ,, सरदार गुलवंत सिंह
३२. ,, मुल्ला मुहम्मद हुसैन
३३. ,, हरचन्दी साहू
३४. ,, गणेश प्रसाद मालवीय
३५. ,, डा. लक्ष्मण सिंह
३६. ,, भगवती प्रसाद
३७. ,, केशवदास रिछारिया

तालबेहट

३८. ,, मथुरा प्रसाद लिटौरिया
३९. ,, सुदामा प्रसाद गोस्वामी
४०. ,, रामरतन गोस्वामी
४१. ,, कन्हैया लाल कड़ेरे
४२. ,, यमुना दास चौबे
४३. ,, मणिराम कंचन
४४. ,, डा. बसन्त लाल मिश्रा
४५. ,, बृजनन्दन पस्तोर
४६. ,, गोविन्द दास व्यास
४७. ,, रामभरोसे दीक्षित
४८. ,, दुलीचन्द
४९. ,, ठा. विशेश्वर सिंह
५०. ,, बल्देव सिंह छीपा
५१. ,, तेज सिंह
५२. ,, रामजी लाल भार्गव

ग्राम सुनौरी तालबेहट

५३. ,, दुन्ने माते
५४. ,, भाव सिंह
५५. ,, हरप्रसाद यादव

ललितपुर तहसील ग्राम बनगुंवा

५६. ,, गम्भीर

ग्राम जखौरा

५७. ,, किशोर सिंह

ग्राम-पाली

५८. ,, मन्दू लाल चौरसिया
५९. ,, गौरे लाल चौरसिया
६०. ,, खेमचन्द चौरसिया
६१. ,, चुन्नी लाल चौरसिया
६२. ,, काशीराम चौरसिया
६३. ,, कन्हैया लाल फूलमाली
६४. ,, हरदास बाबू

ग्राम ककरूआ

६५. ,, मर्दन हरिजन

ग्राम-पिपरई

६६. ,, प्रागी उर्फ पूरन चंद नामदेव

ग्राम कपासी

६७. ,, भैया लाल फक्कड़
६८. ,, जालम यादव
६९. ,, देव सिंह यादव

ग्राम बन्ट

७०. ,, दलू उर्फ खुमान
७१. ,, हल्केराम कुशवाहा
७२. ,, पूरन चन्द उर्फ पिन्टू

ग्राम जाखलौन

७३. ,, शिव प्रसाद जैन
७४. ,, राजधर लाल जैन

ग्राम दैलवारा

७५. ,, नारायण दास खरे
७६. ,, काशीनाथ तिवारी

ग्राम नैनवारा

७७. ,, दमरू सिंह

महरौनी तहसील ग्राम बार

७८. ,, भैरो प्रसाद राय
७९. ,, मुन्जा उर्फ मौजी लाल सहरिया
८०. ,, नारायण दास तिवारी
८१ ,, परमानन्द

ग्राम बरौदा डाँग

८२. ,, रामदयाल गैंडा

ग्राम गैंदौरा

८३. ,, मथुराप्रसाद
८४. ,, कामताप्रसाद

ग्राम बानपुर

८५. ,, मंगल सिंह कटारिया
८६. ,, देवी सिंह परमार
८७. ,, गोरे लाल वर्मा
८८. ,, रघुवीर सिंह
८९. ,, भूपत
९०. ,, ग्या प्रसाद
९१. ,, रामलाल यादव
९२. ,, जयराम सेहारे

सैदपुर ग्राम

९३. ,, शिवराज सिंह
९४. ,, प्यारे लाल फूलमाली
९५. ,, कपूर चंद जैन
९६. ,, शंकर सिंह लोधी
९७. ,, चतरे हरिजन
९८. ,, बहोरे गड़रिया
९९. ,, लाल सिंह लोधी
१००. ,, ग्या प्रसाद
१०१. ,, बहोरे हरिजन
१०२ ,, जगी सिंह
१०३ ,, भैया लाल परवार

ग्राम सतवाँसा

१०४. ,, जगन्नाथ लोधी
१०५. ,, खलक सिंह

ग्राम सादूमल

१०६. ,, गुलाब चन्द
१०७. ,, कुन्दन लाल मलैया
१०८ ,, कुंजी लाल स्वर्णकार

ग्राम मड़ावरा

१०९ ,, कुन्दन लाल वर्मा

ग्राम लुहर्रा

११०. ,, घनश्याम दास

ग्राम सिंदवाहा

१११. ,, राजधर लाल
११२. ,, जगन्नाथ यादव

महरौनी

११३. ,, राजाराम पाण्डेय

ग्राम सिलावन

११४. ,, पं. फूलचन्द जैन

ग्राम गौना

११५. ,, सन्तोष सिंह बुन्देला
११६. ,, मेहरबान सिंह

ग्राम लड़वारी

११७. ,, गोकुल चन्द जैन

ग्राम पठा

११८. ,, कन्हैया लाल दीक्षित

ग्राम गोरा

११९ ,, खुशाल चन्द जैन

हमने इस सूची में जनपद के सभी सम्माननीय स्वतंत्रता सेनानियों का नाम शामिल करने का प्रयास किया है फिर भी यदि कोई नाम हमसे रह गया हो तो हम क्षमाप्रार्थी हैं।

1. स्वतंत्रता संग्राम सेनानी श्री बृजनन्दन शर्मा जी से प्राप्त सूची।

ललितपुर जनपद के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

दिनाँक ६-१०-१९७३ को ललितपुर में लिया गया चित्र

ऊपर खड़े हुये बायें से दायें:- सर्वश्री खुमान, गुलाबचन्द टेलर, हरपालसिंह, बाबूलाल जैन, खेमचन्द्र चौरसिया, कुन्जीलाल सोनी, शिवचरनलाल वर्मा, गोरेलाल, श्रीमती कमला देवी जैन, पं. परमेष्ठीदास, प्यारे लाल कुशवाहा, राजधर सोनी, रामचन्द्र जैन, घनश्यामदास नाई, जानकीप्रसाद पाटकार, कुन्दनलाल वर्मा, घनश्यामदास नायक, शम्भूदयाल संज्ञा, मर्दन हरिजन, श्रीमती केशरबाई जैन, बाबूलाल निगम, चिन्तामन, देवीसिंह, जगन्नाथ सिंह सतवाँसा, दयाराम पाण्डेय, प्यारेलाल, जगन्नाथप्रसाद यादव, भैयालाल फक्कड़, मथुराप्रसाद वैद्य, अयोध्याप्रसाद चौरसिया, गोबिन्ददास जैन, पूरन उर्फ मन्टू, विन्द्रावन लाल इमलिया, शिवराज सिंह, हुकुमचन्द बड़घरिया, शिखरचन्द सिंघई, शँकर सिंह, रामजीलाल भार्गव।

सामने कुर्सी पर बायें से दायें:- सर्वश्री हरीकृष्ण देवलिया, सुखलाल इमलिया, धन्नालाल गुढ़ा, हरप्रसाद, मथुराप्रसाद लिटौरिया, सुदामाप्रसाद गोस्वामी, बैजनाथ कुरील अध्यक्ष उ०प्र० काँग्रेस, मनीराम कंचन, ब्रजनन्दन शर्मा, मदन लाल किलेदार, सन्तोषसिंह बुन्देला, हुकुमचन्द्र बुखारिया, उत्तमचन्द्र कठरया, गोविन्ददास जैन, रामरतन गोस्वामी, अहमद खाँ पहलवान, कपूरचन्द्र जैन।

फर्स पर बैठे हुये बायें से दायें:- सर्वश्री गजराजसिंह, भगवानदास जोशी, कन्हैयालाल कडेरे, हरदास शर्मा, मन्टूलाल चौरसिया, मोतीलाल जैन, श्यामलाल गुप्ता, भैरोंप्रसाद राय, जालम, चतरा सैदपुर, श्री , रामदयाल गेड़ा, हरदास चौरसिया, ब्रजनन्दन पस्तोर, बल्देव प्रसाद चौबे, मंगलसिंह कटारिया, कालूराम यादव, रामलाल यादव तथा स्वर्गीय स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों की पत्नियाँ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. पब्लिश्ड रिकार्ड्स
2. सैटेलमेन्ट रिपोर्ट
3. गजेटियर्स
4. राजकीय प्रकाशन
5. भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली
6. उत्तर प्रदेश राज्य अभिलेखागार, लखनऊ
7. पब्लिश्ड वर्क
8. अभिनन्दन ग्रन्थ
9. समाचार पत्र एवं पत्रिकायें

संदर्भ ग्रन्थ सूची

(1) पब्लिशड रिकार्डस :-

(1) फ्रीडम स्ट्रगल इन उत्तर प्रदेश - सम्पादक एस0 ए0 ए0 रिजवी तथा एम0 एल0 भगवती।
भाग -1 (1957), भाग - 3 (1959), भाग - 4, भाग - 6, (1961)
पब्लिकेशन्स ब्यूरो, इनफारमेशन डिपार्टमेन्ट, उत्तर प्रदेश लखनऊ, द्वारा प्रकाशित

(2) यू0 पी0 स्टेट रिकार्ड सीरीज - प्रेस लिस्ट ऑफ बुन्देलखण्ड रिकार्ड (1857-1876)
जनरल एडीटर - Dr. G. N. SALETORE
1959 ई0 में उ0 प्र0 सरकार द्वारा कामर्ससीयल प्रेस इलाहाबाद से प्रकाशित

(3) पुरातात्विक सर्वेक्षण रिपोर्ट - विकास खण्ड जखौरा (1988-89), विकास खण्ड बार (1989-90)
विकास खण्ड महरौनी (1990-91) जनपद ललितपुर
सम्पादक - डॉ0 राकेश तिवारी, लेखक - डॉ. अम्बिकाप्रसाद सिंह
उ0 प्र0 राज्य पुरातत्व संगठन, रोशन उद्दौला कोठी, क़ैसर वाग, लखनऊ से प्रकाशित।

(2) सैटेलमेन्ट रिपोर्ट

(1) रिपोर्ट आन द सैट्लमेंट ऑफ झांसी (नार्थ बेस्ट प्रोविंस) प्रिंटेड इन 1871ई0

(2) फाइनल रिपोर्ट ऑफ द सेट्लमेंट ऑफ परगना कालपी विद विच इज इनकोरपोरेटिब ऑफ द जालौन डिस्ट्रिक्ट फिलिप्स जे ब्राइट डेबिट 30 अप्रैल 1874ई0

(3) रिपोर्ट ऑफ द सेटलमेंट ऑफ द हमीरपुर डिस्ट्रिक्ट प्रिंटेड इन 1881ई0 इलाहाबाद प्रेस, इलाहाबाद

(4) सैटेलमेंट रिपोर्ट आफ बांदा डिस्ट्रिक्ट – ए. कैडिल नार्थ बेस्ट फ्रंटियर अवध वगर्नमेंट प्रेस इलाहाबाद से 1881 ई0 में प्रकाशित

(5) रिपोर्ट आन द सैटलमेंट ऑफ ललितपुर नार्थ वेस्टर्न प्राविन्सेस – जे0 डेविडसन इलाहाबाद 1889 ई0

(6) रिपोर्ट आन द सेकण्ड सैटलमेंट ऑफ झांसी डिस्ट्रिक्ट (इन्क्लूडिंग ललितपुर सब डिवीजन) नार्थ वेस्ट प्राविंसेज – डब्लू. एच. एफ. इम्फे तथा जे. एस. मेस्टन – इलाहाबाद 1892ई0 में प्रकाशित

(7) फायनल रिपोर्ट आन दि रिवीजन ऑफ सैटलमेंट इन ललितपुर, एच. एस. होरे, इलाहाबाद 1896 ई0 में प्रकाशित

(8) फायनल सैंटलमेंट रिपोर्ट आन दि रिवीजन ऑफ झांसी डिस्ट्रिक्ट (इन्क्लूडिंग ललितपुर सब डिवीजन) ए. डब्लू0 पिम, इलाहाबाद 1902 ई0 में प्रकाशित

(3) <u>गजेटियर्स</u>

(1) बुन्देलखण्ड गजेटियर - स्टेटिस्टिकल डिशक्रिप्टिव ऐड हिस्टोरिकल प्रोविंसेस ऑफ इण्डिया, भाग – एक, बुन्देलखण्ड इलाहाबाद – 1874 ई0, कम्पलीटेड ऐंड एडिट – ई0 टी0 एट किंशन

(2) ईस्टर्न स्टेट्स (बुन्देलखण्ड) गजेटियर्स - सी0ई0लुआई,लखनऊ 1907 ई0

(3) दी इम्पीरियल गजेटियर ऑफ इण्डिया जिल्द - 11- 1908 ई0

(4) झांसी गजेटियर - कम्पलीटेड ऐड एडीटेड, डी. एल. ड्रक बोकमैंन 1909 ई0 में प्रकाशित

(5) झांसी गजेटियर - एडिट – ई0 बी0 जोशी, गजेटियर विभाग, लखनऊ से 1965 में प्रकाशित।

(6) बांदा गजेटियर - कम्पलीटेड ऐंड एडिटे डी0 एल0 ड्रैक ब्रोकमैंन 1909 ई0 में इलाहाबाद से प्रकाशित।

(7) हमीरपुर गजेटियर - कम्पलीटेड ऐंड एडिटे डी0 एल0 ड्रैक ब्रोकमैंन 1909 ई0 में इलाहाबाद से प्रकाशित।

(8) जालौन गजेटियर - कम्पलीटेड ऐंड एडिटे डी0 एल0 ड्रैक ब्रोकमैंन 1909 ई0 में इलाहाबाद से प्रकाशित।

(4) <u>राजकीय प्रकाशन</u> -

(1) जनपद सर्वांगीण विकास की ओर - ललितपुर 1985 ई0 में सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उत्तर प्रदेश, लखनऊ से प्रकाशित।

(2) प्रगति के पथ पर अग्रसर ललितपुर - 1986ई0जिलासूचनाविभाग ललितपुर से प्रकाशित।

(3) अनुक्रमाणिका - 1988 ई0 जिला सूचना विभाग ललितपुर से प्रकाशित।

(4) अनुक्रमाणिका - 1989ई0 जिला सूचना विभाग ललितपुर से प्रकाशित।

(5) अनुक्रमाणिका - 1996-97ई0 जिला सूचना विभाग ललितपुर से प्रकाशित।

(6) सन् 1990 - 91, 1991 - 92 उ0 प्र0 वार्षिकी - निर्देशक सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ0 प्र0 – लखनऊ

(5) भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार - नई दिल्ली

(1) फॉरिन डिपार्टमेन्ट पॉलिटिकल कन्सल्टेशन - 11जून 1817 ई0 लखनऊ फाइल नं. 14

(2) फॉरिन डिपार्टमेन्ट पॉलिटिकल कन्सल्टेशन - 26अक्टूबर1817 ई0 फाइल नं. 49

(3) फॉरिन डिपार्टमेन्ट पॉलिटिकल कन्सल्टेशन - 7 अप्रैल 1817 ई0, फाइल नं. 62

(4) फॉरिन डिपार्टमेन्ट पॉलिटिकल प्रोसीडिंग कन्सल्टेशन - 17 जनवरी 1842 ई0 फाइल नं. - 6 से 2

(5) फॉरिन डिपार्टमेन्ट पॉलिटिकल कन्सल्टेशन - 16 नवम्बर 1842 ई0, फाइल नं. 125

(6) फॉरिन डिपार्टमेन्ट पॉलिटिकल कन्सल्टेशन - पर्श्यन लेटर नं. 256 15 अप्रैल 1856 ई0

(7) फॉरिन डिपार्टमेन्ट पॉलिटिकल कन्सल्टेशन - लेटर 30दिसम्बर 1859 ई0 फाइल नं. 283

(8) फॉरिन डिपार्टमेन्ट पॉलिटिकल कन्सल्टेशन - लेटर 31 दिसम्बर 1858 ई0 फाइल नं. 2131

(9) फॉरिन डिपार्टमेन्ट पॉलिटिकल कन्सल्टेशन - लेटर 8 नवम्बर 1858 ई0 फाइल नं. 20

(10) फॉरिन डिपार्टमेन्ट सीक्रेट कन्सल्टेशन - 18 जुलाई 1859 ई0, फाइल नं. 188

(11) **1858 डेटेड कैम्प वानपुर** - 11 मार्च 1858 ई0, लेटर नं. 19

(12) **ऑफ 1858 ई0 डेटेड कैम्प तालबेहट** - 14 मार्च 1858 ई0, लेटर नं. 22

(13) **ऑफ 1858 ई0 डेटेड कैम्प विफोर झांसी** - 22मार्च1858 ई0, लेटर नं. 48

(14) **ऑफ 1858 ई0 डेटेड कैम्प विफोर झांसी** - 29मार्च1858 ई0, लेटर नं. 69

(15) **पिनकने वीकली रिपोर्ट** - नवम्बर 1848, 22 मार्च 1858 ई0

(16) **प्रोसीडिंग "होम डिपार्टमेन्ट पॉलिटिकल ब्राँच"**- फाइल नं. 19/1908 ई0 राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली।

(6) <u>उत्तर प्रदेश राज्य अभिलेखागार - लखनऊ</u>

(1) फॉरिन डिपार्टमेन्ट 1838 - 39 पॉलिटिकल अप्रैल जून 1838 ई0 कन्सलटेशन नं 16

(2) फॉरिन डिपार्टमेन्ट 1841-44 पॉलिटिकल जुलाई सितम्बर 1841 ई. कन्सलटेशन नं 12

(3) फॉरिन डिपार्टमेन्ट 1844 प्रोसीडिंग जुलाई अगस्त सितम्बर 1849 ई0 प्रोसेज 24 अगस्त 1849 ई0 नं. 36 - 37 प्रोसेज 10 नवम्बर 1849 ई0 नं. 12 - 15

(4) फॉरिन डिपार्टमेन्ट 1853 - 60 ई0 प्रोसीडिंग 18 अगस्त 1855 ई0 कन्सलटेशन नं. 13 - 16, 13 सितम्बर 1855 ई0 क्लेकशन नं. 17 - 19

(5) फॉरिन डिपार्टमेन्ट 1853 - 60 ई0 कन्सलटेशन नं. 1 वर्ष 1856 प्रोसेज 11 फरवरी 1856 ई0 कन्सलटेशन नं. 24 - 16, पॉलिटिकल 1856 ई0 क्लेकशन नं. 7

(7) पब्लिश्ड वर्क

अग्रेंजी

(1) दि हिस्ट्री आफ इण्डियन नेशनल कांग्रेस - पट्टाभिसीता रम्मैया, सस्ता साहित्य मण्डल, दिल्ली से 1949 ई0 में प्रकाशित।

(2) झांसी ड्टूरिंग द ब्रिटिश रूप - एम0 पी0 पाठक रामानन्द विद्या भवन कालका जी, नई दिल्ली, से 1887 ई0 में प्रकाशित।

(3) एट्टीन फिफ्टी सेवन - सेन - एस0 एन0 पब्लिकेशन डिवीजन दिल्ली से 1957 ई0 में प्रकाशित।

(4) दि रिवोल्ट ऑफ 1857 ई0 इन बुन्देलखण्ड - डा0 श्याम नारायण सिंहा अनल पब्लिकेशन लखनऊ उ0 प्र0 से 1982 ई0 में प्रकाशित।

(5) दि रानी ऑफ झांसी - डी0 बी0 तहमान्कर जैको पब्लिकेशन हाऊस लंदन से 1958 ई0 में प्रकाशित।

हिन्दी वर्क

(6) बुन्देलखण्ड का संक्षेप इतिहास - गोरेलाल तिवारी, काशी नगरी, प्रचारिणी सभा काशी से संवत् 1990 ई0 (1933) में प्रकाशित।

(7) विद्रोही वानपुर - वासुदेव गोस्वामी, सहयोगी प्रकाशन दतिया, मध्य प्रदेश से 1954 ई0 में प्रकाशित।

(8) महाराजा छत्रसाल बुन्देला - डा0 भगवान दास गुप्ता, शिवलाल एण्ड कम्पनी आगरा से 1958 ई0 में प्रकाशित।

(9) आंखों देखा गदर - नागर अमृत लाल (अनुबादक) मूल पुस्तक माझा प्रयास (मराठी) लेखक विष्णु गोडसे, लखनऊ से 1957 ई0 में प्रकाशित।

(10) **बुन्देलों का इतिहास** - भगवानदास खरे, भगवानदास श्रीवास्तव विचार प्रकाशन दिल्ली से 1982 ई0 में प्रकाशित।

(11) **चंदेल और उसका राजस्व काल** - केशवचन्द्र मिश्रा नागरी प्रचारणी सभा काशी से सम्बत् 2011 ई0 (सन् 1954ई0) में प्रकाशित।

(12) **चंदेल कालीन भारत का इतिहास** - डा. अयोध्याप्रसाद पाण्डेय, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, इलाहाबाद शक सम्बत् 1890 (सन् 1968ई0) में प्रकाशित।

(13) **झांसी** - डॉ0 रूद्र पाण्डेय आदित्य रश्मि प्रकाशन ग्वालियर, म0 प्र0 से 1990 ई0 में प्रकाशित।

(14) **स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास** - खान मसुद अहमत किताब घर नई दिल्ली से सन् 1988 ई0 में प्रकाशित।

(15) **भारतीय क्रांतिकारी आन्दोलन का इतिहास** - मन्मय नाथ गुप्ता 1986 ई0 में आत्माराम एण्ड सन्स दिल्ली से प्रकाशित।

(16) **भूले विसरे क्रांतिकारी** - रामशरण विद्यार्थी, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय पटियाला हाऊस, नई दिल्ली, से प्रकाशित।

(17) **भारतीय स्वतंत्रता का इतिहास** - इन्द्र विद्या बाचस्पति सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली से सन् 1960 ई0 में प्रकाशित।

(18) **उत्तर प्रदेश में गांधी जी** - रामनाथ सुमन सूचना विभाग लखनऊ से सन् 1969 ई0 में प्रकाशित।

(19) **भारत का स्वतंत्वता संघर्ष** - विपिनचन्द्र आदि हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली से सन् 1990 ई0 में प्रकाशित।

(20) **मुगलों के अन्तर्गत बुन्देलखण्ड का सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक इतिहास** - डॉ0 भगवान दास गुप्ता, सन् 1531-1731 ई0

हिन्दी बुक सेन्टर 4/5 बी., आसफ अली रोड़, नई दिल्ली, सं 1997 में प्रकाशित।

(21) **उत्तर प्रदेश जब्तशुदा साहित्य विशेषांक** - अगस्त 1997ई0 सम्पादक- विजय कुमार राय, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग उ0 प्र0 लखनऊ से प्रकाशित। सूचना विभाग उ0 प्र0 लखनऊ से प्रकाशित।

(22) **स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, भाग - एक (झांसी डिवीजन)** - सम्पादक - एस0 पी0 भट्टाचार्य।

(23) **बुन्देली माटी के सपूत** - हीरासिंह ठाकुर, 1993 ई0 में बुन्देलखण्ड प्रकाशन 179, शान्ति नगर, दमोह म0 प्र0 से प्रकाशित।

(24) **भारतीय इतिहास कोष** - मूल लेखक - सच्चिदानन्द भट्टाचार्य। 1976 ई0 में उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, राजर्षि पुरूषोत्तमदास टण्डन हिन्दी भवन, महात्मा गांधी मार्ग लखनऊ से प्रकाशित।

(25) **आधुनिक भारत** - विपिन चन्द्र, अनुवादक - श्यामविहारी राय, 1990 ई0 में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित।

(26) **मस्तानी बाजीराव और उनके वंशज बांदा के नवाब** - डॉ. भगवान दास गुप्त, 1983 ई0 में विद्या मन्दिर प्रकाशन, मुरार, ग्वालियर से प्रकाशित।

(27) **झांसी दर्शन** - मोतीलाल अशान्त, 1973 ई0 में लक्ष्मी प्रकाशन, 86, पुरानी नझाई, झांसी से प्रकाशित।

(28) **जय बुन्देल भूमि** - सीताराम चतुर्वेदी 'अटल' 1983 ई0 में साहित्य निकेतन सकरार झांसी से प्रकाशित।

(29) **आधुनिक भारत का इतिहास** - बी. एल. ग्रोवर, यशपाल 1981ई0 , में

एस. चन्द एण्ड कम्पनी (प्रा0) लि0 रामनगर, नई दिल्ली से प्रकाशित।

(30) **आधुनिक भारत का इतिहास** - संपादक - रामलखन शुक्ल, 1987ई0 में हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्व विद्यालय ई. ए./6 मॉडल टाउन, दिल्ली से प्रकाशित।

(31) **आधुनिक भारत का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास (1707 ई0 - 1950 ई0 तक)** - डॉ. ए. के. मित्तल, 1999 ई0, में साहित्य भवन, पब्लिकेशन्स, हॉस्पिटल रोड, आगरा से प्रकाशित।

(32) **भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास** - प्रथम भाग (1965), द्वितीय भाग (1969), तृतीय खण्ड ( ) लेखक - ताराचन्द निदेशक प्रकाशन विभाग पुराना सचिवालय, दिल्ली द्वारा प्रकाशित।

(33) **भारत का बृहत इतिहास (प्रथम, द्वितीय, तृतीय खण्ड)** - पुराना सचिवालय, दिल्ली द्वारा प्रकाशित, रमेशचन्द्रमजूमदार, हेमचन्द्र चौधरी, कालिकिंकर दत्त, प्रकाशक - मैकमिलन इण्डिया लि0 प्रेस, मद्रास से 1954 ई0 में प्रकाशित।

(34) **प्राचीन भारत का इतिहास एवं संस्कृति** - डॉ. कृष्णचन्द्र श्रीवास्तव, 1991ई0 में यूनाइटेड बुक डिपो, 21 यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद से प्रकाशित।

(35) **पाकिस्तान (काव्य)** - 'तन्मय' बुखारिया, 1946 ई0 में प्रभात प्रकाशन दरीबा, दिल्ली के लिए साहित्य मण्डल, दिल्ली द्वारा प्रकाशित।

(36) **भारतीय राजनीति** - रामगोपाल, ज्ञान मण्डल, लि. बनारस (उ0 प्र0) से 1953 ई0 में प्रकाशित।

(37) **इण्डियन नेशनलिस्ट मूवमेन्ट** - एम. वी. पी. एस. रघुवंशी।

(38) **यश की धरोहर** - भगवानदास माहौर, आत्माराम एण्ड संस दिल्ली से 1984 ई0 में प्रकाशित।

(39) झांसी की रानी - डॉ. बृन्दावन लाल वर्मा, मयूर प्रकाशन झांसी से 1965ई0 में प्रकाशित।

(40) अठारह सौ सत्तावन - श्री निवास बालाजी हर्डोकर 1959 ई0 में सस्ता साहित्य मण्डल, दिल्ली से प्रकाशित।

(41) अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद - विश्वनाथ वैशम्पायन भाग-2, 1967 ई0 में ललित प्रेस वाराणसी से मुद्रित।

(42) आइने अकबरी - अबुल फजल अनुवादक एच. एस. जेनेट और सरकार भाग -2 1949ई0 में कलकत्ता से प्रकाशित।

(43) बुन्देलखण्ड का ऐतिहासिक मूल्यांकन भाग - एक - राधाकृष्ण बुन्देली एवं श्रीमती सत्यभामा बुन्देली, 1989ई0 में बांदा से प्रकाशित।

(44) देवगढ की जैन कला एक सांस्कृतिक अध्ययन - डॉ भागचन्द जैन 1974ई0 में नई दिल्ली से प्रकाशित।

(45) ललितपुर जिले का सामाजिक - आर्थिक इतिहास (1866 - 1947 ई0) - एम. एम. अवस्थी, बु. वि. वि. झांसी की पी. एच. डी. उपाधि हेतु स्वीकृत शोध प्रबन्ध।

(46) हिन्दी पत्रकारिता और राष्ट्रीय आन्दोलन - डॉ पद्माकर पाण्डे, 1993 ई0 में नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी से प्रकाशित।

(47) हिन्दी पत्रकारिता (बुन्देलखण्ड की पत्रकारिता का विशेष अध्ययन)- डॉ. सियाराम शरण शर्मा, 1989 ई0 में मधु प्रकाशन झांसी से प्रकाशित।

(48) समाचार पत्रों का इतिहास - पं. अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी, ज्ञान मण्डल लि0 वाराणसी से प्रकाशित।

(49) दि ऐन्सी एन्टज्योग्राफी ऑफ इण्डिया - कर्निंधम ऐलेक्जेन्डर

(50) ज्योग्राफिक सर्वे ऑफ इण्डिया वोल्यूम - I भाग - I

(51) ए ज्योग्राफिक स्टडी ऑफ बुन्देलखण्ड - डॉ. एम. पी. जायसवाल

(52) उत्तर प्रदेश की एतिहासिक विभूति - डॉ. कृष्णदत्त वाजपेयी, 1957ई0 में लखनऊ से प्रकाशित।

(53) युग - युगों में उत्तर प्रदेश - डॉ. कृष्ण दत्त वाजपेयी, इलाहाबाद 1954ई0 में प्रकाशित।

(54) उत्तर प्रदेश का सांस्कृतिक इतिहास - डॉ. कृष्ण दत्त वाजपेयी, आगरा 1959 ई0 में प्रकाशित।

(55) बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास भाग - I -दीवान प्रतिपाल सिंह, वाराणसी से 1985 ई0 में प्रकाशित।

(56) क्रांतिकारी आजाद - शंकर सुल्तान पुरी, हिन्दी पॉकेट बुक्स, दिल्ली से 1875 ई0 प्रकाशित।

(57) दी बुन्देली रेवेलियन - जय प्रकाश मिश्रा।

(58) द कैम्ब्रिज हिस्ट्री आफ इण्डिया भाग - 6

(59) एक क्रिस्टिकल इनक्वायरी इन टू द बुन्देलखण्ड मसीही मित्र समाज वर्ग इन द बुन्देलखण्ड एरिया - रत्नाकर एम. राव. (रिसर्च पेपर)

(60) लाइफ आफ दि मारक्युत डलहौजी भाग - 2 - ली० वारनर

(61) प्राचीन भारत - डॉ० राजबली पाण्डेय, 1962 ई० में वाराणसी से प्रकाशित।

(62) एन एडवारड हिस्ट्री ऑफ इण्डिया - डॉ० आर० सी० मजूमदार, ए डॉ. एस. सी. राय चौधरी, 1960 ई० में लंदन से प्रकाशित।

(63) तवारीखे - बुन्देलखण्ड - मुन्शीश्यामलालदेहल्वी, 1880 मेंनौगावंसेप्रकाशित।

अभिनन्दन ग्रन्थ

(1) अनासक्त मनस्वी - भगवानदास "बालेन्दु" अभिनन्दन ग्रंथ पं. द्वारिकेश मिश्रा (सम्पादक) श्री राय प्रेस झांसी से 1983 ई0 में प्रकाशित।

(2) पं. परमानन्द अभिनन्दन ग्रन्थ - लक्ष्मी प्रसाद पाठक (सम्पादक) स्वाधीन प्रेस झांसी से 1972 ई0 में प्रकाशित।

(3) रजत नीरांजना - सम्पादक - डॉ. परशुराम शुक्ल 'विरही' प्रस्तुतकर्त्ता एवं प्रकाशक - पं. हरिहरनारायण चौबे। अध्यक्ष - नगर पालिका, ललितपुर मुद्रक - आरोग्य कुटीर प्रेस, शिवपुरी (म0 प्र0)

(4) ललितपुर जनपद स्वर्ण जयंती स्मारिका - 1998 - संरक्षक - नितिन रमेश गोकर्ण (आई. ए. एस.) जिलाधिकारी, ललितपुर प्रधान संपादक - संतोष कुमार शर्मा द्वारा प्रकाशित।

(5) ललितपुर महोत्सव - 1996 ई0 - ललितपुर महोत्सव समिति द्वारा प्रकाशित-पत्र।

(6) बापू के पद चिन्हों पर - राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की 125वीं जयन्ती के अवसर पर जनपद के स्वतंत्रता सेनानियों का सम्मान 15 अगस्त 1995 प्रकाशक - नेहरू युवा केन्द्र, ललितपुर (उ0 प्र0)

(9) समाचार पत्र - पत्रिकाएं

(1) दैनिकजनप्रिय - 11 जनवरी 1999 ई0, प्रधान सम्पादक - श्री शिशिर द्विवेदी।

(2) दैनिक भास्कर - 8 अक्टूबर 1997 ई0, झांसी

(3) हिन्दी साप्ताहिक मध्यदेश - झांसी - रविवार 11 से 23 अगस्त 1997ई0

(4) अमर उजाला - 28 जुलाई 1997ई0 का अंक झांसी से प्रकाशित।

(5) अमर उजाला - 14 अगस्त 1997 ई0 का अंक झांसी से प्रकाशित।

(6) दैनिक जागरण - 12 अगस्त 1997 ई0 का अंक झांसी से प्रकाशित।

(7) दैनिक जागरण - 13 अगस्त 1997 ई0 का अंक झांसी से प्रकाशित।

(8) दैनिक जागरण - 14 अगस्त 1997 ई0 का अंक झांसी से प्रकाशित।

(9) दैनिक जागरण - 18 अगस्त 1997 ई0 का अंक झांसी से प्रकाशित।

(10) दैनिक जागरण - 23 अगस्त 1997 ई0 का अंक झांसी से प्रकाशित।

(11) दैनिक जागरण - 25 अगस्त 1997 ई0 का अंक झांसी से प्रकाशित।

(12) दैनिक जागरण - 16 अप्रैल 1998 ई0 का अंक झांसी से प्रकाशित।

(13) दैनिक भास्कर - 27 दिसम्बर 1990 ई0 का अंक झांसी से प्रकाशित।

(14) सामाजिक दायरा (राष्ट्रीय हिन्दी मासिक समाचार पत्रिका) - संपादक/प्रकाशक – एम. के. साहिल, ललितपुर से प्रकाशित।

(15) तीर्थंकर (विचार मासिक) - जनवरी 1998 ई0 सं. डॉ. नेमीचन्द हीरा भैया प्रकाशन, 65 पत्रकार कॉलोनी, कनाड़िया मार्ग, इन्दौर (म0 प्र0) से प्रकाशित।

(16) Cpiscopal Recurder - 16 अक्टूबर 1902 अमेरिका से प्रकाशित- रिपोर्ट आफ डी. टी. वेनहार्न।

(17) दिगम्बर जैन सिद्धान्त भास्कर किरण - दो, भाग - 8 - 1941 ई0 में आरा से प्रकाशित। मेरीदेवगढ यात्रा निबन्ध, पं. के भुजबली शास्त्री।